।

एक क्रांतिकारी की आत्म-कथा

रूस के महान चिन्तक तथा मानव-नीति के पोषक

प्रिंस क्रोपाटकिन की

रोमांचकारी एवं प्रेरणादायक आत्म-कथा

•

अनुवादक

वनारसीदास चतुर्वेदी

•

१९७०

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

•

पहली बार १९७०
मूल्य आठ रुपये

•

मुद्रक
जे० के० शर्मा
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस,
इलाहाबाद

प्रकाशकीय

विश्व के अनेक लव्ध-प्रतिष्ठ चिंतको की रचनाए 'मण्डल' ने हिंदी के पाठको को सुलभ की है। ये पुस्तके इतनी लोकप्रिय हुई है कि इनमे से बहुतो के कई-कई सस्करण हुए है और आज भी उनकी माग बनी हुई है। टालस्टाय, स्टीफन ज्विग, खलील जिब्रान, स्वेट मार्डन आदि की कृतिया तो विशेष रूप से पसद की गई है।

हिंदी के पाठक रूस के महान चितक प्रिंस क्रोपाटकिन के नाम से भली भाति परिचित है। उनकी चार पुस्तके 'मण्डल' से प्रकाशित हो चुकी है: (१) रोटी का सवाल, (२) सघर्ष नही, सहयोग (३) क्राति की भावना और (४) नवयुवको से दो बाते। इन पुस्तको की सभी वर्गो और सभी क्षेत्रो मे भूरि-भूरि प्रशसा हुई है।

हमे हर्ष है कि अब रूस के इन्ही महान चिंतक, क्रातिकारी और मानव-नीति को सर्वोपरि महत्व देनेवाले क्रोपाटकिन की आत्म-कथा पाठको के हाथो मे पहुच रही है। अग्रेजी मे यह पुस्तक 'मैमॉयर्स आव ए रिवोल्यूशनिस्ट' के नाम से प्रकाशित हुई है। निस्सदेह यह सामान्य आत्मकथा नही है। अपनी कहानी के सहारे विद्वान लेखक ने उसमे उस युग के लोमहर्षक इतिहास पर प्रकाश डाला है, जब सत्ता निरकुश जार के हाथो मे थी और मनुष्य आभिजात्य वर्ग की दया पर आश्रित था। पुस्तक यह भी बताती है कि उस अमानवीय व्यवस्था के विरुद्ध किस प्रकार लेखक तथा अन्य क्रातिकारी व्यक्तियो के हृदय मे विद्रोह की अग्नि प्रज्ज्वलित हुई और उन्होने कितनी भयकर यातनाए सहकर लोकचेतना को प्रबुद्ध करने का प्रयत्न किया।

कहने की आवश्यकता नही कि इस पुस्तक के पढने मे उपन्यास का-सा रस आता है। साथ ही, उससे विचारो को प्रेरणा भी मिलती है।

सबसे अधिक हर्ष की बात यह है कि इस पुस्तक का अनुवाद श्रद्धेय बनारसीदास चतुर्वेदी ने किया है, जो वर्षो से क्रोपाटकिन के प्रशसक रहे है। वह दो बार रूस की यात्रा कर चुके है और क्रोपाटकिन की समाधि पर अपनी श्रद्धाजलि अर्पित कर चुके है। पुस्तक का मूल्य कम रखने के लिए उसका आकार कुछ कम कर दिया गया है, पर उससे पुस्तक की मूल भावना मे अतर नही पडने दिया है।

हमे विश्वास है कि यह पुस्तक पाठको को बड़ी स्वस्थ सामग्री प्रदान करेगी।

—मत्री

निवेदन

आत्मचरित लिखना कोई आसान काम नही। हमारे यहा उपनिषदो मे कहा है "आत्मान विद्धि," अपने-आपको पहचानो, जो एक बहुत ही कठिन काम है और बडे-से-बडे कलाकार भी इसमे फेल हो सकते है! उस महान यज्ञ के लिए जिस विश्लेषण-शक्ति तथा तटस्थ वृत्ति की आवश्यकता है, वह विरलो मे ही पाई जाती है। उन्नीसवी शताब्दी मे जो आत्मचरित प्रकाशित हुए थे, उनमे क्रोपाटकिन का आत्मचरित सर्वश्रेष्ठ माना जाता है और यही बात बीसवी शताब्दी मे प्रकाशित महात्माजी के आत्मचरित (सत्य के प्रयोग) के बारे मे भी कही जाती है। निस्सन्देह, ये दोनो आत्मचरित अपनी-अपनी कोटि के अद्‌भुत ग्रन्थ है। जहातक विचारधाराओ का सम्बन्ध है, क्रोपाटकिन और बापू के विचारो मे अद्‌भुत साम्य है। क्रोपाटकिन बापू से उम्र मे सत्ताईस वर्ष बडे थे—उनका जन्म १८४२ मे हुआ था, जबकि बापू का १८६९ मे—दोनो ही अराजकवादी थे, दोनो ही केन्द्रीकरण की नीति के विरोधी और विकेन्द्रीकरण के पक्षपाती थे। दोनो ही सन्त प्रकृति के थे और दोनो का ही दृष्टिकोण वैज्ञानिक था। पर जहातक व्यावहारिकता का सम्बन्ध है, महात्माजी मे क्रोपाटकिन की अपेक्षा अधिक व्यावहारिकता पाई जाती थी। जहा क्रोपाटकिन मे विचारक और स्वप्नदर्शी होने के गुण प्रचुर मात्रा मे पाये जाते थे, वहा गाधीजी मे उनके साथ-साथ व्यावहारिकता भी।

पर इन दोनो आत्मचरितो की लेखन-शैली मे भिन्नता है। क्रोपाटकिन अपने प्राइवेट जीवन के बारे मे कुछ भी कहना पसन्द नही करते, अपने प्रेम मे फसने अथवा शादी करने का भी उन्होने जिक्र तक नही किया। वह स्नेही पिता भी है, इसका उल्लेख इस आत्मचरित मे केवल एक बार ही आया है। क्रोपाटकिन का उद्देश्य था तत्कालीन रूस की परिस्थिति का वर्णन। उसीको पृष्ठभूमि मे रखकर उन्होने अपनी जीवनी लिखी थी। 'अतलातिक मन्थली' के सम्पादक मि० वाल्टर पेज ने विशेष आग्रह

करके उसे लेखमाला के रूप में १८९८-९९ में अपने पत्र में छापा। फिर यह वृहदाकार में सन् १८९९ में छपी। प्रथम संस्करण की भूमिका अन्तर्राष्ट्रीय समालोचक जार्ज ब्रान्डीज ने लिखी थी।

अनेक आदर्शवादी युवकों को इस ग्रन्थ से स्फूर्ति मिली थी और कई भाषाओं में इसके अनुवाद भी हुए थे।

निस्सन्देह, इस ग्रन्थ के कई अंश बड़े मार्मिक बन पड़े हैं। अपनी पूज्य माताजी का चित्रण क्रोपाटकिन ने बड़ी सहृदयता के साथ किया है। अपने बड़े भाई के प्रति भी उनके हृदय में असीम स्नेह था। फिर भी उनकी लेखनी के संयम की यह खूबी कही जायगी कि उन्होंने अपने अग्रज के आत्मघात का जिक्र केवल दो-तीन वाक्यों में ही किया है और उसपर अपना शोक प्रदर्शन केवल एक वाक्य में! उनके शब्द सुन लीजिये—"मेरे भाई अलैक्जैण्डर ने मुझे लिखा था, "कभी-कभी मैं 'फाउस्ट' की तरह अत्यंत निराश हो जाता हूँ।" "जब मेरे भाई के छुटकारे का समय आया, तो उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों को पहले ही साइबेरिया से रूस भेज दिया और एक रात को अत्यन्त निराश अवस्था में आत्मघात कर लिया।" "अनेक महीनों तक मेरी कुटी पर दुःख की घटा छाई रही और तत्पश्चात अगली वसन्त ऋतु में एक छोटी बालिका का जन्म हुआ, जिसका नाम मैंने अपने भाई के नाम पर रख दिया और मेरे हृत्तन्त्री के तार उसके बाल्य क्रन्दन से झंकृत हो उठे।"

का उन्होने अपने ग्रन्थ 'म्यूचुअल एड'[1] मे बडी योग्यतापूर्वक प्रामाणिक सशोधन किया है और उनका वह ग्रन्थ विज्ञान-जगत् मे बडे आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

क्रोपाटकिन का यह आत्मचरित सन् १८९९ तक का ही चित्रण करता है। उसके बाईस वर्ष बाद तक वह और भी जीवित रहे (उनका स्वर्ग-वास ८ फरवरी, सन् १९२१ को हुआ था)। उन बाईस वर्षो मे उन्होने जो महान कार्य किया उसपर तो एक अलग ग्रन्थ ही लिखा जा सकता है। क्रोपाटकिन के जीवन का सर्वोत्तम चित्रण प्रसिद्ध अग्रेज लेखक ए० जी० गार्डनर ने किया था, जिसे हम अन्यत्र उद्धृत कर रहे है।

जैसाकि मै पहले लिख चुका हू, क्रोपाटकिन और गान्धीजी के विचारो मे अद्भुत साम्य था। मेरी गोल्ड स्मिथ नामक महिला ने एक जगह लिखा है कि साधनो की पवित्रता पर क्रोपाटकिन बहुत जोर देते थे। वह इस सिद्धान्त के घोर विरोधी थे कि सघर्ष करते समय भले-बुरे कोई भी उपाय काम मे लाये जा सकते है—ईमानदारी के या बेईमानी के। 'एण्ड जस्टीफाइज द मीन्स', अर्थात लक्ष्य की सफलता के लिए प्रत्येक प्रकार का उपाय न्यायपूर्ण है, इस सिद्धान्त से वह घृणा करते थे। पार्टी के सगठन के विषय पर, चदा इकट्ठा करने के तौर-तरीको पर अथवा विरोधियो या दूसरी पार्टी के लोगो के साथ व्यवहार करते हुए वह यही चाहते थे कि साधन पवित्र रखे जाय। यह बात दिसम्बर सन् १९०४ मे उन्होने कही थी, जो महात्माजी के विचारो से बिलकुल मेल खाती है।

आतकवाद के विषय मे भी क्रोपाटकिन के विचार उनके उग्रवादी साथियो से भिन्न थे। जब गर्म दलवाले कहते—"हमे तोड-फोड करनी चाहिए, हमे विनाश करना चाहिए, जालिमो को खतम करना चाहिए", उस समय सन् १८९३ की एक मीटिग मे उन्होने कहा था—"हमे तोड-फोड हर्गिज नही करनी चाहिए। हमे निर्माण करना चाहिए—मनुष्यो के हृदयो का निर्माण। हमे ईश्वर के राज की स्थापना करनी चाहिए।" (अनार्किस्ट प्रिन्स, पृष्ठ २४७)

---

[1] 'सघर्ष नही सहयोग' के नाम से सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

जहातक अपरिग्रह का सवाल है, क्रोपाटकिन गाधीजी से पीछे नही, आगे ही थे। अगर उनके वैज्ञानिक लेख विलायत के पत्रो मे छप जाते, तो वह मक्खन भी खा लेते, नही तो सूखी रोटी और चाय पर ही गुजर करते थे! पूजीपतियो से पैसा लेना तो दूर रहा, वह किसीसे भी आर्थिक सहायता नही लेते थे। उनके अतिथि-सत्कार का एक मनोरजक किस्सा फ्रैंक हैरिस ने लिखा था—"क्रोपाटकिन बैठे हुए है। एक रूसी सज्जन पधारे। क्रोपाटकिन ने भीतर जाकर अपनी पत्नी से कहा, 'तरकारी मे थोडा पानी मिला दो।' उसके थोडी देर बाद कही से एक दूसरे रूसी सज्जन आ टपके, तो क्रोपाटकिन ने भीतर जाकर फिर तरकारी मे पानी मिलाने की सलाह दे दी। इतने मे तीसरे अतिथि भी आये और सारी तरकारी मे पानी-ही-पानी हो गया!"

जहातक दूसरो की मदद करने का सवाल था, क्रोपाटकिन बिना किसी भेदभाव के आपद्ग्रस्त मजदूरो की मदद करते थे, यद्यपि उनके पास पैसा बहुत ही कम रहता था।

चूकि महात्माजी को वहुत-से आदमियो का पालन-पोषण करना पडता था, इसलिए उनके लिए पूजीपतियो के सामने हाथ पसारना अनिवार्य था। जब समुद्र-मथन मे विष निकला था, तो उससे यह आशका हो गई थी कि वह देवताओ के लिए कही विघातक सिद्ध न हो जाय! उस समय भगवान शिव ने उस जहर को पी लिया और वह नीलकठ वन गये! उनके गले मे जो नीला निशान है, वह जहर का ही है। सहस्रो कार्यकर्त्ताओ की गुजर-बसर के लिए महात्माजी को भी नीलकठ बनना पडा।

स्वाधीनता-सग्राम या क्रान्ति मे सफलता प्राप्त करने के वाद क्रान्तिकारियो का क्या कर्तव्य होना चाहिए, इस विषय पर भी क्रोपाटकिन और गाधीजी के विचारो मे एकता है। क्रोपाटकिन ने एक जगह लिखा था—"अगर क्रान्ति होने के बाद दूसरे दिन साधारण जनता को कोरमकोर शब्दो से ही सन्तुष्ट होना पडे और वास्तविक तथ्यो से उसे यह यकीन न हो जाय कि जो परिवर्तन हुए है वे उसके लाभ के लिए है, न कि उसके ऊपर के शासको मे नाममात्र की रद्दोवदल हुई है तो उसके मानी होगे कि कुछ भी सफलता नही मिली! अगर क्रान्ति के मानी केवल शब्द-जजाल ही नही है और अगर आगामी कल को बीते हुए कल की तरह नही बनने देना है, तो हमे ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि कल के गरीब आज भी गरीब न रहे।" क्रोपाटकिन का कहना था कि क्रान्तिकारियो को सत्ता हाथ मे नही लेनी चाहिए और उनका मुख्य कार्य होना चाहिए जनता मे क्रान्ति की भावना को जीवित और जागृत बनाये रखना और मौलिक लक्ष्यो की तरफ अपनी शक्ति को लगाना। वह क्रान्ति निस्सन्देह निरर्थक ही मानी जायगी यदि क्रान्तिकारी लोग तुरन्त ही जनता के दु खो को दूर करने का प्रयत्न नही करते। सत्ताधारियो से सत्ता छीनने के वाद क्रान्तिकारियो का यही मुख्य कर्तव्य है।"

क्रोपाटकिन के विचारो की तुलना महात्माजी के उस वक्तव्य से कीजिये, जो उन्होने काग्रेस के नेताओ को दिया था। महात्माजी का आदेश था कि काग्रेस को भग कर दिया जाय और उसे लोक-सेवक-मडल का रूप दे दिया जाय।

जहातक अन्तिम ध्येय का सम्वन्ध है, मार्क्स, लेनिन और गाधी

तीनो ही अराजकवाद के पक्षपाती है। पर मुख्य सवाल यह है कि अराजकवाद आने मे तो अभी पचासो वर्षो की देर है। न तो शासक अथवा जनता क्रोपाटकिन के रचनात्मक कार्यो को करना चाहती है और न पूजीपति लोग महात्माजी के आदेश के अनुसार अपनी धन-सम्पत्ति के ट्रस्टी बनने को तैयार है, तब फिर इस हालत मे क्या किया जाय? महात्मा गाधी ने बहुत वर्ष पहले ही यह बात लिख दी थी कि यदि साधन-सम्पन्न वर्ग स्वेच्छा से त्याग नही करता, तो खूनी क्रान्ति अवश्यम्भावी है।

भौतिक जगत मे जो आधिया और तूफान आते है, उनको नियत्रित नही किया जा सकता। इसी प्रकार सामूहिक क्रान्तिया भी अपना रास्ता खुद चुनती है, जो खून-खच्चर से भरा होता है। रोम्या रोला ने एक जगह लिखा था—"मुख्य सवाल यह नही है कि मकान के बनाने मे मैमारो और मजदूरो के हाथ मिट्टी और चूना से कितने लिथड गये है, बल्कि देखना यह है कि जिस भवन का निर्माण हुआ है, उसकी नीव पक्की रक्खी गई है या नही।"

देश की वर्तमान परिस्थिति को देखते हमे एक बात ईमानदारी के साथ स्वीकार करनी पडेगी और वह यह कि यद्यपि हमारा हृदय क्रोपाटकिन और गाधीजी के सिद्धान्तो से अब भी प्रभावित है, तथापि हमारा मस्तिष्क शकाशील बन गया है। हमारे मन मे बार-बार यह प्रश्न उठता है कि हम अपने अनाचारो तथा प्रमादो के कारण खूनी क्रान्ति को निमन्त्रण तो नही दे रहे?

थोडे दिन हुए हमने सुप्रसिद्ध रूसी लेखक आस्त्रोवस्की की पुस्तक 'अग्निदीक्षा' पढी थी और हम अपने प्रत्येक पाठक से सिफारिश करेगे कि उस ग्रन्थ को मगाकर अवश्य पढे। हमारे देश के लिए निस्सन्देह यह वडे दुर्भाग्य की बात होगी कि यदि उसे रक्तगगा मे उसी प्रकार स्नान करना पडे, जिस प्रकार हमारे रूसी भाइयो को करना पडा था—निस्सन्देह यह वडे दुर्भाग्य की वात हुई कि न तो क्रोपाटकिन, लेनिन के महान कार्य को समझ सके और न लेनिन ही उनकी असाधारण योग्यता का कुछ उपयोग कर सके। जव-जव हम क्रोपाटकिन की जीवन-पद्धति पर विचार करते है, हमे भगवान महावीर का स्मरण हो आता है। भगवान महावीर ने

अहिसा तथा अपरिग्रह के सिद्धान्तो को हद दर्जे तक पहुचा दिया था, जहा कि वे सर्वसाधारण के लिए बिलकुल अव्यावहारिक बन गये और उसका दुष्परिणाम यह हुआ कि जैन समाज मे परिग्रह सबसे अधिक बढ गया।

क्रोपाटकिन ने अपनी मृत्यु के दो महीने पहले लेनिन को एक अत्यन्त कठोर पत्र लिखा था, जिसमे उन्होने कहा था

"जनाब व्लादीमीर इलियच (लेनिन), जब आपकी आकाक्षा तो यह है कि हम एक नवीन सत्य के मसीहा बने और नवीन राज्य के सस्थापक तो फिर आप किस प्रकार ऐसे बीभत्स सरकारी अनाचारो और गैर-मुनासिब सरकारी तौर-तरीको को अपनी स्वीकृति दे सकते है जैसेकि किसी अपराध के लिए अपराधी के नाते-रिश्तेदारो को गिरफ्तार कर लेना? इससे तो ऐसा प्रतीत होता है कि आप जारशाही के विचारो से चिपके हुए है। पर शायद उन निरपराध आदमियो को पकडकर आप अपनी जान की रक्षा करना चाहते है। क्या आप इतने अन्धे हो गये है और अपनी तानाशाही के विचारो के इतने गुलाम बन गये है कि आपको यह बात नही सूझती कि आप-जैसे यूरोपियन साम्यवाद के अग्रणी के लिए यह कार्य (लज्जाजनक तरीको द्वारा निरपराधो की गिरफ्तारी) सर्वथा अनधिकार चेष्टा है? आपका यह काम भयकर रूप से त्रुटिपूर्ण तो है ही, बल्कि उससे यह भी प्रकट होता है कि आप मृत्यु से डरते है, जो सर्वथा तर्कविहीन बात है। उस साम्यवाद के विषय मे क्या कहा जाय, जिसका एक महत्वपूर्ण रक्षक इस प्रकार ईमानदारी की प्रत्येक भावना को पैरोतले कुचलता है।"

इसमे कुछ भी शक नही कि लेनिन को अपनी हिसात्मक कार्यपद्धति मे काफी कठोर बनना पडा था, पर यह सर्वथा अनिवार्य था। जो लोग मनुष्यो का खून चूसकर मोटे पड गये है और जिनकी जीभ को उस खून का चस्का भी लग गया है, क्या वे कभी दो-चार मीठे उपदेशो से फुसलाये जा सकते है? स्वय गोर्की को भी बार-बार लेनिन के पास इसीलिए जाना पडता था कि वह अधिक नरमी से काम ले!

एक बार लेनिन को कोई राग-रागिनी सुनाई गई, तो उन्होंने कहा था :

"जिस किसीने इस रागिनी का निर्माण किया है, उसका सिर सुहलाने को जी चाहता है, पर आज तो सिर तोडने का युग आ गया है, सिर सुहलाने का नही!"

यह खयाल करना कि लेनिन को हिसा करने मे कुछ मजा आता था, उनके प्रति अन्याय करना होगा। दरअसल हिसा का जो ताण्डव नृत्य रूस मे हुआ, उसका मूल कारण था जार की तानाशाही के जुल्म। क्रान्ति तो उसकी प्रतिक्रिया मात्र थी।

यह बडे दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश मे चिन्तको का प्राय अभाव है। हमारे मुल्क मे हिसा की जो भावना निरन्तर बढ रही है, उसका वैज्ञानिक ढग पर अध्ययन तथा विश्लेषण होना चाहिए। उसके मूल कारणो पर विचार करने की जरूरत है। जनता मे उचित शिक्षा का अभाव उसका कारण हो सकता है और शासन की शिथिलता भी। जनता का असन्तोष जब सीमा को पार कर जाता है तो वह मजबूरन हिसा का मार्ग अपनाने लगती है। ऐसा प्रतीत होता है कि हम लोग एक हिसक क्रान्ति की ओर आगे बढ रहे है। यदि ऐसा हुआ तो महात्माजी का किया-कराया सारा काम चौपट हो जायगा और आचार्य विनोबाजी तथा धीरेनभाई प्रभृति की अहिसक क्राति भी निष्फल हो जायगी।

शायद अब भी कुछ समय है जब उस भावी तूफान के विषय मे कुछ रचनात्मक वाद-विवाद किया जा सकता है। लेखक और कवि, चित्रकार और कलाकार, विचारक और कार्यकर्त्ता सभी मिलकर आज के ज्वलन्त प्रश्नो पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर सकते है।

हम लोगो—लेखको का—यह कर्तव्य है कि जनता के लिए सात्त्विक मानसिक भोजन उपस्थित करे। निस्सन्देह, यह रास्ता बडा लम्बा है, पर सौ वर्ष भी सहस्रो वर्षो के इतिहास मे बहुत महत्त्व नही रखते—दस-बीस वर्ष की तो बात ही क्या है!

हमारा यह दृढ विश्वास है कि क्रोपाटकिन का आत्मचरित विचार-शील पाठको के लिए प्रेरणाप्रद सिद्ध होगा और हमारे देश के नवयुवक तो उससे बहुत-कुछ सीख सकते है।

हमे इस बात का खेद है कि कई अनिवार्य कारणो से हम सम्पूर्ण अग्रेजी पुस्तक का पूरा अनुवाद नही दे सके। अनेक अश हमे छोड देने पडे। फिर भी हमने यह प्रयत्न अवश्य किया है कि लेखक की आत्मा के प्रति कोई अन्याय न होने पावे।

—बनारसीदास चतुर्वेदी

प्रिंस क्रोपाटकिन

"ओह! उन दिनो कैसे-कैसे असाधारण शक्ति-सम्पन्न प्रतिभाशाली महापुरुष होते थे और अब उन दिग्गजो के मुकावले. . ." मेरे मित्र ने यह अधूरा वाक्य कहते हुए अपने हाथ को इस तरह उपेक्षाजनक ढग से घुमाया, जिसका अभिप्राय यह था कि वर्तमान काल मे महापुरुषो का अभाव है, और उस अभाव को प्रकट करने के लिए उनके पास शब्द भी नही! अपने मित्र के वाक्य को पूरा करते हुए मैने कहा, "जनाव, उन दिग्गजो के मुकावले के दिग्गज आज भी पाये जाते है।" मेरे मित्र ने मानो दृढता-पूर्वक चुनौती देते हुए मुझसे पूछा, "मिसाल के लिए?" मैने निवेदन किया, "जरा दवी हुई जवान से वोलिये, क्योकि मेरी मिसाल आपके नजदीक ही है।" मेरे मित्र ने उस ओर देखा, जिधर मैंने इशारा किया था कि उनकी निगाह एक प्रौढ पुरुष[1] पर पड़ी, जो उस वाचनालय मे वात-करनेवाले समूह के वीच मे विद्यमान थे। ठीक फौजी ढग पर कन्धो को चौडा किये हुए वह नरपुगव एक सिपाही की भाति चुस्त खडा हुआ था, लेकिन उसका प्रशस्त मस्तिष्क, भरी हुई भौहे, फैली हुई दाढ़ी तथा विशाल नेत्र इस वात की घोषणा कर रहे थे, मानो वह कोई दार्शनिक है। उसकी आखो से वुद्धिमत्ता तथा परोपकारिता टपक रही थी और वह वडी तेजी के साथ वातचीत कर रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि जितनी शीघ्रता के साथ विचार उनके दिमाग मे आ रहे है, उसका मुकावला भाषा के मन्द चाल मे चलनेवाले शब्द नही कर सकते। वातचीत करते हुए वह निरन्तर अपनी चाय के प्याले मे चम्मच चला रहा था, पर प्याला अभी मुह तक

---

[1]यह स्कैच सन् १९१३ मे लिखा गया था, जव प्रिंस क्रोपाटकिन जीवित थे।

गया नही था। मेरे मित्र ने पूछा, "आपका मतलव प्रिंस क्रोपाटकिन से है?" मैंने कहा, "जी हा।" मित्र ने फिर पूछा, "क्या सचमुच आप ऐसा समझते है?"

हा सचमुच प्रिंस क्रोपाटकिन एक असाधारण प्रतिभाशाली दिग्गज महापुरुप है। यदि जीवन तथा व्यक्तित्व के तमाम विभिन्न पहलुओ पर विचार किया जाय, तो निस्सन्देह प्रिंस क्रोपाटकिन पुराने जमाने की वीरतापूर्ण किस्से-कहानियो के नायक ही प्रतीत होगे। यदि वह इतिहास के प्रारम्भिक काल मे उत्पन्न हुए होते तो उनकी कीर्ति एजेक्स की तरह, जिसने अन्याय का जवरदस्त विरोध किया था, गाथाओ मे गाई जाती, अथवा वह प्रोमेथियस के समान होते, जो धरती पर स्वतन्त्रता की अग्नि लाने के अपराध मे काकेशस पर्वत से जजीरो द्वारा वांध दिया गया था। कवि लोग उनके वीरतापूर्ण कार्यो से काव्यो की रचना करते और उनके सकटपूर्ण जीवन तथा उनके भाग निकलने की कथाए वालक-वालिकाओं को प्रोत्साहन देने और उनकी कल्पना-शक्ति को जाग्रत करने के काम मे आती। दरअसल इस जवामर्द की जिन्दगी के ड्रामे मे इतना विस्तार और इतनी सादगी है कि उसकी मिसाल आज के जमाने मे मिल नही सकती। आज इस समय, जव यह महापुरुष अपनी चाय को चलाता हुआ और कुछ विश्राम लेता हुआ हमारे सामने एक प्रेमी प्रोफेसर के रूप मे विद्यमान है, हमे ऐसा प्रतीत होता है कि मानो हम रूस देश के महान विस्तार को और उसकी दर्द-भरी कहानी को साक्षात देख रहे है, अथवा मनुष्य की आत्मा उठकर कितनी ऊचाई तक पहुच सकती है, इसका दृष्टान्त हमे प्रत्यक्ष दीख पडता है।

प्रिंस क्रोपाटकिन को हम वाल्यावस्था मे एक अत्यन्त प्राचीन तथा उच्च राजवश मे उत्पन्न अपने पिता के साथ देखते है। यह समय है अत्याचार-रूपी घनघोर अन्धकार का। रात अधेरी है—अन्याय-अन्धकार का साम्राज्य है और रूसी जाग्रति के सूर्य के निकलने मे अभी वहुत देर है। रूसी जार निकोलस प्रथम का भयकर पजा जनता के सिर पर है। गुलामी की प्रथा का दौरदौरा है और गरीव जनता गुलामी के जुए के नीचे कराह रही है।

बालक क्रोपाटकिन को जीवन के दो भिन्न-भिन्न प्रकार के—परस्पर-विरोधी—अनुभव होते हैं।

जब क्रोपाटकिन आठ वर्ष के थे, वह सम्राट जार के पार्षद बालक बना दिये गए थे। उस समय वह महाशक्तिशाली जार के पीछे-पीछे चलते थे, और एक बार तो भावी साम्राज्ञी की गोद में सो गये थे। जहा एक ओर उन्हे यह अनुभव हुआ, वहा दूसरी ओर उनकी कोमल आत्मा दासत्व प्रथा के भयकर अत्याचारो को अपनी आखो देखकर झुलस गई। एक दिन प्रिंस क्रोपाटकिन के पिता घर के दास-दासियो से नाराज हो गये और उनका गुस्सा उतरा मकार नामक नौकर पर, जो रसोइये का सहायक था। प्रिंस क्रोपाटकिन के पिता ने मेज पर बैठकर एक हुक्मनामा लिखा—"मकार को थाने पर ले जाया जाय और उसके एक सौ कोडे लगवाये जाय।" यह सुनकर बालक प्रिंस क्रोपाटकिन एकदम सहम गये और उनकी आंखो मे आसू आ गये, गला भर आया। वह मकार का इन्तजार करते रहे। जब दिन चढने पर उन्होने मकार को, जिसका चेहरा कोडे खाने के बाद पीला पड गया था और बिलकुल उतर गया था, घर की एक अन्धकारमय गली मे देखा, तो उन्होने उसका हाथ पकडकर चूमना चाहा। मकार ने हाथ छुडाते हुए कहा—"रहने भी दो। मुझे छोड दो, तुम भी बडे होने पर क्या बिल्कुल अपने पिता की तरह न बनोगे?" बालक क्रोपाटकिन ने भरे गले से जवाब दिया, "नही, नही, हर्गिज नही।"

सौप दिया था। वे चाहे जिसे फासी पर लटका देते थे और चाहे जिसे निर्वासित कर देते थे, लेकिन फिर भी वे क्रान्तिकारी गुप्त समितियो की कार्रवाइयो को रोकने मे सफल नही हुए। ये समितिया दनादन स्वाधीनता तथा क्रान्ति का साहित्य जनसाधारण मे बाट रही थी। इस घोर अशान्तिमय वायुमडल मे भेड की खाल ओढे एक अद्‌भुत किसान, अदृश्य भूत की तरह, इधर-से-उधर घूम रहा है। उसका नाम बोरोडिन है। पुलिस के अफसर हाथ मल-मल कर कहते है, "बस, अगर हम लोग बोरोडिन को किसी तरह पकड पावे, तो क्रान्ति की इस सर्पिणी का मुह ही कुचल जाय, हा, बोरोडिन को और उसके साथी-सगियो को।" लेकिन बोरोडिन को पकडना आसान काम नही। जिन जुलाहो और मजदूरो के बीच मे वह काम करता है, वे उसके साथ विश्वासघात करने के लिए तैयार नही। सैकडो की सख्या मे पकडे जाते है, कुछको जेल का दड मिलता है और कुछ को फासी का! पर वे बोरोडिन का असली नाम और पता बतलाने के लिए तैयार नही!

सन् १८७४ की वसन्त ऋतु और सध्या का समय। सेण्ट पीटर्सबर्ग के सभी वैज्ञानिक और विज्ञान-प्रेमी ज्यॉग्राफिकल सोसाइटी के भवन पर महान वैज्ञानिक प्रिस क्रोपाटकिन का व्याख्यान सुनने के लिए एकत्र हुए है। फिनलैण्ड की यात्रा के परिणामो के विषय मे उनका भाषण होता है। रूस के जल-प्रलय-काल के विषय मे वैज्ञानिको ने जो सिद्धान्त अबतक कायम कर रखे थे, वे सब एक के बाद दूसरे खडित होते जाते है और अकाट्य तर्क के आधार पर एक नवीन सिद्धान्त की स्थापना होती है। सारे वैज्ञानिक जगत मे क्रोपाटकिन की धाक जम जाती है। इस महापुरुप के मस्तिष्क के विस्तार के विषय मे क्या कहा जाय! उसका शासन भिन्न-भिन्न ज्ञानो तथा विज्ञानो के समूचे साम्राज्य पर है। वह महान गणितज्ञ है और भूगर्भ-विद्या का विशेषज्ञ। यह कलाकार है और ग्रन्थकार (बीस वर्ष की उम्र मे उसने उपन्यास लिखे थे) है। वह सगीतज्ञ है और दार्शनिक है। बीस भाषाओ का वह ज्ञाता है और सात भाषाओ मे वह आसानी के साथ बातचीत कर सकता है। तीस वर्ष की उम्र मे रूस के चोटी के विद्वानो मे—उस महान देश के कीर्ति-स्तम्भो मे—प्रिस क्रोपाट-

दूसरे कोने तक कई हजार चक्कर लगाकर पाच मील टहलना शुरू किया और स्टूल की मदद से जमनास्टिक करते रहे। उनके भाई अलैक्जैण्डर ने बहुत-कुछ आन्दोलन करके क्रोपाटकिन को लिखने का सामान दिलवा दिया था, जिससे वह ग्लेशियल के विषय मे अपना महान ग्रन्थ लिख सके। इस ग्रथ की वजह से वह अपना दिमाग ठिकाने रख सके, नही तो कभी के पागल हो गये होते। लेकिन क्रोपाटकिन अपने स्वर की ध्वनि का अन्दाज ही भूल गये, क्योकि जेल की कोठरी मे उन्हे गाने की मनाही कर दी गई थी। दो वर्ष बाद वह बीमार पड गये और इलाज के लिए फौजी जेलखाने के अस्पताल मे भेज दिये गए। यहापर उन्हे तीसरे पहर के समय अस्पताल के सहन मे टहलने की आज्ञा मिल गई थी, यद्यपि हथियारबन्द सिपाही बराबर उनके साथ रहते थे, और यहीपर से वह भाग निकले। उनका यह भागना अत्यन्त आश्चर्यजनक था। ड्यूमा के उपन्यास को छोडकर ऐसा सनसनीखेज किस्सा शायद ही कही पढने को मिले। उनके जीवन-चरित का वह अध्याय, जिसमे इस भागने का वृत्तान्त है, हृदय को स्पन्दित करने-वाली एक खास चीज है।

क्रोपाटकिन ने अपने बाहर के दोस्तो से पत्र-व्यवहार करके भागने की सारी तरकीब निश्चित कर ली थी। जब लकडी लानेवालो के लिए फाटक खुला, उस समय क्रोपाटकिन टोप हाथ मे लिये टहल रहे थे। कोई अजनबी आदमी फाटक के सिपाही को बातो मे उलझाये हुए था। पडोस के घर मे वेला बज रहा था। भागने की घडी ज्यो-ज्यो नजदीक आती जाती थी, त्यो-त्यो वेला की ध्वनि भी तीव्र होती जा रही थी। क्रोपाटकिन भागे, फाटक पार किया, झट से गाडी मे सवार हुए, घोडे सरपट दौडे, सेन्ट-पीटर्सबर्ग के सबसे शानदार होटल मे खाना खाया (जबकि पुलिस उस महानगरी के प्रत्येक छुपने के स्थान के कोने-कोने को तलाश कर रही थी), किसीका पासपोर्ट लिया, फिनलैण्ड होकर स्वीडेन की यात्रा की और वहा यूनियन जैक (ब्रिटिश झडा) उडानेवाले एक जहाज पर सवार होकर इग्लैण्ड जा पहुचे। उनके जीवन की यह घटना किसी भी उपन्यास से बढकर मनोरजक है। प्रिस क्रोपाटकिन का आत्म-चरित हमारे युग का सर्वश्रेष्ठ आत्म-चरित है।

इस महापुरुष का जीवन दो प्रबल भावनाओ से प्रभावित रहा है। एक भावना तो है बौद्धिक ससार मे विजय प्राप्त करना और दूसरी मानव-समाज की स्वाधीनता के लिए उद्योग। अन्ततोगत्वा इन दोनो भावनाओ का स्रोत एक ही है, यानी मानव-समाज से प्रेम, और इस प्रेम की वजह से ही क्रोपाटकिन के व्यक्तित्व मे वैसा ही आकर्षक माधुर्य है, जैसा सर्दी से ठिठुरनेवाले आदमी के लिए सूर्य की किरणो मे। क्रोपाटकिन के इस हृदयग्राही गुण को देखकर विलियम मोरिस की याद आ जाती है, क्योकि विलियम मोरिस का भी स्वभाव वैसा ही प्रेमपूर्ण और सहृदयता-युक्त था, और वह साम्यवादी की अपेक्षा कही अधिक अराजकवादी थे। मैने इन दो बातो का उल्लेख इसलिए किया है कि इन दोनो का सम्बन्ध है। साम्यवादी मनुष्य को केवल भावना मे ही देखता है और समाज को कानून द्वारा सचालित एक सस्था मात्र समझता है। साम्यवादी की इस चिन्ता-धारा का नतीजा यह होता है कि मनुष्य तथा समाज उसके मस्तिष्क तक ही पहुच पाते है, पर वे उसकी मनुष्यता को स्पर्श नही कर पाते, लेकिन अराजकवादी, जिसे हद दर्जे का व्यक्तित्ववादी कहना चाहिए, मनुष्य को साक्षात और साकार रूप मे देखता है, और इस कारण मनुष्य के प्रति उसके हृदय मे प्रेम उत्पन्न होता है, क्योकि मनुष्य को वह देख सकता है, उसकी बात सुन सकता है और उसे छू सकता है। हमारे कहने का अभिप्राय यह है कि अराजकवादी तो व्यक्ति के सुख तथा हित-साधनो के लिए चिन्तित है, और साम्यवादी को एक शासन-प्रणाली की फिक्र है।

क्रोपाटकिन के राजनैतिक सिद्धान्तो का स्रोत है उनकी वैज्ञानिक तथा प्रेमपूर्ण विचार-धारा मे। उन्होने अपने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'सघर्ष नही, सहयोग' मे डार्विन के जीवन-सग्राम-सम्बन्धी उस सिद्धान्त का खडन किया है, जिसमे प्रकृति को खूख्वार सिद्ध किया गया है और जिसमे यह बात साबित करने की चेष्टा की गई है कि प्रत्येक प्रकार का विकास जीवन-सग्राम का परिणाम है, एक-दूसरे से प्रतिद्वन्द्विता करने का नतीजा है और "प्रत्येक को सम्पूर्ण समूह से युद्ध करना अनिवार्य है।" इस सिद्धान्त के मुकाबले मे क्रोपाटकिन ने अपना यह सिद्धान्त उपस्थित किया है कि विकास पारस्परिक सहायता, सहयोग और सम्मिलित सामाजिक उद्योग

का परिणाम है। क्रोपाटकिन लिखते है, "जीवो मे सबसे अधिक समर्थ वे ही होते है, जिनमे सबसे अधिक सहयोग-प्रवृत्ति पाई जाती है और इस प्रकार सहयोग-प्रवृत्ति विकास का मुख्य कारण है, क्योकि प्रत्यक्ष रूप से वह उस जीव-श्रेणी के हित की साधक है, क्योकि वह उसकी शक्ति के क्षय को रोकती है और अप्रत्यक्ष रूप से वह उसकी बुद्धिमत्ता की उन्नति के लिए सुविधा उत्पन्न करती है।"

उस सामाजिक भावना से, जो सब चीजो को विकसित करती है, प्रिंस क्रोपाटकिन ने अपना व्यक्तिगत स्वाधीनता का सिद्धान्त निकाला है। उनका कहना है कि व्यक्तिगत स्वाधीनता के अबाध प्रयोग से सम्पूर्ण मानव-समूह की सेवा का भाव उत्पन्न होता है। उनके शब्द सुन लीजिए —

"अपने दु ख को प्रकट करने के लिए जितने आसुओ की हमे जरूरत है, उनसे कही अधिक आसू हमारे पास है, और जितना अधिक आनन्द न्याय-पूर्वक हम अपने जीवन के कारण मना सकते है, उससे कही अधिक आनन्द मनाने की शक्ति हममे विद्यमान है। एकाकी आदमी क्यो दु खित और अशान्त रहता है ? उसके दु ख तथा अशान्ति का कारण यही है कि वह दूसरो को अपने विचारो तथा भावनाओ मे शामिल नही कर सकता। जब हमे कोई बडी भारी खुशी होती है, उस समय हम दूसरो को यह जतला देना चाहते है कि हमारा भी अस्तित्त्व है, हम अनुभव करते है, प्रेम करते है, जिन्दा रहते है, जीवन-संग्राम करते है और युद्ध भी करते है। उल्लास-मय जीवन ही विकास की ओर दौडता है। यदि किसीमे कार्य करने की शक्ति है, तो कार्य करना उसका कर्तव्य हो जाता है। 'नैतिक कर्तव्य' या धर्म को यदि उसके तमाम रहस्यवादी झाड-झखाड से अलग कर दिया जाय, तो वह इस सूत्र से सम्बद्ध हो जाता है— 'जीवन का विस्तार जीवन को कायम रखने की अनिवार्य शर्त है।' क्या कोई पौधा अपनेको फूलने से रोक सकता है ? कभी-कभी किसी पौधे के फूलने का अर्थ होता है उसकी मृत्यु, पर कोई मुजायका नही, उसका जीवन-रस तो ऊपर की ओर चढता है। यही हालत उस मनुष्य की होती है, जो ओज तथा शक्ति से परिपूर्ण होता है। वह अपने जीवन का विस्तार करता है। वह विना हिसाव-

किताव के दान करता है, क्योकि विना दान के उसका जीवन सम्भव नही। यदि इस दान-कार्य मे उसे अपना जीवन भी देना पडे, जैसेकि फूल के खिलने से उनका अन्त हो जाता है, तो कोई चिन्ता नही, क्योकि जीवन-रस तो --यदि वह जीवन-रस है- ऊपर को चढेगा ही।"

इस तर्क द्वारा प्रिस क्रोपाटकिन अपने नीतिशास्त्र पर पहुचते है— उस नीति-शास्त्र पर, जो किसीपर शासन नही चलाता, जो व्यक्तियो का निर्माण किसी खास मॉडल पर करने मे विश्वास नही रखता और जो धर्म, कानून या सरकार के नाम पर व्यक्तियो का अग-भग नही करना चाहता। प्रिस क्रोपाटकिन का नीति-शास्त्र व्यक्ति को पूर्ण स्वाधीनता प्रदान करता है। इसी नैतिकता के आधार पर उन्होने एक ऐसे समाज की कल्पना की है, जिसमे किसी प्रकार का वाहरी नियन्त्रण न होगा, जिसमे न कुछ पूजीवाद होगा ओर न कोई सरकार और जिसमे प्रत्येक मनुष्य को अपनी रुचि का कार्य चुनने और करने का अधिकार होगा। समाज की भिन्न-भिन्न आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए स्वाधीन समूह होगे और इन समूहो के सघ होगे। यह बतलाने की आवश्यकता नही कि वर्गमन की फिलासफी ओर सिण्डीकैलिज्म के प्रयोगो का स्रोत प्रिस क्रोपाटकिन की शिक्षाओ मे ही पाया जाता है।

क्रोपाटकिन अपने प्रतिपादित नीति-शास्त्र का अक्षरश पालन करते है। वह बडी सादगी के साथ स्वाधीनतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करते है। उनके चेहरे पर प्रेमपूर्ण मुस्कराहट सदा खेलती रहती है। न उन्हे रुपये-पैसे की अभिलाषा है, न किसी पद-प्रतिष्ठा की। उन्होने रूस मे अपनी वडी जागीरो को लात मारकर लुक-छिपकर इधर-उधर भटकने-वाले क्रान्तिकारी का निर्धनतापूर्ण जीवन स्वीकार किया और अपने वैज्ञानिक लेखो से जीविका चलाना उचित समझा। उन्होने अपने 'राज-कुमार' पद को तिलाजलि देकर गरीब मजदूरो की सेवा का व्रत ग्रहण किया, और आज वह अन्तर्राष्टीय मजदूर-सभा तथा उनके आन्दोलनो के केन्द्र

सम्पादन करते थे, निकलवा दिया। रूसी सरकार ने उन्हे चालाकी से पकडवा मगवाने का षड्यन्त्र भी किया, पर वह सफल नही हुई। सन् १८८७ मे जब क्रोपाटकिन ने अपना ग्रन्थ छपाया, तो उस ग्रथ की सारी प्रतिया उडा दी गई और प्रकाशक महोदय का कारोबार भी रहस्यपूर्ण ढग से एक साथ वन्द हो गया।

हा, एक बार रूसी सरकार उनको दण्ड दिलवाने मे सफल हुई। सन् १८८२ मे लायन्स मे जो वलवा हुआ था, उसमे फ्रासीसी सरकार द्वारा वह पकडे गये। ऐसा विश्वास किया जाता है कि ये वलवे रूसी खुफिया पुलिसवालो ने कराये थे। क्रोपाटकिन उन दिनो लन्दन मे थे। यह बात ध्यान देने योग्य है कि क्रोपाटकिन ने न तो तव और न पहले कभी हिसात्मक उपायो का समर्थन किया था, पर उनपर यह इलजाम लगाया गया कि वे वलवे उन्हीकी प्रेरणा से हुए। वह फ्रास वापस गये और उन्हे पाच वर्ष का कारावास, दस वर्ष पुलिस की निगरानी तथा अन्य कई दण्ड दिये गए। रूसी सरकार फूली न समाई और उत्साह मे आकर मुकदमा चलानेवालो को पदक दे डाले। उसकी यह भूल विघातक सिद्ध हुई। परिणाम यह हुआ कि सम्पूर्ण यूरोप मे क्रोपाटकिन के छुटकारे के लिए आन्दोलन उठ खडा हुआ। फ्रासीसी सरकार अपने हठ पर कायम रही, पर उसने क्रोपाटकिन के लिए जेल मे एक सहूलियत कर दी, यानी एक खेत उन्हे अपने कृपि-सम्बन्धी प्रयोगो के लिए दे दिया। वहा क्रोपाटकिन ने जो प्रयोग किये, उन्होने कृषि-जगत मे एक क्रान्ति ही उत्पन्न कर दी। उन प्रयोगो के आधार पर ही आगे चलकर उन्होने 'फील्ड, फैक्टरीज एण्ड वर्कशाप' नामक किताव लिखी थी। क्रोपाटकिन के छुटकारे के लिए आन्दोलन निरन्तर जारी रहा। अन्त मे जाकर फ्रेंच सरकार के एक उच्च पदाधिकारी को यह वात खुलेआम स्वीकार करनी पडी कि "क्रोपाटकिन के छुटकारे मे कुछ राजनैतिक कारण वाधक है।" असली भेद आखिर जाहिर ही हो गया। प्रत्येक आदमी की जवान पर एक ही वात थी—'क्या रूसी सरकार को खुश करने के लिए ही क्रोपाटकिन को जेल मे रखा जायगा?' जव फ्रास की सरकार को यह चुनौती दी गई, तो उसके पैर उखड गये और तीन वर्ष जेल मे रहने के वाद क्रोपाटकिन छोड दिये गए।

रूसी सरकार ने इस दुःखदायक समाचार को सुनकर क्या किया, सो भी सुन लीजिए। इस घटना के बाद सेन्ट पीटर्सबर्ग स्थित फ्रासीसी राजदूत के साथ ऐसा दुर्व्यवहार किया गया कि वह इस्तीफा देकर पेरिस लौट आया।

× × ×

फिर मैने अपने मित्र से पूछा, "कहिये जनाब, अब आपकी राय क्रोपाटकिन के विषय मे क्या है?" मैने उनका परिचय क्रोपाटकिन से करा दिया था, और जब हम उनसे मिलकर लौटे, तब भी उन्हे चाय के प्याले मे चम्मच चलाते हुए छोड आये थे।

मेरे मित्र ने उत्तर दिया, "यह तो मै कह नही सकता कि क्रोपाटकिन दिग्गज महापुरुष है या नही, पर इतना जरूर कहूगा कि वह महात्मा है।"

—ए० जी० गार्डनर

पुनश्च:

४२ वर्ष विदेश मे रहकर सन् १९१७ मे रूस की राज्य-क्रान्ति के बाद क्रोपाटकिन अपनी मातृभूमि को लौटे। जनता ने उनका हृदय से स्वागत किया। जिस ट्रेन मे वह रूस मे यात्रा कर रहे थे, उसको प्रत्येक स्टेशन पर लोगो की भीड घेर लेती थी और 'क्रोपाटकिन आ गये", "क्रोपाटकिन आ गये"—ये शब्द हर आदमी की जबान पर थे।

रूस मे क्रान्ति हो जाने के बाद जब लेनिन का शासन प्रारम्भ हुआ, उन दिनो क्रोपाटकिन मास्को के निकट डिमिट्रोव नामक ग्राम मे रहते थे। क्योकि उनका स्वास्थ्य खराब था, वह ७५ वर्ष के हो चुके थे, तथापि उन्हे उतना ही भोजन सोवियत सरकार की आज्ञा की ओर से दिया जाता था, जितना बूढे आदमियो के लिए नियत था। उन्होने एक गाय रख छोडी थी और अपनी स्त्री तथा पुत्री के साथ वह इस कठिन परिस्थिति मे रहा करते

थे। यार लोगो ने उनके गाय रखने पर भी एतराज किया। जरा कल्पना कीजिए, जिसने अपने देश की स्वाधीनता के लिए पचास वर्ष तक कार्य किया, उसके लिए वुढापे मे बीमारी की हालत मे एक गाय रखना भी आक्षेप का विषय समझा गया।

क्रोपाटकिन तो सरकारी शासन-प्रणाली के खिलाफ थे, इसलिए सरकार से शिकायत करना उनके सिद्धान्त के विरुद्ध था, और शिकायत उन्होने की भी नही, पर क्रोपाटकिन के कुछ मित्रो को यह बात बहुत अखरी, और उन्होने स्थानीय सोवियत के अधिकारियो से शिकायत कर ही दी, पर उसका परिणाम कुछ न निकला। आखिरकार यह ख़बर लेनिन के कानो तक पहुचाई गई। लेनिन क्रोपाटकिन के प्रशसक थे। उन्होने तुरन्त स्थानीय सोवियत को हुक्म लिख भेजा कि क्रोपाटकिन के भोजन की मात्रा वढा दी जाय और उन्हे गाय रखने दी जाय। क्रोपाटकिन की पुत्री के पास लेनिन के हाथ का लिखा हुआ यह पर्चा अब भी मौजूद है।

यह कहने की आवश्यकता नही कि लेनिन और प्रिंस क्रोपाटकिन के सिद्धान्तो मे जबरदस्त मतभेद था। एक लेखक ने लिखा है—"यद्यपि क्रोपाटिकन बोल्शेविक लोगो के द्वारा क्रान्ति का जो विकास हो रहा था, उसमे व्यावहारिक रूप से कोई भाग नही ले सकते थे, तथापि उन्हे इस बात की चिन्ता अवश्य थी कि बोल्शेविक लोग दमन की जिस नीति का आश्रय ले रहे थे, वह स्वय क्रान्ति के लिए हानिकारक थी और मनुष्यता की दृष्टि से भी वह अनुचित थी। लेनिन ने अपने एक मित्र के द्वारा, जो प्रिंस क्रोपाटकिन के भी मित्र थे, क्रोपाटकिन के पास यह सन्देश भेजा कि मैं आपसे मिलने के लिए उत्सुक हू और आपसे बातचीत करने के लिए आपके ग्राम डिमिट्रोव भी आ सकता हू। क्रोपाटकिन राजी हो गये और दोनो की बातचीत हुई। यद्यपि लेनिन सहृदयतापूर्वक मिले और उन्होने क्रोपाटकिन के विचारो को सहानुभूति के साथ सुना भी, पर इस बातचीत का परिणाम कुछ भी न निकला।"

प्रिंस क्रोपाटकिन सर्वोच्च कोटि के आदर्शवादी थे। वह अपने सिद्धान्तों पर समझौता करना जानते ही न थे। सोवियत सरकार ने क्रोपाटकिन से

कहा था कि वह अपनी पुस्तक 'फ्रास की राज्य-क्रान्ति' का अधिकार बहुत-सा रुपया लेकर सरकार को दे दे, क्योकि सोवियत सरकार उसे अपने स्कूलो मे पाठ्य-पुस्तक की भाति नियत करना चाहती थी, पर उन्होने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया, क्योकि वह एक सरकार की ओर से आया था। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी ने उन्हे भूगोल-शास्त्र की अध्यापकी का काम करने के लिए निमन्त्रण दिया; पर साथ-ही-साथ यह भी कह दिया था कि हमारे यहा अध्यापक होने के वाद आपको अपने अराजकवादी सिद्धान्तो का प्रचार बन्द कर देना पडेगा। आपने इस नौकरी को घता बता दी। अराजकवाद के प्रचारार्थ उन्होने जो कार्य किया था, उसके वदले मे एक पैसा भी उन्होने किसीसे नही लिया। जब वह अत्यन्त गरीबी की हालत मे इगलैण्ड मे रहते थे, उन दिनो लोगो ने उन्हे दान देना चाहा, किसी-किसीने उन्हे रुपया भी उधार देना चाहा, पर उन्होने उसे भी नामजूर कर दिया। घोर आर्थिक सकट के समय मे भी जो लोग उनके पास आते थे, उन्हे वह जो-कुछ उनके पास होता था, उसमे से दे देते थे।

एक वार सुप्रसिद्ध करोडपति ऐण्ड्रू कारनेगी ने क्रोपाटकिन को अपने घर पर किसी पार्टी मे निमन्त्रण दिया था। क्रोपाटकिन ने उस निमन्त्रण-पत्र के उत्तर मे लिखा—"मै उस आदमी का आतिथ्य स्वीकार नही कर सकता, जो किसी भी अश मे मेरे अराजकवादी वन्धु बर्कमेन को जेल मे रखने के लिए जिम्मेदार है।"

पाठक पूछ सकते है, क्रोपाटकिन को अपने अन्तिम दिन कैसे व्यतीत करने पडे ? ७५ वर्ष की उम्र मे वह अपनी 'नीति-शास्त्र' नामक अन्तिम पुस्तक लिख रहे थे। कितावो के ख़रीदने के लिए उनके पास पैसा नही था। जब कभी मित्र लोग थोडा-सा पैसा भेज देते, तो एक-आध आवश्यक पुस्तक वह खरीद लेते। पैसे की कमी के कारण ही वह कोई क्लर्क या टाइ-पिस्ट नही रख सकते थे, इसलिए अपने ग्रथ की पाण्डुलिपि तैयार करने का और चीजो के नकल करने का काम उन्हे ख़ुद ही करना पडता था। भोजन भी उन्हे पुष्टिकर नही मिल पाता था, जिससे उनकी कमज़ोरी वढती जाती थी और एक धुधले दीपक की रोशनी मे उन्हे अपने ग्रन्थ की रचना करनी पड़ती थी।

यह बर्ताव किया गया स्वदेश मे उस महापुरुष के साथ, जिसने लाखो-की धन-सम्पत्ति पर लात मारकर अत्यन्त गरीबी की हालत मे बढईगीरी तथा जिल्दबन्दी करके अपनी गुजर करना उचित समझा, जार के पार्षद और गवर्नर-जनरल के सेक्रेटरी होने के बजाय जिसने किसानो तथा मजदूरो का सखा होना अधिक गौरवयुक्त माना, ससार के वैज्ञानिको मे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान होने पर भी जिसने वैज्ञानिक अनुसन्धान के कार्य को भारतवर्ष के एकान्तवासी मोक्षाभिलाषी सन्यासियो की स्वार्थ-भावना के समान समझकर तिलाजलि दे दी और अराजकवाद के प्रचार के लिए जिसने अपने जीवन को बीसियो बार खतरे मे डाला, जिसने न केवल अपने देश रूस की स्वाधीनता के लिए, वरन् इग्लैण्ड और फ्रास आदि देशो के मजदूरो के सगठन के लिए भी अपनी शक्ति अर्पित कर दी, जो ४२ वर्ष तक अपने देश से निर्वासित रहा, जो दरअसल ऋषि था, द्रष्टा था और और जिसके सिद्धान्त कभी मानव-समाज के स्थायी कल्याण के कारण बनेगे।

इसमे किसीको दोष देना अनुचित होगा, क्योकि शासन के मोह मे फसकर मानव अपनी मनुष्यता खोकर मशीन बन ही जाते है। सच है——

'प्रभुता पाइ काहि मद नाही।'

८ फरवरी, सन् १९२१ को ७८ वर्ष की उम्र मे प्रिंस क्रोपाटकिन का देहान्त हो गया। सोवियत सरकार ने कहा कि हम सरकार की ओर से उनकी अन्त्येष्टि-क्रिया करना चाहते है, पर उनकी पत्नी तथा लडकी ने इसे अस्वीकार कर दिया। अराजकवादियो ने मजदूर-सघ के भवन से उनके शव का जुलूस निकाला। बीस हजार मजदूर साथ-साथ थे। सर्दी इतनी जोरो की थी कि बाजे तक बर्फ के कारण जम गये। लोग काले झडे लिये हुए थे और चिल्ला रहे थे——"क्रोपाटकिन के साथी-सगियो को——अराजकवादी बन्धुओ को—— जेल से छोडो।"

सोवियत सरकार ने डिमिट्रोव का छोटा-सा घर क्रोपाटकिन की विधवा पत्नी को रहने के लिए दे दिया और उनका मास्कोवाला मकान क्रोपाटकिन के मित्रो तथा भक्तो को दिया, जहा उनके ग्रन्थ, कागज-पत्र, चिट्ठिया

तथा अन्य वस्तुए सुरक्षित है। क्रोपाटकिन के जो मित्र तथा भक्त ससार पाये जाते है, उनकी सहायता से इस सग्रहालय का सचालन हो रहा है।

स्वाधीनता का यह अद्वितीय पुजारी युग-युगान्तर तक अमर रहेगा। उसका व्यक्तित्व हिमालय के सदृश महान और आदर्शवादिता गौरीशकर शिखर की तरह उच्च है।

—बनारसीदास चतुर्वेदी

विषय-सूची

खड ६ पश्चिमी यूरोप २२७-३०८

एक क्रांतिकारी
की
आत्म-कथा

क्रोपाटकिन-दम्पति

खण्ड १

बाल्यकाल

: १ :

मेरी जन्म-भूमि

मास्को शहर का विकास धीरे-धीरे हुआ है और आज भी उसके कई हिस्से ऐसे है, जिनपर विभिन्न युगो मे घटित इतिहास की घटनाए अपनी छाप छोड गई है। शहर के ट्रान्स मोस्क्वा नदीवाले हिस्सो मे चोडी सडके और नीरस मटमैले रग के मकान, जिनके फाटक दिन-रात बन्द रहते है, सदा ही व्यापारी वर्ग का एकान्त निवास तथा कठोर, रूढिवादी स्वेच्छाचारियो का गढ रहे हे। क्रैमल-किले का हिस्सा अब-तक शासक और पुरोहितवर्ग का पीठ है। उसके सामने का विशाल मैदान, जिसमे हजारो दूकाने और कारखाने है, हमेशा ही व्यापार का अड्डा रहा है और आज भी सम्पूर्ण रूस का व्यापार वही से होता है। त्वर्सकाया और स्मिथ पुलवाले हिस्से मे सैकडो वर्षो से शानदार दूकाने है और मजदूरो के निवास-स्थान प्लूशिका तथा डोरोगोमिलोव्का अवतक शोर और भम्भड की जगह बनी है, जैसी वे जार के जमाने मे थी! शहर का प्रत्येक भाग अपने मे छोटी-सी दुनिया है। उसकी अपनी अलग बनावट है और निराली ही जिदगी है।

क्रैमल के पीछे—दो गोलाकार सडको के बीच—साफ, शान्त और टेढी-मेढी चक्करदार गलियोवाला हिस्सा है। आज भी इसका नाम सामन्तो का मुहल्ला है। शायद इससे अधिक साफ तथा निराला शहर का प्रतिनिधि ओर कोई हिस्सा नही।

लगभग ५० वर्ष पहले इस हिस्से मे मास्को के पुराने सरदार रहते थे। वे धीरे-धीरे खत्म हो गये। पीटर प्रथम के युग के पहले उनके नाम अक्सर इतिहास मे आते है। बाद मे जब पीटर प्रथम ने सब वर्गो के लोगो को आश्रय देना प्रारम्भ किया तो वे वहा से हट गये। सेण्ट पीटर्सबर्ग के दरबार मे अपने लिए कोई स्थान न देखकर पुराने सरदार लोग या तो मास्को के उपरोक्त सामन्तो के मुहल्ले मे बस गये या राजधानी के इर्दगिर्द देहातो मे अपनी सुन्दर जागीरो मे चले गए। वहा से ये सरदार शासन के नए पदाधिकारियो को, "जिनके वश का कुछ पता नही", अन्दरूनी ईर्ष्या तथा घृणा की दृष्टि से देखते थे।

अपनी युवावस्था मे उनमे से अधिकाश लोग राज्य मे प्रधानत सेना मे नौकरी करते थे, लेकिन किसी-न-किसी कारणवश बिना किसी ऊचे पद को प्राप्त किये वहा से चले आये थे। उनमे से कुछ अपने शहर मे शासन-पद, वह लगभग अवैतनिक होता था, प्राप्त करने मे सफल हो जाते। उन्हीमे से मेरे पिताजी थे। अपनी नौकरी के दौरान ये सरदार चाहे रूस मे कही भी रहे हो, लेकिन अपने जीवन के अन्तिम दिन इसी सामन्ती मुहल्ले मे अपने मकान मे बिताते थे और उसी गिर्जाघर की छाया मे रहते थे, जिसमे उनको दीक्षित किया गया था और जिसमे उनके माता-पिता को दफनाने के समय भी अन्तिम प्रार्थनाए की गई थी।

मास्को के कोलाहलमय व्यावसायिक हिस्सो से अलग, इस शान्त भाग मे सब मकानो की शकल-सूरत एक-सी थी। उनमे से अधिकाश लकडी के बने थे। उनकी छतो पर गहरे हरे रग की टीने थी। बाहर दालान आदि था। सब मटमैले रग से पुते थे। प्राय सारे मकान केवल एक मजिल के थे, दूसरी मजिल मकान के पिछवाडे मे ही बनाई जाती—मकान के भीतर बडा आगन होता, जिसके चारो ओर दो कमरे होते—जो रसोई, अस्तबल, नौकरो और घोडो के लिए इस्तेमाल किये जाते थे। बाहर एक बडा फाटक होता, जिसपर ताबे की तख्ती लगी रहती। उस तख्ती पर लिखा रहता—मकान-मालिक का नाम और उसका पद—लेफ्टीनेट, कर्नल अथवा कमान्डर। शायद ही मेजर जनरल जैसा ऊचा पद किसीपर लिखा मिलता। अगर इस हिस्से मे कोई ज्यादा शानदार

मकान होता और उसके सामने लोहे के छज्जे-फाटक होते तो उस मकान की तांबे की प्लेट पर अवश्य ही किसी बडे व्यापारी अथवा धनाढ्य नागरिक का नाम मिलता। ये लोग इस हिस्से मे बिना बुलाये घुस आये थे और इसलिए उनके पडोसी उन्हे उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे।

इन सडको पर कोई बडी दूकान नही है, लकडी के मकानो मे एकाध साग-भाजी की या छोटी दूकान भले ही मिल जाय। लेकिन सड़क के कोने पर सिपाही का स्थान अवश्य था। दिन के वक्त यह सिपाही बल्लम लिये खडा रहता। जैसे ही कोई अफसर उधर होकर निकलता, वह उसे सलामी देता। शाम होने पर वह भीतर चला जाता और जूते गाठने या आसपास के मजदूरो के काम की कोई चीज तैयार करने मे लग जाता।

इस हिस्से मे जीवन बडा शान्त था—कम-से-कम बाहर से तो ऐसा ही मालूम होता था। सुवह सडको पर कोई भी नही दीख पडता था। दोपहर के वक्त बच्चे अपने फ्रासीसी अभिभावको अथवा जर्मन आयाओ के साथ बगीचो मे घूमते दिखाई देते थे। बाद मे तीसरे पहर महिलाए दो घोडो की गाडियो मे निकलती, पीछे उनका नौकर खडा रहता, या पुराने जमाने की चार घोडो की बग्घियो मे निकलती। रात को अधिकाश मकानो मे खूब रोशनी होती और चूकि उस जमाने मे पर्दे नही डाले जाते थे, इसलिए राहगीर उन्हे देखकर उनकी खूब प्रशसा करते थे। विभिन्न 'वाद' तथा 'सम्मतिया' उस समय तक चालू नही हुई थी, अभी वे दिन वहुत दूर थे जव 'पिता-पुत्रो' के बीच मे सघर्ष हो, जिसके फलस्वरूप या तो कोई दुखान्त दुर्घटना हो या राज्य के सिपाही रात को मकान घेरे। पचास वरस पहले इस तरह की किसी चीज की कल्पना नही हो सकती थी। सर्वत्र शान्ति थी। कम-से-कम सतह पर तो ऐसा ही प्रतीत होता था।

इसी सामन्ती मुहल्ले मे सन १८४२ मे मेरा जन्म हुआ था और यही मेरे वचपन के पन्द्रह साल वीते। इसी बीच मेरे पिताजी ने एक मकान वेच दिया। दूसरा ले लिया। उसे भी वेच दिया। वहुत वरस किराए के मकानो मे रहे और अन्त मे एक तीसरा मकान खरीद लिया। लेकिन

हम लोग रहे इसी मुहल्ले मे और इसी गिर्जाघर के नजदीक। केवल गर्मियो मे अपनी जागीर के मकान मे चले जाते थे।

: २ :

माता की मृत्यु

मकान मे कोने के बडे कमरे मे साफ सफेद बिस्तरे पर मा लेटी हुई है। हमारी छोटी कुर्सिया और मेजे नजदीक रखी हुई है। मेजो पर सुन्दर काच के बर्तनो मे अच्छी मिठाइया और मुरब्बे रखे हुए है। एक अजीब समय हम सब बच्चो को इस कमरे मे लाया जाता है। मेरे जीवन की यही सबसे पहली धुधली स्मृति है।

हमारी मा तपेदिक से बीमार थी। उनकी अवस्था केवल ३५ वर्ष की थी। हमसे सदैव के लिए विदा होने के पूर्व हमे प्यार करने के लिए--हमारे साथ स्वय कुछ प्रसन्नता अनुभव करने के लिए--उन्होने हमे बुलाने की इच्छा प्रकट की थी। उन्होने हमारे लिए यह छोटी-सी दावत अपनी चारपाई के नजदीक ही कराई थी, क्योकि अब वह चारपाई नही छोड सकती थी। मुझे उनके पीले और पतले चेहरे तथा उनकी बडी भूरी आखो का स्मरण अभी तक है। उन्होने हमे प्यार किया, खाने को कहा और अपनी चारपाई पर बुलाया और यकायक रोने और खासने लगी। हम लोगो से कह दिया गया कि हम चले जाय।

कुछ दिनो बाद हमे, मुझे और मेरे भाई अलैक्जैण्डर को, इस बडे मकान से नजदीक एक छोटे-से कमरे मे ले जाया गया। कमरो मे वसन्त की सुहावनी धूप थी, लेकिन हमारी जर्मन दाई मदाम बर्मन तथा रूसी दाई उलियाना ने हमे सोने के लिए कहा। उनके गाल आसुओ से भीगे हुए थे ओर वे हमारे लिए शोक की सूचक काली कमीजे सी रही थी। किसी अनहोनी घटना के भय से हमे नीद नही आई और हम उनकी फुसफुसाहट सुनते रहे। वे हमारी मा के विषय मे कुछ कह रही थी, जिसे हम समझ नही पाते थे। हम लोग अपने विस्तरो से निकल आये ओर पूछने लगे, "मा कहा है? मा कहा है?"

दोनो दाइयो की हिचकी वध गई और हमारे घुघराले वालो पर हाथ फेरकर कहने लगी, "वेचारे अनाथ !" अन्त मे उलियाना अपने को न रोक सकी और ऊपर की ओर हाथ दिखाकर कहने लगी, "तुम्हारी मा वहा गई—आकाश मे—देवताओ के पास।"

"आकाश को कैसे गई, क्यो गई ?" हम पूछते रहे।

१८४६ की अप्रैल का महीना था। मेरी उम्र केवल साढे-तीन साल की थी और मेरे भाई साशा ने पाचवा वर्ष पूरा नही किया था। हमे पता नही, हमारे वडे भाई और वहन—निकोलस और हेलेन—इस समय कहा गये थे, शायद वे स्कूल मे थे। वे दोनो साथ-साथ रहते थे और हम उन्हे कम ही जान पाये। इस तरह अलैक्जैण्डर और मै, मदाम बर्मन और उलियाना की छत्रच्छाया मे इस छोटे-से मकान मे रहे। वृद्ध जर्मन महिला का कोई आत्मीय नही था। उसने हमारी मा का स्थान ले लिया। उसने अच्छे-से-अच्छे ढग से हमारा पालन-पोषण किया। अक्सर हमे वह खिलौने खरीद देती और जब कभी एक जर्मन बुड्ढा बिस्कुट वेचने आता, जो शायद इस महिला की भाति इस दुनिया मे निराश्रित और अकेला ही था, तो बहुत-से बिस्कुट खिलाती। हम अपने पिताजी को कम ही देख पाते। अगले दो वर्षो की मुझे कोई विशेष स्मृति नही है।

: ३ :

क्रोपाटकिन-परिवार

हमारे पिताजी को अपने वश का बडा अभिमान था और अक्सर गम्भीरतापूर्वक अपने अध्ययन के कमरे मे टगे एक पट्ट को दिखाते थे। पट्ट के ऊपर हमारे वश के, स्मोलेस्क राज के, अस्त्र थे। उसके ऊपर मोनोमोक्स का ताज था और उसके ऊपर लिखा था कि हमारे कुटुम्ब का प्रारम्भ रास्टी-स्लाव म्सटिसलाविच 'वीर' (यह नाम रूसी इतिहास मे उतना ही प्रसिद्ध

है जितना कीफ के महान राजकुमार का) के पौत्र से प्रारम्भ हुआ था और हमारे पूर्वज स्मोलेस्क के राजकुमार थे।

हमारे पिताजी अक्सर कहते थे, "इसे खरीदने मे मुझे तीन सौ रूबल खर्च करने पडे।" अपने समय के अधिकाश आदमियो की भाति उनका रूसी इतिहास का ज्ञान बहुत ही कम था और उनकी दृष्टि मे उस पट्ट का महत्व उसके ऐतिहासिक वस्तु होने की अपेक्षा उसके मूल्य मे था।

वास्तव मे हमारा वश बहुत पुराना है। जब रोमानोफ मास्को की गद्दी पर बैठे और उन्होने रूसी राज्य का सघटन प्रारम्भ किया तो हम लोग भी रूरिक के वशजो की भाति पिछड गये। मेरे पितामह तथा प्रपितामह अपनी युवावस्था मे ही फौजी नौकरी छोडकर अपनी जागीरो पर चले आये थे। इन जागीरो मे से एक प्रमुख जागीर उरुसोवो मे थी। इसके विषय मे कहा जा सकता है कि वह अपनी सुन्दरता, घने जगल, टेढी-मेढी, नदियो और लम्बे हरे मैदानो से किसीको भी आकर्षित कर सकती थी। हमारे पितामह ने, जब वह केवल लेफ्टीनेट थे, नौकरी छोडी और उरुसोवो चले आये। वहा वह इस जागीर को उन्नत करने और नई जागीरे खरीदने मे लग गए।

शायद हमारी पीढ़ी भी यही करती, लेकिन हमारे पितामह ने राजकुमारी गैगरीन से शादी कर ली, जो बिल्कुल भिन्न कुटुम्ब की थी। उनके भाई रगमच के अत्यधिक शौकीन के रूप मे विख्यात थे। वह अपनी अलग ही नाटक-मडली रखते थे और अपने शौक मे इस हद तक आगे बढे कि अपने सम्बन्धियो की निन्दा की परवा किये बिना एक गुलाम लडकी—सैमयोनोवा—से शादी कर ली। सैमयोनोवा रूस मे नाटकीय कला की प्रणेता थी और निश्चय ही रूसी रगमच की अत्यन्त आकर्षक अभिनेत्री थी। सम्पूर्ण 'मास्को की शर्म' के बावजूद वह शादी के बाद भी रगमच पर अभिनय करती रही।

मुझे मालूम नही कि हमारी दादी मे अपने भाई की भाति कलात्मक और साहित्यिक रुचि थी या नही। मुझे उनकी याद उस समय की है जब उन्हे लकवा मार गया था और वह बहुत ही धीमे बोल पाती थी। लेकिन यह निश्चित है कि अगली पीढी मे साहित्य की ओर अभिरुचि हमारे कुटुम्ब

की एक विशेषता हो गई। राजकुमारी गैगरीन के एक पुत्र साधारण कोटि के रूसी कवि थे ओर उनकी एक छोटी-सी कविता-पुस्तक भी प्रकाशित हुई थी। मेरे पिताजी इस कारण अत्यन्त लज्जित थे!

पिताजी निकोलस प्रथम के आदर्श अफसर थे। न तो वह युद्ध-प्रिय थे और न उन्हे फौजी जीवन पसन्द था। मुझे शक है कि उन्होंने अपने जीवन की एक रात भी फौज के साथ काटी हो या एक भी लडाई मे भाग लिया हो। लेकिन निकोलस प्रथम के शासन-काल मे ये सब चीजे गोण थी। उस युग मे आदर्श फौजी अफसर वह व्यक्ति था, जो फौजी पोशाक का अत्यधिक प्रेमी हो और बाकी सब तरह के लिबासो को घृणा की दृष्टि देखता हो ओर उसके सिपाही अपनी टागो और बन्दूको से नटो जैसे खेल कर सके (बन्दूक की सलामी देते समय बन्दूक की लकडी को तोड देना उस जमाने का मशहूर खेल था) और जो परेड के वक्त अपने सिपाहियो को सीधी कतार मे गुड्डो की तरह निश्चल खडा कर सके। एक बार ग्राड ड्यूक मिखाइल ने फोज की एक टुकडी की एक घटे तक फौजी सलामी लेने के बाद कहा था, "बहुत सुन्दर—ये लोग सिर्फ सास लेते है।"

यह सच है कि पिताजी ने १८२८ के तुर्की के युद्ध मे भाग लिया था, लेकिन वह सदा प्रधान सेनापति के अधीन उसके नजदीक बने रहे। यदि हम सब बच्चे उस समय, जब वह अत्यन्त प्रसन्न होते थे, उनसे युद्ध के विषय मे प्रश्न पूछते थे तो उनके पास सुनाने को केवल एक घटना थी, यानी जब वह और उनका नौकर फ्रौले कुछ जरूरी कागज़ लेकर एक उजडे हुए तुर्की गाव मे घोडो पर जा रहे थे तो सैकडो तुर्की कुत्तो ने उनको तग किया और उन्हे उन जानवरो से छुटकारा पाने के लिए तलवारे इस्तेमाल करनी पडी।

मे ही घरो से लपटे निकलने लगी और उनमे से एक घर मे एक बालक रह गया। बच्चे की मा बुरी तरह चिल्ला रही थी। इस पर फ्रौल, जो सदा अपने मालिक के साथ रहता था, लपटो मे घुस गया और बच्चे को बचा लाया। प्रधान सेनापति यह सब देख रहे थे। उन्होने तुरन्त पिताजी को बहादुरी का पदक दे दिया। "पिताजी", हम सब आश्चर्यचकित होकर कहते, "लेकिन बच्चे को बचाया तो फ्रौल ने था!"

"उससे क्या हुआ!" पिताजी अत्यन्त सहज भाव से कहते, "क्या वह मेरा सेवक नही था? सब एक ही बात है।"

पोलैण्ड की क्रान्ति के दौरान पिताजी ने १८३१ के युद्ध मे भी भाग लिया था और वहा वारसा मे एक फौज की टुकडी के कमाण्डर जनरल सुलीमा की लडकी से उनका परिचय और प्रेम हो गया। शादी बडी शान-शौकत से लेजिएनकी के राजमहल मे हुई और प्रान्त के गवर्नर काउण्ट पेस्कीविच दूल्हा के धर्म-पिता बने थे। पिताजी सुनाते थे, "लेकिन तुम्हारी मा कुछ सम्पत्ति नही लाई थी।"

हमारी मा निस्सन्देह समय के देखते एक असाधारण महिला थी। उनकी मृत्यु के कई वर्ष बाद अपने देहाती मकान के एक कोने मे मुझे उनके सुन्दर हस्ताक्षरो मे लिखे कागजो का एक पुलिन्दा मिला। इसमे उनकी डायरिया थी, जिनमे उन्होने जर्मनी के सुन्दर दृश्यो का वर्णन किया था। कुछ पुस्तके थी, जिन्हे उन्होने जब्त रूसी कविताओ से भर दिया था। इस सग्रह मे कुछ पुस्तके सगीत पर थी, कुछ फ्रासीसी नाटको पर। बायरन की कविताए भी थी और बहुत-से रगीन चित्र।

लम्बी, इकहरे बदन की, बाल घने और काले, गहरी भूरी आखे और छोटा मुह, वह अब भी इस चित्र मे, जिसे एक प्रसिद्ध चित्रकार ने बनाया था, बिल्कुल सजीव मालूम होती हैं। वह सदैव प्रसन्न वदन और कुछ लापरवाह-सी रहती थी और नाचने की बेहद शौकीन थी। हमारे गाव की किसान औरते हमे सुनाती थी कि किस प्रकार धीमे और सुन्दर गोलाकार नृत्य वह अपने छज्जे से देखा करती थी और फिर अन्त मे किस प्रकार वह स्वय उनमे शामिल हो जाती थी। वह स्वभावत कलाकार थी।

एक वार नाच मे उन्हे सर्दी लग गई थी, जिससे फेफडो मे सूजन आ गई और अन्त मे उसी कारण उनकी मृत्यु हो गई।

उनके सभी परिचित उनसे स्नेह करते थे। नौकर उनको श्रद्धापूर्वक स्मरण करते थे। उन्हीके कारण मदाम वर्मन हमारी सेवा करती थी और उन्हीकी स्मृति मे रूसी नर्स हमे प्रेम करती थी। हमारे वाल काढते समय अथवा हमे सुलाते समय उलियाना अक्सर कहती, "तुम्हारी मा अव तुम्हे ऊपर आसमान से देखती होगी और आंसू वहाती होगी।" हमारा सम्पूर्ण वाल्यकाल उन्हीकी स्मृति से भरा हुआ है। न जाने कितनी वार किसी अंधेरी जगह मे किसी नौकर ने मुझे या अलैक्जैण्डर को स्नेहपूर्वक छुआ होगा या किसी देहाती औरत ने हमसे कहा होगा, "क्या तुम अपनी मा की भाति ही अच्छे होगे? वह हमपर दया करती थी। हमे आशा है, तुम भी जरूर दयालु होगे।" "हमसे" उनका मतलव गुलामो से था। मुझे नही मालूम, हमारा जीवन कैसा होता, अगर हमे घर के गुलाम नौकरो के बीच वह स्नेह न मिलता, जो वच्चो के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

मनुष्य की उत्कट इच्छा मृत्यु के वाद जीवित रहने की रहती है। लेकिन वे अक्सर इस वात को नही समझ पाते कि एक वास्तविक अच्छे आदमी की स्मृति सदैव जीवित रहती है। उसकी छाप अगली पीढी पर पडती है और फिर आगे की पीढियो पर भी उसका प्रभाव पडता है।

: ४ :

शिक्षारंभ

पिताजी भी रहे थे। निकोलस प्रथम का कृपा-पात्र यह जनरल भयकर आदमी था। वह परेड मे छोटी-सी गलती के लिए सिपाही को बेतो से लगभग अधमरा कर देता, अथवा किसी अफसर को केवल इस बात के लिए कि सडक पर घूमते समय उसके कालर के बटन ठीक तरह नही लगे हुए थे, उसे अपदस्थ करके साइबेरिया भेज देता।

यह जनरल अभीतक कभी हमारे घर नही आया था। आज वह हमारे पिता के पास एक विशेष कार्यवश आया था कि वह उसकी स्त्री की भतीजी से शादी कर ले। यह लडकी काले सागर के बेडे के सेनापति की कई लडकियो मे एक थी और सुना जाता था कि अत्यन्त सुन्दर थी। पिताजी राजी हो गये और उनकी दूसरी शादी पहली शादी की ही भाति, खूब शान-शौकत से हो गई।

पिताजी इस कहानी को एक मजाक के साथ, जिसे मै यहा नही लिखूगा, कई दफा सुनाते और अन्त मे कहते, "तुम नवयुवक इस तरह की चीज को समझते ही नही। लेकिन क्या तुम जानते हो कि उस जमाने मे फौज की एक टुकडी के कमाण्डर की क्या हस्ती थी ? और फिर उस काने राक्षस (हम लोगो के बीच उसका यही नाम था) का स्वय किसी उद्देश्य का लेकर आना क्या माने रखता था !

मुझे इस विवाह का कोई स्मरण नही । मुझे केवल एक बडे सजे हुए मकान मे एक बाहरी बैठक की याद है। उस कमरे मे एक आकर्षक महिला हमसे खेल रही थी और कह रही थी, "देखना, तुम्हारी मा कितनी अच्छी है।" इसपर साशा और मैने उदासी से कहा "हमारी मा तो आसमान मे उड गई।" नई मा का यह व्यवहार हमे कुछ सन्देहात्मक जचा।

शिशिर के साथ हमारे जीवन का एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ। पुराना मकान बेच दिया गया, दूसरा खरीदा गया और उसकी सजावट बिल्कुल नये ढग से की गई। हर चीज़, जिससे हमारी मा का सम्बन्ध था, हटा दी गई। उनकी तस्वीरे, चित्र और शौक की चीजे सब अलग कर दी गई। मदाम बर्मन ने अनुनय-विनय की कि उन्हे न हटाया जाय, लेकिन उन्हे निकाल दिया गया। उससे कहा गया, "सुलीमा का कोई अवशेष यहा मेरे घर मे नही रहेगा।" हमारे मामा, मामी और नानी से सब

सम्बन्ध तोड दिये गए। उलियाना की शादी फ्रौल से हो गई और हमारी शिक्षा के लिए एक फ्रासीसी शिक्षक एम० पोलेन और बहुत ही कम पैसे पर एक रूसी विद्यार्थी एन० पी० स्मिरनौफ नियुक्त किये गए।

उस जमाने मे मास्को के सरदारो के अधिकाश लडको की शिक्षा फ्रासीसियो के अधीन होती थी, जो नैपोलियन की महान सेना के अवशेष रूप मे रूस मे रह गये थे। पोलेन महोदय उन्हीमे से एक थे ।

पोलेन अपने साथ अपनी बहन ट्रेसर, अपना कॉफी का वर्तन और कुछ फ्रासीसी पुस्तके लाये। आते ही वह हमारे और गुलाम सेवक माटवो के ऊपर शासन करने लगे।

उनकी शिक्षा का क्रम बहुत सीधा था। हमे जगाने के वाद वह अपनी कॉफी तैयार करते और अपने कमरे मे ही पीते। जबतक हम सुबह के पाठ की तैयारी करते, तबतक वह बहुत ही सावधानी से अपनेको सजाते। अपने गजेपन को छिपाने के लिए बाल बडी होशियारी से काढते, अपना लम्बा कोट पहनते और अपने ऊपर जरूरत से ज्यादा यूडी कोलोन छिडक लेते। फिर हमे माता-पिता को नमस्कार कराने के लिए नीचे ले जाते। हमे पिताजी और सौतेली मा नाश्ता पर बैठे मिलते और वहा पहुचते ही हम उन दोनो को अत्यन्त औपचारिक ढग से प्रणाम करते और उनके हाथ चूमते। पोलेन महोदय भी बहुत ही सुन्दर तरीके से हमारे माता-पिता को प्रणाम करते और उसके वाद तुरन्त हम लोग ऊपर लौट आते। यह हम लोगो का नित्यकर्म था।

फिर हमारा काम शुरू होता। पोलेन महाशय अपना लम्बा कोट उतारकर सोने के कपडे पहन लेते, सिर पर चमडे की टोपी लगा लेते और आरामकुर्सी पर लेटकर कहते, "अपना सबक पढो।"

हम दिये हुए सबक को रट डालते। पोलेन महाशय अपने साथ नोएल और चैपसल का व्याकरण लाये थे। यह व्याकरण एक पीढी से ज्यादा समय से रूसी लडके-लडकियो को पढाया जा रहा था। फ्रासीसी मे बातचीत की एक किताब, सम्पूर्ण ससार का इतिहास तथा भूगोल की एक पुस्तक उनके साथ और थी। हमे यह सब याद करने थे।

व्याकरण तो ठीक चल रहा था, लेकिन दुर्भाग्यवश इतिहास की पुस्तक मे एक भूमिका थी, जिसमे वे सब लाभ वर्णित थे, जो इतिहास के अध्ययन से प्राप्त होते हैं। भूमिका के शुरु के वाक्य तक तो ठीक चला। हम पढते, "राजकुमार को इतिहास मे अपनी प्रजा पर शासन करने के सुन्दर उदाहरण मिलते है, सेनापति उसमे से युद्ध की कला सीखता है।" लेकिन जैसे ही हम लोग कानून पर आते, सब खेल बिगड जाता। "न्याय-शास्त्रज्ञ इतिहास से सीखता है. . .।" लेकिन न्यायशास्त्रज्ञ को इसमे क्या मिलता है, हम कभी नही जान पाये। यह भयकर शब्द "न्यायशास्त्रज्ञ" सब खेल बिगाड देता था। जैसे ही इसपर पहुचते, हम रुक जाते। "अपने घुटनो के बल खडे हो जाओ।" हम दोनो भाइयो को तुरन्त पोलेन आज्ञा देते और हम लोग झुक जाते, रोते रहते और इसी हालत मे 'न्यायशास्त्रज्ञ' के विषय मे जानने का व्यर्थ प्रयास करते रहते।

इस भूमिका के कारण हमे बडे कष्ट सहने पडे। हम लोग रोम के इतिहास तक आ गये थे । लेकिन पोलेनसाहब यदाकदा उसी भूमिका पर लौट आते और उसी 'न्यायशास्त्रज्ञ' के लिए हमे फिर घुटनो के बल खडा कर देते। आगे चलकर मुझे और मेरे भाई को न्यायशास्त्रज्ञ के प्रति इतनी घृणा हो गई, तो कोई आश्चर्य की बात नही।

पता नही, भूगोल के अध्ययन मे हमपर क्या बीतती, यदि पोलेन महाशय की पुस्तक मे कही भूमिका होती। लेकिन सौभाग्यवश पुस्तक के प्रथम बीस पृष्ठ फटे हुए थे। इसलिए हमारा पाठ इक्कीसवे पृष्ठ 'फ्रास की नदिया' से शुरु होता था। वास्तव मे घुटनो के बल खडे होने से ही हमारा छुटकारा नही हो जाता था। उस कमरे मे एक छडी रखी हुई थी। जब भूमिका अथवा नीति तथा व्यवहार-सबधी सबक मे हमसे गलती होती तो पोलेन महाशय इस छडी का प्रयोग करते। लेकिन एक दिन हमारी बहन हेलेन, जो हमारे कमरे के नीचे ही रहती थी, हमारा रोना सुनकर आखो मे आसू भरे सीधे पिताजी के कमरे मे चली गई और उनपर खूब नाराज़ हुई कि हम दोनो को सौतेली मा के जिम्मे छोड दिया है और उस सौतेली मा ने हमे एक पुराने फ्रासीसी बाजेवाले के हवाले कर दिया है। उसने ज़ोर से कहा, "ठीक है कि उनकी देखभाल करनेवाला

कोई नही है, लेकिन मैं नही बरदाश्त कर सकती कि मेरे भाइयो के साथ वह बैण्डमास्टर ऐसा व्यवहार करे।"

यकायक इस तरह की बाते सुनकर पिताजी घबडा गये। पहले तो उन्होंने हेलेन को झिडका, लेकिन बाद मे वह उसके भ्रातृ स्नेह की तारीफ करने लगे। फिर तो हमारे नौकर ट्रैमर के ऊपर ही उस छडी का उपयोग हुआ।

जैसे ही पोलेन महोदय का शिक्षा-कर्तव्य पूरा होता, वह बिलकुल दूसरे ही आदमी बन जाते। भयानक अध्यापक से बदलकर वह जिदादिल सगा बन जाते। दोपहर के भोजन के बाद हमको बाहर टहलाने ले जाते और फिर उनकी कहानियो का अन्त ही न होता। हम लोग बेहद बाते करते। यद्यपि हमने 'वाक्य-रचना' कम ही सीखी थी, लेकिन फिर भी हम शुद्ध भाषा बोलने लगे थे और हम फ्रासीसी मे ही 'सोचते' थे। मास्टरसाहब ने पुरानी कथाओ की एक पुस्तक का आधे से ज्यादा हिस्सा हमे बोलकर लिखा दिया था। हमारी गलतियो को वह किताब की मदद से ठीक करा देते, बिना इस बात को बतलाए कि वे गलतिया क्यो है और इस प्रकार हम 'शुद्ध लिखना' भी सीख गये थे।

मास्टर की अधीनता मे हमे सिखाया जाता था। यह नाच स्वतत्र होता और इसमे बीसियो जोडे अपने मनचाहे ढग से चक्कर लगाते, कुछ ही समय मे यह जोशीले कज्जाक नाच मे परिवर्तित हो जाता। तीखोन अपनी वायलिन किसी वृद्ध आदमी के हाथ मे दे देता और फिर पैरो के ऐसे खेल करता कि सारा हाल शीघ्र ही रसोइयो और कोचवानो से भर जाता। रूसियो के इस अत्यधिक प्रिय नाच को देखने के लिए सब इकट्ठे हो जाते।

नौ बजे के लगभग कुटुम्ब को घर लाने के लिए गाडी भेजी जाती। उनके आने के पहले घर ठीक तरह सजा दिया जाता और तीखोन हाथ मे ब्रुश लेकर फर्श को बिल्कुल साफ कर देता। यदि अगले दिन सुबह हम दोनो से कडी-से-कडी जिरह भी होती, तो भी पिछली रात की घटनाओ के बारे मे हमारे मुह से एक शब्द भी न निकलता। हम किसी भी हालत मे उन नौकरो के साथ विश्वासघात न करते और न वे नौकर ही कभी हमे धोखा दे सकते थे। एक रविवार को उस बडे हॉल मे खेलते हुए मुझसे और मेरे भाई से वहा का एक बडा लैम्प टूट गया। उसके टुकडे-टुकडे हो गये। शीघ्र ही नौकरो की एक मीटिंग बैठी। किसीने हमसे एक शब्द भी न कहा। उन्होने आपस मे तय किया कि तीखोन अगले दिन सुबह ही घर से बिना किसीसे अनुमति लिये चुपचाप चला जाय और बाजार से उसी तरह का एक लैम्प खरीदकर ले आये। लैम्प की कीमत १५ रूबल थी, जो नौकरो के लिए एक बडी रकम थी। लेकिन वह खरीदकर लाया गया और हमने कभी भी उसके बारे मे फटकार का एक शब्द भी न सुना।

अब जब मैं उन दिनो की याद करता हू तो वे सब दृश्य मेरे स्मृति-पटल पर उभर आते है। मुझे याद है कि हमने खेलो मे कभी भद्दी गाली नही सुनी और न कभी हमने नाचो मे ऐसे दृश्य देखे, जैसे आजकल थियेटरो मे बच्चो को ले जाकर दिखाये जाते है। अपने मकानो मे ओर आपस मे वे नौकर निश्चय ही भद्दी गालियो का प्रयोग करते थे, लेकिन हम किशोर थे—"अपनी मा के बच्चे थे" और इसी कारण वे हमारे सामने कोई भद्दी बात नही करते थे।

बाल्यावस्था मे ही हम दोनो भाइयो को नाटक का शौक लग गया था। चोरी, डकैती और लडाई के सस्ते नाटक हमे बिलकुल न जचते। लेकिन उस समय प्रसिद्ध अभिनेत्री फैनी ऐसलर मास्को आई और हमने उसका नाच देखा। जब कभी पिताजी नाटक देखने जाते, वह अच्छी-से-अच्छी जगह का टिकट लेते और फिर वह चाहते कि कुटुम्ब के सब आदमी उसे अच्छी तरह से देखे। यद्यपि उन दिनो मेरी अवस्था कम ही थी, फिर भी फैनी ऐसलर ने अपने सुन्दर, कलात्मक और सुरुचिपूर्ण नाच का ऐसा असर मेरे ऊपर छोडा कि उसके बाद ऐसे नाच, जिसमे कला कम और दाव-पेच ज्यादा हो, मुझे कभी भी नही रुचे।

मेरी उम्र बहुत ही कम होगी जब गोगोल के नाटको मे महान रूसी कलाकार शैपकिन, सोडोव्स्की आदि का अभिनय देखा था, परन्तु फिर भी मुझे न सिर्फ इन नाटको के मुख्य दृश्य ही याद है वरन इन अभिनेताओं के हावभाव, रूपरग तक का भी भलीभाति स्मरण है। मुझे वे सब इतनी अच्छी तरह याद है कि जब मैने सेण्ट पीटर्सबर्ग मे फ्रासीसी अभिनेताओ द्वारा यही खेल देखे, तो मुझे उनके अभिनय मे कोई रस नही आया। शैपकिन तथा सोडोव्स्की ने नाटकीय अभिनय के उच्च आदर्श मेरे सामने रख दिये थे।

इसलिए मै इस निष्कर्ष पर पहुचा हू कि जो माता-पिता अपने बच्चो मे सुन्दर कलात्मक रुचि का विकास करना चाहते हो, उन्हे अपने बच्चो को बहुत-से सस्ते अभिनय दिखाने की अपेक्षा कभी-कभी अच्छे नाटको मे ले जाना चाहिए।

: ५ :

विचित्र संयोग

जब मैं आठवे वर्ष में था, मेरे जीवन का अगला कदम अप्रत्याशित रूप मे उठ गया। वह अवसर शायद निकोलस प्रथम की राजगद्दी के पच्चीसवें वर्ष का उत्सव था। मास्को मे बहुत खुशिया मनाई गई थी। राजकुटुम्ब

उस युग मे सम्राट के बाल-सेवको की श्रेणी मे आ जाना बडी मारी चीज थी और सम्राट इस प्रकार की कृपा मास्को के सरदारो पर कम ही करता था। मेरे पिता इससे बहुत सन्तुष्ट थे और उन्हे आशा हो गई थी कि भविष्य मे मै दरबार मे ऊचा पद प्राप्त करूगा। जब कभी मेरी सौतेली मा यह बात सुनाती तो कहती, "यह सब इसलिए हुआ कि उसके उत्सव मे जाने के पहले मैने उसे आशीर्वाद दिया था।"

मेरे भाई अलैक्जैडर का भविष्य भी अगली साल तय हो गया। एक रात को जब सब लोग गहरी नीद मे सो रहे थे, तीन घोडो की गाडी घटी बजाती हुई हमारे दरवाजे पर रुकी। उसमे से एक आदमी ने उतरकर जोर से कहा, "किवाड खोलो। सम्राट के पास से आज्ञा आई है।"

सारा घर भयभीत हो गया। पिताजी कापते हुए नीचे आये। जमाना खराब था, उन दिनो कोर्ट मार्शल कर देना साधारण बात थी। लेकिन इस समय सम्राट ने सिर्फ सेना के सब अफसरो के बालको के नाम मागे थे। उसका उद्देश्य था कि यदि अबतक वे फौजी स्कूल मे भर्ती नही हुए तो अब भर्ती कर दिये जाने चाहिए। इसलिए सेण्ट पीटर्सबर्ग से एक विशेष आदमी मास्को भेजा गया था और वह रात-दिन फौजी अफसरो के मकानो पर हाजिरी दे रहा था।

कापते हाथो से पिताजी ने लिखा कि उनका सबसे वडा लडका मास्को के फौजी स्कूल मे विद्यार्थी था, सबसे छोटा लडका सम्राट का बाल-सेवक चुन लिया गया है—अब सिर्फ उनका दूसरा लडका अलैक्जैण्डर रह गया है। थोडे दिन बाद सम्राट के यहा से आज्ञा आई कि अलैक्जैण्डर को 'ओरल' के फौजी स्कूल मे भर्ती करा दिया जाय। पिताजी को उसे भर्ती कराने मे काफी असुविधा हुई और खर्च तो हुआ ही।

इस तरह सम्राट निकोलस की इच्छा के कारण हम दोनो भाइयों को फौजी शिक्षा लेनी पडी। यद्यपि कुछ दिन बाद ही हम फौजी जिन्दगी को बेहूदगी की चीज समझने लगे थे, लेकिन सम्राट नही चाहता था कि किसी सरदार का लडका फौज के सिवा किसी दूसरे पेशे मे जाय। इस तरह हम तीनो भाइयो को फौजी अफसर होना पडा। हमारे पिताजी इससे सन्तुष्ट थे।

: ६ :

सामन्ती जीवन की झलक

उन दिनो किसी सामन्त की सम्पत्ति का अनुमान उसके अधीन मनुष्यो की तादाद से किया जाता था। इसमे केवल पुरुषो की ही गिनती होती थी, स्त्रियो की नही। मेरे पिताजी के अधीन तीन विभिन्न सूबो के लगभग बारह सौ आदमी थे। उनके पास इन आदमियो की जमीन के सिवा खुद की भी बहुत जमीन थी। उस सारी जमीन को ये सब गुलाम जोतते थे। इसलिए मेरे पिताजी की गिनती सम्पन्न आदमियो मे थी। वह अपनी हैसियत के अनुसार रहते थे, जिसका मतलब था कि वह बहुत ही खुले हाथ खर्च करते थे।

हमारे कुटुम्ब मे आठ आदमी थे। कभी दस या बारह भी हो जाते थे। लेकिन हमारी सेवा के लिए मास्को मे पचास नौकर और लगभग पच्चीस नौकर देहात मे रहते थे। यह स्थिति साधारण समझी जाती थी। बारह घोडो के लिए चार सईस, मालिको के लिए तीन रसोइये, नौकरो के लिए दो रसोइये अलग, बारह आदमी हमे भोजन परोसने के लिए, प्रत्येक के पीछे एक नौकर रकाबी लिये खडा रहता था, और सैकडो ही औरतें। इतने कम नौकरो से काम चल ही कैसे सकता था ?

उनके ऊपर से प्रत्येक सरदार की इच्छा रहती कि जिस चीज की भी उनके यहा जरूरत हो वह उसीके आदमियो द्वारा तैयार की गई होनी चाहिए।

मेहमान कहते, "कैसी सुन्दर पेस्ट्री है? सच कहना यह तो ट्रेम्बिल (एक प्रसिद्व रसोइये) के यहा की बनी है।"

"नही, यह मेरे रसोइये ने बनाई है। वह ट्रेम्बिल का सिखाया हुआ है।" इस उत्तर को सुनकर सब बडी प्रशसा करते।

मेज-कुर्सी, सोफा सैट यानी घर की सजावट के लिए जरूरी चीज़ हमारे यहा के नौकरो द्वारा तैयार हो, यही प्रत्येक साधन-सम्पन्न जागीरदार का आदर्श था। जैसे ही नौकरो के बच्चे करीब बारह वर्ष के होते, वे किसी फैशनेबल दूकान पर कुछ सीखने के लिए भेज दिये जाते। वहा उनके पाच-सात साल बरबाद होते। इसमे से अधिकाश समय उनका झाड़ू देते, झिडकिया सहते और शहर मे दौड-धूप करते बीतता। वास्तव मे शायद ही उनमे से कोई अपने हुनर को ठीक तरह सीख पाता हो। दर्जीगीरी अथवा जूतो का काम सीखे हुए आदमी केवल नौकरो के लिए कपडे और जूते बनाने लायक होते। जब कभी अच्छी दावत के लिए अच्छे भोजन की जरूरत होती तो वह ट्रैम्बिल के यही से मगाया जाता और हमारा रसोइया बैण्ड मे ढोल पीटने का काम करता।

यह बैण्ड भी पिताजी के शौक की एक चीज थी। उनका प्रत्येक नौकर, अपने खुद के काम के अलावा, बैण्ड का कोई बाजा बजाना जानता था। इस प्रकार रसोइये, झाड़ू देनेवाले, चौकीदार, सभीको बैण्ड मे भाग लेना पडता था। लेकिन दो वायलिन बजानेवाले सिर्फ इसी काम पर नौकर थे। वे और कोई काम न करते। पिताजी ने उन्हे उनके बडे कुटुम्बो के सहित बडी ऊची कीमतो पर खरीदा था।

पिताजी को सबसे अधिक खुशी तब होती जब उनसे कोई सहायता मागता, जैसे लडके के लिए नि शुल्क शिक्षा की व्यवस्था, यात्रा, अथवा किसीको कचहरी के दण्ड से मुक्त कराने की प्रार्थना। यद्यपि कभी-कभी उन्हे भयकर क्रोध आता था, फिर भी वह स्वभावत. दयालु थे और जब कोई उनसे सरक्षण की याचना करता तो वह उसके लिए सैकडो पत्र लिखते। मामला जितना ही अधिक पेचीदा होता, उतनी ही अधिक चतुराई, होशियारी और लगन से वह पत्र लिखते और अन्त मे अपने आश्रित को, जिसे अभी तक उन्होने देखा भी नही, मुक्ति दिला ही देते। पिताजी को मेह-

मानो के आने से बडी प्रसन्नता होती। लगभग हर शाम को हमारे यहा आदमी आते। हॉल मे ताश खेलनेवालो के लिए हरी मेजे तैयार रहती और महिलाए और युवक बाहर भी हेलेन के पियानो के पास रहते। महिलाए चली जाती, लेकिन ताश खेलना जारी रहता, कभी-कभी सुबह तक चलता और सैकडो रुपये इधर-से-उधर हो जाते। पिताजी हमेशा हारते। लेकिन उन्हे खतरा घर पर नही, इगलिश क्लब मे था, जहा दाव बहुत ऊचे होते और जहा वे 'वडे प्रभावशाली' आदमियो के साथ बैठ जाते।

नाच की पार्टिया भी अकसर होती थी। एक जाडे मे दो पार्टियां तो आवश्यक थी। पिताजी का स्वभाव था कि ऐसे मोको पर हर चीज शान से हो, चाहे फिर कितना भी खर्च क्यो न हो जाय। लेकिन इसके साथ-ही-साथ हमारे घर मे रोजमर्रा की जिदगी मे इतनी अधिक कजूसी, मितव्ययता होती कि अगर मै उसका वर्णन करने लगूं तो लोग उसपर यकायक विश्वास नही करेगे! उसका परिणाम यह हुआ कि हम लोग जब बडी उम्र के हो गये तो हिसाब रखने और किफायतशारी से हमे घृणा हो गई। लेकिन उस समाज मे इस तरह का रहन-सहन पिताजी के सम्मान को बढाता था। लोग कहते, "घर पर तो वह बडा मितव्ययी मालूम पडता है, लेकिन वह सरदार की शान-शौकत से रहना जानता है।"

हमारी शान्त और साफ-सुथरी गलियो मे यही आदर्श जीवनक्रम था।

हमारे सभी सम्बन्धी (और उनकी सख्या बहुत थी) इसी तरह रहते थे, और अगर कोई नई दिशा मे जाता था तो वह अकसर धर्म की ओर जाता था। जैसे प्रिंस गैगरीन 'जैसूट दल' मे दीक्षित हो गये, एक दूसरे राजकुमार एक मठ मे शामिल हो गये और सैकडो महिलाए भगतिन बन गई।

इन सवमे सिर्फ एक सरदार अपवाद-स्वरूप थे। वह हमारे अत्यन्त नजदीकी सम्वन्धियो मे से थे। उनका नाम प्रिंस मिर्स्की था। वह अपने खुद के दर्जी अथवा बढई नही रखते थे, क्योकि उनका घर बडी शान से सजा रहता था और उनके कपडे सेण्ट पीटर्सवर्ग की वडी दुकानो से तैयार होकर आते थे। उन्हे जुआ खेलने की आदत नही थी। कभी-कभी स्त्रियो

के साथ ही वह ताश खेल लेते थे, लेकिन भोजन मे वह भी बेहद खर्च कर देते थे।

ईस्टर के मौके पर तो प्रिंस मिर्स्की हद ही कर देते। चाहे वह सेण्ट पीटर्सबर्ग मे हो या मास्को मे, उनकी जागीर से नौकर पनीर लाते थे, जिससे उनका रसोइया कलात्मक मिठाइया बनाता था। दूसरी जगहो से वह आदमी भेजकर अन्य सामान मगाते और जब उनकी पत्नी और दोनो लडकिया अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति और विधिपूर्वक गिर्जाघर मे जाती और रोटी का सूखा टुकडा ही खाती, राजकुमार सेण्ट पीटर्सबर्ग की सब शानदार दुकानो की खाक छान डालते और वहा से ईस्टर के त्योहार के लिए बेहद खर्चीली चीजे लाते। सैकडो ही आदमी उनके घर आते और वह उन सबसे इस या उस वस्तु का केवल 'स्वाद लेने' की प्रार्थना करते।

इस सबका फल यह हुआ कि राजकुमार ने अपनी सम्पत्ति का अधिकाश भाग खा-पी डाला। उनका शानदार मकान और जागीर बिक गई और जब वह और उनकी पत्नी वृद्ध हो गये तो उनके पास कुछ भी नही बचा।

यह स्वाभाविक ही था कि जब गुलामी का अन्त हुआ तो 'ओल्ड इक्वैरीज' के सब सरदार लगभग खत्म हो चुके थे! लेकिन इस सबका वर्णन बाद मे करना उचित होगा।

: ७ :

बचपन की स्मृतियां

जितने नौकर हमारे यहा रहते थे, उन सबके लिए मास्को से सामान खरीदना लगभग असम्भव था। लेकिन गुलामी के उस जमाने मे इसका इन्तजाम करना आसान था। जाडे शुरू होते ही पिताजी कुर्सी पर बैठकर लिखते :

के साथ ही वह ताश खेल लेते थे, लेकिन भोजन मे वह भी बेहद खर्च कर देते थे।

ईस्टर के मौके पर तो प्रिंस मिर्स्की हद ही कर देते। चाहे वह सेण्ट पीटर्सबर्ग मे हो या मास्को मे, उनकी जागीर से नौकर पनीर लाते थे, जिससे उनका रसोइया कलात्मक मिठाइया बनाता था। दूसरी जगहो से वह आदमी भेजकर अन्य सामान मगाते और जब उनकी पत्नी और दोनो लडकिया अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति और विधिपूर्वक गिर्जाघर मे जाती और रोटी का सूखा टुकडा ही खाती, राजकुमार सेण्ट पीटर्सबर्ग की सब शानदार दुकानो की खाक छान डालते और वहा से ईस्टर के त्योहार के लिए बेहद खर्चीली चीजे लाते। सैकडो ही आदमी उनके घर आते और वह उन सबसे इस या उस वस्तु का केवल 'स्वाद लेने' की प्रार्थना करते।

इस सबका फल यह हुआ कि राजकुमार ने अपनी सम्पत्ति का अधिकाश भाग खा-पी डाला। उनका शानदार मकान और जागीर बिक गई और जब वह और उनकी पत्नी वृद्ध हो गये तो उनके पास कुछ भी नही बचा।

यह स्वाभाविक ही था कि जब गुलामी का अन्त हुआ तो 'ओल्ड इक्वैरीज' के सब सरदार लगभग खत्म हो चुके थे! लेकिन इस सबका वर्णन बाद मे करना उचित होगा।

: ७ :

बचपन की स्मृतियां

जितने नौकर हमारे यहा रहते थे, उन सबके लिए मास्को से सामान खरीदना लगभग असम्भव था। लेकिन गुलामी के उस जमाने मे इसका इन्तजाम करना आसान था। जाडे शुरु होते ही पिताजी कुर्सी पर बैठकर लिखते :

"प्रिंस अलेक्सी पीट्रोविच क्रोपाटकिन, कर्नल और कमाण्डर, आज्ञा देते है क्लूगा-स्थित अपनी जागीर निकोलस्काई के मैनेजर को कि जैसे ही रास्ता ठीक हो जाय, तुम दो-दो घोडो की पच्चीस गाड़िया—जिनके लिए हर घर से एक-एक घोडा लो और हर दूसरे घर से एक गाडी लो—और उनमे इतना गेहू, इतना नाज, इतनी मुर्गिया और बत्तखे ठीक तरह रखकर विश्वसनीय व्यक्तियो के साथ मेरे यहा भेज दो।..." यह आज्ञा पूरे दो पृष्ठो की होती थी। उसके बाद वे सैकडो सजाए गिनाई जाती थी, जो मैनेजर को दी जायगी, यदि यह सब सामान निश्चित दिन तक इस गली मे इस मकान पर न आया !

बडे दिन के कुछ ही पहले हमारे फाटक मे पच्चीस गाडिया आती और उनके सामान से सारा आगन भर जाता। जैसे ही गाडियो के आने की खबर पिताजी को होती वह विभिन्न नौकरो को चिल्ला-चिल्लाकर पुकारते और सब सामान को भीतर ले जाने की आज्ञा देते। जब कभी मै उनकी तरफ से पत्र लिखता, तो मै भी ठीक इसी तरह पत्र लिख देता।"

दूसरे दिन सुबह चुपके से कोई नौकर ऊपर हमारे कमरे मे आता।

"क्या तुम अकेले हो ?"

"हा।"

"तो जल्दी हॉल मे चले जाओ। किसान तुमसे मिलना चाहते है—तुम्हारी दाई ने कुछ भेजा है।"

जब मै हॉल मे पहुचता तो कोई किसान मुझे एक पुराने रगीन रूमाल की पोटली देता, जिसमे कुछ मिठाइया, अडे और कुछ सेब वधे होते—"ये तुम्हारे लिए तुम्हारी दाई वासीलीसा ने भेजे है। देख लो, सेब जम तो नही गये, वैसे तो मै उन्हे रास्ते-भर अपनी छाती से चिपटाए लाया हू। रास्ते मे बेहद वर्फ थी।" और इतना कहकर चौडे मुह का वह दाढीवाला किसान मुस्कराता। इतने मे दूसरा किसान एक दूसरी पोटली मुझे देते हुए कहता, "और यह तुम्हारे भाई के लिए उसकी दाई अन्ना ने भेजी है। वह कहती थी कि बेचारे को स्कूल मे खाना सन्तोषजनक नही मिलता।"

मै झेप जाता, घवडा जाता और समझ ही न पाता कि क्या कहू, फिर

मुश्किल से कहता, "वासीलीसा से मेरा प्यार कहना और अन्ना से भाई का प्यार।" इसपर सब किसानो के चेहरो पर प्रसन्नता दौड जाती।

"ज़रूर कह दूगा।"

फिर किरीला, जो पिताजी के कमरे की ओर देखता रहता, कहता, "जल्दी ऊपर चले जाओ, तुम्हारे पिता बाहर आने ही वाले है।"

जब मै होशियारी से उस फटे रूमाल को खोलता तो मेरी हार्दिक इच्छा होती कि मै भी वासीलीसा को कुछ भेज दू। लेकिन मेरे पास कुछ भी नही था, कोई खिलौना भी नही, और हमे जेबखर्च को कुछ मिलता नही था।

लेकिन हमारा सबसे अच्छा समय देहात मे बीतता था। जैसे ही ईस्टर खतम होता, हमारा मन निकोलस्कार्ई की ओर दौडता। लेकिन पिताजी को यहा शहर मे सैकडो काम होते। अन्त मे एक दिन पाच-छः गाडिया हमारे अहाते मे हमारा सामान देहात को ले जाने के लिए आती। बडी गाडिया, जिनमे हम लोग जाते थे, वे भी बाहर निकालकर देखी-भाली जाती। सन्दूक बन्द किये जाते।

सब चीजे तैयार हो जाती। गाडियो पर सामान लद जाता और किसान हर रोज सुबह हॉल के बाहर खडे रहते, लेकिन गाडियो के चलने की आज्ञा ही न मिलती। पिताजी दोपहर तक चिट्ठिया लिखते रहते और शाम को बाहर चले जाते। अन्त मे हमारी सौतेली मा उनसे इसके विषय मे कहती।

दूसरे दिन शाम को फ्रौल और माइकेल पिताजी के कमरे मे बुलाए जाते। फ्रौल को एक बोरे भरकर ताबे के सिक्के सौपे जाते और उन चालीस-पचास नौकरो की सूची भी साथ मे दी जाती जो सामान के साथ जा रहे होते। ये पैसे उनके खर्चे के लिए होते। माइकेल को यात्रा का क्रम दिया जाता। मै इसे अच्छी तरह समझ गया था, क्योकि पिताजी इसकी नकल मुझसे ही कराते थे।

"प्रिंस अलेक्सी पीट्रोविच क्रोपाटकिन कर्नल और कमाण्डर, अपने नौकर माईकेल को आज्ञा देते है.

"तुमको २९ मई को ६ बजे सुबह मेरे मास्को के मकान से, सब सामान

के साथ मेरे देहात के मकान को, जो यहा से एक सौ साठ मील पर है, चल देना है। तुम उन सब आदमियो की, जो तुम्हारे साथ जा रहे है, देखभाल रखोगे और यदि इनमे से कोई तुम्हारी आज्ञा का उल्लघन करे या ओर किसी तरह से काम बिगाडे तो तुम उसे फौज के कमाण्डर के पास इस पत्र के साथ ले जाना और उचित सजा दिलवा देना।

"तुम्हे हिदायत दी जाती है कि सब सामान की खास देखभाल रखना और निम्नलिखित क्रम के अनुसार यात्रा करना—पहला दिन ग्राम मे ठहरना, घोडो को खिलाना—दूसरे दिन रात इस मे ठहरना . आदि।"

दूसरे दिन छः के बजाय दस बजे गाडिया रवाना होती। रूसी लोग समय के पाबन्द नही होते। नौकरो को पूरा रास्ता एक सौ साठ मील पैदल चलना पडता, केवल बच्चे गाडियो मे बिठला दिये जाते। जबतक मास्को मे होकर चलते, वे अनुशासन के अनुसार चलते। उन्हे बूट पहनने की अथवा अपने कोट पर पेटी डालने की आज्ञा नही थी। लेकिन जब वे शहर पार कर लेते तो सारा अनुशासन भग हो जाता। सब आदमी और औरते तरह-तरह के कोट पहनकर रूमालो की पेटी बाधते, जगल मे से काटकर हाथों मे लाठिया ले लेते, अथवा पानी मे भीगते हुए चलते। किसी जागीरदार के नौकर की अपेक्षा वे खानाबदोश मालूम पडते।

गाडिया चली जाती, लेकिन कुटुम्ब के चलने मे अभी देर होती। हम लोग इन्तजार करते-करते थक जाते। अन्त मे हमे भी रवाना होने की आज्ञा मिलती। हम सब नीचे बुलाये जाते। पिताजी प्रिस अलैक्सी पीट्रोविच क्रोपाटकिन, कर्नल और कमाण्डर की पत्नी को यात्रा का क्रम पढकर सुनाते। यात्रा मे ३० मई को ९ बजे सुबह चलने की आज्ञा दी गई होती। लेकिन ठीक फौजी ढग पर इस हुक्म के दूसरे वाक्य मे व्यवस्था रहती, "अगर किसी कारण आप नियत दिन और समय को नही चल पाती तो आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी बुद्धि से यात्रा के क्रम को चलावे।"

फिर सब लोग कुछ क्षण के लिए बैठ जाते, अपने हस्ताक्षर करते और पिताजी को प्रणाम कर विदा लेते। "अलैक्सी, मेरी प्रार्थना है कि तुम

क्लब न जाना।" विदा लेते समय हमारी सौतेली मा पिताजी के कान मे कहती।"

हम बच्चो के लिए तो यह यात्रा अत्यधिक आनन्ददायक होती। चूकि स्त्रिया सडक के थोडी-सी भी खराब होने पर घबडा जाती थी, इसलिए जैसे ही कोई उतार या चढाव आता हम सब गाडी मे से उतर पडते और तब हम बच्चो को जगलो को देखने या किसी नाले के किनारे भागने का अवसर मिल जाता। दिन मे दो बार हम किसी बडी सराय मे ठहरते। जबतक रसोइया हमारे लिए सूप तैयार करता तबतक हम सराय के इर्द-गिर्द की जगह या नजदीक का जगल देख डालते।

बचपन मे हम पोलेन महाशय के साथ एक अलग मकान मे रहते थे। जब से हमारी बहन हेलेन के हस्तक्षेप पर उनके पढाने के ढग मे परिवर्तन हो गया था, हमारे और उनके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर हो गये थे। पिताजी गर्मियो मे हमेशा बाहर रहते थे, क्योकि इन दिनो वह फौज का निरीक्षण करते थे। हमारी सौतेली मा हमारी ओर कुछ ध्यान नही दे पाती थी। इस तरह हम हमेशा पोलेन महाशय के साथ ही रहते थे। वह स्वय देहात मे स्वतत्रतापूर्वक विचरते और हमारे बीच मे भी कोई दखल नही देते थे। जगल मे विचरना, नदी-तट पर घूमना, पहाडियो पर चढना, ऊधम मचाना, जिसमे एक दफा पोलेन महाशय ने अलैक्जैण्डर को डूबते से बचा लिया था, कभी-कभी भेडियो का सामना—इस प्रकार वहा नये-नये आनन्दपूर्ण खेलो का अन्त ही न था।

बडी-बडी पार्टिया भी होती, जिनमे कुटुम्ब के सब आदमी रहते, सब मिलकर जगलो मे घूमते और वही कही चाय पीते। कभी हम लोग पिताजी के उस गाव मे जाते, जहा मेरी पुरानी धाय रहती थी। वह बडी गरीब थी, उसे और उसके पति और लडकी को सहायता देनेवाला सिर्फ एक छोटा लडका होता। जब मै उससे मिलने जाता तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न था। मलाई, अडे, शहद—ये चीजे थी, जो वह इकट्ठी कर पाती। लेकिन जिस तरह वह उन्हे लाती थी—एक साफ काठ की तश्तरी मे बहुत स्वच्छ सफेद कपडे पर रखकर—और जिन स्नेहपूर्ण शब्दो मे वह मुझसे अपने लडके की भाति ही खाने को कहती थी, उसकी मधुर

छाप मेरे हृदय पर अबतक है। ऐसा ही व्यवहार मेरे भाई अलैक्जैण्डर और निकोलस की दाइया भी करती थी। सैकडो वर्षो के दमन के बाद भी रूसी किसानो के हृदय मे कितनी कोमलता थी, इसे कम ही लोग जानते है।

हमारी तैयारियां फौजी जीवन के लिए हो रही थी। पिताजी की यही इच्छा थी। केवल दो ही खिलौने उन्होने हमे लाकर दिये थे—एक बन्दूक और दूसरा पहरे का सन्दूक। हमारा पुस्तकालय भी सभी फौजी जीवन की भूमिका-स्वरूप दीखता था। इस पुस्तकालय मे केवल युद्ध-सबन्धी पुस्तके थी। बरसात के दिनो मे इन पुस्तको को देखना ही हमारा मुख्य मनोरजन था। इसमे आदिम काल से अबतक के अस्त्रो, युद्ध-क्षेत्रो और किलो के चित्र थे। लेकिन फिर भी न तो अलैक्जैण्डर और न मै फौज मे गये।

हमारे कुटुम्ब मे 'राजकुमार' की उपाधि का मौके-बेमौके हर समय उपयोग होता था। पोलेन महाशय को निश्चय ही यह बुरा लगा होगा, क्योकि एक दफा उन्होने हमे १७८९ की फ्रास की राज्यक्रान्ति के विषय मे सुनाते हुए एक बात बताई थी, जो मुझे अभी तक अच्छी तरह याद है: "काउण्ट मिराबो और उनके साथियो ने एक दिन अपनी उपाधिया त्याग दी और मिराबो ने आभिजात्य 'उपाधियो' के प्रति अपनी घृणा प्रदर्शित करने के लिए एक दूकान खोली, जिसपर एक साइनबोर्ड लगाया 'मिराबो दर्जी।' पता नही, यह कहातक सच है, लेकिन पोलेन ने ऐसा सुनाया था। उसके वाद वहुत दिनो तक मै सोचता रहा कि मुझे कौन-सा पेशा अपनाना चाहिए, जिससे मै लिख सकूं—"क्रोपाटकिन .का दस्तकार।" उसके वाद मेरे रूसी अध्यापक स्मर्नोफ और तत्कालीन जनतत्रवादी रूसी साहित्य का भी प्रभाव उसी दिशा मे पडा। नतीजा यह हुआ कि जव मैने बारह वर्ष की अवस्था मे उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया तो मैने अपना नाम पी० क्रोपाटकिन लिखा। यद्यपि मेरे फौजी अफसरो ने, तव मै फौज मे था, उसके ऊपर काफी आपत्ति की, फिर भी मै उसके वाद सदैव ऐसा ही लिखता रहा हू।

इसलिए डाटते है कि उसने घोडो को रोज़ घास पूरी मात्रा मे क्यो नहीं डाली ! लेकिन कोचवान सब देवी-देवताओ की सौगध खाकर कहता है कि उसने घोडो को पूरा-पूरा खाना दिया है और फ्रौल भी मरियम की सौगध खाकर उसकी बात की ताईद करता है।

लेकिन पिताजी सन्तुष्ट नही होते। वह मकर को बुलाते है और उसकी अबतक की गलतिया उसे सुनाते है। पिछले हफ्ते उसने शराब पी थी, और कल भी जरूर शराब पिये होगा, क्योकि उसने छ. प्लेटे तोड दी थी। वास्तव मे इन तश्तरियो का टूटना ही सारी मुसीबत की जड था। सौतेली मा ने यह बात पिताजी को सुबह सुना दी थी, इसलिए उलियाना पर इतनी डाट पडी, घास मिलाई गई और पिताजी अबतक चिल्ला रहे थे कि इन नालायको को सजा मिलनी ही चाहिए।

एक साथ कुछ शान्ति होती है। पिताजी मेज पर बैठ जाते है और लिखते है—"इस पत्र के साथ मकर को थाने ले आओ और सौ बेंत लगवाओ।"

सारे घर मे सन्नाटा और आतक छा जाता है।

चार बजते है और हम लोग भोजन के लिए इकट्ठे होते है। लेकिन किसीको भी भूख नही और तश्तरी का सूप किसीने छुआ भी नही ! हम दस लोग है और प्रत्येक के पीछे एक आदमी खडा है, लेकिन मकर उनमे नही है।

"मकर कहा है ?" हमारी सौतेली मा पूछती है, "उसे यहा बुलाओ।"

मकर नही आता। फिर आज्ञा दी जाती है। अन्त मे वह पीला और रोता हुआ चेहरा लिये, शर्मिन्दा और आखे नीचे किये हुए, आता है। पिताजी अपनी तश्तरी को देखते है और हमारी सौतेली मा यह देखकर कि किसीने सूप छुआ भी नही, कहती है—"बच्चो, सूप कितना स्वादिष्ट है !"

मुझे लगता है, दम घुट जायगा और आसू मुश्किल से रोक पाता हूं। भोजन समाप्त होते ही मै भाग जाता हू और एक अधेरी जगह मकर का हाथ चूमने का प्रयत्न करता हू। लेकिन वह हाथ छुडा लेता है और दूर हटकर, पता नही उलहने के रूप मे या प्रश्न के रूप मे, कहता है—

"मुझे अकेला ही छोड दो। तुम भी तो बडे होकर यही बर्ताव करोगे?"

"नही, हर्गिज नही।"

लेकिन फिर भी पिताजी बुरे जागीरदारो मे से नही थे। किसान नौकर उन्हे दूसरे जागीरदारो से अच्छा समझते थे। जो कुछ हम अपने यहा देखते थे उससे भी भयकर रूप मे सभी जगह हो रहा था। गुलामों को कोडे मारना पुलिस के नियत कर्त्तव्यो मे से एक था।

एक जागीरदार ने अपने एक साथी से कहा था, "तुम्हारी जागीर के आदमियो की सख्या इतनी धीरे-धीरे क्यो बढती है? शायद तुम उनकी शादियो के प्रति लापरवाह हो।"

कुछ ही दिनो बाद वह जागीरदार अपने गाव पहुचे और वहा के निवासियो की एक सूची मगवाई। इस सूची मे से १८ वर्ष से ऊपर के लडको और १६ वर्ष से ऊपर की लड़कियो के नाम छाट लिये। रूसी कानून के अनुसार इसी अवस्था मे शादी हो सकती थी। फिर उसने लिखना प्रारम्भ किया, "जान अन्ना से विवाह करेगा, पौल परश्का से", ओर इस तरह पाच जोडे बना दिये और हुक्म दे दिया—"ये पाचो शादिया दस दिन के भीतर हो जानी चाहिए।"

सारे गाव मे कुहराम मच गया। अन्ना की इच्छा किसी दूसरे से शादी करने की थी। पौल के माता-पिता ने किसी दूसरी लडकी के विषय मे बात कर रखी थी। फिर यह समय खेती-बारी का था, शादियों का नही और दस दिन मे शादी की तैयारी भी क्या हो सकती थी! सैकडों किसान जागीरदार से प्रार्थना करने आये, उनकी औरते जागीरदार की पत्नी के लिए भेट लेकर उनके पास प्रार्थना करने आईं कि ये शादिया रुकवा दी जाय। लेकिन सब व्यर्थ हुआ!

नियत समय पर शादी के जुलूस, जो इस समय मुर्दनी का रूप धारण किये हुए थे, गिर्जाघर पहुचे। औरते रोई-चिल्लाई, जैसे मातम के समय करती है। स्वामी का एक नौकर गिर्जाघर पहुचा दिया गया था कि जैसे ही शादिया खतम हो जाय, स्वामी को उसकी सूचना दे। लेकिन वह घबडाया हुआ लौट आया और स्वामी से कहा, "परश्का जिद पर अडी है—

पॉल से शादी करने से इकार करती है।" पादरी ने उससे पूछा—"तुम्हारी सहमति है?" लेकिन उसने जोर से उत्तर दिया—"नही।"

जागीरदार को क्रोध आ गया, "जाओ, उस बडे बालोवाले शराबी (उनका मतलब पादरी से था। रूसी पादरी बडे बाल रखते थे) से कहो कि अगर परश्का की शादी तुरन्त नही होती तो बडे पादरी से मै शिकायत करूगा कि यह शराब पीता है। उससे कह दो कि वह जिदगी-भर सडने को मठ मे भेज दिया जायगा और परश्का के कुटुम्ब को मै स्टैपीस मे निर्वासित कर दूंगा।"

उस नौकर ने यह सन्देश गिर्जाघर मे कह सुनाया। परश्का के सम्बन्धियो और पादरी ने लडकी को घेर लिया। उसकी मा रोने लगी और लडकी के पैरो पर पडकर प्रार्थना की कि वह इस तरह कुटुम्ब को नष्ट न करे। लेकिन लडकी कहती रही—"मै शादी नही करूगी।" धीरे-धीरे आवाज़ धीमी होती गई और अन्त मे वह बिल्कुल शान्त हो गई। शादी का ताज उसके सिर पर रख दिया गया और वह चुप खडी रही। नोकर ने भागकर स्वामी को सूचना दी—"उनकी शादी हो गई।"

आध घटे बाद शादी का जुलूस स्वामी के घर पर पहुचा। पाचो जोडे गाडियो मे से उतरे और आगन पार करके हॉल मे पहुचे। जागीरदार ने उनका स्वागत किया और उन्हे शराब का एक-एक गिलास दिया। औरतो ने, जो रोती हुई लडकियो के पीछे खडी थी, उनसे कहा—"मालिक की चरण-रज ले लो।"

नौकरो मे आज्ञा द्वारा शादिया इतनी अधिक प्रचलित थी कि जैसे ही किसी लडके और लडकी को मालूम पडता कि शायद उन्हे उनकी इच्छा के विरुद्ध शादी की आज्ञा दे दी जाय, वे शीघ्र ही किसी बच्चे के नामकरण सस्कार पर माता-पिता होकर खडे हो जाते थे। रूसी धार्मिक नियमो के कारण उसके बाद उन दोनो मे शादी सम्भव नही थी। साधारणत यह युक्ति सफल हो जाती थी, लेकिन एक दफा तो उसका परिणाम अत्यन्त दुखान्त हुआ। ऐण्ट्री नामक दर्जी का हमारे पडोसी की किसी लडकी से प्रेम हो गया। उसे आशा थी कि पिताजी उससे कुछ रुपया लेकर उसे मुक्त कर देगे और फिर वह खूब परिश्रम करके और रुपया कमाकर उस

लड़की को भी स्वाधीन कर लेगा, नही तो वह लडकी हमारे गुलाम से शादी करके हमारे यहा की गुलाम हो जाती। ऐण्ट्री ने देखा कि शायद उसे अन्य किसी लड़की से विवाह करने की आज्ञा दी जा सकती है, इसलिए वह उसके साथ एक बच्चे के नामकरण-सस्कार पर माता-पिता के रूप मे उपस्थित हो गया।

जिस चीज का डर था, वही हुआ। एक दिन पिताजी ने उन्हे बुलाया और आज्ञा दी, "तुम दोनो की शादी होगी।"

उन्होने निवेदन किया, "हम आपकी आज्ञा मान लेते, लेकिन कुछ ही दिन पहले हम एक बच्चे के धार्मिक माता-पिता बन चुके है।" ऐण्ट्री ने अपनी स्वय की इच्छा भी स्पष्टत. प्रकट कर दी। नतीजा यह हुआ कि उसे सिपाही बनाकर फौज मे भेज दिया गया!

निकोलस प्रथम के दिनो मे आजकल की भाति प्रत्येक के लिए फौज मे भर्ती होना आवश्यक नही था। व्यापारी और जागीरदार उससे बरी थे और जब कभी रगरूटो की आवश्यकता होती, जागीरदारो से कह दिया जाता कि वे अपने गुलामो मे से कुछ आदमियो को भेज दे। साधारणत: किसान अपने गावो मे इसके लिए एक सूची बनाकर रखते थे। लेकिन घर के नौकर बिलकुल ही अपने स्वामी की इच्छा पर निर्भर थे। यदि स्वामी किसी नौकर से असन्तुष्ट होता तो उसे तुरन्त रगरूट बनाकर भेज देता और एक कार्ड प्राप्त कर लेता कि आगे उसे एक रगरूट कम भेजना होगा। इस कार्ड का मूल्य बहुत था। इसे कोई भी किसान, जिसका नम्बर फौज मे जाने का होता, अच्छे दामो मे खरीद लेता।

उस युग मे फौजी जीवन बडा भयकर था। एक सिपाही को पच्चीस वर्ष नौकरी करनी पडती थी और वहा जीवन बडा ही कठोर था। उन दिनो सिपाही बनने के मानी थे सदैव के लिए अपने गाव और सगे-सम्बन्धियो से बिछुड जाना और भयकर अफसरो के अधीन काम करना। छोटे-से-छोटे अपराध पर अफसरो की लाते और कोडे खाना बडी मामूली बात थी। जैसी निर्दयता से वहा मार-पीट होती थी, उसकी कल्पना करना भी मुश्किल है। फौजी स्कूलो मे भी, जहा केवल सरदारो के लडके पढने जाते थे, कभी-कभी एक हजार कोडो की मार सिर्फ एक सिगरेट पीने के

जागीरदार लोग कभी-कभी जो शिक्षा अपने गुलामो को देते थे, वह भी उनके लिए एक अभिशाप ही होती थी।

पिताजी ने एक किसान के होशियार लडके को डाक्टर के यहा शिक्षा देने बाहर भेज दिया। लडका तेज था और कुछ ही साल मे वह सब सीख गया। जब वह घर लौटकर आया तो पिताजी ने अस्पताल के लिए आवश्यक सब दवाइया खरीद दी और जागीर के एक गाव मे उसे रख दिया गया। गर्मियो के दिनो मे वह आसपास से जडी-बूटिया इकट्ठी कर दवाइया तैयार करता था। शीघ्र ही वह आसपास के इलाके मे बडा लोकप्रिय डाक्टर हो गया। नजदीक के गावो से बीमार उसके पास आने लगे। पिताजी को भी अस्पताल की इस सफलता पर गर्व था। लेकिन भविष्य मे कुछ और ही होना था। एक दफा पिताजी जागीर मे गये। उसी रात को डाक्टर ने आत्महत्या कर ली। कह दिया गया कि दुर्घटना हो गई, लेकिन वास्तव मे बात यह थी कि वह एक लडकी से प्रेम करता था। उससे शादी असम्भव थी, क्योकि वह लडकी किसी दूसरे जागीरदार के अधीन थी।

एक दूसरा युवक क्रूग्लौफ था। उसे पिताजी ने मास्को के कृषि विद्यालय मे शिक्षा दिलाई थी। उसने योग्यतापूर्वक परीक्षा पास की, सोने का पदक भी प्राप्त किया। कृषि विद्यालय के अध्यक्ष ने पिताजी से प्रार्थना की कि उसे मुक्त कर दे और उसे विश्वविद्यालय मे भर्ती हो जाने दे। गुलाम वहा प्रवेश नही कर सकते थे। अध्यक्ष ने पिताजी से कहा, "निश्चय ही भविष्य मे यह एक महान पुरुष होगा। आपके लिए यह गौरव का विषय होगा कि आपने इसकी योग्यता को पहचाना।"

इन सब प्रार्थनाओ का पिताजी ने एक ही उत्तर दिया, "मुझे अपनी जागीर के लिए उसकी जरूरत है।" वास्तव मे खेती के उस पुराने ढग मे क्रूग्लौफ की कोई भी उपयोगिता नही थी। उसे घर पर सेवा के लिए बुला लिया गया। खाने के वक्त तश्तरी हाथ मे लिये खडा रहना ही उसका काम था। निश्चय ही क्रूग्लौफ असन्तुष्ट रहता। वह विश्वविद्यालय और वैज्ञानिक अनुसन्धान के सपने देखा करता और हमारी सौतेली मा उसे कष्ट देने में ही प्रसन्नता का अनुभव करती। एक दिन जाडो मे हवा के

जोर से किवाड खुल गया। सौतेली मा ने क्रूग्लौफ को आज्ञा दी, "जाओ, किवाड वन्द कर दो।"

उसने उत्तर दिया, "इसके लिए दरबान है।" और वह अपने रास्ते चला गया।

सौतेली मा पिताजी के कमरे मे चिल्लाती हुई भागी, "तुम्हारे नौकर मेरा अपमान करते है।"

तुरन्त ही क्रूग्लौफ को गिरफ्तार करके बाध दिया गया और उसे फौज मे सिपाही बनाकर भेज दिया गया। उसके वृद्ध माता-पिता उसे विदाई देने आये। वैसा करुण और हृदय-द्रावक दृश्य मैंने कभी नही देखा।

लेकिन इस वार भाग्य ने वदला लिया। निकोलस प्रथम की मृत्यु हो गई और फौज की नौकरी इतनी कष्टदायक न रही। क्रूग्लौफ की योग्यता तुरन्त पहचान ली गई और कुछ ही सालो मे वह ऊचा क्लर्क हो गया और अपने दफ्तर मे उसीकी चलने लगी। इस वीच पिताजी ने, जो विलकुल ईमानदार थे और जो कभी रिश्वत नही देते थे, एक दफा अपने कमाण्डर को खुश करने के लिए एक गलती को नजरअन्दाज कर दिया। उसके फलस्वरुप उनका जनरल होना लगभग असम्भव हो गया। उनकी जीवन-भर की, पैंतीस साल की, नौकरी का यही अन्तिम ध्येय था। इस कठिनाई को दूर करने के लिए हमारी सौतेली मा सेण्ट पीटर्सवर्ग गईं। वहा वहुत दिन इधर-उधर घूमने के वाद मालूम हुआ कि सिर्फ एक तरीका है, अमुक दफ्तर मे इस मुश्किल को दूर करने के लिए एक क्लर्क के पास सिफारिश कराना। इस आदमी का नाम था 'गिरासिम क्रूग्लौफ।'

वाद को हमारी सौतेली मा हमे सुनाती थी, "मैं उसकी योग्यता को उसी समय पहचान गई थी। मै उससे मिली और उनके विषय मे सुनाया। उसने उत्तर दिया, "उनके खिलाफ मेरे पास कोई खास शिकायत नही। जो कुछ भी मै कर सकूंगा, कर दूगा।"

क्रूग्लौफ ने अपने वचन का पालन किया। पिताजी को जनरल का पद मिल गया।

ये चीज़े थी, जो मैने स्वय अपने बचपन मे देखी थी। अगर मै उन किस्सो का वर्णन करने लगू, जो मैने उन दिनो सुनी थी, तब तो चित्र और भी अधिक भयानक हो जायगा। आदमी और औरते अपने कुटुम्बियो से छीनकर बेच दिये जाते अथवा जुए मे दाव पर रख दिये जाते, या अच्छे शिकारी कुत्तो के बदले मे दे दिये जाते! माता-पिताओ से उनके बच्चे छीनकर बेरहमी से जालिम जागीरदारो के हाथ बेच दिये जाते। घर मे नौकरो पर भयकर निर्दयता से कोडे मारे जाते। एक लडकी तो अपनी रक्षा करने के लिए डूबकर ही मर गई। एक बुड्ढे ने, जिसने जिन्दगी-भर अपने स्वामी की सेवा की थी, अन्त मे अपने गले मे फासी लगाकर आत्म-हत्या कर ली। जो गरीबी मैने अपनी यात्राओ मे, विशेषत राजकुटुम्ब के गावो मे, देखी, वह तो वर्णनातीत है। विना उसको स्वय देखे पाठक उसकी कल्पना भी नही कर सकते।

गुलाम लोग निरन्तर स्वाधीन होने का स्वप्न देखा करते, लेकिन यह आसान नही था, क्योकि काफी रुपया लेने पर ही जागीरदार अपने गुलाम को मुक्त करते थे।

एक वार पिताजी ने सुनाया था, "तुम्हे मालूम है कि तुम्हारी मा, मरने के बाद, एक दिन मेरे सामने आई थी? तुम युवक लोग इन चीजो मे विश्वास नही करते, लेकिन सचमुच वह आई थी। एक रात मैं बहुत देर तक इस कुर्सी पर बैठा रहा और मुझे नीद आ गई। उसी समय मैने देखा कि वह पीछे से आई, पीला चेहरा, बिलकुल सफेद कपडे और चमकती आखे। जब वह आखिरी सास ले रही थी, तब उन्होने मुझसे वचन ले लिया था कि मै उनकी सेविका माशा को मुक्त कर दूगा। लेकिन उसके बाद झझटो मे पूरा साल खतम हो गया और मै उसे मुक्त नही कर पाया। तब वह आई और धीमे से कहा, "अलैक्सिस, तुमने मुझे वचन दिया था कि तुम माशा को स्वाधीन कर दोगे? क्या तुम भूल गये?" मै डर गया। कुर्सी से घबडाकर उठा, लेकिन वह चली गई थी। मैंने नौकरो को बुलाया, पर किसीने कुछ भी नही देखा था। दूसरे दिन सुबह मै उनकी समाधि

पर गया, उनसे क्षमा मागी और तुरन्त ही माशा को मुक्त कर दिया।"

जब मेरे पिताजीकी मृत्यु हो गई तो माशा अन्तिम सस्कार के समय आई। उसकी शादी हो चुकी थी और वह अपने कुटुम्ब के साथ प्रसन्न थी। मेरे भाई अलैक्जैण्डर ने मजाक मे यह सब किस्सा कह सुनाया।

उसने उत्तर दिया, "इन बातो को बहुत दिन हो गये, इसलिए अब मै सच कहे देती हूं। मैंने देखा कि तुम्हारे पिताजी अपना वचन भूल गए है। इसलिए एक रात मै सफेद कपडे पहनकर उनके पास गई और तुम्हारी मा की तरह बोली और उन्हे उस वचन की याद दिलाई। तुम इसका बुरा तो नही मानते!"

"हर्गिज़ नही।"

इस अध्याय मे वर्णित घटनाओ के दस-बारह वर्ष बाद मै एक रात पिताजी के पास बैठा था। हम लोग पुरानी बातो की चर्चा कर रहे थे। गुलामी का अन्त हो चुका था और पिताजी नई परिस्थितियो की आलोचना कर रहे थे! लेकिन आलोचना तीव्र नही थी। उन्होने नए परिवर्तन शान्तिपूर्वक स्वीकार कर लिये थे। मैने कहा, "लेकिन पिताजी, एक बात तो आपको माननी पडेगी कि अक्सर आप नौकरो को बिना किसी कारण के भी बहुत बेरहमी से पीटते थे।"

उन्होने उत्तर दिया, "लेकिन उन आदमियो के साथ और कोई चारा ही न था।" फिर वह कुर्सी पर लेट गये और विचारमग्न हो गये। कुछ समय बाद वह फिर बोले, "लेकिन मै जो कुछ करता था वह तो दूसरो के मुकाबले मे कुछ भी न था। सैवलैफ ही को लो—वह इतना कोमल दीखता है, लेकिन गुलामो के साथ उसका व्यवहार भयकर था। कितनी ही दफा गुलामो ने उसे मार डालने का षड्यंत्र रचा था। फिर कम-से-कम मेरे नौकरानियो ने कोई दुर्व्यवहार तो नही किया, जबकि उस दुष्ट का व्यवहार इतना खराब था कि एक बार किसान औरतें उसे बेतरह मारने-पीटने पर उतारू हो गई थी। लेकिन अब ये बातें खत्म करो।"

: ९ :

ज़ार निकोलस प्रथम की मृत्यु

क्रीमियन युद्ध का मुझे भली भाति स्मरण है। मास्को की जनता पर उसका प्रभाव कम ही पड़ा था। वहा के प्रत्येक घर मे घायलो की मरहम-पट्टी के लिए पट्टिया आदि तैयार तो होती थी, लेकिन उनमे से कम ही रूसी सेना तक पहुच पाती। अधिकाश दुश्मनो के हाथ बेच दी जाती थी। बहन हेलेन और दूसरी लडकिया देश-प्रेम के गाने भी गाती थी, लेकिन समाज के जीवन पर उस महान् युद्ध का कोई गहरा असर नही था। पर देहात की जनता इस युद्ध के कारण अत्यधिक दुखित थी। रगरूटो की भर्ती निरन्तर हो रही थी और हमे रोज औरतो का रोना सुनाई पडता था।

मेरे भाई निकोलस को अन्य लोगो की तरह युद्ध का जोश था और अपनी पढाई पूरी करने के पहले ही वह कोकेशस के युद्ध-क्षेत्र मे चले गये। मैं उन्हे फिर न देख सका।

मैं तेरहवे वर्ष मे था जब जार निकोलस प्रथम की मृत्यु हो गई। १८ फरवरी को तीसरे पहर मास्को के प्रत्येक घर मे पुलिस के आदमी पर्चे बाट रहे थे कि ज़ार बीमार है और जनता को गिर्जाघर मे जाकर उनके स्वास्थ्य लाभ के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। उस समय तक ज़ार की मृत्यु हो चुकी थी और मास्को के अधिकारी उससे परिचित थे। लेकिन ज़ार की बीमारी के विषय मे अभी तक कुछ भी जनता को नही बतलाया गया था और अधिकारियो का खयाल था कि ज़ार की मृत्यु की घोषणा करने से पहले इस प्रकार की भूमिका बाधना आवश्यक है! हम सब गिर्जाघर गये और वहा अत्यन्त श्रद्धापूर्वक प्रार्थना की।

दूसरे दिन शनिवार को भी यही हुआ और रविवार के दिन सुबह तक ज़ार के स्वास्थ्य की बुलेटिन प्रकाशित की गई। ज़ार की मृत्यु की खबर हमारे यहा तीसरे पहर नौकर बाज़ार से लाये। खबर आते ही हमारे

घर और पडोस मे सन्नाटा छा गया। कहते थे कि बाजार मे जनता बिलकुल दुखित नही थी। सयाने लोग कानाफूसी कर रहे थे और नौकर लोग आपस मे धीमे-धीमे कुछ चर्चा कर रहे थे, शायद सोच रहे थे कि अब उन्हे आजादी मिल जाय। उस समय जागीरदारो को प्रत्येक क्षण गुलामो के विद्रोह की आशका थी।

: १० :

बाल्यावस्था में साहित्यिक रुचि

अगस्त १८५७ मे मेरी उम्र लगभग पद्रह साल की थी, जब मै पार्षदों के फौजी स्कूल मे दाखिल होने के लिए सेण्ट पीटर्सबर्ग गया। मेरी राय में मानव-चरित्र का गठन एक निश्चित दिशा मे बहुत ही कम अवस्था से प्रारम्भ हो जाता है। इसलिए मेरा विश्वास है कि आज जो कुछ मैं हू—उसके अकुर बाल्यावस्था मे भली भाति विद्यमान थे। मेरी रुचि, झुकाव, उसी उम्र मे निश्चित हो गये थे।

मेरे बौद्धिक विकास मे सबसे पहला योग मेरे रूसी अध्यापक ने दिया। वह साहित्यिक अभिरुचि के थे। निकोलस प्रथम के जमाने मे सभी सर्वश्रेष्ठ रूसी लेखको की रचनाए भी प्रकाश मे नही आ पाती थी और जो किताबे निकलती भी थी उनमे इतनी काट-छाट कर दी जाती थी कि उनमे से कुछ भागो का मतलब ही खत्म हो जाता था! गोगोल की 'दिवगत आत्माएं' जैसी निर्दोष पुस्तक का द्वितीय सस्करण नही छपने दिया गया और प्रथम भाग का द्वितीय सस्करण रोक दिया गया। पुश्किन, लरमौनटौफ, ए०के०, टाल्सटाय आदि की अनेक रचनाओ के प्रकाशन पर रोक थी। फिर राजनैतिक कविताए अथवा उस जमाने की परिस्थितियो के ऊपर आलोचनात्मक साहित्य की तो बात ही दूसरी है। लेकिन इस सब साहित्य को हाथ से लिख-लिखकर नकल की जाती थी। स्मर्नौफ (रूसी अध्यापक) गोगोल और पुश्किन की सम्पूर्ण पुस्तके स्वय अपने और अपने मित्रो के

लिए नकल करते थे। कभी-कभी मैं भी इस कार्य मे योग देता था। उस ज़माने के सभी युवको की भाति वह भी इन लेखको के प्रति अत्यन्त श्रद्धा रखते थे। गोगोल का मकान हम सबके लिए तीर्थ समान था। यद्यपि मै उस समय सिर्फ नौ साल का था, फिर भी मुझे भली भाति स्मरण है कि गोगोल की मृत्यु से मास्को कैसा शोक-मग्न हो गया था। तुर्गनेव ने उस विषय मे एक नोट लिखा था और ज़ार निकोलस ने उसी नोट पर उन्हे निर्वासन का दण्ड दिया था !

पुश्किन की कविताओ का तो मेरे ऊपर बहुत असर नही पडा, लेकिन गोगोल के ग्रन्थो ने मेरे मस्तिष्क और लेखनी पर ज़बरदस्त प्रभाव डाला। मेरे भाई अलैक्जैण्डर का रुझान उस समय कविता की ओर था। वह अत्यन्त भावुक कहानिया लिखते थे और अच्छी सगीतपूर्ण कविता भी वह बडी सुगमता से लिख लेते थे। यदि बाद को उनका दिमाग दर्शन और इतिहास की ओर न मुड गया होता, तो निश्चय ही वह ऊचे दर्जे के कवि बन गये होते। उस समय उनकी कविता का प्रेरणा-स्रोत एक स्थान विशेष था और उसे लेकर अक्सर मैं उन्हे चिढाया करता था। फलस्वरूप हम लोगो मे लडाई-झगडे हो जाते, लेकिन अलैक्जैण्डर का स्वभाव अत्यन्त सरल था, इसलिए तुरन्त मैत्री हो जाती। हम दोनो मे अत्यधिक स्नेह था। लडको मे प्रेम और झगडे साथ-ही-साथ चलते है।

उस अवस्था मे मैं पत्रकार हो गया था। अपनी बारहवी साल मे मैं एक दैनिक पत्र का सम्पादन करता था। क्रीमियन युद्ध तबतक शुरू नही हुआ था और सिर्फ मास्को पुलिस का गजट ही पिताजी के पास आता था, इसलिए वही गजट हमारा आदर्श था। फलस्वरूप हमारे गज़ट मे भी उस दिन की छोटी-छोटी खबरे रहती. 'जगल गये' 'स्मर्नौफ महोदय ने दो चिडिया मारी', आदि-आदि।

लेकिन शीघ्र ही १८५५ मे मैंने एक मासिक पत्र निकाला, जिसमे अलैक्जैण्डर की कविताए, मेरी कहानिया तथा अन्यान्य चीज़े रहती। उस पत्र की आर्थिक स्थिति काफी मजबूत थी। उसके ग्राहक काफी थे, यानी सम्पादक स्वय और स्मर्नौफ, जो हमारे घर से चले जाने के बाद भी

अपना चन्दा अर्थात कागज नियमित रूप से भेज देते थे और मैं भी उनके लिए नियमपूर्वक उसकी दूसरी नकल कर देता था।

अलैक्जैण्डर ने इस पत्र के प्रचार मे अत्यधिक सहायता दी और इस पत्र की ख्याति शीघ्र ही उसके फौजी स्कूल मे पहुच गई।

अगस्त १८५७ मे लगभग दो साल बाद पत्र को बन्द कर देना पडा। नई परिस्थितिया और एक बिलकुल नया जीवन मेरे सामने था। मुझे घर छोडने मे दुःख हो रहा था, क्योकि उसके मानी थे, अलैक्जैण्डर से अलग हो जाना।

खण्ड २
फौजी स्कूल में

: १ :

स्कूल में प्रवेश

इस प्रकार पिताजी की पुरानी अभिलाषा पूरी हुई। केवल डेढ सौ बालक, अधिकाशत बडे जागीरदारो के लडके, इस विशेष स्कूल मे शिक्षा प्राप्त करते थे। यहा फौजी कवायद के साथ-ही-साथ दरबार की भी शिक्षा दी जाती थी। चार या पाच साल यहा रहने के बाद जो पार्षद अन्तिम परीक्षा पास कर लेते थे, वे फौज की किसी भी टुकडी मे—चाहे उसमे जगह हो या न हो, अफसर हो सकते थे और हर साल सबसे ऊची कक्षा के प्रथम सोलह विद्यार्थी दरबार के पार्षद नामाकित कर दिये जाते थे, यानी वे सम्राट, सम्राज्ञी तथा राजकुटुम्ब के अन्य सदस्यो के साथ रख दिये जाते थे। यह बडे गौरव की चीज़ मानी जाती थी। उसके बाद इन युवको को राज्य मे ऊचे-ऊचे पद प्राप्त करना अपेक्षाकृत आसान हो जाता था, क्योकि दरबार के उच्च अधिकारियो से उनकी मुलाकात हो जाती थी। इसलिए सभी जागीरदारो की हार्दिक इच्छा ही रहती थी कि किसी भी प्रकार उनके बच्चे इस स्कूल मे भर्ती हो जाय। अब चूकि मै उसमे भर्ती हो गया था, पिताजी अपने कुटुम्ब के उज्ज्वल भविष्य के सपने देख सकते थे।

स्कूल पाच दर्जो मे विभाजित था। सबसे ऊचा एक दर्जा था और सबसे नीचा पाचवा दर्जा। सब लोगो की इच्छा थी कि मै चौथी कक्षा मे भर्ती होऊ, लेकिन चूकि मैं अकगणित मे कमजोर था और चौथी कक्षा भर चुकी थी इसलिए मै पाचवी कक्षा मे ही भर्ती हुआ। मुझे इससे अत्यन्त उद्विग्नता

हुई। पहले तो मैं फौजी स्कूल मे अत्यन्त अनिच्छापूर्वक भर्ती हुआ था और अब मुझे चार के बजाय पाच साल तक इसमे रहना था।

लेकिन फिर भी अब जब मै उन दिनो की याद करता हू तो मुझे प्रसन्नता होती है कि मुझे पाचवी कक्षा मे भर्ती किया गया। चूकि उस कक्षा की अधिकाश पुस्तके मै पहले ही पढ चुका था, इसलिए कक्षा मे जो कुछ अध्यापक कहते थे, उसीको सुनकर मुझे पाठ याद करने का अभ्यास हो गया। फिर इसके वाद अपनी इच्छानुसार मुझे पढने और लिखने के लिए अवकाश भी मिल गया। जब मै ऊची कक्षाओ मे पहुचा तो विभिन्न विषयो को भली भाति समझने के लिए अपने साथियो से मै अधिक तैयार था। जब मैं फौजी स्कूल मे भर्ती हुआ तो उसमे महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे थे। निकोलस प्रथम के भयकर शासन के वाद सम्पूर्ण रूस ही अपनी लम्बी नीद से जाग्रत हो रहा था। इसका प्रभाव हमारे स्कूल पर भी पडा। पता नही, मुझपर क्या बीतती, यदि दो-एक साल पहले मैं उस स्कूल मे भर्ती हुआ होता। या तो मेरी इच्छा शक्ति बिलकुल ही दबोच दी जाती या मैं स्कूल से निकाल दिया जाता और फिर न जाने उसके परिणाम कैसे भयकर होते।

स्कूल के अध्यक्ष एक वृद्ध सज्जन थे—जनरल जैलतूखिन। लेकिन वह सिर्फ नाममात्र के ही अध्यक्ष थे। स्कूल का वास्तविक संचालक एक कर्नल था—कर्नल जियारडोट। वह फ्रासीसी था।

कद मे छोटा, शरीर का दुबला-पतला, गहरी तेज आखे, छोटी कटी हुई मूंछे, शान्त, गम्भीर, अत्यन्त चालाक, निरकुश—ऐसा था वह कर्नल। उस लडके की शामत ही आ जाती जो 'कर्नल' की इच्छानुसार नही चल पाता था।

सभी लड़को की जबान पर 'कर्नल' का नाम रहता। अन्य अफसरों को तो विद्यार्थियों ने भिन्न सजाएं दे रक्खी थी, लेकिन 'कर्नल' के साथ ऐसा करने की किसीकी हिम्मत न थी। एक प्रकार का रहस्यपूर्ण वायु-मडल उसके चारो ओर घिरा हुआ था, मानो वह हर समय हर जगह रहता हो!

खेल, मजाक, बातचीत, एक साथ रुक जाते, जैसे ही हम लोग उसे धीरे-धीरे आते देखते। किसी लडके के प्रति उसकी उदासीनता, शान्त व्यवहार, या व्यग्यात्मक मुस्कराहट उस बालक को घबडा देने के लिए काफी थी।

कर्नल के अधीन स्कूल का आतरिक जीवन अत्यन्त निकृष्ट था। प्रत्येक स्कूल के छात्रावास मे कुछ ऊधम होता है। नए लडको को थोड़ा-बहुत तग किया जाता है। पुराने लडके नयो पर कुछ रौब भी दिखाना चाहते है। लेकिन कर्नल के शासन मे यह 'ऊधम' बडा भयकर रूप धारण कर लेता था। वह पहली कक्षा के विद्यार्थियो को एक तरह बिलकुल स्वतत्र छोड देता था और उनके उत्पातो को जानते हुए भी ऐसा व्यवहार करता मानो उसे कुछ ज्ञात ही न हो। फलस्वरूप प्रथम कक्षा के विद्यार्थी मनमानी करते। वे नए लडको को एक कमरे मे इकट्ठा करके चक्कर लगवाते, कोडा मारते, भयकर गालिया बकते और न जाने क्या-क्या करते, उसके विषय मे मौन रहना ही बेहतर है। कर्नल यह सब जानता था—लेकिन अनभिज्ञ बना रहता। वास्तव मे प्रथम कक्षा के विद्यार्थियो को इस तरह की पूर्ण स्वतन्त्रता देकर ही वह स्कूल मे अनुशासन रखता था।

लेकिन कर्नल का प्रभाव धीरे-धीरे घट रहा था। पूरे बीस साल तक 'कर्नल' ने अपने ढग से स्कूल का सचालन किया था। उसका आदर्श था कि पार्षद सुन्दर दीखे, बाल कढे हुए, सजे और कोमल हो—चाहे वह कुछ सीखे या न सीखे। उसके विशेष कृपापात्र वे लडके थे, जिनके पास नाखून रगने के ब्रुश, सेण्ट, इत्र, खुद के पहनने के कपडे (जो केवल रविवार को अपने घर पहने जा सकते थे) अच्छे-से-अच्छे हो और जो अत्यन्त सुन्दरतापूर्वक सलामी दे सके।

लेकिन अब जमाना बदल गया था और एक नई लहर आ रही थी। पहले लडके सिर्फ आखिरी सालो मे ही कुछ पढते थे, लेकिन अब अध्ययन विधिवत होने लगा था। हमारे स्कूल मे अन्य स्कूलो की भाति स्कूल का नैतिक धरातल भी पहले से ऊचा उठ गया था और गन्दे मजाको से घृणा होने लगी थी। 'कर्नल' को अलग कर दिया गया था।

रूस मे सर्वत्र शिक्षा की चर्चा थी। जैसे ही क्रीमिया के युद्ध के पश्चात पेरिस मे सन्धि हुई और लिखने-पढने की कुछ स्वाधीनता मिली, लोग शिक्षा-क्रम के विषय मे बातचीत करने लगे। आम जनता का अज्ञान, शिक्षा के प्रसार मे अडचने, देहात मे स्कूलो की कमी, अध्यापन के पुराने ढग, और इन सब दोषो को दूर करने के उपायो की चर्चा शिक्षित समुदाय, समाचार-पत्रो और यहातक कि रईसो के घरो मे भी होने लगी। सबसे पहले १८५७ मे लडकियो के लिए हाई स्कूल खोले गये और उनमे सुयोग्य अध्यापक रखे गये। अच्छी सख्या मे पुरुष और स्त्रिया आगे आई। इनमें से कुछने तो शिक्षा-जगत की पर्याप्त सेवा की है। किसी भी देश मे उनकी पुस्तको का समुचित सम्मान होगा।

फौजी स्कूल भी इस परिवर्तन से अछूता न रहा। स्कूल के अध्यक्ष विंकलर ने, जो स्वय गणित के अच्छे विद्वान और उन्नत विचारो के थे, स्कूल मे अध्ययन को प्रोत्साहन देने के लिए एक नया क्रम चलाया। अब तक नीची कक्षाओ मे निम्न कोटि के अध्यापक पढाते थे। उसने इन कक्षाओ के लिए सर्वश्रेष्ठ अध्यापको का प्रबन्ध किया। इस तरह चौथी कक्षा को गणित पढाने के लिए उसने एक श्रेष्ठ गणितज्ञ को आमन्त्रित किया। फलस्वरूप सारा दर्जा गणित की ओर ध्यान देने लगा। पाचवी कक्षा के लिए अध्यक्ष ने दो महान विद्वानो का प्रबन्ध किया, रूसी साहित्य के महान विद्वान प्रोफेसर क्लैसोव्स्की को रूसी पढाने के लिए और राष्ट्रीय पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष हर बैकर को जर्मन पढाने के लिए। अध्यक्ष की योजना सफल हुई। हम गौरव अनुभव करते थे कि हमे विश्वविद्यालय के अध्यापक पढाते है।

कुछ समय बाद मैंने जर्मन अध्यापक से गेटे का महान ग्रथ 'फास्ट' मागा। मैं उसका रूसी मे अनुवाद पढ चुका था, लेकिन अब मै उसे मूल मे पढना चाहता था। "ग्रथ दार्शनिक अधिक है, तुम इसमे से कुछ भी नही समझोगे।" उन्होने कहा। लेकिन फिर भी उन्होने पुस्तक मुझे दे दी। मैने उसकी प्रत्येक पक्ति के भाव और सगीत का खूब रस लिया और शीघ्र ही उसके पृष्ठ-के-पृष्ठ रट लिये। ऐसी भाषा मे काव्य पढना, जिसे पाठक भली भाति जानता नही, इससे बढकर आनन्द की क्या बात हो सकती

है? सम्पूर्ण विषय कुछ धुधला-सा रहता है और ऐसा वायुमडल काव्य-सौन्दर्य के अनुरूप होता है, तथा काव्य के सगीत का प्रभाव और भी गहरा हो जाता है।

प्रोफेसर क्लैसोव्स्की हमे रूसी व्याकरण पढाते थे। लेकिन शुष्क व्याकरण पाठ की जगह हमे वहा कुछ और ही सुनने को मिलता। व्याकरण के साथ कभी रूसी लोककथा की तुलना होमर की पक्ति से अथवा 'महाभारत' से होती, तो कभी शिलर की कविता सुनाते और वर्तमान समाज की किसी रूढि के ऊपर व्यग्य करते। फिर व्याकरण आता, उसके बाद फिर वही काव्य और दर्शन की चर्चा।

वास्तव मे इसमे से अधिकाश हमारी समझ के बाहर थे, लेकिन अध्ययन की सम्मोहक शक्ति इसीमे है कि उसके द्वारा हम नए क्षेत्रो मे प्रवेश करते है। ऊधमी लडके भी उनके पढाने के समय बिलकुल शान्त रहते। मेरे ऊपर तो क्लैसोव्स्की का प्रभाव बहुत गहरा पडा।

पश्चिमी यूरोप मे इस प्रकार के अध्यापक कम ही हैं। लेकिन रूस मे तो शायद ही कोई प्रसिद्ध साहित्यिक अथवा राजनैतिक नेता हो, जिसके प्रारम्भिक विकास मे ऐसे अध्यापको का बहुमूल्य योग न रहा हो। वास्तव मे प्रत्येक स्कूल मे इस प्रकार का एक अध्यापक होना चाहिए। स्कूल मे प्रत्येक अध्यापक का अपना विषय होता है और विभिन्न विषयो मे जोडने की कोई शृखला भी नही होती। केवल साहित्य का अध्यापक ही यह काम कर सकता है। अपने विषय की रूप-रेखा के भीतर रहते हुए भी वह अपने विषय को मनचाहे ढग से पढा सकता है, मानव-समाज के इतिहास और विभिन्न विज्ञानो को जोड सकता है और बालको के हृदय और मस्तिष्क मे नवीन विचारो और कल्पनाओ को जन्म दे सकता है। मान लीजिये, वह भाषा के विकास को लेता है यानी प्रारम्भिक महाकाव्यो, लोक-साहित्य, और आगे चलकर आधुनिक कथा-साहित्य तथा वर्तमान वैज्ञानिक, राजनैतिक और दार्शनिक साहित्य को पढाता है। और इसके साथ ही यदि वह इतिहास और दर्शन की विभिन्न धाराओ की भी चर्चा करता है, जो इस सम्पूर्ण साहित्य मे प्रतिबिम्बित हुई है, तो इस प्रकार वह मानव-समाज के ज्ञान के क्रमिक विकास की मोटी रूपरेखा अपने विद्या-

र्थियो को दे देता है। अन्य किसी विषय के माध्यम से ये सब चीजे नही पढाई जा सकती ।

यही कार्य प्राकृतिक विज्ञानो के अध्यापन मे भी करना चाहिए। यह काफी नही है कि-भौतिक शास्त्र और रसायन शास्त्र, प्राणि-शास्त्र और वनस्पति शास्त्र, खगोल शास्त्र और वायुशास्त्र अलग-अलग पढा दिये जाय। सम्पूर्ण प्राकृतिक विज्ञानो का मूल तत्व, सारी प्रकृति की एक मोटी रूपरेखा, विद्यार्थियो को पढाई जानी चाहिए, चाहे उसके अध्ययन मे कितना ही समय क्यो न लगे। शायद भूगोल का अध्यापक यह कार्य कर सकता है, लेकिन उसके लिए आजकल के भूगोल के अध्यापको से भिन्न प्रकार के शिक्षक हमे चाहिए। आजकल जो कुछ भी हमे भूगोल के नाम पर पढाया जाता है वह और कुछ भी हो, कम-से-कम भूगोल तो नही है।

× × ×

एक दूसरे अध्यापक ऐवर्ट ने हमारे ऊवमी दर्जे के ऊपर दूसरी तरह से ही कब्जा किया। इनका कार्य हमारे हस्ताक्षर सुधारना था। अन्य अध्यापको का तो कुछ सम्मान था, लेकिन यह तो सचमुच शहीद थे। उनके प्रति उद्दण्ड होना विद्यार्थियो मे फैशन था। शायद वह अपनी निर्धनता के कारण ही इस स्कूल मे अपने काम पर लगे हुए थे। पुराने विद्यार्थी, जो पाचवी कक्षा मे दो-तीन साल से पड़े हुए थे, इस अध्यापक के साथ अत्यधिक बुरा व्यवहार करते थे। लेकिन किसी तरह उसने इनके साथ समझौता कर लिया था, 'एक दिन मे एक शैतानी'। सच तो यह है कि हम लोगो की तरफ से यह समझौता अक्सर भग हो जाता था!

"बच्चो, एक शैतानी हो गई। अब नही।" धीमे से उन्होने कहा "कमीज़ बिगड गई।" और वह किसी लडके की कापी ठीक करने मे लग गये।

हम सब निस्तब्ध रह गए और अत्यन्त लज्जित हुए। शिकायत करने के बजाय उन्होने तुरन्त ही समझौते की बात की! सारी कक्षा उनके पक्ष मे हो गई। हमने अपने साथी से कहा "तुमने अत्यन्त धृष्टतापूर्ण कार्य किया है।" किसीने चिल्लाकर कहा, "वह निर्धन है और तुमने उनकी कमीज खराब कर दी! शर्म आनी चाहिए!"

जिस लडके ने वह कपडा फेका था, तुरन्त क्षमा मागने गया। ऐबर्ट ने धीमी आवाज मे सिर्फ इतना ही कहा, "आपको सीखना चाहिए।"

उसके बाद सब शान्त हो गये और दूसरे दिन, मानो हम सबने पूर्व निश्चय कर लिया हो, हम लोगो ने अपने अत्यन्त सुन्दर हस्ताक्षरो मे लिखा और अपनी कापिया ऐबर्ट के पास ले गये।

इस क्षमा का मेरे ऊपर बडा असर पडा, स्मृति-पटल पर उसकी गहरी छाप छूट गई और अबतक मुझे इस घटना का भली भाति स्मरण है। इस सबक के लिए मै आजतक उन अध्यापक के प्रति कृतज्ञता अनुभव करता हू।

: २ :

भाई से पत्र-व्यवहार

मेरे भाई अलैक्जैण्डर उस समय मास्को के फौजी स्कूल मे थे। हम दोनो मे अच्छा पत्र-व्यवहार चला। जबतक मै घर पर था, हमारे बीच पत्र-व्यवहार बहुत साधारण ही हो सकता था, क्योकि पिताजी का स्वभाव था कि घर मे आये प्रत्येक पत्र को वह पढते थे। अब हम लोग अपने पत्रो मे किसी भी विषय पर लिख सकते थे। केवल एक ही मुश्किल थी—पत्र-व्यवहार के लिए टिकटो के पैसो की व्यवस्था करना, लेकिन शीघ्र ही हम लोगो ने ऐसी बारीक लिखावट लिखने का अभ्यास कर लिया कि

बहुत ही थोडी जगह मे बहुत-कुछ लिख लेते। अलैक्जैण्डर के हस्ताक्षर अत्यत सुन्दर थे और वह चार छपे पृष्ठो का मसाला केवल एक कागज ही पर लिख लेते थे और उनकी बारीक लिखावट को पढ़ना बारीक टाइप से भी अधिक सुगम था। दुर्भाग्य है कि वे पत्र, जिन्हे मै बडे प्रेम से रखता था, खो गये। पुलिस एक तलाशी के समय उन्हे भी उठा ले गई।

मेरे गुरु के पत्रो मे तो अधिकाशत. इस नए स्कूल और वातावरण की चर्चा थी, लेकिन शीघ्र ही हमारे पत्रो मे गम्भीर विषयो की चर्चा होने लगी। मेरे भाई के लिए छोटी तुच्छ चीजो पर लिखना सम्भव ही न था। सभा-सुसाइटियो मे भी उन्हे तभी मजा आता था जब कोई गम्भीर चर्चा होती हो। जब छोटी-छोटी चीजो पर बातचीत होने लगती तो उन्हे सिरदर्द-सा मालूम होने लगता था। वह मानसिक विकास मे मुझसे कही आगे थे और अपने पत्रो मे उन्होने सदैव मुझे नए-नए विषय पढने को प्रेरित तथा उत्साहित किया। अपने पत्रो मे वह मुझे नई-नई वैज्ञानिक तथा दार्शनिक समस्याओ पर लिखते थे। ऐसे स्नेही भाई को पाकर मै कितना सौभाग्यशाली था! मुझमे जो कुछ भी अच्छा और श्रेष्ठ है, वह उन्हीके कारण है!

कभी वह मुझ कविता पढने को लिखते और अपने पत्रों मे कई कविताए स्मृति से लिख देते। "कविता पढो—कविता मनुष्य को उन्नत करती है," उन्होने लिखा था। न जाने कितनी बार जीवन मे मैंने इस सत्य का अनुभव किया है। वह स्वय भी कवि थे और अत्यन्त मनोहर कविताएं रचते थे। वास्तव मे मुझे दु ख है कि उन्होने कविता करना छोड दिया। लेकिन कला के प्रति जो प्रतिक्रिया उस जमाने मे रूसी नवयुवको मे हुई और जिसका चित्रण तुर्गनेव ने ('पिता और पुत्र' मे) बैजारोव के चरित्र मे किया है, उसके कारण वह अपनी कविताओ से घृणा करने लगे और अपनेको विज्ञान की ओर लगा दिया।

"आदमी को अपने जीवन मे एक ध्येय बना लेना चाहिए।" उन्होने मुझे एक दफा लिखा था, "बिना निश्चित ध्येय के जीवन निस्सार है।" उन्होने मुझे सलाह दी कि आदर्श जीवन के अनुकूल कोई ध्येय बना लूं।

उस समय मेरी अवस्था इतनी नही थी कि 'ध्येय' निश्चित कर सकू, लेकिन फिर भी कुछ अनिश्चित-सा, धुधला-सा, लेकिन 'अच्छा ध्येय' मेरे मस्तिष्क पर जम गया, यद्यपि उस समय मै यह नही कह सकता था कि वह आगे चलकर क्या होगा।

पिताजी खर्च के लिए बहुत कम पैसे देते थे। लेकिन अगर अलैक्जैण्डर को किसीसे कुछ मिल जाता तो वह कभी उसे खेल-तमाशे मे खर्च न करते, कोई पुस्तक खरीदकर मुझे भेज देते। पर वह बेतरतीब पढने के विरोधी थे। उन्होने मुझे लिखा था, "किसी समस्या को लेकर पुस्तक को पढो।" उस समय मै उनकी इस सलाह को नही समझ सका और अब मुझे आश्चर्य होता है कि न जाने कितनी पुस्तके मैने विभिन्न विषयो की—विशेषत इतिहास की पढी होगी। लेकिन मैने फ्रासीसी उपन्यासो के पढने मे समय बरबाद नही किया, क्योकि बहुत पहले ही अलैक्जैण्डर ने उनके विषय मे कहा था, "वे फालतू है और उनकी भाषा भी खराब है।"

'विश्व' के विषय मे हमारी क्या धारणा होनी चाहिए, हमारे पत्र-व्यवहार का एक मुख्य विषय था। अपने बचपन मे हम कभी धार्मिक नही थे। गिरजाघर मे मैने जो कुछ सुना था उसमे केवल दो ही चीजो का मेरे ऊपर प्रभाव पडा था, बाइबिल के वे बारह वाक्य, जिनमे प्रभु ईसा के दुखो का वर्णन है और वह छोटी-सी प्रार्थना, जिसमे शासन के प्रति घृणा है!

हमारी बहन हेलेन, जिसकी अब शादी हो गई थी, सेण्ट पीटर्सबर्ग मे थी और प्रत्येक शनिवार को मैं उसके घर जाता था। उसके पति के पास अच्छा पुस्तकालय था, जिसमे गत शताब्दी के फ्रासीसी दार्शनिको और इतिहासकारो के लगभग सभी ग्रथ थे। मै उन्हे पढने लगा। इस प्रकार की पुस्तको पर रूस मे प्रतिबन्ध था। मै उन्हे स्कूल नही ले जा सकता था और इसलिए मै वही रात-भर इन्ही पुस्तको को पढता रहता।

अलैक्जैण्डर अब कैण्ट के दर्शन पर पहुच गये थे और हमारे पत्रो मे दार्शनिक चर्चा भरी रहती थी। हम दोनो घटो कैण्ट के दर्शन पर बहस करते रहते, लेकिन अलैक्ज़ैण्डर मुझे कैण्ट का अनुयायी न बना सके।

मेरी रुचि विज्ञान—यानी गणित, भौतिक शास्त्र और खगोल शास्त्र—मे थी। १८५८ मे डारविन की अमर पुस्तक निकलने के पहले मास्को विश्वविद्यालय के जीवशास्त्र के एक अध्यापक ने परिवर्तनवाद पर तीन व्याख्यान दिये थे। मेरे भाई तुरन्त उनसे प्रभावित हो गये। लेकिन वह उतने से ही सन्तुष्ट न हुए। उन्होने उस विषय की कई पुस्तके पढी और सिद्धान्त की मुख्य-मुख्य बाते और उसके ऊपर अपने स्वय के विचार मुझे पत्रो मे लिखे। डारविन की विकासवाद की पुस्तक निकलने पर भी उनकी बहुत-सी जिज्ञासाए शान्त न हुईं और इस कारण और भी पुस्तके पढने को वह उत्साहित हुए। अब हमारे पत्र-व्यवहार मे इसी विषय की चर्चा रहने लगी।

इस बीच मे १८५८-५९ मे अलैक्ज़ैण्डर अन्य रूसियों की भाति अर्थ-शास्त्र के अध्ययन से भी प्रभावित हुए और मुझे उस विषय की पुस्तके पढने को भेजी। लेकिन मुझे उसमे बिलकुल रस नही आया।

गर्मियो के दिनो मे नीचे दर्जे के विद्यार्थियो की छुट्टी हो जाती। स्कूल से छुट्टी पाना, मास्को पहुचना और वहा अलैक्ज़ैण्डर से मिलना इतना अच्छा लगता कि उसके लिए दिन गिनता रहता। लेकिन एक दफा घर पहुचकर बहुत निराश होना पडा। अलैक्ज़ैण्डर को पिताजी ने घर आने की अनुमति नही दी थी। हर रात को मेहमानो के कमरो मे खूब रोशनी होती, बाजे बजते, तरह-तरह के भोजन तैयार होते रहते। लेकिन मैं इधर-से-उधर उन कमरो मे अनमना घूमता रहता।

एक रात को, दस बजे के बाद, पुराने नौकर फ्रौल ने इशारे से मुझे हॉल के बाहर बुलाया। बाहर आने पर कहा, "गाड़ीवान के कमरे मे आओ, वहा अलैक्जैण्डर है।"

मैं भागकर वहां उस धुधले-से कमरे मे पहुचा। अलैक्जैण्डर बैठे थे। "प्यारे साशा—तुम आये कैसे?" और तुरन्त हम दोनो भुजपाश मे बध गए। कुछ देर तक भावावेश मे बोल ही न सके।

"धीमे बोलो, नही तो वे तुम्हारी आवाज़ सुन लेंगे," रसोईदारिन ने अपने आसू पोछते हुए कहा, "बेचारे मातृहीन बालक—काश, इनकी मा जीवित होती!"...

फ्रौल भी अपना सिर झुकाए खडा था, उसकी आखे भरी हुई थी। "पेत्या, देखो इसके विषय मे एक शब्द भी किसीसे न कहना।" उसने रसोईदारिन से कहा। रसोईदारिन ने एक मिट्टी के वर्तन मे अलैक्जैण्डर के लिए भोजन ला रखा।

अलैक्जैण्डर ने तवतक विभिन्न विषयो पर वातचीत शुरू कर दी थी और उस वर्तन को खाली कर दिया। मै वडी मुश्किल से उनसे पूछ पाया कि इतनी देर मे वह आये कैसे। हमारा मकान उनके फौजी स्कूल से पाच मील दूर था।

उन्होने कपडो का एक गुड्डा बनाकर कम्वल के भीतर लिटा दिया। फिर वह बुर्ज पर गए, खिडकी के रास्ते उतरे, चुपचाप बाहर आ गये और पूरे पाच मील पैदल चले आए!

"तुम्हे सुनसान जगल मे डर नही लगा।" मैने पूछा।

"मुझे डर किसका लगता? कई कुत्तो ने मेरा पीछा किया, मैने खुद उन्हे छेडा था। कल मै अपनी तलवार अपने साथ लाऊगा।"

नौकर उस कमरे मे आते-जाते, हमे देखकर कुछ आश्चर्यचकित होते और दूर बैठ जाते। हम दोनो एक-दूसरे की बाहो मे बाह डाल वहा बहुत रात तक बैठे रहे और विकासवाद, भौतिकशास्त्र, इतिहास आदि पर बहस करते रहे।

मैने साशा से प्रार्थना की कि अव दूसरी रात वह न आये। लेकिन वह आये, रास्ते मे कुत्तो को भी तग किया, जिसके लिए तलवार साथ मे लाये थे। एक रात वह कुछ जल्दी आ गये। गाडी मे चले आये थे। उससे पहली रात को एक नौकर ने, जो कुछ भी उसे ताश खेलनेवालो से मिला था, उन्हे लाकर दे दिया था।

वह अगली रात को आना चाहते थे, लेकिन वह नौकरो के लिए वडा खतरनाक हो सकता था। इसलिए हम लोगो ने अगले जाडो तक के लिए विदा ली। एक छोटे-से पत्र द्वारा मुझे अगले दिन मालूम हो गया कि उनका यह रात का घूमना स्कूल के अधिकारियो को नही मालूम पडा। यदि वे

यह जान पाते तो कैसी भयकर सजा देते। स्कूल के सब विद्यार्थियो के सामने इतने कोडे मारते कि वह वेहोश हो जाते और फिर सिपाहियो के लडको के स्कूल मे भेज दिया जाता। उन दिनो कुछ भी सम्भव था।

यदि हमारे पिताजी के कानो तक इसकी खबर पहुच जाती तो जो नौकरो पर बीतती वह और भी भयकर होती। लेकिन वे कभी विश्वासघात न करते। वे सब अलैक्जैण्डर के आने के विषय मे जानते थे, लेकिन किसी-ने भी इस विषय मे कुटुम्ब के किसी आदमी से कुछ नही कहा।

: ३ :

अध्ययन और संगीत में रुचि

रूस और पश्चिमी यूरोप के स्कूली जीवन मे बहुत भिन्नता है। इस-लिए मुझे अपने स्कूल के अध्ययन-काल पर कुछ और लिखना चाहिए। साधारणत. रूसी लडके स्कूल के अध्ययन-काल मे ही अन्य सामाजिक, राजनैतिक और साहित्यिक विषयो मे भाग लेना प्रारम्भ कर देते है। यह सच है कि कम-से-कम पार्षदो का फौजी स्कूल ऐसे सर्वांगीण विकास के लिए उपयुक्त स्थान नही था, लेकिन परिवर्तन के उस युग मे इस स्कूल मे भी नए विचारो का प्रवेश हो गया था।

चौथी कक्षा से ही इतिहास मे मेरी विशेष रुचि थी। क्लास मे जो नोट लेना था तथा कुछ और पढकर, मैने अपने लिए मध्य युग का एक पूरा इतिहास ही लिख डाला। अगली साल मेरा ध्यान पोप और राजा के बीच सघर्ष की ओर गया और अब मेरी हार्दिक इच्छा हुई कि मुझे राज-कीय पुस्तकालय मे तत्सम्बन्धी साहित्य पढने की अनुमति मिल जाय। उस समय स्कूल के विद्यार्थियो को वहा बैठने की अनुमति नही मिलती थी, लेकिन हमारे एक अध्यापक की विशेष कृपा से मुझे वहा पढने की आज्ञा मिल गई।

वहा मुझे मूल फ्रासीसी ग्रन्थो के पढने का अवसर मिला। समाज

का एक नया रूप ही मेरे सामने उपस्थित हो गया। उसी समय से मेरा विश्वास हो गया कि इतिहास की आधुनिक पुस्तको की अपेक्षा—जिनमे आजकल की राजनीति घुस पडी है—मूल ग्रथ कही अधिक उपयोगी है। मनुष्य के मानसिक विकास के लिए किसी भी प्रकार की मौलिक खोज से अधिक प्रेरणा देनेवाली अन्य कोई चीज नही।

× × ×

उस समय १८५९-६१ के लगभग विज्ञान की वही धूम थी। अनेक वैज्ञानिको ने अपनी खोजो से वैज्ञानिक जगत मे हलचल मचा रखी थी। सभीका ध्यान विज्ञान की ओर जा रहा था। उसी समय से मेरा विश्वास हो गया कि आगे चलकर किसी भी विषय का अध्ययन किया जाय, लेकिन प्रारम्भ मे प्राकृतिक विज्ञान का समुचित ज्ञान अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिए।

उच्च गणित मे भी मेरी रुचि थी। हममे से कुछ ने निश्चय कर लिया था कि स्कूल पास करने के बाद फौजी गार्ड मे न जायगे—जहा अधिकाश समय परेड और कसरत मे ही जाता है। हमने तोपखाने अथवा इजीनियरिंग विभाग मे जाने का निश्चय किया और तदर्थ उच्च गणित का विशेष रूप से अध्ययन किया। उसी समय मैने खगोल शास्त्र भी पढा। इसी अध्ययन ने मेरे बाद के राजनैतिक विचारो को जन्म दिया और मनुष्य और प्रकृति, चेतन और अचेतन की एकता मेरे जीवन-दर्शन का आधार ही हो गया।

× × ×

इस सबके साथ हमारे पास आमोद-प्रमोद और खेल-तमाशो के लिए भी समय बच रहता। हमारा सबसे अच्छा समय परीक्षा के बाद होता, जब कैम्प मे जाने के पहले हम तीन-चार सप्ताहो के लिए बिलकुल स्वतत्र रहते। मैं उस समय पुस्तकालय मे अथवा चित्रशाला मे चला जाता, या किसी कारखाने को (सूत के, काच आदि के) देखने चला जाता। मेरे विकास मे सगीत का भी अच्छा योग रहा है। इसमे मुझे कविता से

भी अधिक रुचि रही है। उस समय रूसी रगमच का विकास नही हुआ था। लेकिन सेण्ट पीटर्सबर्ग मे इटली का रगमच अत्यधिक लोकप्रिय था। जब उसकी अभिनेत्री बोसियो बीमार पडी तो हजारों रूसी युवक उसके स्वास्थ्य-समाचार जानने के लिए उसके होटल के दरवाजे पर खडे रहते थे। वह बहुत सुन्दर नही थी, लेकिन गाते समय वह इतनी सुन्दर प्रतीत होती थी कि हजारो रूसी युवक उसके पीछे पागल थे और जब उसकी मृत्यु हुई तो उसका अन्तिम सस्कार इतना शानदार हुआ था कि सेण्ट पीटर्सबर्ग मे तो अबतक अन्य किसीको नसीब नही हुआ होगा। उस समय सेण्ट पीटर्सबर्ग दो दलो मे विभक्त था—एक इटली के रगमच का प्रेमी और दूसरा फ्रासीसी रगमच का प्रशसक। हमारी कक्षा मे भी ये दोनो दल थे—मै प्रथम दल मे था। हमे बालकनी मे जाने की अनुमति नही थी। और इटली के नाटको के बौक्स औफिस के टिकट महीनो पहले से बिक जाते थे। कुछ कुटुम्बो ने तो सदैव के लिए उन्हे खरीद लिया था। लेकिन शनिवार की रात को हमे सबसे ऊची मजिल मे स्थान मिल जाता था। आज यह सब लडकपन प्रतीत हो सकता है, लेकिन उस समय अपने आराध्य कलाकारो के प्रति श्रद्धा से हमे अच्छी प्रेरणा प्राप्त हुई।

: ४ :

गुलामों की मुक्ति

१८५७ से १८६१ तक का समय रूस मे प्रगतिशील विचारो के प्रचार का युग था। गत दशाब्दी मे जो कुछ भी टाल्सटाय, हर्जन, बाकूनिन, औगार-योफ, कैवेलिन, दोस्तोव्स्की, ग्रीगोरोविच, औस्टोवस्को और नैकरासीफ की पीढी ने गुप्त सभाओ मे प्रचारित किया था, अब पुस्तको के रूप मे निकलने लगा। यद्यपि पुस्तको के ऊपर प्रतिबन्ध अब भी काफी कठोर थे, लेकिन जो चीज राजनैतिक लेखो मे स्पष्ट नही कही जा सकती थी, अब उपन्यासों, हास्यपूर्ण लेखो अथवा यूरोपीय घटनाओ के ऊपर टिप्पणियो के रूप मे

लिखी जाने लगी और हर आदमी उसे वारीकी से पढकर उसका अर्थ समझ लेता।

सेण्ट पीटर्सवर्ग मे दो-एक सम्वन्धियो को छोडकर मेरी कोई जान-पहचान नही थी, इसलिए मैं उस युग के प्रगतिशील विचारों से वहुत दूर था। लेकिन फिर भी यह आन्दोलन इतना शक्तिशाली और व्यापक था कि हमारे स्कूल जैसी निरपराध सस्था मे उसके विचारो का प्रवेश हो गया और मास्को के मेरे सम्वन्धियो के समाज मे भी उसकी लहरे पहुचने लगी।

उस समय मैं अपनी छुट्टियो के दिन अपनी मौसी राजकुमारी मिस्की के यहा व्यतीत कर रहा था। वहा का जीवन अत्यधिक शानशौकत और आमोद-प्रमोद का था। राजकुमारी की पुत्री अत्यन्त सुन्दर थी। उसका अपने एक चचेरे भाई से प्रेम हो गया था और वह उससे शादी करना चाहती थी। लेकिन रूसी धर्म के अनुसार यह एक बडा पाप था और उन लोगो के प्रयत्न करने पर भी धर्मगुरु ने इसके लिए अनुमति नही दी।

अन्त मे राजकुमारी अपनी लडकी को लेकर सेण्ट पीटर्सवर्ग आ गई जहा वह लडकी अपने लिए कोई दूसरा लडका चुन सके। यह निष्फल रहा।

इस प्रकार के मकान मे क्रान्तिकारी विचारो की कल्पना भी नही की जा सकती, लेकिन यही जगह थी, जहा सवसे पहले मुझे क्रान्तिकारी साहित्य देखने को मिला! महान क्रान्तिकारी हर्जन, जो रूस से भागकर लन्दन मे रह रहे थे, 'ध्रुव-तारा' नामक पत्रिका निकालते थे। इस पत्रिका ने रूस मे खलवली मचा रखी थी। सेण्ट पीटर्सवर्ग मे गुप्त रूप से इसका प्रचार था। मेरी चचेरी वहन के पास कही से यह पत्रिका आती थी और हम दोनो उसे साथ-साथ पढते थे। विवाह-सम्वन्धी प्रतिवधो के विरोध मे उसका हृदय विद्रोह कर रहा था और इसलिए रूस के समाज और वहा की रद्दी शासन-व्यवस्था की तीव्र आलोचना उसे प्रिय लगती। पत्रिका के मुख-पृष्ठ पर उन पाच शहीदो (वैस्ट्यूजैं, काहोव्स्की, पैस्टैल, रैलीफ और मुराविओव अपोस्टौल) के चित्र थे, जिन्हे १४ दिसम्वर, १८२५ के

विद्रोह मे निकोलस प्रथम ने फासी दे दी थी। मै अत्यन्त श्रद्धापूर्वक इस चित्र को देखा करता।

हर्जन की शैली के विषय मे तुर्गनेव ने ठीक ही लिखा है कि वह अपने आसुओ और खून से लिखते थे। वह अद्वितीय थे। उनके गम्भीर विचारो, व्यापक सहानुभूति तथा देशभक्ति से मै अभिभूत हो गया और मै उन पृष्ठो को बार-बार पढता था।

× × ×

१८५९ या १८६० मे मैं अपनी प्रथम क्रान्तिकारी पत्रिका का सम्पादक हो गया। मैने उसमे रूस के लिए एक विधान की आवश्यकता पर लिखा। उसमे दरबार के अपव्यय तथा शासन की अन्य फिजूलखर्ची पर लिखा और वैधानिक शासन की माग की। इस पत्रिका की तीन प्रतिया करके मैने उन्हे उच्च कक्षा के तीन विद्यार्थियो की मेजो पर रख दिया। मेरा विश्वास था कि वे इन विषयो मे रुचि रखते थे और उनसे मैने प्रार्थना की थी कि अपने विचार लिखकर वे पुस्तकालय की घडी के पीछे रख दे।

दूसरे दिन मै घबडाया हुआ घडी के पीछे देखने गया। वहा दो पत्र थे। उनमे मेरी पत्रिका के प्रति सहानुभूति प्रकट की गई थी और सलाह दी थी कि मै खतरे मे न पडू। मैने पत्रिका का दूसरा अक और भी जोरदार लिखा। लेकिन इस बार घडी के पीछे कोई उत्तर न मिला। उसके बजाय वे दोनो युवक मेरे पास आये।

मै उनसे सहमत हो गया और हम लोगो ने आपस मे हाथ मिलाकर एकता के सूत्र को दृढ कर दिया।

×   ×   ×

उस जमाने मे सभी विचारशील लोगो मे गुलामी की प्रथा के बन्द होने की चर्चा थी। सन १८५० से ही गुलामो के विद्रोह प्रारम्भ हो गये थे।

दूसरी तरफ इस युग के नवयुवको मे इस प्रथा के विरुद्ध व्यापक घृणा थी। सम्राट स्वय गुलामी के विरोध मे थे। उनका विचार था कि इस सुधार की प्रेरणा स्वय गुलामो के मालिको की तरफ से आनी चाहिए लेकिन यह सम्भव नही था। अन्त मे स्वय जार ने १८५६ मे मास्को के सरदारो के सामने इस सुधार की आवश्यकता के ऊपर भाषण दिया। लेकिन सरदार बिलकुल मौन रहे। अन्त मे क्रुद्ध होकर हर्जन के इन स्मरणीय शब्दो के साथ ज़ार ने अपने भाषण का अन्त किया, "इस सुधार के विषय मे आपके सुझावो के लिए अनिश्चित काल तक इन्तजार करने से यही अच्छा है कि ऊपर से आज्ञा जारी कर दी जाय।" पर इन शब्दो का भी कोई असर नही हुआ।

अन्त मे पोलैण्ड के गवर्नर जनरल ने वहा के सरदारो से इस विषय का एक प्रार्थना-पत्र पेश कराया और नवम्बर, १८५७ मे सम्राट ने आज्ञा दे दी कि उन सूबो मे गुलामी की प्रथा शीघ्र ही उठा दी जायगी। उस समय हर्जन ने जार अलैक्जैण्डर द्वितीय को सम्बोधित करते हुए एक लेख लिखा था—"तुम विजयी हो गये।"

किसानो मे इसकी प्रतिक्रिया बहुत सुन्दर हुई। जैसे ही इसकी खबर उनके बीच पहुची, विद्रोह बिलकुल बन्द हो गये।

लेकिन इस खुशी के बाद वर्षो अनिश्चितता मे व्यतीत हो गये। सूबों मे और सेण्ट पीटर्सबर्ग मे गुलामी उठाने के विषय मे कमेटिया बिठाई गईं। रूसी सरदारो मे अनेक ऐसे युवक थे, जो गुलामी की प्रथा उठाने के पक्ष में थे। लेकिन गुलामी के पक्षवाले सरदारो ने सम्राट को प्रभावित कर लिया था। उन्होने ज़ार को समझा दिया कि जिस दिन गुलामी की प्रथा उठाई जायगी, १७७३ के विद्रोह से भी भयकर विद्रोह रूस मे हो जायगा

और हजारो सरदार मार डाले जायगे। सम्राट इन बातो से प्रभावित हो गये! लेकिन सरकारी कमेटिया गुलामी उठाने के विषय मे विभिन्न योजनाए तैयार कर चुकी थी और सम्राट के सामने पेश कर चुकी थी। हर्जन ने, जिन्हे तुर्गनेव सरकारी चहल-पहल के विषय मे सूचित करते रहते थे, अपनी पत्रिका मे इन विभिन्न योजनाओ की चर्चा की। सेण्ट पीटर्सबर्ग के विचारशील युवक हर्जन से सहमत थे। राजधानी का सारा वायुमण्डल इसीके पक्ष मे था। उन सबकी राय थी कि गुलामो को मुक्ति मिलनी ही चाहिए और साथ ही उन्हे अपने मकानो के सिवा वह जमीन भी मिलनी चाहिए जो वे अबतक जोतते थे।

लेकिन पुराने सरदारो का दल निराश नही हुआ। उन्होंने प्रयत्न किया कि सुधार को कुछ समय के लिए टलवा दिया जाय, गुलामो को मुक्ति के बाद मिलनेवाली ज़मीन कम करा दी जाय और मुक्ति पाये हुए गुलामो के ऊपर बहुत ज्यादा मुक्ति-कर लगा दिया जाय। अलैक्जैण्डर द्वितीय उनसे प्रभावित हो गया। पुरानी कमेटिया, जिन्होने गुलामी उठाने की विभिन्न योजनाए तैयार की थी, बरखास्त कर दी गई और एक नई कमेटी बनाई गई!

चारो ओर निराशा का वातावरण फैल गया। लोग प्रश्न करने लगे, गुलामो की मुक्ति होगी भी कि नही! मैं अत्यन्त उत्सुकतापूर्वक इस सघर्ष को देख रहा था। १८६० तक खबरे सुनाई पडने लगी कि "गुलामो की मुक्ति टाल दी जायगी। अधिकारियो को भय है कि इससे क्रान्ति हो जायगी।"

१८६१ मे कुछ अच्छी अफवाहे सुनाई पडी कि १९ फरवरी को, सम्राट के राज्यारोहण के दिन, गुलामी प्रथा के उठाने के विषय मे कुछ घोषणा होगी।

१९ फरवरी भी निकल गई। उस दिन इस विषय मे कोई घोषणा नही हुई। मै उस दिन महल मे ही था। सम्राट के अत्यन्त नज़दीकी आदमियो को छोड़कर किसीको पता भी नहीं था कि गुलामो को मुक्ति देने के घोषणापत्र मे सम्राट ने उसी दिन १९ फरवरी को अपने हस्ताक्षर कर दिये थे। लेकिन वह १५ दिन तक छिपाकर रख लिया गया था।

अगले रविवार, २६ तारीख से एक रूसी त्यौहार प्रारम्भ होता था और अधिकारियो को डर था कि चूकि उन दिनो गाववाले शराब बहुत पीते है, शायद विद्रोह उठ खडा हो।

पन्द्रह दिन बाद ५ मार्च को मै फौजी स्कूल मे अपने विस्तरे पर लेटा था कि मेरा नौकर भागता हुआ कमरे मे आया और कहा, "प्रिस, स्वाधीनता हो गई। घोषणापत्र सामने ही टगा है।"

"तुमने खुद देखा है ?"

"हा, आदमी उसके चारो तरफ खडे है। आजादी हो गई!"

कुछ ही क्षणो मे मै कपडे पहनकर बाहर निकला। एक साथी आ रहा था। "क्रोपाटकिन—स्वाधीनता !" उसने कहा, "यह है घोषणा-पत्र। मेरे चाचा को कल रात को ही मालूम हो गया था कि वह घोषणा-पत्र आज सुबह गिरजाघर मे सुनाया जायगा। इसलिए हम लोग सुबह ही पहुच गए। वहा बहुत-से किसान थे। घोषणा-पत्र पढा गया, फिर बाट दिया गया। किसान लोग समझ गये कि इसका मतलब क्या है। जब मैं गिरजाघर से बाहर निकला, तो दो किसानो ने उपहास करने के ढग से मुझसे हाथ मिलाकर कहा, "कहिये साहब, अब सब खत्म हो गया।" मानो उन इशारो मे उन्होने दिखा दिया कि कितने वर्षो की प्रतीक्षा के बाद उन्हे अपने मालिको से मुक्ति मिली है।

मैने घोषणा-पत्र को वार-वार पढा। घोपणा मे स्वाधीनता थी, लेकिन तुरन्त नही। किसानो को दो वर्ष तक और गुलाम रहना था। लेकिन एक चीज निश्चित थी कि गुलामी की प्रथा सदैव के लिए नष्ट कर दी गई थी और मुक्त किसानो को उनके घर और जमीनें मिलने-वाली थी। उन्हे इसके लिए रुपया देना था, लेकिन गुलामी का धव्वा हट जानेवाला था।

हम सब परेड मे गये। जब फौज की कवायद पूरी हो गई तो सम्राट ने अफसरो को सम्बोधित कर कहा, "सैकडो वर्षो के अन्याय का अन्त कर दिया गया है। मुझे सरदारो से त्याग की आशा है और विश्वास है कि वे राज्य के प्रति सच्चे साबित होगे।"

सडको पर उत्साह की लहर थी। किसानो की भीडे महल के सामने जय बोल रही थी और जार के बाहर निकलते ही उसकी गाडी के पीछे लोग भागने लगे। हर्जन ने दो वर्ष बाद, जब अलैक्जैण्डर पोलैण्ड की क्रान्ति का भयकर दमन कर रहा था, ठीक ही कहा था, "अलैक्जैण्डर तुम्हारी मृत्यु उसी दिन क्यो नही हो गई? तब तो इतिहास मे तुम्हारी गणना महान पुरुषो मे हुई होती।"

× × ×

और विद्रोह? जिनका पुराने सरदारो को इतना भय था। इस घोषणा-पत्र की भाषा इतनी अस्पष्ट और गोलमोल थी कि केवल उसी-के कारण विद्रोह हो सकते थे। इससे अधिक अनिश्चित वातावरण तैयार किया नही जा सकता था। लेकिन फिर भी सिवा दो छुटपुट विद्रोहो के सम्पूर्ण रूस मे शान्ति रही। रूसी जनता ने अपनी स्वाभाविक सहज बुद्धि से समझ लिया कि गुलामी सदैव के लिए चली गई, "स्वतत्रता आ गई" और यद्यपि शर्ते बहुत कडी थी, फिर भी उन्होंने उन्हे स्वीकार कर लिया।

मैं अगस्त १८६१ और १८६२ मे निकोलसकाई गया और मुझे किसानो की परिवर्तित दशा को देखकर आश्चर्य हुआ। वे भली भाति जानते थे कि मुक्ति-कर चुकाना बहुत मुश्किल है, लेकिन वे गुलामी के दुष्ट परिणामो को इतनी अच्छी तरह जानते थे कि उन्हे यह भयकर कर देना मजूर था। पहले कुछ महीनो तो उन्होने सप्ताह मे दो छुट्टिया ली, शुक्रवार को भी काम नही करते थे, लेकिन बाद को वे पहले से भी ज्यादा जोश से काम करने लगे।

मैने गुलामी उठ जाने के सवा साल बाद निकोलसकाई के किसानो को देखा। वैसा ही सरल और कोमल उनका स्वभाव था और वे अपने मालिको से बिल्कुल समानता से बातचीत करते थे, मानो वे कभी उनके गुलाम न रहे हो।

'घरो के नौकरो' की बुरी हालत हुई। उन्हे जमीन नहीं मिली थी और यदि मिली भी होती तो भी वे कुछ न कर पाते। उन्हें केवल स्वा-

था उज्ज्वल भविष्य की सम्भावना ! लेकिन मेरे लिए इसका महत्व इसलिए था कि मै स्कूल की घिसघिस से मुक्त हो गया और मुझे अपने अध्ययन के लिए एक अलग कमरा मिल गया।

सबसे ऊची कक्षा के विद्यार्थियो को अक्सर उत्सवो, भोजो, नृत्यो आदि के अवसरो पर दरबार मे ड्यूटी देनी पडती थी। बडे दिन, ईस्टर आदि त्योहारो के दिनो मे तो हम लोग दिन मे दो बार महलो मे बुलाए जाते थे और सार्जेन्ट के पद पर होने के कारण मुझे प्रत्येक रविवार को परेड के समय सम्राट को सूचित करना पडता था कि "पार्षद सकुशल है", चाहे स्कूल के एक-तिहाई लडके बीमार हो ! मैने ऐसे एक मौके पर कर्नल से पूछा, "क्या मै आज कह दू कि सब अच्छी तरह नही है ?" "ईश्वर ऐसा न करे", उसने उत्तर दिया, "तुम्हे ऐसा तभी कहना चाहिए जब कोई विद्रोह हो जाय।"

दरबारी जीवन शानदार और रग-बिरगा होता है। वहा का सुसस्कृत व्यवहार, व्यवस्थित शिष्टाचार और शानदार वायुमडल अत्यन्त प्रभावशाली होते है। उस समय मै सम्राट को बहुत ही श्रद्धा की दृष्टि से देखता था। वह दरबारी व्यवस्थाओ को कोई महत्व नही देते थे और अत्यधिक परिश्रम करते थे। इस समय दरबार के एक प्रतिक्रियावादी गुट के विरोध मे होते हुए भी वे कुछ सुधार करने के प्रयत्न मे थे। गुलामी प्रथा का उठाना उनका पहला सुधार ही था।

लेकिन धीरे-धीरे जब मुझे इस तडक-भडक की जिन्दगी को अधिक देखने का अवसर मिला और उस सबके पीछे जो कुछ हो रहा था उससे जब मै परिचित हुआ, तो मेरा विश्वास हो गया कि यह सब व्यर्थ ढोग ही नही है, बल्कि इन छोटी-छोटी चीजो मे ये लोग इतने फसे रहते है कि महत्वपूर्ण समस्याओ की ओर वे ध्यान ही नही दे पाते ! इस नाटकीय अभिनय मे वे वास्तविकता ही भूल गये है ! और फिर सम्राट का जो रूप मेरी कल्पना मे था, उसकी चमक भी वर्ष के अन्त तक चली गई। इस तरह यदि प्रारम्भ मे मेरे मस्तिष्क मे उस प्रकार की कोई कल्पना रही भी होगी कि राजमहल मे कोई लाभप्रद कार्य हो सकता है तो वह वर्ष समाप्त होते-होते दूर हो गई।

सम्राट और सम्राज्ञी के जन्मदिनो और महत्वपूर्ण त्योहारो पर महल मे एक आयोजन होता था। हजारो फौजी अफसर, शासन के ऊचे-ऊचे पदाधिकारी महल के कक्षो मे पक्तिबद्ध खडे हो जाते थे। जब सम्राट और उनका कुटुम्ब महल मे से निकलकर गिरजाघर जाते, तो उन्हे सब झुककर प्रणाम करते। जब सम्राट निकलते, मैं देखता कि बडे-बडे फौजी अफसर और राज्याधिकारी झुककर प्रणाम करने के पहले सम्राट की ओर देखते रहते और यदि सम्राट ने उनकी तरफ देखकर मुस्करा दिया अथवा एक-दो शब्द कह दिये, तो वे बडा गौरव अनुभव करते और अपने इधर-उधर पास बडे गर्व से देखते। गिरजाघर से जब सम्राट लौटते, तब फिर इसी प्रकार अफसर खडे होते।

जाडो मे दो-तीन बडे नृत्यो का आयोजन होता था और उनमे सहस्रो ही आदमी निमन्त्रित होते। वहा हजारो युवतिया, एक झुड बनाए खडी रहती—इस आशा मे कि शायद उनके ऊपर सम्राट के किसी सम्बन्धी की दृष्टि पड जाय और वह अपने साथ नृत्य करने के लिए बुला ले। सेण्ट पीटर्सबर्ग की जनता पर दरबार का इतना प्रभाव था कि यदि किसी लडकी पर सम्राट के सम्बन्धी की दृष्टि पड जाय, तो उसके माता-पिता भरसक इसी बात का प्रयत्न करते कि वह लडकी उस राजकुमार से प्रेम करने लगे, यद्यपि सब लोग इस बात को जानते थे कि सम्राट का कोई सम्बन्धी प्रजा मे शादी नही कर सकता!

× × ×

जब कभी हमे महल जाना पडता, हमारा भोजन वही होता। उस समय वहा के नौकर राजमहल की प्रेम और प्रणय की घटनाए हमसे आ आकर कहते। महलो मे जो कुछ होता था, उन्हे ज्ञात था। वास्तव मे, जिस साल मै महल मे रहा, वहा घटनाए ज्यादा नही हुई। जार के भाइयो की शादी अभी ही हुई थी और उनके लड़के अभी कम उम्र के थे। लेकिन एक लडकी मे, (जिसका तुर्गनेव ने अपने उपन्यास 'स्मोक' मे बडा सुन्दर वर्णन किया है), जार के सम्बन्धो की चर्चा नौकर बहुत करते थे। एक दिन जैसे ही हम लोग कमरे मे घुसे, हमे मालूम हुआ कि इस लडकी को जार ने निकाल दिया। लगभग आध घंटे बाद उस स्त्री को हमने बाहर प्रार्थना

के लिए निकलते देखा। उसकी आखे रोने के कारण सूजी हुई थी। प्रार्थना के समय किसी तरह वह अपने आसू रोके रही, बाकी स्त्रिया उसे तिरस्कृत कर उससे दूर खडी थी। महलो के नौकरो को यह मालूम हो गया था और वे इसके ऊपर मनमानी टीका कर रहे थे। यह सब देखकर मुझे वडी ग्लानि हुई। कुछ ही समय पहले ये लोग उस स्त्री के चरण चूमते थे। सम्राट की हर चीज वडी वारीकी से देखी जाती। शायद ही ज़ार का कोई कार्य गुप्त रह पाता हो। नौकरो तथा वहा की स्त्रियो द्वारा हर वात वडे-वडे अफसरो तक पहुच जाती। प्रत्येक गवर्नर जनरल, मत्री आदि सम्राट के कमरे मे प्रवेश करने के पहले सम्राट के निजी परिचारको से वातचीत करते और उनकी उस समय की मनोवृत्ति जानने की कोशिश करते और उसके अनुसार अपने काग़ज़ो की पेशी करते।

प्रारम्भ मे मेरे हृदय मे ज़ार के प्रति अत्यधिक श्रद्धा थी और मेरी मनोवृति उस समय ऐसी थी कि यदि कोई आदमी मेरी उपस्थिति मे ज़ार पर आक्रमण करता तो मैं अपना जीवन खतरे मे डालकर उनकी रक्षा करता।

लेकिन छोटी-छोटी घटनाओ और सम्राट की प्रतिक्रियावादी नीति के कारण इसमे परिवर्तन होता गया। ६ जनवरी को हर साल रूस मे नदियो को पवित्र करने के लिए एक उत्सव होता था। इस दिन सम्राट, उनके सव सम्बधी और पादरी नदी किनारे खडे होते थे, प्रार्थना होती थी और फिर सलीव को नदी मे डुवाया जाता था। हजारो आदमी इस उत्सव मे भाग लेते। वे सव नगे सिर रहते। भूल से एक आदमी के सिर पर टोपी का एक हिस्सा रखा रह गया। वस इसीको देख-देखकर प्रार्थना के समय भी सम्राट के सभी सम्बन्धी और स्वय सम्राट भी हँसते रहे। लेकिन इस उत्सव के समाप्त होने पर जव सम्राट महल लौट रहे थे तो एक वूढा किसान सिपाहियो की पक्तियो को किसी तरह पार करता हुआ सम्राट, के चरणो पर गिरा और अपना प्रार्थना-पत्र रखते हुए गिड़गिडाया, "सम्राट हमारी रक्षा कीजिये।" युगो से जो दमन रूसी किसानो पर हो रहा था वह इस किसान की आह मे स्पष्ट था। लेकिन ज़ार ने, जो अवतक अत्यन्त तुच्छ वात पर प्रार्थना के समय भी बुरी तरह हँस रहा था, इस ओर कुछ भी ध्यान नही दिया, अपने पैरो पर पडे इस मनुष्य की ओर देखा भी नही।

मैने चारो ओर देखा---सम्राट के सम्बन्धियो मे से भी किसीने इस किसान की ओर कोई ध्यान नही दिया। फिर उस प्रार्थनापत्र को मैने उठा लिया। मै जानता था कि मुझे इसके लिए फटकार मिल सकती है, लेकिन मैने सोचा कि इस किसान को सिपाहियो और फौजो की कतारो को पार करके यहां तक आने मे कितना कष्ट हुआ होगा। अब तो उसे अनिश्चित काल के लिए कैद मे डाल दिया जाना था। जार के सामने प्रार्थनापत्र पेश करने पर यही सजा दी जाती थी।

जिस समय गुलामी की प्रथा उठाई गई थी, सेण्ट पीटर्सबर्ग की जनता के बीच सम्राट अत्यन्त लोकप्रिय थे। लेकिन १८६२ के वाद की घटनाओ ने दिखला दिया कि मौका आने पर वह अपने पिता के युग के निकृष्टतम काम कर सकते है। सब लोग जानते थे कि सम्राट न्याय और फौज विभागो मे कई सुधार करना चाहते है। मारपीट की सजाए शीघ्र ही बन्द हो जाने वाली थी और स्वायत्त शासन और किसी प्रकार का विधान भी स्वीकार होने की सम्भावना थी। लेकिन हल्के-से उपद्रव को भी भयकर रूप से दवाया जाता था---प्रत्येक आन्दोलन को वह अपने व्यक्तिगत विरोध का रूप देते थे और इसलिए किसी भी क्षण वह पाशविक दमन की आज्ञा दे देते। सेण्ट पीटर्सबर्ग, मास्को तथा कजान के विश्वविद्यालयो मे १८६१ मे जो उपद्रव हुए, उनका अत्यन्त निर्दयतापूर्वक दमन किया गया। सेण्ट पीटर्सवर्ग का विश्वविद्यालय बन्द कर दिया गया और उसके वाद अध्यापको ने निःशुल्क शिक्षा का अलग से जो प्रवन्ध किया था, उसे भी वन्द कर दिया गया। गुलामी की प्रथा उठने के पश्चात रविवार-स्कूलो का एक वडा आन्दोलन चला था। स्वय जनता ने इन स्कूलो की स्थापना की थी। किसान, मजदूर उनसे खूब फायदा उठाने लगे थे। अफसर और विद्यार्थी इनमे अध्यापक का काम करते और अध्यापन का ढग इतना अच्छा था कि नौ-दस पाठो मे ही हम लोग किसानो को पढना सिखा देते थे। लेकिन यकायक सब रविवार-स्कूल, जिनके द्वारा कुछ ही वर्षो मे अधिकाश जनता, राज्य के विना एक भी पैसा खर्च किये, शिक्षित हो सकती थी, वन्द कर दिये गए। पोलैण्ड मे स्वतन्त्रता-सम्वन्धी कुछ लक्षण दीखने लगे, पर तुरन्त ही वहा दमन करने के लिए कज्जाक फौजे भेज दी गई। वारसा

मे सडको पर आदमियो को गोली मारी गई और जनता को बुरी तरह कुचला गया।

आगे चलकर १८७०-८१ तक अलैक्जैण्डर का जो रूप दीखा, उसके लक्षण १८६१ मे ही दीखने लगे थे।

सम्पूर्ण राजकुटुम्ब मे सबसे अधिक सुसस्कृत सम्राज्ञी थी। वह अत्यन्त सरल स्वभाव की थी। जिस अकृत्रिम ढग से उसने मुझे एक छोटे-से कार्य के लिए धन्यवाद दिया, उससे मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ था। गुलामी की प्रथा के उठाने मे उसने अच्छा प्रभाव डाला था। लडकियो के लिए अच्छे हाई स्कूलो के खुलवाने का तो अधिकाश श्रेय उसीको है। सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री उशिस्की, उसके साथ अच्छे सम्बन्ध होने के कारण ही, निर्वासन की सजा से बच गये।

उनके भाई अलैक्जैण्डर का, जो १८६५ मे युवराज हो गया, स्वभाव अत्यन्त खराब था। उसने पढने से कतई इकार कर दिया। कहते है, अपने जीवन के अन्त मे उसका स्वभाव कुछ अच्छा हो गया था, लेकिन १८७० और उसके बाद तक तो वह वैसा ही था। मुझे मालूम है कि सेण्ट पीटर्सबर्ग मे एक ऊचे फौजी अफसर थे, जो अमरीका बन्दूके खरीदने भेजे गये थे। वहा से लौटने पर वह युवराज अलैक्जैण्डर के पास अपने कार्य की रिपोर्ट पेश करने गए। बातचीत के दौरान मे ही युवराज ने अपने स्वभावानुसार क्रोधित होकर उन अफसर को गाली देकर उनका अपमान करना शुरू कर दिया। अफसर अत्यन्त स्वाभिमानी और राजभक्त था। वह उठकर चला आया और उसने तुरन्त युवराज को एक पत्र लिखा कि यदि वह चौबीस घटे मे अपने इस दुर्व्यवहार के लिए क्षमा नही मागते तो मैं आत्महत्या कर लूगा। युवराज ने क्षमा नही मागी और उस अफसर ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर ली। मैने उक्त अफसर को अपने एक मित्र के यहा युवराज के पत्र की प्रत्येक क्षण प्रतीक्षा करते हुए देखा था। दूसरे दिन उसने आत्महत्या कर ली। जार को जब यह मालूम हुआ तो वह युवराज से रुष्ट हुआ और उसे उस अफसर की शव-यात्रा मे शामिल होने की आज्ञा दी। लेकिन इस भयकर घटना से भी उसकी बर्बरता और उद्धतपन मे कमी नही आई।

खण्ड ३
साइबेरिया

: १ :

सेण्ट पीटर्सबर्ग से विदाई

पदवृद्धि होने के कुछ सप्ताह पहले, कप्तान ने मुझे एक सूची तैयार करने की आज्ञा दी कि हममे से प्रत्येक विद्यार्थी फौज के किस भाग मे जायगा। हम लोगो के सामने सम्राट की रक्षा की टुकडिया और सम्पूर्ण फौज थी, चाहे जिसमे प्रवेश करे। मैने अपनी कक्षा के विद्यार्थियो की सूची उठाई और उनके पास ले गया। प्रत्येक विद्यार्थी पहले से ही तैयार था। उनमे से अधिकाश ने तो उस टुकडी विशेष के अफसर की टोपी भी पहन रखी थी।

"साम्राज्ञी के अगरक्षक", "सम्राट के अगरक्षक", "रक्षक घुड-सवार"—अधिकाश के उत्तर थे।

"और क्रोपाटकिन तुम? तोपखाना? कज्जाक?" मुझसे सब पूछते। मै ऊब गया, और अन्त मे मैने सूची अपने एक साथी को पूरी करने के लिए दे दी और स्वय अपने निश्चय के विषय मे चिन्तन करने के लिए लौट आया।

यह तो मैने पहले से ही निश्चय कर लिया था कि मैं रक्षक टुकडियों मे जाकर परेडो और दरबारी नृत्यो मे अपना जीवन नष्ट नही करूगा। मेरी आकाक्षा विश्वविद्यालय मे अध्ययन करने की था। इसका मतलब था कि मैं पिताजी से बिलकुल ही विलग हो जाऊं, क्योकि उनकी आशाएं

इसके बिलकुल विपरीत थी और इसके मानी थे कि आत्मनिर्भर होकर अपने खर्चे के लिए कुछ कमाऊ। हजारो रूसी विद्यार्थी इसी तरह रहते है और इस प्रकार के जीवन से मै बिलकुल भयभीत भी नही हुआ। लेकिन उस जीवन मे मै प्रवेश कैसे करू? कुछ ही सप्ताहो मे मुझे स्कूल छोड देना था। फिर अपने रहने के लिए जगह की व्यवस्था करनी थी, और अभी तो मेरे पास अत्यन्त सादा जीवन के लिए भी कोई साधन नही थे।

विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त करने के बाद मेरी इच्छा तोपखाने मे जाने की थी। उससे कम-से-कम दो सालो के लिए फौज की नौकरी टलती और वहा मै गणित और भौतिक शास्त्र का अध्ययन कर सकता था। लेकिन प्रतिक्रिया की लहर आई हुई थी। पिछले साल फौजी विद्यालयो मे अफसरो के साथ अत्यन्त दुर्व्यवहार किया गया था। दो विद्यालयो मे उन्होने विद्रोह कर दिया था और एक मे तो सब छोडकर चले आये थे।

मेरे विचार बार-बार साइबेरिया की तरफ जाते थे। 'आमूर' के प्रान्त पर रूस ने अभी-अभी कब्जा किया था। मैने 'पूर्व की मिसीसिपी', वहा के पर्वतो, वहा के पेड-पौधो आदि के विषय मे बहुत पढ रखा था। मेरे विचार उससे भी आगे उन प्रदेशो की ओर गये, जिनका वर्णन हमबोल्ट ने किया था। उसके सिवा मैने सोचा कि राज्य ने जो बडे-बडे सुधार अभी किये है अथवा शीघ्र ही करने जा रहा है, उनके प्रयोग के लिए साइबेरिया मे विस्तृत क्षेत्र है। सबसे भयकर बात यह थी कि मुझे अपने भाई अलैक्जैण्डर से अलग होना था। पिछले उपद्रवो के कारण उन्हे मास्को विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया था। मैने सोचा कि दो एक-साल बाद हम लोग साथ हो जायगे। केवल आमूर प्रान्त की टुकडी ही मेरे सामने रह गई। मुझे उसुरी प्रान्त अधिक प्रिय था, लेकिन दुर्भाग्य से वहा केवल पैदल कज्जाक सेना की एक टुकडी थी। कज्जाक फौज मे, बिना घोडे के, उस बाल्यावस्था मे मेरे लिए यह असह्य था ओर इसलिए मैने आमूर मे घुडसवार कज्जाक का निश्चय किया।

मैंने यही लिख दिया। सब साथियो को इससे अत्यन्त आश्चर्य हुआ।

उन्होंने कहा—"वहुत दूर है" और तरह-तरह से मुझे समझाने की कोशिश की।

मै मजाक मे सब बाते टालता रहा और अन्त मे सूची कप्तान के पास ले गया।

"क्रोपाटकिन, हमेशा मजाक ही करेगा," वह जोर से बोला, "क्या तुम्हे नही मालूम कि आज ही सूची अधिकारियो के पास भेजी जानी है।"

जब मैने उससे कहा कि मेरी इच्छा यही है तो उसके चेहरे पर आश्चर्य और दया के भाव स्पष्ट दीख पडे।

लेकिन दूसरे दिन क्लासोव्स्की के सामने मेरा निश्चय डिग गया। उन्हे मेरे विश्वविद्यालय मे पहुचने की आशा थी, इसी कारण उन्होने मुझे लेटिन और ग्रीक की शिक्षा दी थी। मै अपनी असमर्थता का कारण भी उन्हे नही बतला सकता था। मै जानता था कि यदि उन्हे मालूम हो जाय तो वह अपने थोडे-से साधनो मे से ही मुझे सहायता देने को तैयार हो जायगे।

इतने मे मेरे पिताजी का सचालक के पास तार आया कि वे मेरे साइबेरिया जाने के विरुद्ध है। अब मामला निर्णय के लिए ग्राड ड्यूक के पास भेजा गया। मुझे उनके सहायक ने बुलाया। मै आमूर प्रान्त के पेड, पौधो आदि के विषय मे बातचीत करता रहा, क्योकि मै जानता था कि यदि मै विश्वविद्यालय मे पढने की अपनी आकाक्षा और उसके लिए साधनो के अभाव की बात कहता तो राजकुटुम्ब मे से कोई भी व्यक्ति सहायता का प्रबन्ध कर देता। यह किसी भी हालत मे मै नही चाहता था।

पता नही, यह गुत्थी कैसे सुलझती, लेकिन उसी समय एक महत्वपूर्ण घटना घटी। सेण्ट पीटर्सबर्ग का अग्निकाड। इसने अन्तत मेरी इस समस्या का हल कर दिया।

× × ×

ट्रिनिटी के बाद के सोमवार को शहर के अप्रैक्सिन ड्वोर नामक स्थान मे भयकर अग्नि प्रज्वलित हो गई। इस आधे मील लम्बे और लगभग उतने ही चौडे खुले बाजार मे सैकडो छोटी-छोटी लकडी की दूकाने थी,

जिनमे पुरानी चीजे, जैसे इस्तेमाल किये हुए कपडे, कुर्सी, मेजे, किताबे, आदि बिकती थी। इस सब सामान से बाजार बुरी तरह भरा रहता। दूकानो के ऊपर भी ये ही सब चीजे पडी रहती। इन दूकानो के पीछे ही गृह विभाग का मत्रालय और उसके कागजपत्रो का कमरा था, जहा गुलामो के मुक्ति-सम्बन्धी सब कागज-पत्र रख थे और बाजार के सामने ही स्टेट बैंक था। इस बाजार से कुछ हटकर फौजी विद्यालय का एक भाग था, जिसकी नीचे की मजिल मे तेल और खाने-पीने का सामान रहता था और ऊपर के हिस्से मे अफसरो का निवासस्थान था। गृहमत्रालय के सामने चीड के तख्ते रखे थे। काठ की छोटी-छोटी दूकाने और चीड के तख्तो मे लगभग एक ही समय शाम के चार बजे आग लग गई।

अगर उस दिन तेज हवा चलती होती तो आधा शहर भस्म हो जाता, बैंक, मत्रालय, बाजार, फौजी शिक्षालय, राष्ट्रीय पुस्तकालय आदि सब नष्ट हो जाते।

मै उस दिन तीसरे पहर विद्यालय मे ही था। अपने एक अफसर के यहा भोजन कर रहा था। जैसे ही हम लोगो ने खिडकी से धुआ उठता देखा, हम लोग उस स्थान की ओर भागे। बडा भयकर दृश्य था। बृहद सर्प की भाति फुफकारती हुई अग्नि चारो ओर बढ रही थी—दूकानो को भस्म कर उसकी लपटे चारो ओर लपक रही थी।

अधिकारियो की सिट्टी गुम हो गई थी। उस समय सेण्ट पीटर्सबर्ग मे एक भी इजन नही था। बीस मील दूर एक जगह से एक इजन लाया गया, वह भी मजदूरो के सुझाव पर।

जनता ने ही आग को बढने से रोका। उस भयकर आग मे तपते और झलसते हुए उन्होने सडके साफ की, और इस तरह आग से बैंक की रक्षा की।

शाम तक गृह-मत्रालय और बैंक तो लगभग बचा लिये गए, लेकिन अब हमारे विद्यालय को खतरा था। हम सब लडके उसको रोकने मे लग गए। पानी फेकते, लेकिन पानी फेकने का इजन ही ठीक हालत मे न था। साथी लडके कह रहे थे—जाओ, पुलिस अधिकारियो ओर ड्यूक के पास

किसीसे कहो कि अगर पानी का इन्तजाम न हुआ तो हमे विद्यालय छोडना पडेगा।

बडी मुश्किल से मै सेण्ट पीटर्सबर्ग के गवर्नर जनरल प्रिस सूवोरोफ तक पहुच सका और उनको सूचना दी कि यदि तुरन्त इन्तजाम न हुआ तो हमे अपना विद्यालय अग्नि की भेट कर देना होगा। प्रिस सूवोरोफ तुरन्त अग्नि की ओर दौडे और वहा पहुचकर समुचित प्रबन्ध कराया।

सुवह के करीब तीन-चार वजे तक हम अपने विद्यालय को आग से बचा सके। हम सब झुलसे और बुरी तरह थके हुए थे। अस्पताल के बिस्तरो पर जाकर लेट रहे।

सुबह जल्दी उठकर मै रोज की भाति ग्राड ड्यूक मिखाइल के साथ स्कूल के निरीक्षण पर निकला। विद्यार्थियो के चेहरे काले थे, आखे सूजी हुई ओर पलके भारी थी और कुछ के बाल ही जल गये थे। उन्हे पहचाना भी मुश्किल से जाता था। लेकिन सब गौरव अनुभव कर रहे थे कि उन्होने अपने स्कूल की अग्नि से रक्षा की थी।

ग्राड ड्यूक के आने से मेरी मुश्किले हल हो गई। उसने पूछा, "आमूर जाने की कल्पना तुम्हारे दिमाग मे कहा से आई—क्या वहा तुम्हारे मित्र है अथवा वहा का गवर्नर जनरल तुम्हे जानता है ?" जब मैने कहा कि वहा मेरे कोई सम्बन्धी अथवा परिचित नही है, तो उसने आश्चर्य से कहा, "लेकिन फिर तुम क्यो जा रहे हो ? अच्छा, मै तुम्हारी सिफारिश वहा के गवर्नर जनरल से किये देता हू।"

ग्राड ड्यूक की सिफारिश के बाद पिताजी को कोई उज्र न रहा। मुझे साइबेरिया जाने की आज्ञा मिल गई।

इस भयकर अग्निकाड के कारण अलैक्जैण्डर की नीति का रुख बदल गया और इस तरह इस शताब्दी के रूस के इतिहास की दिशा ही बदल गई। यह तो साफ था कि यह कोई आकस्मिक घटना नही थी, वह त्योहार का दिन था। बाजार मे सिवा दो-चार पहरेदारो के कोई भी नही था। और फिर बाजार मे और चीड के तख्तो मे एक साथ ही आग लगी थी और सेण्ट पीटर्सबर्ग की आग के बाद रूस के अन्य शहरो मे भी आग लगी। आग किसने लगाई—अभी तक नही मालूम हो सका।

इसके वाद वह चुप हो गये। उनका चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था। जोर से घोडे को एड लगाई और वह चले गये। दूसरे दिन १४ जून को सुवह उनकी आज्ञा से मौडलिन (पोलैण्ड) मे तीन अफसरो को गोली मार दी गई और एक सिपाही को वेतो से मार डाला गया।

मैदान से वापस लौटते हुए मैने मन मे कहा, "प्रतिक्रिया का दौर शुरू हो गया है।"

सेण्ट पीटर्सवर्ग छोडने के पहले सम्राट को देखने का मुझे एक अवसर और मिला। पदोत्कर्ष के कुछ दिन बाद नए अफसर सम्राट के सामने हाजिर करने के लिए महल मे बुलाये गए। मेरी अत्यधिक साधारण पोशाक के कारण सवका ध्यान मेरी ओर जाता। चूकि 'आमूर कज्जाक' रूसी फौज की सवसे नई टुकडी थी, मै सब अफसरो के अन्त मे खडा था। सम्राट ने मुझसे पूछा, "तुम साइबेरिया जा रहे हो ? तुम्हारे पिता ने अनुमति दे दी ?" मैने निवेदन किया, "हा।" "तुम्हे इतनी दूर जाने मे डर नही मालूम होता ?" मैने उत्साहपूर्वक उत्तर दिया, "नही, मै काम करना चाहता हू। नए सुधार होनेवाले है, उनके लागू करने के लिए साइवेरिया मे वहुत काम होगा।" उन्होने मुझे गौर से देखा और चिन्ता-मग्न हो गये। फिर कहा, "ठीक है, जाओ, प्रत्येक जगह आदमी उपयोगी कार्य कर सकता है।" उनके चेहरे पर थकान और पूर्ण समर्पण के भाव दीख पडे। मैने सोचा, "यह समाप्तप्राय है—अब यह कुछ नही करेगे।"

सेण्ट पीटर्सवर्ग मे मनहूसी थी। सिपाही सडको पर इधर-से-उधर घूमते थे। घुडसवार महल के चारो तरफ चक्कर लगाते थे और किला कैदियो से भरा हुआ था। जहा कही मैं जाता, मुझे यही दृश्य दीखता। प्रतिक्रियावादी विजयी हो गये थे। सेण्ट पीटर्सवर्ग छोडने का खेद मुझे नही हुआ।

मै प्रत्येक दिन फौजी मत्रालय मे अपने आज्ञापत्र लेने जाता। जैसे ही वह तैयार हुआ, मैं मास्को अपन भाई अलैक्जैण्डर से मिलने चल दिया।

: २ :

साइबेरिया में

साइबेरिया मे व्यतीत हुए पाच सालो मे मुझे जीवन और मनुष्य के चरित्र के समझने की वास्तविक शिक्षा मिली। मै वहा विभिन्न प्रकार के मनुष्यो के सम्पर्क मे आया, सुखी और सम्पन्न समाज को देखा तथा खानाबदोश और तथाकथित चोर-डाकुओ को भी। वहा मुझे किसानो के स्वभाव और दैनिक जीवन को नजदीक से देखने का अच्छा मौका मिला और मैने समझा कि राज्य का शासन चाहे कितना ही सद्भावनायुक्त क्यो न हो, किसानो का अधिक हित उससे सम्भव नही। मैने यहा लम्बी-लम्बी यात्राएं की। मै गाडियो, नावो और घोडे पर लगभग पचास हजार मील चला होऊंगा। इनका मेरे स्वास्थ्य पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा। इन यात्राओ मे मैने अनुभव किया कि जहा मनुष्य एक दफा बाह्य सभ्यता के मोहक दायरे से निकला, उसकी जरूरते कितनी कम हो जाती है। सिर्फ रोटी के कुछ टुकडे, चमडे के थैले मे थोडी-सी चाय और जीन के नीचे एक कम्बल, जिसे शाम को किसी पेड के नीचे घास पर बिछा लिया। बस, इन चीजो को लेकर आदमी बिलकुल स्वतन्त्र हो जाता है, चाहे कैसे ही बरफीले पहाड़ और घने जगलो मे उसे जाना हो। इस समय के जीवन के ऊपर एक पूरी पुस्तक ही तैयार हो सकती है।

आम लोगो का विश्वास है कि साइबेरिया बिलकुल बरफ से ढका हुआ रहता है और वहा केवल निर्वासित व्यक्ति ही रहते है, लेकिन बात ऐसी नही है। उसका दक्षिणी भाग प्राकृतिक साधनो की दृष्टि से काफी सम्पन्न है और वहा लगभग ५ लाख आदिवासियो के सिवा ४० लाख के करीब रूसी है। १८६२ मे तो साइबेरिया का शासन रूस के किसी सूबे से अधिक अच्छा था। कई वर्षो तक पूर्वी साइबेरिया के गवर्नर जनरल एक अत्यन्त बुद्धिमान व्यक्ति—म्यूरावियोव थे। उन्होंने वृद्ध कर्मचारियो को, जो साइबेरिया को केवल लूटने की जगह समझते थे,

निकाल दिए थे और अपने चारो ओर ईमानदार युवको का समूह इकट्ठा कर दिया था।

मै जब पूर्वी साइबेरिया की राजधानी इर्कूट्स्क पहुचा, उस समय प्रतिक्रिया की जो लहर सेण्ट पीटर्सबर्ग मे फैल रही थी, अबतक यहा नही पहुची थी। यहा के युवक गवर्नर जनरल कोरसाकोफ ने मेरा अच्छा स्वागत किया। यहा के सेनापति कुकेल का मै पार्षद हो गया। यह युवक सेनापति मुझे अपने कमरे मे ले गया और वहा मुझे लन्दन मे निर्वासित क्रान्तिकारी हर्जन की सब रचनाए दीख पडी। शीघ्र ही हम घनिष्ट मित्र बन गये।

उस समय सेण्ट पीटर्सबर्ग के मत्रालयो ने स्थानीय अधिकारियो से प्रान्तो के सम्पूर्ण शासन यथा पुलिस, न्याय, जेल, निर्वासन, शहरो का स्वायत्त शासन आदि के सुधारो की योजनाए सम्राट की उदार घोषणाओ के अनुरूप बनाने की आज्ञा दी थी। यहा पहुचते ही मैं इस कार्य मे जुट गया।

जनरल कुकेल सारे दिन और कभी-कभी रात को भी इसी कार्य मे लगे रहते। मै दो कमेटियो का मत्री हो गया, एक जेलो के सुधारो के लिए और दूसरी स्वायत्त शासन की योजना बनाने के लिए, और इस कार्य मे युवकोचित पूर्ण उत्साह से लग गया। मैंने इन दोनो सस्थाओ के विषय मे जो कुछ भी मिल सकता था, पढा। रूस मे इनके अबतक के विकास के इतिहास और विदेशो मे उनकी वर्तमान स्थिति का पूर्ण अध्ययन किया। मैने केवल सैद्धान्तिक विवेचन ही नही किया, पहले सुधारो की रूपरेखा तैयार की और फिर उनकी प्रत्येक धारा के विषय मे मैंने स्थानीय आवश्यकताओ और सम्भावनाओ के विषय मे अनुभवी व्यक्तियो से सलाह-मशविरा किया। उसके लिए मैं शहरो और गावो मे सैकडो व्यक्तियो से मिला। इसके बाद अपने निर्णयो के ऊपर कुकेल से विचार-विमर्श किया। इस प्रकार हमने अपना कार्य अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक किया था। इतने वर्षो बाद भी मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हू कि यदि उस समय हमारी उस योजना द्वारा ही स्वायत्त शासन अधिकार दे दिये गए होते तो साइ-

बेरिया के कस्बे आज से बिलकुल भिन्न होते, लेकिन [illegible] नही निकला। इसके साथ और भी छोटे-मोटे कार्य हो जाते।

कुकेल कभी-कभी मुझसे कहते, "हम लोग बडे महत्वपूर्ण समय मे उत्पन्न हुए है--इसलिए खूब काम करो।" और मै दुगुने उत्साह से काम करता। यहा अपने कार्य का एकाध उदाहरण देना असगत न होगा। हमारे प्रान्त मे एक अत्यन्त बेईमान पुलिस कप्तान था। केन्द्र से उसे अधिकार प्राप्त थे। किसानो को वह बेतरह लूटता और पीटता था। वह औरतो को भी पीटता, जो कानून के बिलकुल विरुद्ध था। जब कोई चोरी या डकैती का मामला उसके हाथ आ जाता तो उसे महीनो पड़े रहने देता। इस बीच वे आदमी कैद मे सडते रहते, और फिर रिश्वत लेकर उन्हे योही छोड देता। उसे कभी का बरखास्त कर दिया गया होता, लेकिन केन्द्रीय शासन मे उसके कुछ सहायक थे। अन्त मे निश्चय हुआ कि मै देहात मे जाकर सारी स्थिति का अध्ययन करू और उसके खिलाफ तथ्य इकट्ठे करू। यह काम आसान नही था, क्योकि किसान उससे बुरी तरह भयभीत थे और उसके विरोध मे कुछ भी कहने को तैयार न थे। रूस मे एक पुरानी कहावत है "ईश्वर तो बहुत दूर है, लेकिन अफसर तो नजदीक है!" उन औरतो ने भी, जिन्हे उसने पीटा था, ऐसा लिखकर देने से इकार कर दिया! लेकिन मै उन किसानो के बीच मे पन्द्रह दिन तक रहा, उनका पूर्ण विश्वास प्राप्त किया और तब कही उस अफसर के कारनामे ज्ञात हुए। मैने भयकर तथ्य इकट्ठे किये। परिणाम यह हुआ कि वह पुलिस कप्तान तुरन्त बरखास्त कर दिया गया। हम सबने इसपर अपनेको बधाई दी। लेकिन इसके कुछ ही समय बाद यही अफसर और भी ऊचे पद पर नियुक्त हो गया और वहा वह बिना किसी रोक-थाम के गरीबो को लूटता-पीटता रहा! कुछ वर्षो बाद वह साधन-सम्पन्न होकर सेण्ट पीटर्सबर्ग लौट गया।

जैसाकि पहले लिख चुका हू, प्रतिक्रिया की लहर साइबेरिया तक नही पहुची थी और इसलिए निर्वासितो को कोई कष्ट नही होता था। १८६१ मे कवि मिखेलोव को उसकी क्रान्तिकारी घोषणा के लिए सपरिश्रम कारावास का दण्ड दिया गया और उसे साइबेरिया भेज दिया गया।

रास्ते मे साइबेरिया के प्रथम शहर के गवर्नर ने उसके सम्मान में एक दावत दी, जिसमे सब अधिकारी उपस्थित थे। ट्रान्समैकालिया मे उससे कोई काम नही लिया गया, एक छोटी अस्पताली जेल मे रख दिया गया। चूकि उसका स्वास्थ्य अच्छा नही था, इसलिए जनरल कुकेल ने उसे वही अपने इजीनियर भाई के यहा रहने की अनुमति दे दी। साइ-बेरिया के सभी अधिकारी अनधिकृत रूप से यह जानते थे। लेकिन एक दिन इर्कूटस्क से समाचार आया कि एक पुलिस अधिकारी इस मामले की पूरी-पूरी जाच के लिए राजधानी आ रहा है। तुरन्त ही मैं मिखेलोव से कहने चल दिया कि वह अस्पताली जेल मे पहुच जाय। इस बीच उस पुलिस अधिकारी को राजधानी मे रोक लिया गया। वहा कुकेल के यहा प्रत्येक रात को जुआ होता और उसमे वह खूब जीतता। ऐसे सुन्दर लाभ-प्रद और आराम के कार्य को छोडकर उसने भयकर सर्दी मे अस्पताली जेल तक जाने का विचार ही छोड दिया और वह बिलकुल सन्तुष्ट होकर इर्कूट्स्क लौट गया।

लेकिन तूफान धीरे-धीरे नजदीक आ रहा था। पोलैण्ड की क्रान्ति के बाद उसने सबकुछ उखाडकर फेक दिया।

: ३ :

पोलैण्ड का विद्रोह

जनवरी १८६३ मे पोलैण्ड ने रूस के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। पोलैण्ड के निवासियो ने अनेक फौजी दस्ते तैयार कर लिये थे और पूरे अठारह महीनो तक यह सग्राम चलता रहा। लन्दन के रूसी शरणार्थियो ने पोलैण्ड की क्रान्तिकारी कमेटी से विद्रोह को कुछ समय के लिए टालने की प्रार्थना की थी। उन्हे दीखता था कि विद्रोह दबा दिया जायगा और इसके फलस्वरूप रूस मे भी सुधारो के युग का अन्त हो जायगा। लेकिन विद्रोह को टाला नही जा सका। वारसा मे १८६१ मे जो साधारण राष्ट्रीय

आन्दोलन हुआ उसके निर्दय दमन तथा नेताओ की निरर्थक ही निर्मम हत्या के कारण पोलैण्डवासियो की क्रोधाग्नि भडक गई और विद्रोह प्रारम्भ हो गया।

रूस मे शायद ही कभी पोलैण्ड के प्रति इतनी सद्भावना रही हो। मै रूसी क्रान्तिकारियो की बात नही करता, वरन सामान्य समाज मे भी लोगो का विचार था और वे स्पष्ट कहते भी थे कि रूस के लिए, पोलैण्ड का विद्रोही उपनिवेश की अपेक्षा पड़ोसी मित्र-राष्ट्र के रूप मे रहना अधिक लाभप्रद होगा। उसका विश्वास था कि पोलैण्ड से राष्ट्रीय चेतना कभी लुप्त नही होगी, वह अत्यधिक विकसित है। साहित्य, कला और व्यवसाय के क्षेत्रो मे उसकी अपनी विशेषताए रही है और भविष्य मे भी रहेगी। रूस केवल पाशविक बल और दमन के द्वारा उसे अपने अधीन रख सकता है और उस हालत मे यहा रूस मे भी दमन होता रहेगा।

सन् १८६३ के विद्रोह मे रूसी फौज के अनेक अफसरो ने पोलैण्ड के विद्रोहियो के खिलाफ गोली चलाने से इकार कर दिया और कुछने तो विद्रोहियो का पक्ष लिया। विद्रोहियो की सहायता के लिए रूस मे चारो ओर चन्दा हुआ, साइबेरिया मे तो आम चन्दा किया गया। रूसी विश्व-विद्यालयो से अनेक युवक विद्रोहियो की सहायता के लिए गये। उन्हे सम्मानपूर्वक विदाई दी गई।

फिर यकायक इस उत्साह के बीच रूस-भर मे यह खबर फैल गई कि १० जनवरी की रात को पोलैण्ड के विद्रोही रूसी सिपाहियो के ऊपर टूट पडे और उन्हे बिस्तरो पर ही मार डाला। वास्तव मे दुर्भाग्यवश इस समाचार मे कुछ सचाई थी, लेकिन बात बहुत चढाकर कही गई थी और रूस मे उसका असर भयकर हुआ। दोनो राष्ट्रो के बीच पुराना द्वेप फिर भडक उठा।

धीरे-धीरे यह द्वेष कम हो गया। पोलैण्ड के निवासियो ने जिस अदम्य उत्साह और बहादुरी से रूसी फौज का मुकाबला किया, रूसी लोगो ने उसकी खूब प्रशसा की। लेकिन बाद को मालूम हुआ कि पोलैण्ड की क्रान्तिकारी कमेटी ने यूक्रेन प्रान्त की भी माग की थी। यूक्रेन के निवासी पोलैण्ड के शासको से अत्यधिक घृणा करते थे। इसी समय फ्रास का

शासक नैपोलियन तृतीय रूस को एक नये युद्ध को निरर्थक धमकी देने लगा। शायद इससे सबसे अधिक हानि पोलैण्ड की हुई। फिर रूस के उदार लोगो को यह देखकर खेद हुआ कि पोलैण्ड मे सकीर्ण राष्ट्रीयता वाले दल के हाथ मे सत्ता पहुच गई है और वहा की सरकार गुलामो को जमीन देने के लिए कुछ भी नही कर रही। पोलैण्ड के नवीन शासको ने यह बडी भारी भूल की और रूसी सरकार ने इसका भरपूर फायदा उठाया। वह पोलैण्ड के बडे-बडे जमीदारो के विरोध मे किसानो की सरक्षक के रूप में उपस्थित हुई !

पोलैण्ड मे जब क्रान्ति हुई थी तब रूस मे साधारणत विश्वास था कि आगे चलकर उसका रूप प्रजातत्रीय होगा और राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए लडनेवाली पार्टी सबसे पहले गुलामो को मुक्ति देगी। लेकिन नई सरकार ने ऐसा कुछ भी नही किया ! सत्ता उच्च मध्य वर्ग के हाथो मे पहुच गई थी। इस अत्यधिक आवश्यकीय कार्य की ओर किसीने ध्यान नही दिया। इसीलिए रूसी सरकार पोलैण्ड के किसानो की सद्भावना अपनी ओर आसानी से खीच सकी।

पोलैण्ड की सरकार की गलती का पूरा-पूरा फायदा अलैक्जैण्डर द्वितीय ने उठा लिया। उसने मिलूटिन को पोलैण्ड भेजा और उससे कहा—"जिस तरह हो, वहा जाकर किसानो को मुक्त करो, चाहे उसमे जागीरदार बिलकुल नष्ट भले ही हो जाय।" और सचमुच मिलूटिन और उसके साथियो ने जागीरदारो से सब जमीन लेकर किसानो को बाट दी और उन्हे सन्तुष्ट कर दिया।

एक बार मुझे एक अधिकारी से, जो मिलूटिन के साथ पोलैण्ड गया था, मिलने का अवसर मिला। उसने मुझे बतलाया, "किसानो को जमीन देने की हमे पूर्ण स्वाधीनता थी। अक्सर मेरा तरीका यह था कि किसी गाव मे जाकर वहा के किसानो को इकट्ठा करता, उनसे पूछता—"बतलाओ, तुम्हारे पास आजकल कितनी जमीन है ?" फिर मै उनसे पूछता—"क्या हमेशा से तुम्हारे पास इतनी ही ज़मीन रही है?" वे सब उत्तर देते—"नही, पहले हमारे पास यह मैदान था, वह जमीन भी हमारे कब्जे मे थी, वह जगल भी हमारे अधीन था।" . . मैं उन्हे इसी तरह कहने देता,

टगा हुआ पाते! इसी तरह महीनो तक चलता रहा। कोई रास्ता ही नजर नही आता था, लेकिन फिर जैसे ही मिलूटिन पोलैण्ड पहुचा और किसानो को मुक्ति दी तथा जमीन बाटी, वे सब हमारी ओर हो गये? विद्रोहियो के दस्तो को उन्होने पकडवा दिया और विद्रोह बिलकुल खतम हो गया।

साइबेरिया मे पोलैण्ड के निर्वासितो से अक्सर मैने इस विषय पर चर्चा की और उनमे से कुछ तो अपनी भूल समझ भी गये थे। सफल क्रान्ति के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि प्रारम्भ मे ही पददलितो और कष्टपीडितो के प्रति उचित न्याय किया जाय। उसे भविष्य के लिए न टाला जाय, अन्यथा क्रान्ति असफल हो जायगी। दुर्भाग्यवश अक्सर ऐसा होता है कि क्रान्ति के नेता फौजी चालो मे इतने व्यस्त रहते है कि वे मौलिक समस्या को ही भूल जाते है! यदि क्रान्तिकारी जनसाधारण की दृष्टि मे यह सिद्ध नही कर पाते कि क्रान्ति से उनके लिए वास्तव मे एक नये युग का प्रादुर्भाव हो गया है, तो क्रान्ति का विफल होना निश्चित है।

पोलैण्ड के लिए इस विफल क्रान्ति के जो भयकर परिणाम हुए, वे सर्वविदित है। हजारो युद्ध मे मारे गये, सैकडो को फासी दे दी गई और न जाने कितने हजार रूस और साइबेरिया के लिए निर्वासित कर दिये गए। रूस के लिए भी इसके नतीजे कम भयकर नही हुए। पोलैण्ड के विद्रोह ने सुधार-युग का अन्त ही कर दिया। यह ठीक है कि प्रान्तीय स्वायत्त शासन और कचहरियो के सुधार कानून १८६४ और १८६६ मे जारी हुए, लेकिन दोनो कानून १८६० मे तैयार हो चुके थे और अन्त मे जार ने स्वायत्त शासन की मिलूटिन की योजना की अपेक्षा वह योजना मजूर की, जो प्रतिक्रिया-वादियो ने तैयार की थी। फिर दोनो सुधारो की घोषणा के वाद ही तुरन्त विभिन्न उपनियम बनाकर इन सुधारो की उपयोगिता बिलकुल नष्ट कर दी गई।

सवसे दुर्भाग्यपूर्ण वात यह हुई कि रूस मे जनमत भी प्रतिक्रियावादी हो गया। इस समय कैटकोफ, जो जागीरदारो का नेता था, अत्यधिक लोकप्रिय हो गया। इसके वाद जो कोई भी सुधारो की चर्चा करने का साहस करता, वह तुरन्त ही 'रूस के प्रति विश्वासघाती' करार दिया जाता।

शीघ्र ही प्रतिक्रिया की लहर हमारे सुदूर प्रात मे भी पहुच गई। एक दिन इर्कूटस्क से एक सन्देशवाहक एक पत्र लाया। उसमे जनरल कूकेल को आज्ञा दी गई थी कि गवर्नर का पद छोडकर तुरन्त इर्कूट्स्क के लिए रवाना हो जाय, आगे का कार्यक्रम वही मालूम पडेगा।

क्यो? इसका मतलब क्या था? कुछ भी पता नही चला। गवर्नर ने भी, जो कूकेल का निजी मित्र था, इस आज्ञा के सबध मे एक शब्द भी नही लिखा था। क्या कूकेल को गिरफ्तार कर सेंट पीटर्सबर्ग मे कैद कर देगे? सभी कुछ सम्भव था। बाद को हमे मालूम पडा कि वास्तव मे अधिकारियो की मशा तो यही थी, लेकिन एक प्रभावशाली सरदार ने जार से काफी अनुनय-विनय की, तब ऐसा होने से रुका।

कूकेल और उनके कुटुम्ब से हम लोगो का विछोह अत्यन्त दुखद था। मेरा एक निजी मित्र ही नही चला गया था, वरन कहना चाहिए, कि आशाओं और स्वप्नो से पूर्ण एक युग का ही अन्त हो गया था।

थे, हम सबने कैनान से प्रश्न पूछना प्रारम्भ किया। यह देखकर हम सबको अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि वे रूसी भाषा बखूबी बोल लेते थे और साइबेरिया के बारे मे भी उनकी जानकारी पूरी थी।

हम लोग विदा होनेवाले थे। मैने कैनान से पूछा, "क्या आपको मालूम है कि चीता की जनता ने वहा घडी की मीनार बना ली या नही ?" स्टैपनियाक मेरे इस धृष्ट प्रश्न पर कुछ नाराज हुआ, लेकिन कैनान हँसने लगे और मै भी उनकी हँसी मे शामिल होगया। और हँसते हुए ही हम लोगो ने प्रश्न-उत्तर किये—"आपको भी मालूम है ?" "बन गया ?" "हा, दूने अन्दाज लगाये।" —अन्त मे स्टैपनियाक ने हमे टोका और गम्भीरता से पूछा—"कम-से-कम हमे बतलाइये तो कि आप लोग किस बात पर हँस रहे है।" इसपर कैनान ने हम सबको चीता की मीनार का किस्सा सुनाया। १८५९ मे चीता के निवासी अपने शहर मे एक दरवाजा बनाना चाहते थे और उसके लिए रुपया भी इकट्ठा कर लिया। लेकिन उनकी पूरी योजना और हिसाब सेण्ट पीटर्सबर्ग भेजी जानी थी। सेण्ट पीटर्सबर्ग से जब योजना दो वर्ष बाद पास होकर लौटी तो लकडी और मजदूरी के दाम शहर मे बढ गये थे। मै उस समय चीता मे था। नया हिसाब तैयार किया गया, वह सेण्ट पीटर्सबर्ग भेजा गया और फिर वही हुआ ! इसी तरह पच्चीस साल तक होता रहा। अन्त मे चीता की जनता ने तग आकर असली लागत से दुगुनी का हिसाब लगाकर सेण्ट पीटर्सबर्ग भेज दिया। वह हिसाब सेण्ट पीटर्सबर्ग से पास होकर आ गया और इस तरह चीता मे मीनार बनी !

अक्सर यह कहा जाता है कि जार अलैक्जैण्डर ने स्वय अपना बहुत अहित किया। उन्होने ऐसी आशाओ को जन्म दिया, जिन्हे वह पूरा नही कर सकते थे। यही नही, जनमत के सामने कुछ झुककर, वह जनता को उकसाते और उसे आशाओ और स्वप्नो की दुनिया से निकलकर कार्य करने के लिए प्रेरित करते तथा स्वय सुधारो की योजनाए बनाते। उनके प्रोत्साहन से जनता को निकट भविष्य मे सुधारो और अनेक कार्यो की आशाए बधती। उनकी प्रेरणा से ही जनता अपने आदर्शो को छोडकर उन्ही योजनाओ पर ध्यान केन्द्रित करती, जो तत्काल सम्भव थी और जब

जनता के विचार निश्चित हो जाते और तत्सम्बन्धी कानून भी बन जाते तथा उनपर उसे केवल हस्ताक्षर करना बाक़ी रह जाता, तब वह उन्हे रोक देते ! सुधार मात्र के कारण पूरे पैंतीस वर्ष तक उसने कुछ भी नहीं किया। इस समय जो कोई 'परिवर्तन' का नाम भी लेता, उसके ऊपर सन्देह किया जाता !

: ४ :

नदी द्वारा यात्रा

जब मैने देखा कि चीता मे सुधारो की दिशा में कुछ भी सम्भव नहीं तो १८६३ की ग्रीष्म मे मैने आमूर जाने के निमत्रण को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

आमूर नदी के बाईं ओर (उत्तरी भाग) का लम्बा इलाका—प्रशान्त महासागर के किनारे-किनारे व्लाडीवोस्टक की खाडी तक—मुराविय़ौफ के साहस और पराक्रम के कारण—रूस के अधीन हो गया था। सेण्ट पीटर्सबर्ग के अधिकारी तो इस योजना के विरुद्ध ही थे, न इसमे उन्होने मुराविय़ोफ को कोई योग ही दिया। वैसे तो सदियो से नदी का यह दक्षिणी उपजाऊ मैदान साइबेरिया के निवासियो का आकर्षण-केन्द्र रहा था, अब जब कि यूरोप से जापान का रास्ता खुल गया था, मुराविय़ौफ ने प्रशान्त महासागर के तट पर रूसी स्थिति को दृढ करने का निश्चय कर लिया। जब उसने अपनी यह योजना बनाई, सेण्ट पीटर्सबर्ग के लगभग सभी अधिकारी उसके विरोध मे थे ! युद्ध-विभाग के पास इसके लिए फौजे नही थी, अर्थ-विभाग के पास पैसा नही था और परराष्ट्र विभाग तो इस योजना का प्रबल विरोधी था ही। अधिकारियो को डर था कि फिजूल के अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े उठ खडे होगे और फिर सबकुछ शीघ्रता से ही कर डालना था ताकि जब पश्चिमी यूरोप के राजनीतिज्ञो का विरोध उठे तो उनसे कह दिया जाय—अब तो सब सम्पन्न ही हो गया !

नाम मात्र का कब्जा निरर्थक सिद्ध होता। इसलिए योजना यह थी कि आमूर और उसुरी नहर के किनारे-किनारे ढाई हजार मील लम्बे इलाके मे छोटी-छोटी वस्तिया बसाई जाय, जिससे साइबेरिया और प्रशान्त तट के बीच मे सदैव सम्पर्क रखा जा सके। इन बस्तियो के लिए मनुष्यो की आवश्यकता थी। पूर्वी साइबेरिया से आदमी मिलना सम्भव नही था। इसलिए मुरावियौफ को असाधारण युक्तिया उपयोग मे लानी पडी।

अपराधी अपनी सज़ा पूरी करने के बाद राज्य की खानो मे गुलाम हो गये थे। वे सब स्वतत्र कर दिये गए। मुरावियौफ ने लगभग एक हजार कैदियो को (इनमे से अधिकाश डाकू और हत्यारे थे) मुक्ति दिलवाई। ये आमूर के नीचे हिस्से मे स्वतत्र व्यक्तियो की हैसियत से बसाये जाने थे। वह स्वय उन्हे विदा करने आया, चलते समय उसने कहा, "बहादुर युवको, जाओ, अब तुम स्वतत्र हो। जमीन को जोतो, उसपर रूस का अधिकार करो और वहा नया जीवन प्रारम्भ करो।" रूस मे जब मर्द को सपरिश्रम कारावास के लिए साइबेरिया भेजा जाता है, तो अक्सर उसकी औरत स्वेच्छा से उसके साथ जाती है और इसलिए उनमे से अधिकाश से सकुटुम्ब गये थे। लेकिन जिनकी स्त्रिया नही थी, उन्होने मुरावियौफ से निवेदन किया, "बिना स्त्री के खेती कैसी ? हमारा विवाह तो होना चाहिए।" इसपर मुरावियौफ ने जितनी स्त्रिया कैद थी, लगभग सौ, उन सबको मुक्ति दे दी और उन्हे अपने लिए पति चुनने की स्वतत्रता भी। लेकिन समय बहुत थोडा था, नदी मे पानी कम हो रहा था, और नावे शीघ्र ही चल देनी थी। मुरावियौफ ने उन सबको जोडो मे खडा करके आशीर्वाद दे दिया—"तुम्हारी शादी हो गई, आपस मे मेल से रहना।, ईश्वर तुम्हे सुखी करे।"

उसके लगभग छ वर्ष बाद मुझे इन लोगो के देखने का अवसर मिला। उनके गाव निर्धन थे। जिस जमीन पर उन्हे बसाया गया था, उसपर से झाड-झखाड और जगलो को साफ करना था। लेकिन सबकुछ देखते हुए उनकी बस्तिया असफल नही थी, और मुरावियौफ द्वारा सम्पन्न शादिया साधारण शादी से कम सन्तोषजनक भी नही थी। बाद को आमूर के पादरी ने उन शादियो और उनके बच्चो को वैध घोषित कर दिया था।

लेकिन मुरावियौफ ने आदमियो का एक दूसरा जत्था तैयार किया था। वह इतना सफल सिद्ध नही हुआ। आदमियो की कमी के कारण उसने दो हजार कैदी ले लिये थे। जेल की बैरको मे दस-बीस वर्ष तक रहने के बाद स्वभावत: वे खेती के काम के नही रहे थे, और डटकर परिश्रम करने के अभ्यस्त भी नही थे।

पुराने अपराधियो और सजायाफ्ता आदमियो की बस्तिया, जो बडी जल्दी मे और बिना किसी योजना के बसा दी गई थी, सफल नही हुई, विशेषत आमूर के नीचे के हिस्से मे जहा एक-एक गज जमीन को झाड-झखाड से साफ करना होता। इसलिए वहा फौजो और बस्तियो की सहायता के लिए हर साल काफी मात्रा मे नमक, आटा, गोश्त आदि भेजना पडता था। इसके लिए प्रत्येक वर्ष चीता मे लगभग डेढसौ छोटी-छोटी नावे तैयार कराई जाती थी और पानी के बहाव मे छोड दी जाती थी। बसन्त ऋतु के शुरू मे ही नावो का यह काफिला कई दस्तो मे बाट दिया जाता। लगभग वीस नावो का एक दस्ता कुछ अधिकारियो और कज्जाक नौकरो के अधीन कर दिया जाता। इनमे से अधिकाश नाव आदि चलाने के विपय मे कुछ भी नही जानते थे। बस, इतना विश्वास उनपर था कि रास्ते मे वे सामान की चोरी नही करेगे! यह सारा काफिला मेजर मोरोव्स्की के अधीन था और मुझे उनका सहायक नामाकित किया गया।

दिन के समय तो नाव की यात्रा से अधिक आनन्दप्रद यात्रा शायद ही कोई हो। नाव मन्द गति से बहाव मे शान्त और निर्विघ्न बहती है—कोई आवाज नही होती—यदा कदा नाव को बीच धार में रखने के लिए एकाध पतवार चला दी, और प्रकृति के प्रेमी के लिए तो शिलका नदी के दक्षिणी भाग और आमूर के ऊपरी भाग से अधिक सुन्दर स्थल कम ही होगे। दोनो ओर दो हजार फुट ऊची हरीतिमापूर्ण चट्टानो के वीच मे चौडी सुन्दर नदी और तेज बहाव, ससार मे ऐसे सुन्दर दृश्यो से परिपूर्ण यात्राए कम ही होगी।

अपना सामान सौपकर, मैंने आमूर नदी मे नीचे की ओर लगभग एक हजार मील तक एक नाव पर यात्रा और की। मेरे साथ मुख्य तीन व्यक्ति और थे। हम लोग जल्दी में थे, इसलिए दिन-भर वारी-वारी से नाव खेते

थे। रात के समय नाव को नदी के बहाव मे छोड देते और मै तीन-चार घटे देखता रहता कि नाव कही इधर-उधर न मुड जाय ! रात की यह चौकसी एक अद्‌भुत अनुभव था। शुभ्राकाश मे पूर्ण चन्द्रमा और काली पहाडियो की नदी मे छाया, इनकी शोभा वर्णनातीत है। मेरे साथ जो आदमी थे, वे ऊपर बतलये सजायापता कैदियो मे से थे, और पक्के चोर-डकैत रहे थे। मेरे पास नोटो की गड्डी और काफी रुपया-पैसा था। पश्चिमी यूरोप मे इस प्रकार की यात्रा निरापद नही मानी जाती। मेरे पास नाम के लिए पिस्तौल भी नही थी। लेकिन पूर्वी साइबेरिया मे ऐसा नही है।

जिन लोगो ने आमूर नदी को देखा है, अथवा मिसीसिपी और याग-टीसीक्याग नदियो के विषय मे कुछ जानते है, वे ही इस बात की कल्पना कर सकते है कि आगे चलकर आमूर मे तूफान के समय कैसी लहरे उठती होगी। बरसात मे तो इन नदियो मे बेहद पानी चढ आता है, कही-कही नदी का पाट दो-तीन अथवा पाच मील तक का हो जाता है और जब पूर्व की ओर से बहाव के खिलाफ हवा चलती है तो बडी ऊची-ऊची लहरे उठती है। जब चीनी समुद्र मे से तूफान उठकर आमूर मे आ जाता है तब तो और भी भयकर हो जाता है।

एक ऐसे तूफान का अनुभव हमे हुआ था। उस समय मै मेजर मारो-व्स्की के साथ एक बडी नाव पर था। नाव के ऊपर पाल बाध लिया गया था और जब तूफान आता तो हम लोग नाव को किनारे किसी नाले मे ले आते। इस तरह हमे दो दिन तक रहना पडा था। एक दिन तूफान उठा। तूफान इतनी जोर का था कि मै नज़दीक के जगल मे करीब सौ गज ही गया होऊगा कि लौटना पडा। ऊचे-ऊचे पेड, हवा के झोको से धराशायी हो रहे थे। हमे अपनी नावो की बडी फिक्र हो गई। यह निश्चय था कि यदि उस दिन सुबह वे नदी के बहाव मे होती तो उनका किनारे लगाना असम्भव हो गया होता और वे नष्ट हो गई होती।

जैसे ही तूफान शान्त हुआ हम लोग चल पडे। हम जानते थे कि हमारे काफिले की शेष नावे मिल जानी चाहिए, लेकिन दो दिन तक नावे नही मिली, न नजदीक के गाँववाले ही कोई पता बतला सके। अन्त मे एक गाव मे मालूम हुआ कि नावे तो कोई नही आई थी, लेकिन उन्होने

कुछ सामान जरूर देखा था। अब स्पष्ट हो गया कि चालीस नावो का काफिला, जिसमे लगभग दो हजार टन सामान था, नष्ट हो गया। इसके फलस्वरूप यदि खाद्यान्नो का तुरन्त प्रबन्ध नही होता तो आमूर के दक्षिणी हिस्से मे दुर्भिक्ष निश्चित था।

हम लोगो ने आपस मे सलाह-मशविरा करके तय किया कि मारोव्स्की फौरन ही आमूर के मुहाने की ओर जायं और तुरन्त जापान से कुछ अनाज खरीदे। इस बीच मैं शीघ्रातिशीघ्र नाव, घोडा, स्टीमर आदि किसी तरह से नदी के ऊपर जाकर नुकसान का कुछ अन्दाज लगाऊ और चीता पहुचकर जो कुछ भी हो सके, इधर भिजवा दू। अगर कुछ हफ्तो—बल्कि दिनो की बचत हो जाय, तो भी दुर्भिक्ष मे बडी सहायता मिल जायगी।

मैने दो हजार मील लम्बी यात्रा साधारण नाव पर प्रारम्भ कर दी। हर बीस मील पर खेनेवाला बदल देता। नाव बहुत ही रद्दी थी और मौसम बडा खराब। हम लोग लगातार किनारे-ही-किनारे चले, लेकिन हमे आमूर की कई शाखाए पार करनी पडी और वे काफी चौडी थी। एक दिन हम लोगो को आमूर की एक शाखा पार करनी पडी, जो लगभग आध मील चौडी थी। ऊची-ऊची लहरे उठ रही थी। नौका चलाने-वाले घबडा गये। वे कापने लगे, उनके मुह पीले पड गये और वे ईश्वर से प्रार्थना करने लगे, लेकिन एक पन्द्रह वर्ष के लडके ने, जिसके हाथ मे पतवार थे, हिम्मत नही हारी और लहरो से नाव को बडी होशियारी से निकाल कर ले गया! इस तरह कई दफा हमे नदी पार करनी पडी। ऐसे मौको पर मै साथ के आदमियो पर नदी पार करने के लिए कभी भी दबाव नही डालता था, लेकिन वे स्वयं जानते थे कि मुझे चीता पहुचने की क्यो जल्दी है, इसलिए हमेशा ऐसे मौको पर वे यही कहते—"पार करने की कोशिश तो करनी ही चाहिए। आदमी बार-बार नही मरता और मृत्यु टाली भी नही जा सकती।" वे लोग ऐसा कहकर और ईश्वर का नाम लेकर पतवारे हाथ मे ले लेते।

मैं शीघ्र ही उस स्थान पर पहुच गया जहा हमारी नावे नष्ट हुई थी—तूफान मे चवालीस नावे डूब गई थी और बहुत कम सामान बचाया जा सका था। दो हजार टन आटा नष्ट हो गया था। कुछ दिन बाद ऊपर जाने-

वाला एक स्टीमर मिल गया और मै उसमे सवार हो गया। यात्रियो ने सुनाया कि स्टीमर के कप्तान बेहद शराब पीकर नदी मे कूद पडे थे। वह बचा लिये गये, लेकिन कैबिन मे बीमार पडे है ! यात्रियो ने मुझसे प्रार्थना की, मै स्टीमर का कप्तान हो जाऊ। मुझे स्वीकृति देनी पडी। शीघ्र ही मैने देखा कि हर चीज अपने-आप बिलकुल ठीक चल रही है और मुझे कुछ भी नही करना पडा। केवल कुछ मिनटो के लिए मालूम पडता कि कुछ उत्तरदायित्व मेरे ऊपर है——जब स्टीमर जमीन के किनारे तेल लेने के लिए ले जाया जाता था और जब सुबह नाविको से चलने के लिए मै कहता था।

जब मैने देखा कि शिलका नदी मे स्टीमर की गति बहुत धीमी है, तो उसे छोडकर एक घोडा ले लिया। आधी रात के बाद मै घोडे से उतरकर विश्राम करता। इसी तरह कुछ घण्टो की बचत करता। अन्त मे मै ट्रान्सबायकालिया के गवर्नर से मिला और उन्होने अपने यहा से कुछ सामान भेजने की जिम्मेदारी ले ली। मै अधिकारियो के सामने रिपोर्ट करने के लिए तुरन्त इर्कूट्स्क की ओर रवाना हो गया।

इर्कूट्स्क के अधिकारी आश्चर्य मे थे कि मैने इस लम्बी यात्रा को इतना शीघ्र पार कर कैसे लिया ! लेकिन मै बिलकुल थक गया था। एक हफ्ते के पूर्ण विश्राम के बाद, खूब सोकर, मैने पुन शक्ति प्राप्त कर ली।

एक सप्ताह बाद गवर्नर जनरल ने मुझसे पूछा, "तुम काफी विश्राम कर चुके ? क्या अब तुम सेट पीटर्सबर्ग के लिए रवाना हो सकते हो ? वहा अधिकारियो के सामने नावो के नष्ट होने की रिपोर्ट करनी होगी।"

इसका मतलब था कि केवल २० दिन मे बत्तीस सौ मील का फासला तय करना। थोडे-थोडे फासले पर गाडी बदलनी थी, क्योकि बरफीली सडको पर इतना लम्बा फासला एक गाडी से असम्भव था। लेकिन अपने भाई अलैक्जैण्डर से मिलने का भारी आकर्षण था, इसलिए मैने स्वीकृति दे दी और अगली रात को प्रस्थान कर दिया।

मै मास्को पहुचा। स्टेशन पर मुझे मेरे भाई अलैक्जैण्डर मिले और फिर वहा से हम लोग सीधे सेण्ट पीटर्सबर्ग पहुचे।

यौवन भी क्या आश्चर्यजनक चीज है! चौबीस दिन और चौबीस रात की लम्बी यात्रा के बाद, सुबह पहुचते ही मै अधिकारियों की सेवा मे रिपोर्ट पेश करने उपस्थित हुआ, उसके बाद अपनी बहन से भी मिला। वह मुझे देखकर बहुत प्रसन्न हुई। "क्या आ सकोगे ?" उसने कहा। "हा, जरूर।" और वहा जाकर मै प्रात काल तक नाचता भी रहा!

जब मै सेण्ट पीटर्सबर्ग पहुचा तब मैं समझा कि वस्तुस्थिति को बतलाने के लिए मै क्यो भेजा गया था। नावो के इस प्रकार नष्ट हो जाने की बात पर कोई सहसा विश्वास ही नही करता था। "तुमने वह जगह स्वय देखी है?" "तुमने नावो को नष्ट होते अपनी आखो से देखा है ?" "उन्होने सब सामान चुराकर तुम्हे कुछ नष्ट हुई नावे तो नही दिखला दी ?" इस प्रकार के प्रश्नो का उत्तर मुझे देना पडा।

सेण्ट पीटर्सबर्ग मे उच्च अधिकारियो का साइबेरिया के विषय मे ज्ञान हास्यास्पद था। उनमे से एक ने, वह अक्सर फ्रेंच मे भी बोलते थे, कहा—"यह कैसे सम्भव है कि नेवा नदी मे चालीस नावे डूब जाय और उन्हे बचाने कोई भी न पहुचे।" मैने कहा—"आमूर के दक्षिणी हिस्से मे नेवा जैसी तीन-चार नदियां बनेगी।"

काउन्ट इगनेटियेफ ने इस प्रकार के कोई प्रश्न नही किये। वह आमूर से परिचित थे। साइबेरिया के विषय मे तरह-तरह के मजाक करते हुए उन्होने मुझसे कहा—"सौभाग्यवश तुमने स्वय वह स्थल देखा, जहा नावें नष्ट हुई और वहा के अधिकारियो ने बडी होशियारी की कि तुम्हे यहा भेजा। यहा पहले तो नावो के नष्ट होने पर कोई सहसा विश्वास ही नहीं करता था। इनका ख्याल था कि अब की फिर कुछ चोरी हो गई! लेकिन अब ये लोग कहते है कि तुम अपनी ईमानदारी के लिए पार्षद स्कूल में भी विख्यात थे। तुम्हारे ऊपर इनका विश्वास है कि अगर वहा के आदमियो ने बेईमानी की होती तो तुम उनका साथ नही देते।"

: ५ :

आमूर प्रदेश की यात्रा

मै सेण्ट पीटर्सबर्ग ज्यादा नही ठहरा, शीघ्र ही इर्कूट्स्क लौट आया। भाई अलैक्जैण्डर को भी शीघ्र ही इर्कूट्स्क पहुचना था। वहा फौज मे उनकी नियुक्ति हो गई थी।

शिशिर ऋतु मे साइबेरिया की यात्रा कष्टप्रद समझी जाती है, लेकिन वास्तव मे मेरी राय मे तो वहा की यात्रा सबसे अधिक सुखप्रद इसी समय रहती है। सडको पर बिछी हुई बरफ की छटा निराली ही रहती है। यद्यपि ठड अत्यधिक रहती है तथापि स्वस्थ आदमी उसे सहन कर सकता है। कम्बलो से शरीर को लपेटकर बर्फ की गाडी मे पूरी तरह लेटने पर (साइबेरिया मे सभी लोग ऐसा करते है) ठड लगने की सम्भावना बहुत ही कम रहती है, चाहे तापक्रम शून्य से भी ४०-५० डिग्री कम हो। दिन मे मैं केवल एक बार भोजन के लिए रुकता था। इस तरह केवल उन्नीस दिनो मे इर्कूट्स्क पहुच गया।

अब मै पूर्व साइबेरिया के गवर्नर जनरल के लिए कज्जाक-सम्बन्धी समस्याओ के लिए परामर्शदाता नियुक्त हो गया था। लेकिन मेरे लिए कोई विशेष कार्य नही था। प्रत्येक कार्य को पुराने ढर्रे पर बिना किसी परिवर्तन के चलने दिया जाय, सेण्ट पीटर्सबर्ग से अब यही आदेश आया था। इसलिए मैने मचूरिया मे भौगोलिक अनुसधान करने के सुझाव को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

अगर आप एशिया का मानचित्र देखे तो आप देखेगे कि साइबेरिया मे रूसी सीमा मोटे तौर पर ५० डिग्री के अक्षाश के साथ चलती है और फिर एक साथ ट्रासबायकालिया मे उत्तर को मुड जाती है। फिर दोसौ मील तक यह सीमा अर्गुन नदी के किनारे चलती है और उसके बाद आमूर पहुचकर दक्षिण की ओर मुड जाती है।

दक्षिणी पूर्वी ट्रासबायकालिया और ब्लैगोवैशेस्क के बीच, सीधा फासला पाचसौ मील है, लेकिन अर्गुन और आमूर नदियो के रास्ते वह

हजार मील से ऊपर बैठता और फिर अर्गुन नौकाचालन के योग्य नही ।

ट्रासबायकालिया के प्रान्त मे पशु-सम्पत्ति अच्छी है और कज्जाक लोग पशुओ का व्यापार करते है। वे आमूर प्रदेश से सीधा सम्पर्क स्थापित करना चाहते थे। उनका ख्याल था कि उनके पशुओ के लिए वहा अच्छा बाज़ार मिलेगा। उन लोगो ने मगोलो से सुन रखा था कि सीधे पूर्व की ओर जाकर आमूर पहुचा जा सकता है।

कज्जाक लोगो ने इस मार्ग का अनुसन्धान करने के लिए एक कारवा ले जाने का निश्चय किया था ओर मुझे उसका नेतृत्व ग्रहण करने को कहा गया। मैने उनके निमत्रण को उत्साहपूर्वक स्वीकार कर लिया। अभी तक कोई यूरोप-निवासी उस प्रदेश मे नही गया था। एक रूसी, जिसने उस ओर जाने का प्रयत्न किया था, मार डाला गया था ! बहुत पहले केवल दो जैसूट पादरी दक्षिण की ओर से मर्गहेन तक गये थे और उसका लक्षाश भी नियत किया था। उसके उत्तर मे पांच सौ मील लम्बा और सात सौ मील चौडा प्रदेश बिल्कुल अज्ञात था। जितना भी भौगोलिक साहित्य उपलब्ध था, मैने देखा, लेकिन इस प्रदेश के विषय मे कुछ भी ज्ञात नही हुआ। चीन के भूगोलशास्त्रियो को भी इस प्रदेश के बारे मे कुछ पता नही था। और फिर ट्रासबायकालिया और मध्य आमूर के बीच सीधा सम्पर्क स्वय मे भी अत्यन्त महत्वपूर्ण था।

लेकिन इसमे एक कठिनाई थी। चीन के साथ जो सन्धि हुई थी, उसमे केवल चीनी साम्राज्य और मगोलिया के साथ व्यापार की अनुमति थी। मंचूरिया का उसमे नाम ही न था। चीन के अधिकारी इस सन्धि का एक अर्थ लगाते, रूस के अधिकारी दूसरा। इसके अलावा चूकि सन्धि मे केवल व्यापार की बात थी, किसी अफसर को मंचूरिया जाने की अनुमति नही मिल सकती थी। इसलिए मुझे व्यापारी की ही हैसियत से जाना था और मैंने इसके लिए इर्कूट्स्क मे तरह-तरह का सामान खरीदा। गवर्नर जनरल ने एक पासपोर्ट दे दिया : 'इर्कूट्स्क के व्यापारी—पीटर अलैक-सीव" और मुझे सावधान कर दिया कि यदि चीनी अधिकारी मुझे गिरफ्तार कर पेकिंग ले जाय और फिर वहा गोबी के रेगिस्तान होकर रूसी सीमा पर

छोडे, तो भी किसी भी हालत मे मै अपना नाम न वतलाऊ। मैने सब शर्तें स्वीकार कर ली। ऐसे प्रदेश की यात्रा का आकर्षण, जहा अबतक कोई भी यूरोप-निवासी नही गया था, रोकना असम्भव था।

ट्रासबायकालिया मे अपनी यथार्थता को छिपाना आसान नही था। वहा के लोग स्वभावत अत्यधिक उत्सुक होते है और जैसे ही उनके गाव मे कोई अजनवी आता है, उसका भली भाति आतिथ्य करने के साथ-ही-साथ वे अतिथि के ऊपर प्रश्नो की बौछार कर देते है।

"बडी भयकर यात्रा रही होगी? शायद आप वहा व्यापार करते है। वहा के बहुत-से व्यापारी यहा आते है। आप भी नरचिन्स्क जा रहे होगे—या और कही? हा, आपकी उम्र मे तो आदमी की शादी हो जाती है और शायद आप भी घर पर बाल-बच्चे छोड आये होगे? कई बच्चे है? सभी लडके है?" इस तरह आध घटे तक प्रश्नो की झडी लगी रहती है। अब मुझे वास्तव मे ही व्यापारी का पूरा-पूरा पार्ट अदा करना था। जब गरम चाय मेज पर रखी जाती तो कैप्टेन बक्सहोल्डन कहते—"पीटर अलैक्सीव, बैठिये।"

सक्षेप मे हम लोग कुशलतापूर्वक सीमा पार कर गये। हमारे यात्री दल मे ग्यारह कज्जाक थे और एक मै। सभीके पास सवारी के लिए घोड़े थे और हमारे पास करीब चालीस घोडे बेचने के लिए तथा दो गाडिया भी थी। मै अपनी गाडी और घोडो की देखभाल स्वय करता था। हम लोगो ने आपस मे से एक कज्जाक को अपना नेता चुन लिया था, जो चीनी अधिकारियो के साथ कूटनीतिक वार्तालाप आदि करता था। सभी कज्जाक लोग मेरी यथार्थता से परिचित थे, लेकिन उन्होने कभी भेद नही खोला—क्योकि वे जानते थे कि हमारी यात्रा की सफलता कुछ अशो मे उसीपर निर्भर है। मेरे कपडे भी अन्य कज्जाको की भाति ही थे, इसलिए चीनी अधिकारियो ने मेरी ओर कोई ध्यान नही दिया और मै मार्ग का नक्शा वना सका। पहले दिन जब अनेक चीनी सिपाही हम लोगो से ह्विस्की का एक गिलास पाने की आशा मे हमे बुरी तरह घेर रहे थे, मै अपने कम्पास (विस्तार-मापक यत्र) पर दूर ही से एक नजर डाल लेता और मार्ग की दूरी तथा विस्तार अपनी जेब के भीतर ही लिख लेता, कागज बाहर न निकालता

था। जव हमारे पास शराव नही रही, चीनी सिपाही चले गये। अव हम लोग सीधे पूर्व की ओर चले और चार-पाच दिन मे ही हम उस चीनी मार्ग पर आ गये, जो सीधा मर्गहेन जाता था। हमे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जो पर्वत-श्रेणी मानचित्र मे इतनी काली और भयकर है, आसानी से पार हो गई। मार्ग मे एक वूढा चीनी भी हमारे साथ हो लिया। पिछले दो दिन से हम लोग ऊचाई पर चढ रहे थे। प्रदेश की वनस्पति और सभीसे मालूम पडता था कि हम लोग ऊचाई पर है। घास बहुत कम हो गई थी, पेड पतले और कम थे, दोनो ओर ऊचे-ऊचे नगे पहाड थे। हम लोग आगे के मार्ग की कठिनाइयो के विषय मे सोच ही रहे थे कि एक चीनी अधिकारी एक टीले (जिसपर घोडो के वाल और कपडे वधे हुए थे) के सामने अपनी गाडी से उतरा। उसने अपने घोडे के कुछ वाल लेकर उस टीले से वाध दिये। हम लोगो ने उससे पूछा—"यह क्या है?" "यह ओवो है। यह नदी आमूर मे जाकर मिलती है।" "क्या खिगन प्रदेश समाप्त हो गया?" "हा खिगन समाप्त है—अव आमूर तक कोई पहाड नही है—केवल छोटी पहाडिया है।"

यह सुनकर हमारे दल मे काफी खलवली मच गई—कज्जाक लोग आपस मे चिल्लाकर कहने लगे—"सभी नदिया आमूर की ओर जाती है।" जिदगी-भर वे अपने वृद्धो से उस नदी के विपय मे सुनते आ रहे थे—वहा जगली लताए होती है। हजारो मील लम्बा जगल है, जो अत्यन्त समृद्ध है, उसके पहुचने का मार्ग अत्यधिक दुर्गम है? और अव हमारे सामने ही आमूर थी। इस आकस्मिक भौगोलिक अनुसन्धान के ऊपर मेरे हर्ष का अनुमान लगाया जा सकता है। कज्जाक लोगो ने अपने घोडो के कुछ वाल नोचकर उस टीले पर वाध दिये। साइवेरिया-निवासी देवताओ से भयभीत रहते हे। उनका विश्वास है कि ये देवता वडे ऊधमी है। उनसे विद्वेष रखना कभी भी ठीक नही, छोटी-छोटी चीजे भेट कर उन्हे सन्तुष्ट रखना ही लाभप्रद है।

कज्जाक लोगो ने उष्ण प्रदेशो के विपय मे तरह-तरह की कल्पनाए कर रखी थी। वे नये-नये पेडो को देखकर अत्यधिक प्रसन्न होते। हरी घास को देखकर वे उसपर लेट जाते, उसे वडे प्रेम से देखते। अव उन्हे

आमूर पहुचने की उत्कठा थी। और अन्त मे जब हमारे अन्तिम पडाव से आमूर केवल नौ मील थी तो वे वालको की तरह चचल हो उठे । आधी रात के बाद ही उन्होने अपने घोडे कस लिये ओर प्रात काल के बहुत पहले ही उन्होने यात्रा प्रारम्भ कर दी। और जब आमूर नदी का जल दीखा, तो इन वृद्ध कज्जाको के हर्ष की सीमा नही थी । स्पप्ट था कि रूसी सरकार की सहायता अथवा बगैर सहायता के, कभी-न-कभी आमूर के दोनो तट और उत्तरी मचूरिया का विस्तृत प्रदेश, रूसी पर्यटको द्वारा वस जायगा उसी तरह जिस भाति मिसीसिपी नदी के तट पर कनाडावासी वस गये । इसी बीच वृद्ध चीनी अधिकारी ने, जिसके साथ हमने खिगन प्रदेश पार किया था, अपना नीला कोट और अफसरी टोप पहन लिया । उसने हम लोगो से कह दिया कि आगे नही जाने दिया जायगा । हमारे दल के नेता ने उसे समझाने का प्रयत्न किया, लेकिन वह बुड्ढा बार-बार यही कहता कि हम आगे नही जा सकते। वह कहता था कि हम लोग यही डेरा डाले और इस वीच वह हमारे पासपोर्ट को पेकिग भेजेगा।

अव वह हमारे पासपोर्ट (एक कागज पर रूसी और मगोलियन भाषाओ मे कुछ लाइने थी) पर ही झगडा करने लगा—"यह क्या पासपोर्ट है ? तुम लोगो ने अपने-आप ही लिख लिया होगा और एक मुहर लगा दी होगी। मेरा पासपोर्ट देखो।" और उसने सामने दो फुट लम्बा एक कागज़ खोल दिया ।

मै एक ओर चुपचाप अपने वक्स को वन्द कर रहा था। इतने मे मुझे "मास्को गजट" का एक अक मिल गया । उसके ऊपर गरुड का चित्र छपा हुआ था। मैने अपने नेता से कहा, "इन्हे यह दिखलाओ।" वृद्ध को मास्को गजट का अक दिखलाते हुए हमारे नेता ने कहा, "आपको दिखलाने के लिए यह पासपोर्ट था। वह तो हमारे लिए है।" आश्चर्य-चकित होकर वृद्ध ने पूछा, "क्या यह सव तुम्हारे विपय मे ही लिखा है?" "हा, सव हमारे विपय मे ही है।" हमारे नायक ने उत्तर दिया।

वृद्ध चीनी अधिकारी घवडा गया। उसने हममे से प्रत्येक को गौर से देखा। लेकिन उसका क्लर्क अव भी उसके कान मे कुछ कह रहा था।

इसलिए अन्त मे वृद्ध ने घोषणा कर दी कि हम लोगो को आगे नही जाने दिया जा सकता।

मैने अपने नायक से कहा, "बहुत बातचीत हो चुकी। घोडे कसने की आज्ञा दीजिये।" अन्य कज्जाक साथी भी इसी राय के थे और शीघ्र ही हमारा दल आगे बढ चला। उस बडे अधिकारी से कह दिया कि आगे जाकर हम लोग रिपोर्ट कर देगे कि आपने हर तरह हमे मचूरिया-प्रवेश करने से रोका और आप निर्दोष है।

कुछ दिनो मे हम लोग मर्गहेन आ गये और वहा कुछ व्यापार किया और शीघ्र ही आमूर के दाये किनारे पर बसे चीनी शहर एगन पहुच गये। बाई तरफ रूसी नगर ब्लैगोवेर्शस्क था। हम लोगो ने इर्कूट्स्क से ब्लैगोवेर्शस्क का सीधे मार्ग का अन्वेषण कर लिया था और साथ मे कई और भी भौगोलिक समस्याओ का भी समाधान कर लिया था। यह तो मै नही कह सकता कि मै सफल व्यापारी रहा, क्योकि मर्गहेन मे मै टूटी-फूटी चीनी भाषा मे एक घडी के लिए २५ रूबल के लिए जिद पकड गया था, जबकि चीनी ग्राहक मुझे ४५ रूबल देने के लिए तैयार थे। लेकिन कज्जाक लोगो ने अच्छा व्यापार किया। और जब मेरे घोडे और अन्य सामान भी कज्जाक लोगो ने बेच दिये तो मालूम पडा कि सरकार पर इस यात्रा का कुल व्यय २२ रूबल पडा, सिर्फ ११ डालर!

: ६ :

सुंगरी नदी की यात्रा

एशिया मे अनेक नदिया दो नदियो के सगम से बनती है। भूगोल-शास्त्री के लिए यह कहना आसान नही होता कि दोनो मे से कौन-सी मुख्य नदी है और कौन-सी छोटी। हगोडा और ओनोन मिलकर शिलका हो जाती है और शिलका तथा अर्गुन के सगम से आमूर बनती है और आमूर और सुगरी के सम्मेलन से वह विस्तृत नदी बनती है, जो उत्तर-पश्चिम की तरफ बहकर प्रशान्त सागर मे गिरती है।

१८६४ तक मचूरिया की नदी सुगरी के विषय मे बहुत ही कम ज्ञात था। जो कुछ भी जानकारी थी, वह जैसूट पादरियो के समय की थी। अब चूकि मगोलिया और मचूरिया के अन्वेषण के प्रति जिज्ञासा फिर जाग्रत हो रही थी और रूस के अधिकारियो को ज्ञात हो गया था कि चीनी साम्राज्य की शक्ति का भय निराधार है, हमने गवर्नर जनरल से सुगरी का अन्वेषण करने की प्रार्थना की।

आमूर के नजदीक ही एक नितान्त अज्ञात प्रदेश का बना रहना, अत्यन्त हास्यास्पद मालूम पडता था। अचानक अधिकारियो ने एक स्टीमर सुगरी नदी के उत्तर की ओर भेजने का निश्चय कर लिया और बहाना यह कर दिया कि वह गीरी प्रान्त के गवर्नर जनरल के पास मैत्री का सन्देश लेकर जा रहा है। रूसी परराष्ट्र विभाग के एक अधिकारी को सन्देश लेकर जाना था। एक डाक्टर, एक खगोलशास्त्री और मैं—ये तीन आदमी एक छोटे-से स्टीमर पर कर्नल चर्नयेफ के नेतृत्व मे रवाना हुए। पच्चीस सिपाही, जिनकी बन्दूके कोयले के नीचे छिपाकर रख दी थी, हम लोगो के साथ थे।

सारा प्रबन्ध अत्यन्त शीघ्रता मे किया गया था। छोटे-से स्टीमर मे इतने अधिक प्राणियो के लिए स्थान भी नही था। लेकिन हम सब उत्साह मे थे और छोटे-छोटे कमरो मे किसी तरह गुजारा कर लेते। हममे से एक को मेज पर सोना पडता था। जब हम चल दिये थे, तो मालूम हुआ कि भोजन करने के लिए पर्याप्त चाकू और चम्मच भी नही थे।

सुगरी नदी से ऊपर की ओर जाना सुगम नही था। दक्षिणी भाग मे यह नदी बहुत उथली है और अक्सर हमे इस छोटे-से स्टीमर चलाने लायक भी गहराई नही मिलती थी। लेकिन हमारे युवक कप्तान ने निश्चय कर लिया था कि हमे शिशिर ऋतु मे घोरीन पहुच ही जाना है। आगे बढकर

नदी मे स्टीमर चलना सुगम हो गया। कुछ ही दिनो मे घोरीन पहुच गये। हम लोगो ने नदी का एक सुन्दर नकशा तैयार कर लिया था। दुर्भाग्यवश समय कम था, इसलिए हम लोग रास्ते के गावो और कस्बो मे कम ही उतरे। नदी के किनारे ग्राम कम ही है। नदी के दक्षिणी भाग मे तो निचली जमीन ही है, जहा हर साल बाढ मे पानी भर जाता है। उत्तर की ओर घोरीन के नजदीक ही कुछ घनी आबादी है।

यदि हमारा उद्देश्य केवल मचूरिया के साथ मैत्री स्थापित करने का होता, न कि सुगरी के विषय मे जानकारी प्राप्त करने का, तो हमारी यात्रा बिल्कुल निष्फल समझी जायगी। मचूरिया के अधिकारियो की स्मृति खराब नही थी और उन्हे भली भाति याद था कि कैसे आठ वर्ष पहले मुरावियोफ ने आमूर और उसके प्रदेशो की 'साधारण यात्रा' की थी और उसके फल स्वरूप वे प्रदेश रूसी साम्राज्य मे शामिल कर लिये गए थे। और इसलिए वहा के अधिकारी इस नई और अनावश्यक यात्रा को सन्देह की दृष्टि से देखते थे। पच्चीस बन्दूके कोयले के नीचे छिपी हुई होने की खबर भी यहा के अधिकारियो के कानो तक पहुच गई थी। इसलिए जब हमारा स्टीमर शहर के किनारे पहुचा, तो हमने देखा कि शहर के अनेक व्यापारी तलवारे लिये तट पर खडे है। शहर मे घूमने के लिए हमारे ऊपर कोई प्रतिबन्ध नही था, लेकिन हमारे उतरते ही सब दूकाने बन्द कर दी गई थी और व्यापारियो को हमारे साथ कुछ भी क्रय-विक्रय करने की अनुमति नही थी। स्टीमर पर ही हमारे लिए कुछ खाद्य सामग्री भेट स्वरूप भेज दी गई थी और उसके बदले मे हमसे पैसा नही लिया गया था।

बात की थी कि कही हम शिशिर मे वही न रुक जाय, इसलिए उन्होने दोसौ आदमी स्टीमर को निकलवाने के लिए भेज दिये।

लौटते हुए हम किनारे के कई चीनी गावो मे उतरे, जहा चीनी साम्राज्य से निर्वासित व्यक्ति रहते थे। उन लोगो ने हमारा हार्दिक स्वागत किया। मेरी स्मृति मे एक दिन की शाम विशेष रूप से अकित है। हम लोग एक छोटे-से सुन्दर गाव के किनारे पहुचे। मै अकेला ही गाव देखने के लिए निकला था। शीघ्र ही लगभग एक सौ चीनियो ने मुझे घेर लिया। यद्यपि न तो मै उनकी भाषा का एक भी शब्द जानता था ओर न मेरी भाषा वे समझते थे, लेकिन फिर भी हम लोग हाथो के इशारो से एक-दूसरे की बातचीत समझते रहे। अन्तर्राष्ट्रीय भाषा मे किसीके कन्धे को थपथपाना मित्रता का द्योतक होता है। इसी भाति एक दूसरे को तमाखू देना अथवा धूम्रपान के लिए निमत्रण देना मैत्री का लक्षण है। एक बात मे उन लोगो ने विशेष रस लिया—मैने युवक होते हुए भी दाढी क्यो रखी है, उनके यहा तो ६० वर्ष के पहले कोई दाढी नही रखता और जब मैने इशारो द्वारा उनसे कहा कि यदि मेरे पास खाने के लिए कुछ न हो तो मै इसे खा सकता हू, तो वे बडे जोर से हँसे, और बडे स्नेह से मेरे कन्धो को थपथपाया। वे लोग मुझे गाव के भीतर ले गये—अपने घर दिखलाये, प्रत्येक ने मुझे अपने साथ धूम्रपान के लिए निमत्रण दिया और फिर सब मुझे मित्र की भाति स्टीमर तक पहुचाने आये। यहा मै इतना और कह दू कि उस गाव मे एक भी पुलिस का आदमी नही था। और गावो मे भी हम लोग चीनी जनता के शीघ्र ही मित्र हो जाते, लेकिन जैसे ही कोई पुलिस का आदमी आता, सारा मामला बिगड जाता। कोई देख सकता था कि वे लोग पुलिसमैन के पीठपीछे कैसे-कैसे मुह बनाते। स्पष्टत वे शासन के इस प्रतिनिधि से घृणा करते थे।

इस यात्रा को लोग उसके बाद भूल गये। खगोलशास्त्री और मैंने इसके विषय मे साइबेरिया की भौगोलिक सोसाइटी के मुखपत्र मे लेख लिखे थे। लेकिन उसके कुछ समय बाद ही इर्कूट्स्क के अग्निकाड मे इस पत्र के बचे हुए सब अक जल गये और साथ मे सुगरी नदी का मूल नकशा भी नष्ट हो गया। गत वर्ष जब मचूरिया होकर रेलवे लाइन बनाना प्रारम्भ

हुआ तो रूस के भूगोलशास्त्रियो ने मेरी उस रिपोर्ट को खोज निकाला। तव उन्हे मालूम पडा कि पैंतीस वर्ष पहले ही हम लोगो ने उस नदी का अन्वेषण कर लिया था!

: ७ :

भौगोलिक खोजें

धीरे-धीरे मैं अपनी शक्ति वैज्ञानिक अन्वेषण की ओर लगाने लगा। १८६५ मे मैंने पश्चिमी सयान प्रदेश का अन्वेषण किया। उससे मुझे साइवेरिया के पहाडो की वनावट के विषय मे नई ही वाते मालूम पडी और अगले वर्ष इर्कूट्स्क प्रदेश की सोने की खानो और ट्रासवायकालिया के वीच सीवे मार्ग के अन्वेषण के लिए चल पड़ा। गत कई वर्षों से लोग ऐसे मार्ग के अन्वेषण मे लगे हुए थे, लेकिन उन्हें सफलता नही मिली थी। वे दक्षिण की ओर से अपनी यात्रा प्रारम्भ करते थे। मैंने निश्चय किया कि यात्रा उत्तर की ओर से प्रारम्भ की जानी चाहिए। एक वात और हुई। जब मैं यात्रा की तैयारी कर रहा था, मेरे हाथ एक नकशा लगा, जो एक अशिक्षित आदिवासी ने चाकू की सहायता से लकडी पर वनाया था। सभ्यता की प्रारम्भिक अवस्था मे भी रेखागणित के उपयोग का यह अच्छा उदाहरण था। मैं इससे अत्यधिक प्रभावित हुआ और इसे सत्य मानकर मैंने अपनी यात्रा उत्तर की ओर से, इसी नकशे के अनुसार, प्रारम्भ की। अढाई सौ मील चौडे पहाडो और खाइयो को उस नकशे की सहायता से पार करना अत्यन्त दुष्कर कार्य था। लेकिन हमे सफलता मिली। तीन महीन की यात्रा के वाद हम लोग चीता पहुच गये। सुना है कि आजकल दक्षिण मे खानो के प्रदेश को जानवर ले जाने के लिए यह मार्ग वडा उपयोगी सिद्ध हुआ है, और मुझे तो इस यात्रा ने साइवेरिया मे पहाडो और मैदानो की वनावट की मानो कुजी ही मिल गई थी।

साइबेरिया मे मैंने जो वर्ष व्यतीत किये, उनसे मैंने अनेक पाठ सीखे, जो शायद अन्यत्र मैं नही सीख पाता। शीघ्र ही मैं इस तथ्य पर पहुच गया कि शासन की मशीनरी द्वारा जनता के हित का कोई भी कार्य करना बिलकुल असम्भव है। इस मृगतृष्णा को तो मैंने सदैव के लिए छोड दिया। मैं अब मनुष्य और उसके स्वभाव को समझने लगा और मनुष्य के सामाजिक जीवन का आन्तरिक स्रोत भी मुझे अब मालूम हो गया था। दुखोबोर्टसी प्रदेश के निवासी आमूर प्रदेश मे जाकर बस गये थे। मैंने देखा कि उनका स्वनिर्मित समाज उनके लिए कितना लाभदायक था और उनका उपनिवेश सफल था, और सरकार द्वारा बसाये हुए उपनिवेशो की असफलता भी देखी। यह एक ऐसा पाठ था, जो पुस्तको से नही प्राप्त किया जा सकता था। इसके सिवा यहा साइबेरिया मे मुझे आदिवासियो की सामाजिक व्यवस्था का, जिसका उन्होने आधुनिक सभ्यता से दूर रहकर स्वय निर्माण किया है, अध्ययन करने का अवसर मिला। उससे तो मुझे नवीन प्रकाश ही मिला।

मेरा जन्म और पालन-पोषण एक ऐसे कुटुम्ब मे हुआ था, जो अनेक दासो का मालिक था। बाल्यावस्था से ही मैने मारपीट, डाट-फटकार और क्रूर शासन देखा था। लेकिन जीवन के प्रारम्भ मे ही जब मुझे महत्वपूर्ण कार्यो की व्यवस्था करनी पडी और मनुष्यो से काम लेना पडा, जहा एक भी गलती के परिणाम भयकर हो सकते थे, तो मैं समझने लगा कि शासकीय अनुशासन के सिद्धान्त की अपेक्षा स्नेहभाव का सिद्धान्त कही अच्छा है। पहले सिद्धान्त की उपयोगिता फौजी कवायद तक ही परिमित है, वास्तविक जीवन मे उसका कोई मूल्य नही। यहा तो सभी लोगो के सम्मिलित प्रयत्नो से ही सफलता मिलती है। यद्यपि उस समय मैंने अनुभवो को सिद्धान्त रूप मे स्थिर तो नही किया था, लेकिन निश्चय ही साइबेरिया मे रहने के बाद राजकीय अनुशासन से मेरा विश्वास बिल्कुल उठ गया था। अराजकवादी होने के लिए अब मैं तैयार था।

१९ वर्ष की अवस्था से लेकर २५ वर्ष की अवस्था तक मुझे सुधार की महत्वपूर्ण योजनाए बनानी पडी, अल्प साधनो की सहायता से महत्वपूर्ण अन्वेषणों का प्रबन्ध करना पड़ा और आमूर नदी पर विभिन्न

प्रकार के मनुष्यो से काम लेना पडा और इन महत्वपूर्ण कार्यो मे मुझे सफलता मिली। मेरी राय मे उसका एकमात्र कारण यही था कि मै समझ गया था कि महत्वपूर्ण कार्यो मे आदेश और अनुशासन निरर्थक है। प्रत्येक कार्य मे प्रेरक व्यक्तियो की आवश्यकता रहती है। लेकिन एक बार जब प्रेरणा देकर कार्य प्रारम्भ कर दिया तो फिर उसका प्रबन्ध फौजी ढग से नही, वरन् सामूहिक ढग से और पारस्परिक सद्भावना से करना चाहिए। क्या ही अच्छा हो, यदि शासक लोग राजकीय अनुशासन की योजनाए बनाने के पहले वास्तविक जीवन का कुछ अनुभव प्राप्त कर ले।

मेरे भाई भी १८६४ मे इर्कूट्स्क आ गये थे। वह कज्जाको की एक टुकडी के कप्तान थे, लेकिन फिर भी साइबेरिया के जीवन का आकर्षण मेरे लिए कम होता जा रहा था। हम दोनो साथ होने से प्रसन्न थे। हम लोगो ने काफी पढा और दर्शन, विज्ञान और समाज की तत्कालीन समस्याओ पर विचार-विनिमय भी किया। लेकिन हम दोनो की अभिलाषा बौद्धिक जीवन व्यतीत करने की थी। साइबेरिया मे यह सम्भव नही था। अन्त मे पोलैण्ड के निर्वासित कैदियो के १८६६ के विद्रोह ने हमारी आखे खोल दी कि रूसी फौज में अफसर होने के कारण हमारी कैसी विषम परिस्थिति है।

: ८ :

पोलैण्ड के निर्वासितों का विद्रोह

१८६३ के विद्रोह के फलस्वरूप पोलैण्ड के ग्यारह हजार निर्वासितों को पूर्वी साइबेरिया मे निर्वासित कर दिया गया था। उनमे विद्यार्थी, कलाकार, भूतपूर्व अफसर, सरदार और विशेषत — थे। उनमे से बहुतो से कठिन परिश्रम लिया जाता था।

मे बसा दिया गया था। गावो मे उन्हे कोई काम नही मिल सकता था, इसलिए वे सदैव भूखे-नगे ही रहते थे। जिनसे काम लिया जाता था, वे या तो चीता मे आमूर नदी के लिए नावे तैयार किया करते थे या नमक के कारखानो मे काम करते थे। मैने लेना मे मजदूरो को खौलती कढाही के पास ठिठुरती सर्दी मे नमक बनाते हुए देखा था। इस प्रकार केवल दो वर्ष काम करने के बाद तपेदिक से इन मजदूरो की मृत्यु निश्चित थी।

कुछ समय बाद इन निर्वासितो को बैकाल झील के दक्षिण मे एक सडक बनाने पर लगा दिया गया था। झील के चारो ओर ऊचे पहाड थे। या तो झील को गरमियो मे स्टीमर पर पार किया जा सकता था, या जाडों मे, जब बरफ जम जाती, उसे गाडी पर पार किया जा सकता था। लेकिन दो महीने के लिए जाडो मे और दो महीने के लिए बसन्त ऋतु मे झील को पार करना असम्भव था। उस स्थिति मे इर्कूट्स्क से ट्रासबायकालिया जाने के लिए पहाडो का चक्कर लगाकर जाना पडता था। इसलिए झील के दक्षिणी किनारे पर पहाडो को तोडकर और सैकडो नालो के ऊपर पुल बनाकर सडक बनवाई जा रही थी। इन निर्वासितो को इसी कार्य पर लगाया गया था।

पिछली शताब्दी मे सैकडो रूसी निर्वासित कर साइबेरिया भेज दिये गए थे। वे अपने भाग्य को कोसते रहे और घुल-घुलकर वही मर गये, लेकिन उन्होने कभी, अपनेको स्वतत्र करने के लिए, विद्रोह नही किया था। लेकिन पोलैण्ड-निवासी इतने दब्बू प्रकृति के नही थे और इस बार उन्होने खुलकर विद्रोह कर दिया। यह तो स्पष्ट था कि उनके सफल होने की बहुत कम सम्भावना थी। उनके सामने चारसौ मील लम्बी झील थी और उनके पीछे अनेक पहाड थे तथा पहाडो के पीछे उत्तरी मगोलिया का जगल। लेकिन उन्होने योजना बनाई कि तलवारो और कटारो की सहायता से—पोलैण्ड के विद्रोह मे उन्होने इन्ही अस्त्रो का प्रयोग किया था—रूसी सिपाहियो के हथियार छीन लेगे, फिर पहाडो और मगोलिया के जगल को पारकर चीन पहुच जायगे। वहा से उन्हे घर ले जाने के लिए अग्रेजी जहाज मिलने की आशा थी।

एक दिन इर्कूट्स्क मे समाचार आया कि बैकाल झील पर काम

करनेवाले कुछ निर्वासितो ने वहा के एक दर्जन सिपाहियो से अस्त्र छीन लिये है और विद्रोह कर दिया है।

उस वर्ष इर्कूट्स्क मे बहुत ही कम चहल-पहल थी। शाम की पार्टिया, जनता के नाटक, जुआ, आदि सब ठडे पडे थे। अध्यात्म अथवा प्रेत-सम्बन्धी विषयो की चर्चा करने के लिए बिल्कुल उपयुक्त अवसर था। एक सज्जन ने, जो पिछले जाडो मे अपनी कहानिया सुनाकर अच्छा पैसा पैदा कर चुके थे, देखा कि अब उनकी कहानियो मे इर्कूट्स्क के समाज को कोई दिलचस्पी नही रही। इसलिए उन्होने एक नया मनोरजन प्रारम्भ कर दिया था—यानी प्रेतात्माओ से वार्त्तालाप, और एक हफ्ते मे शहर-भर मे जगह-जगह बोलती मेज़ो पर आदमी नजर आने लगे। लेफ्टीनेट पोटेलौफ इसमे बडे उत्साह से लगे हुए थे। जब निर्वासितो के विद्रोह की खबर आई तो उन्होने प्रार्थना की कि अस्सी सिपाहियो के साथ उन्हे भेजा जाय।

विद्रोहियो के साथ युद्ध का पूरा वर्णन युद्ध-विभाग की रिपोर्ट मे सुरक्षित है। सिपाही सडक पर आगे बढ रहे थे कि उन्हे पचास-साठ विद्रोही मिले। उनमे से पाच-छः के पास बन्दूके थी, शेष के पास लाठिया और छुरे। विद्रोही जगल मे थे और कभी-कभी गोली चला देते थे। इधर से सिपाही भी गोली चलाते थे। लेफ्टीनेट पोटेलौफ मना करने पर भी अपने घोडे से उतरे और अपनी पिस्तौल लेकर विद्रोहियो का मुकाबला करने जगल में चले गये। वहा उन्होने एक विद्रोही को घायल किया। फिर सब विद्रोहियो ने मिलकर उन्हे मार डाला। विद्रोहियो ने अन्त तक अपना प्रयत्न जारी रखा, लेकिन वे हार गये और समर्पण कर दिया।

सडक के दूसरे कोने पर दो रूसी अफसरो ने अत्यन्त घृणास्पद कृत्य किया। वहा के निर्वासित मजदूरों ने इस विद्रोह मे कोई भाग नही लिया था। एक रूसी अफसर इन शान्त मजदूरो के खेमे मे घुस गया और अपने रिवाल्वर से कई गोलिया चलाई और दो को उसने बुरी तरह घायल कर दिया।

अब साइबेरिया के फौजी अधिकारियो का कहना था कि चूकि एक रूसी अफसर मारा गया है, इसलिए सैकडो पोलैण्ड-निवासियो को फासी होनी चाहिए। फौजी न्यायालय ने उनमे से पाच को फासी की सज़ा दी। इनमे

से एक ३० वर्ष का सगीतज्ञ था, दूसरा ६० वर्ष का एक वृद्ध था, जो रूसी फौज मे नौकर रह चुका था।

गवर्नर जनरल ने सजा कम करने के लिए सेण्ट पीटर्सबर्ग से तार द्वारा अनुमति मागी, लेकिन कोई उत्तर नही आया। लेकिन राजधानी से अनुमति के लिए बहुत कम दिन तक इन्तजार करने के बाद उसने फ़ासी लगा देने की आज्ञा दे दी। इसके चार हफ्ते बाद सेण्ट पीटर्सबर्ग से उत्तर आया—गवर्नर जनरल को यथोचित कार्यवाही का अधिकार है। इस बीच पाचो वीरो को फासी दी जा चुकी थी।

लोगो ने कहा कि विद्रोह मूर्खतापूर्ण था। लेकिम इन वीर विद्रोहियो को कुछ सफलता तो मिली ही। इस विद्रोह का समाचार यूरोप पहुचा। फ्रास मे अफसरो के घृणास्पद कुकृत्यो ने खलबली मचा दी। आस्ट्रिया की सरकार ने इन विद्रोहियो का पक्ष लेकर विरोध-पत्र भेजा। विद्रोह के बाद शीघ्र ही निर्वासित पोलैण्डवासियो की स्थिति मे काफी सुधार हो गया और इसका कारण वे पाच वीर ही थे, जो इर्कूट्स्क मे फासी पर लटक गये थे। मेरे भाई और मैने इस विद्रोह से एक बडा अनुभव प्राप्त किया। हम लोग अब समझे कि फौज मे होने का क्या मतलब होता है।

मै तो उस समय दूर था, लेकिन मेरे भाई तो इर्कूट्स्क मे ही थे और उनकी टुकडी विद्रोहियो के विरुद्ध भेजी गई थी। सौभाग्यवश फौज का कमाण्डर मेरे भाई को भली भाति जानता था और कुछ बहाना लेकर उसने एक दूसरे अफसर को उस टुकडी का अफसर बनाकर भेज दिया। यदि अलैक्जैण्डर से कहा जाता तो निश्चय ही वह मना कर देते। यदि मै इर्कूट्स्क मे होता तो मै भी यही करता।

हम लोगो न फौज छोडकर रूस लौटने का निश्चय किया। यह आसान नही था, क्योकि अलैक्जैण्डर ने साइबेरिया मे शादी कर ली थी। लेकिन अन्त मे सब प्रबन्ध हो गया और १८६७ मे हम लोगो ने सेण्ट पीटर्सबर्ग के लिए प्रस्थान कर दिया।

खण्ड ४

मेरे प्रमुख अन्वेषण

: १ :

वैज्ञानिक खोज

१८६७ मे शरद के प्रारम्भ तक मेरे भाई और मै सेण्ट पीटर्सवर्ग मे आकर रहने लगे। मै विश्वविद्यालय मे भर्ती हो गया और अपने से कही कम उम्रवाले नवयुवको के साथ अध्ययन करने लगा। पाच वर्ष से जो लालसा मेरे मन मे थी, वह अब पूरी हो गई। मै गणित विभाग का विद्यार्थी बना और अलैक्जण्डर न्यायशास्त्र के अध्ययन के लिए फोजी विद्यालय मे भर्ती हुए। मैने तो सदैव के लिए फौजी नौकरी छोड दी थी। इस बात से पिताजी अत्यन्त असन्तुप्ट तथा दुखी थे। उन्हे सादी पोशाक से ही घृणा थी। अब हम दोनो को अपने पैरो पर खडा होना था।

अगले पाच वर्षो मे मेरा सम्पूर्ण समय अध्ययन और वैज्ञानिक अनुसन्धान मे व्यतीत हुआ। गणित के विद्यार्थी को साधारणत अपेक्षाकृत अधिक श्रम करना पडता है, लेकिन अपने पूर्व-अध्ययन और अध्यवसाय के कारण मै भौगोलिक अनुसन्धान के लिए भी कुछ समय निकाल लेता था।

मेरे पिछले अन्वेषण की रिपोर्ट छप गई थी। लेकिन इस बीच मेरे सामने एक नई समस्या थी। साइबेरिया मे अपनी यात्राओ से मै यह दृढ विश्वास लेकर लौटा था कि उत्तरी एशिया के नकशो मे जो पहाड दिखाये जाते है, वे बिल्कुल काल्पनिक है और उनसे देश की बनावट के विषय मे कोई धारणा नही बनती। एशिया की भूमि की एक प्रमुख विशेपता वहा

के बडे-बडे मैदान है। लेकिन उस समय के नकशे बनानेवालो ने उनकी कल्पना भी नही की थी। उनके बजाय नकशो मे सैकडो पहाड बना दिये थे! आर्कटिक सागर और प्रशान्त महासागर मे मिलनेवाली नदिया प्रारम्भ मे चौरस मैदान मे साथ-साथ बहती है और उनका उद्गम एक ही स्थान है। लेकिन यूरोप के भूगोलशास्त्रियो की कल्पना थी कि जहा नदिया अलग-अलग बहे, उनके बीच मे ऊचे-ऊचे पहाडो का होना अवश्य-म्भावी है। इस प्रकार के अनेक काल्पनिक पहाड उत्तरी एशिया के नकशे मे जगह-जगह बना दिये गए है!

अनेक वर्षो से मेरा ध्यान एशिया की पर्वत-शृखला की समस्या पर केंद्रित रहा था। मैने पुराने यात्रियो के वायु-भार-सम्बन्धी सब आकडे एकत्र किये और उनके अनुसार ऊचाइयो का हिसाब लगाया। फिर उसके बाद एक बडे नकशे पर उन ऊचाइयो को अकित किया। अब मैने हिसाब लगाना प्रारम्भ किया कि पहाडो के निर्माण की कौन-सी दिशा इन सब वास्तविकताओ से मेल खायगी। इस प्रारम्भिक कार्य मे मुझे दो वर्ष लग गये। फिर महीनो इस चिन्तन मे लगे कि इन विभिन्न फैले हुए आकडो मे कोई समन्वय कैसे स्थापित हो। यकायक एक दिन सारी चीज साफ हो गई, जैसे एक साथ कही से प्रकाश आ गया हो। एशिया के पहाडो के निर्माण की दिशा उत्तर-दक्षिण अथवा पूर्व-पश्चिम नही है, वरन उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर है, केवल कुछ छोटी पहाडिया ही उत्तर-पश्चिम की ओर जाती है और एशिया मे आल्प्स की भाति पहाडो के समूह नही है, बीच-बीच मे चौरस मैदान है।

निरन्तर अनुसन्धान के बाद जब यकायक किसी सिद्धान्त का उद्भव होता है तो अनुसन्धानकर्त्ता को अनुपम हर्ष होता है। अबतक जो अस्त-व्यस्त, परस्पर-विरोधी तथा सन्देहात्मक दीखता था, अब उसकी सम्यक स्थिति समझ मे आ जाती है। तथ्यो के ववण्डर मे से और अनेक प्रकार की कल्पनाओ के कुहरे मे से एक सुन्दर भव्य चित्र सामने उपस्थित होता है, जैसे बादलो के हटने के बाद सूर्य की किरणो से आलोकित सुन्दर आल्प्स पर्वत-श्रेणी और जब इस सिद्धान्त को विभिन्न तथ्यो पर, जो

अबतक परस्पर-विरोधी दीखते थे, लागू किया जाता है, तो प्रत्येक तथ्य की विशेष स्थिति स्पष्ट हो जाती है और उससे चित्र की मनोहरता और भी बढ जाती है, सिद्धान्त और भी व्यापक होता जाता है, उसके आधार दृढतर होते जाते है और आगे चलकर उससे और भी सिद्धान्त निकलते है।

जिस किसीने अपने जीवन मे वैज्ञानिक अनुसन्धान के आनन्द का अनुभव एक बार भी किया है, वह उसे भूल नही सकता और उसकी लालसा उसे फिर प्राप्त करने की रहेगी। पर अवश्य ही उसे दुःख होगा कि दुर्भाग्यवश इस प्रकार की खुशी हममे से कितने कम मनुष्यो के भाग्य मे बदी है। यदि साधारण जनता को अवकाश मिलता और उन्हे वैज्ञानिक बाते समझा दी जाती, तो वे भी कम या ज्यादा इस आनन्द का अनुभव कर लेते। पर दुर्भाग्यवश यह ज्ञान और अवकाश केवल मुट्ठीभर आदमियो तक ही सीमित रहता है।

इस अनुसन्धान को मै विज्ञान के लिए अपनी प्रमुख देन समझता हू। पहले तो मेरा विचार था कि एक विस्तृत ग्रथ लिखू, जिसमे एशिया के पहाडो और मैदानो के ऊपर नवीन अनुसन्धान के अनुसार विस्तृत वर्णन हो। पर १८७३ मे जब मुझे मालूम हुआ कि मेरे शीघ्र ही गिरफ्तार होने की सभावना है तो मैने अपने अनुसन्धानो के अनुसार केवल एक नकशा तैयार किया और छोटा-सा नोट भी लिख दिया। इन दोनो को भोगोलिक सोसाइटी ने मेरे भाई की देख-रेख मे प्रकाशित किया था। मै तो उस समय सेण्ट पीटर की जेल मे था। पीटर मेन ने, जो उस समय एशिया का नकशा तैयार कर रहे थे, मेरी योजना से लाभ उठाया। उसके बाद तो सभीने उसे स्वीकार कर लिया है। मेरी सम्मति मे एशिया का जो नकशा प्रचलित है उससे वहा की प्रमुख भौगोलिक विशेषताए, विभिन्न जलवायु, वनस्पति, जीवजन्तु आदि का ठीक आभास मिल सकता है। आजकल बहुत कम भूगोलशास्त्री बतला सकेंगे कि एशिया के नकशे मे ये परिवर्तन कैसे हुए। लेकिन मेरा विश्वास है कि विज्ञान मे नवीन अनुसन्धानो के साथ उनके आविष्कारक का नाम आवश्यक नही।

: २ :

भूगोल-सम्बन्धी खोजें

इसके साथ ही मैने रूस की भौगोलिक समिति के एक विभाग, प्रादेशिक भूगोल, के मत्री की हैसियत से अच्छा परिश्रम किया।

उस समय तुर्किस्तान और पामीर के अन्वेपण के प्रति बडी उत्सुकता जाग्रत हो गई थी। स्येवर्टसौफ अभी ही इन प्रदेशो की वर्षो की यात्रा के बाद लौटे थे। वह सुयोग्य जीवशास्त्री थे, भूगोल मे उनकी अच्छी गति थी और अत्यन्त प्रतिभावान पुरुषो मे से थे। लेकिन दुर्भाग्यवश अन्य रूसियो की भाति उन्हे अपने अनुभवो को लिपिवद्ध करने से स्वाभाविक अरुचि थी। इसलिए उनका लिखा हुआ जो साहित्य आज हमे उपलब्ध है, उसके पढने से उनके प्रति न्याय नही हो पाता। तुर्किस्तान के पर्वतो का निर्माण, वहा की वनस्पति और जीव-जन्तु, पशु-पक्षियो आदि के विषय मे अनेक महत्व-पूर्ण वाते मैने स्वय उनसे सुनी है। मैने अभी उनके एक व्याख्यान की रिपोर्ट देखी है, जिसमे उन्होने जीवो के विकास मे पारस्परिक सहयोग की आव-श्यकता पर चर्चा की थी। निश्चय ही इससे उनकी विशेष प्रतिभा और मौलिकता प्रकट होती है। यदि वह अपने अनुभवो और सिद्धान्तो को भाषा मे प्रकट कर सकते, तो उनकी गिनती हमारी पीढी के प्रमुख वैज्ञानिको मे होती।

मिकलूखो मैकले, जो अपने अन्तिम दिनो मे आस्ट्रेलिया मे बस गये थे, इसी श्रेणी के मनुष्यो मे से थे। मैने जब उनसे परिचय प्राप्त किया, वह लाल सागर के तट पर अन्वेषण करके लौटे थे। कुछ समय बाद आदिवासियो के अध्ययन के लिए वह रूसी भौगोलिक समिति की सहायता से न्यू गिनी चले गये। कहा जाता था कि वहा के रहनेवाले मनुष्य-भक्षक है, लेकिन केवल एक नाविक के साथ वह यहा के तट पर उतर पडे। आदिवासियो के गाम के नजदीक ही उन्होने एक झोपडी डाल ली और पूरे अठारह महीने वह वहा रहे। इस बीच आदिवासियो से उनके सम्बन्ध अत्यन्त मैत्रीपूर्ण रहे। आदि-वासियो से उनका व्यवहार सदैव सरल और निष्कपट रहा। वैज्ञानिक

आवश्यकताओ के लिए भी उन्होने कभी उन्हे धोखा नही दिया। कुछ समय बाद जब वह मलाया मे यात्रा कर रहे थे, उनके साथ वहा का एक आदिवासी था। उसने इसी शर्त पर नौकरी की थी कि उसका चित्र नही उतारा जायगा। आदिवासियो का यह विश्वास है कि जब उनका चित्र उतारा जाता है तो उनके शरीर मे से कुछ ले लिया जाता है!. एक दिन जब वह आदिवासी घोर निद्रा मे सो रहा था, मैकले ने लिखा है कि उनकी इच्छा हुई कि आदिवासी का चित्र ले लिया जाय। आदिवासी को कभी मालूम भी न होता कि उसका चित्र ले लिया गया। लेकिन उन्हे अपना वचन याद आ गया और उन्होने चित्र नही लिया ! इन्होने भी अपने विस्तृत और अमूल्य अनुभवो मे से बहुत ही कम को लिपिबद्ध किया।

फेदचेको ने अपनी पत्नी-सहित तुर्किस्तान मे जीवशास्त्र-सम्बन्धी अनेक अन्वेषण किये थे। परिश्रम करके उन्होने अपने अनुभवो को पुस्तकाकार मे प्रकाशित भी कर दिया। दुर्भाग्यवश स्विटजरलैण्ड मे एक पहाड़ पर चढते हुए उनकी असामयिक मृत्यु हो गई।

प्रेवालस्की के भी दर्शन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था। वह बहुत अच्छे शिकारी थे। मध्य एशिया की यात्रा उन्होने की थी। जब कभी उनसे अपने अन्वेषणो की चर्चा के लिए प्रार्थना की जाती, वह कुछ ही वर्णन करने के बाद तुरन्त वहा की शिकार की बात करने लगते ! तिब्बत के लिए प्रस्थान करने के पूर्व ही उनकी मृत्यु हो गई।

उस समय भौगोलिक समिति का कार्यक्रम काफी व्यस्त था। प्रादेशिक उपसमिति के सामने अनेक समस्याए थी और इसलिए उसके मत्री की हैसियत से मुझे काफी श्रम करना पडता। इन समस्याओ मे से अधिकाश तो शास्त्रीय थी, इसलिए उनका यहा वर्णन करना निरर्थक है, लेकिन मै यहा एक समस्या का उल्लेख करना चाहता हू। उस समय आर्कटिक सागर की ओर, वहा के समुद्री तट पर उद्योग विकसित करने, रूसी उपनिवेश बसाने और व्यापार बढाने की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा था।

१८६९-७१ मे नारवे के मछुए शिकारियो ने यकायक कारा समुद्र को नौका द्वारा पार कर लिया। जिस समुद्र के विषय मे हम अपनी पुस्तकों

मे लिखा करते थे—"यहा सदैव वरफ जमी रहती है।", नारवे के नाविको ने अपनी छोटी-छोटी नावो मे उसे पार कर लिया था।

इसके परिणामस्वरूप आर्कटिक सागर के अन्वेषण की ओर लोगो का ध्यान आकर्षित हो गया। हमारे देश की भौगोलिक समिति ने भी आर्कटिक प्रदेश के अन्वेषण के लिए एक योजना बनाना प्रारम्भ किया। विभिन्न विशेषज्ञो को अपने-अपने वैज्ञानिक विषयो पर अध्याय लिखने के लिए कहा गया। लेकिन, जैसाकि अकसर होता है, दो-एक अध्याय ही लिखे गये। फलस्वरूप अनेक विषयो पर, जिनमे कुछ तो मेरे लिए बिल्कुल नवीन थे, मुझे लिखना पडा। लेकिन स्वस्थ आदमी यदि अपनी सम्पूर्ण शक्ति को केन्द्रित कर किसी विपय पर लगा दे, तो वह आश्चर्यजनक कार्य कर सकता है। मेरी रिपोर्ट तैयार हो गई। रिपोर्ट के अन्त मे आर्कटिक प्रदेश के अन्वेषण के लिए योजना थी। उसमे यह भी लिखा था कि यह अन्वेपण-दल उस अज्ञात प्रदेश का भी अनुसन्धान करे, जो नोवाया ज़ैमल्या के समीप ही कही होना चाहिए ।

अब मुझसे कहा गया कि प्रदेश की अग्रिम परीक्षा के लिए जो दल जहाज लेकर जा रहा है उसका नेता बनकर मै जाऊ। मैंने निवेदन किया कि मैने कभी समुद्र-यात्रा नही की, लेकिन यह काम मुझे ही सौपा गया। लाचार मै तैयार हो गया। यकायक अर्थ-विभाग का आदेश आया कि सरकार के पास इस अन्वेषण के लिए पैसा—तीन-चार हजार पौण्ड—नही है! उसके वाद से आर्कटिक सागर के अन्वेपण मे रूस ने कोई भाग नही लिया।

भौगोलिक समिति ने आर्कटिक प्रदेश के वजाय मुझे फिनलैण्ड और स्वीडन के वर्फीले पहाडो का अनुसन्धान करने के लिए भेज दिया।

मै फिनलैण्ड मे लगभग एक वर्ष तक घूमा और अनेक मनोरजक तथ्य सग्रह किये। लेकिन इस वीच, यात्रा करते हुए, मैने सामाजिक विषयो पर भी चिन्तन किया और इन विचारो ने मेरे जीवन की दिशा ही वदल दी।

भौगोलिक समिति मे कार्य करते हुए रूस के भूगोल-सम्वन्धी अनेक महत्वपूर्ण तथ्यो को देखने का अवसर मुझे मिलता था। मेरे मन मे आया कि मैं रूस का एक विस्तृत भूगोल लिखू। मेरा विचार था कि प्रत्येक प्रदेश की भौगोलिक स्थिति का वर्णन करू और उसीके आघार पर वहा के लिए

आदर्श आर्थिक व्यवस्था के विषय मे भी लिखू, क्योकि प्रत्येक प्रदेश का आर्थिक सगठन वहा की भौगोलिक स्थिति के अनुसार ही होना चाहिए।

लेकिन इसके लिए लेखक को यथेष्ठ समय और स्वाधीनता की आवश्यकता थी। मैं अक्सर सोचता कि यदि मै किसी दिन भौगोलिक समिति का प्रधान मत्री हो गया तो मुझे अपने इस मनोवाछित कार्य मे यथेष्ट सहायता मिलेगी और अब १८७१ मे जब मै फिनलैण्ड मे पैदल-यात्रा कर रहा था, मुझे एक तार मिला—"प्रार्थना है, आप सोसाइटी का मत्री-पद स्वीकार करे।"

मेरी आशाए पूर्ण हो गई थी। लेकिन इस बीच मेरे मस्तिष्क मे कई अन्य आकाक्षाए और योजनाए थी! मैने गम्भीरतापूर्वक विचार किया और तार भेज दिया—"हार्दिक धन्यवाद। स्वीकार करने मे असमर्थ हू।"

: ३ :

जन-सेवा

अक्सर ऐसा होता है कि मनुष्य सामाजिक, राजनैतिक अथवा अन्य कार्यों मे केवल इसीलिए डूबा रहता है कि उसे इतना अवकाश ही नही मिल पाता कि वह चिन्तन करे और सोचे कि उसका कार्य उचित भी है या नही। वह कार्य उसकी योग्यता और आन्तरिक इच्छाओ के अनुकूल है कि नही? और उस कार्य से उसकी आत्मा को सन्तोष होता है कि नही? सतत क्रियाशील मनुष्य अक्सर ऐसी स्थिति मे पड जाते है। प्रत्येक दिन नया काम सामने उपस्थित हो जाता है। आदमी सुबह से लेकर शाम तक उसमे जुटा रहता है और थककर सो जाता है। अगले दिन पिछले दिन के अपूर्ण कार्य मे लग जाता है। इसी तरह जीवन निकलता चला जाता है और उसे चिन्तन करने का मौका ही नही मिलता कि जीवन किस दिशा में चला जा रहा है। ऐसा ही जीवन-क्रम मेरा भी था।

लेकिन फिनलैण्ड की यात्रा मे अब मुझे अवकाश मिला। वहा ऐसे प्रदेशो मे, जो भूगर्भशास्त्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण नही थे, घूमते हुए एक विचार मेरे दिमाग मे बार-बार आता था।

मै देखता कि फिनलैण्ड का किसान जमीन को साफ करने और फिर उसे तोडने मे कितना श्रम करता है। मै सोचता—"मै रूस के इस भाग का प्रादेशिक भूगोल लिखूगा और किसान को जमीन जोतने के आधुनिक तरीके बतलाऊगा। उनसे कहूगा कि अमुक कार्य के लिए अमरीकी ट्रेक्टर अधिक उपयुक्त होगा। नई खाद की भी उपयोगिता बतलाऊगा। लेकिन इससे फायदा ? ये विचारे किसान मेहनत करते-करते मर जाते है और फिर भी पेट-भर भोजन मुयस्सर नही होता। उस कडी जमीन मे यदि वह कुछ सुधार कर भी पाते है तो टैक्स प्रति वर्प और बढ जाता है। जो कुछ भी वह पैदा करता है—करो और टैक्सो मे चला जाता है, उसके पास खाने के लिए भी नही बचता, शरीर ढकने के लिए वस्त्र भी उसके पास नही। मै अमरीकी मशीनो की चर्चा उससे किस मुह से करू ? इस किसान को मेरी वैज्ञानिक सलाह की जरूरत नही, उसे जरूरत है स्वय मेरी। उसकी इच्छा है कि मै उसके साथ रहू, जिससे उसे उसकी जमीन का स्वामी बनने मे कुछ सहायता कर सकू। जब उसको पेट-भर भोजन मिलेगा तो वह मेरी पुस्तक पढकर लाभ भी उठा सकेगा। अभी तो वह सब व्यर्थ का ढकोसला है।

और फिर मेरा ध्यान निकोलाई के किसानो की ओर गया। अब वे स्वतत्र हो गये है। उससे वे प्रसन्न भी है। लेकिन उनके पास चरागाह नही है। किसी-न-किसी तरह जागीरदारो ने सब चरागाह अपने कब्जे मे कर लिये है। मुझे भली-भाति स्मरण है कि जब मै बालक था, अच्छे कुटुम्बो मे पाच-सात घोडे होते थे। साधारण कुटुम्ब भी तीन घोडे रखते थे और अब अधिकाश के पास केवल एक घोडा ही है। कुछके पास एक भी नही। एक मरियल घोडे से भला क्या हो सकता है ? न चरागाह है, न घोडे है और खाद भी नही। मै उनसे हरी खाद की क्या चर्चा करू ? वे बिलकुल निर्धन हो चुके है और नये टैक्सो से उनकी दशा और भी दयनीय हो जायगी। जब मैने उन्हे सूचना दी थी कि मेरे पिताजी ने अपने जगल के छोटे-

से मैदान की घास काटने की उन्हे आज्ञा दे दी है, तो वे कितने खुश हुए थे। निकोलाई इलाके के किसान मेहनत करने मे वेजोड है—दूर-दूर तक वे इसके लिए प्रसिद्ध है। लेकिन अब तो नए कानून के आधार पर मेरी सौतेली माता ने उनसे उपजाऊ जमीने छीन ली है। वहा अब काटे हो रहे है। वहा हमारे इलाके के किसानो का भी प्रवेश निषिद्ध है। सारे रूस की यही स्थिति है। उस समय भी, जब जमीने किसानो से छीनी गई थी, यह स्पष्ट था कि मध्य रूस की फसले नष्ट होते ही देश मे भयकर अकाल हो जायगा। सरकारी अधिकारियो ने भी इसकी चेतावनी दी थी और हुआ भी वही। १८७६, १८८४, १८९१, १८९५ और १८९८ मे रूस अकालो से त्रस्त रहा।

विज्ञान महान है। मैने उसके आनन्द का उपभोग किया था और शायद अपने साथियो से अधिक मै उसका सम्मान करता था। इस समय भी, जब मै फिनलैण्ड की झीलो और पहाडियो को मत्रमुग्ध देख रहा था, सुन्दर और नए सिद्धान्त मेरे मस्तिष्क मे चक्कर काट रहे थे। सुदूर प्राचीन काल मे, मनुष्य के प्रारम्भिक युग मे, उत्तरी इलाके मे वर्फ जमने लगी थी और उत्तरी यूरोप से मध्य यूरोप तक वर्फ से ढक गया होगा। जीवन वहा असम्भव हो गया होगा और इसलिए मनुष्य भागकर दक्षिण की ओर उतर आया। शक्तिहीन मनुष्य को अपना जीवन बनाये रखने के लिए कितना कष्ट हुआ होगा। युग निकल गये और फिर वर्फ पिघलना शुरू हुआ। तब झीलो के युग का प्रारम्भ हुआ। दरारो मे सैकडो झीलो का निर्माण हुआ और कुछ पेड-पौधे झीलो के आस-पास उग आये। फिर अनेक युग गुजरे और दक्षिण से पेड-पौधो का आक्रमण हुआ। अब तो हमारे सामने समस्या जमीन के कटाव को रोकने की है। मध्य एशिया को वह नष्ट कर चुका है और दक्षिणी पूर्वी यूरोप उससे आक्रान्त है।

उस समय यदि कोई मध्य यूरोप के ऊपर वर्फ के खतरे की चर्चा करता तो उसे पागल कहा जाता। लेकिन मेरे मस्तिष्क मे एक महान कल्पना थी। मैं उसे भली-भाति चित्रित करना चाहता था। उससे मैं आधुनिक युग मे विभिन्न प्रदेशो मे जंगलो और पशु-पक्षियो के मूल कारणो पर प्रकाश

डालता और उससे प्राकृतिक भूगोल और खनिज-शास्त्र मे अनेक नवीन खोजो के लिए मार्ग साफ करता।

लेकिन जब मेरे चारो तरफ दु ख-क्लेश का साम्राज्य है, तो विज्ञान के इस सर्वोच्च आनन्द के उपभोग का क्या मै अधिकारी हू ? रोटी के केवल एक टुकडे के लिए इन मनुष्यो को कितना सघर्ष करना पडता है। सर्वोच्च विज्ञान के उस जगत मे विचरण करने के लिए यह आवश्यक था कि मैं उन लोगो का शोषण करू, जो अनाज पैदा करते है, लेकिन स्वय अपने बच्चो के लिए भोजन नही दे पाते। विज्ञान का विकास करने के लिए मैं किसी-न-किसीके मुह का कौर छीनता हू, क्योकि सम्पूर्ण मनुष्य-जाति का उत्पादन अभी बहुत कम है।

निस्सन्देह ज्ञान एक महान शक्ति है। मनुष्य के लिए वह आवश्यक है। लेकिन आज भी हमारे पास यथेष्ट ज्ञान है। यही ज्ञान यदि सम्पूर्ण समाज मे वितरित कर दिया जाय तो क्या कहना! फिर विज्ञान एक साथ अभूतपूर्व उन्नति करेगा और तब मनुष्य-समाज उत्पादन और नई खोजो मे जो उन्नति करेगा उसकी अभी हम कल्पना भी नही कर सकते।

साधारण जनता ज्ञान अर्जित करने की इच्छुक है और वह सीख भी सकती है। यह देखिए झील के उस पार किसान विचारमग्न खडा है। वह इन सुन्दर झीलो और उसके बीच के टापुओ के प्राकृतिक सौन्दर्य पर मत्रमुग्ध है। ये किसान चाहे कितने भी शोषित और पददलित हो, लेकिन उनमे प्राकृतिक सौन्दर्य की भावना अवश्य है। अथवा वह देखिये उस झील के किनारे एक दूसरा किसान कुछ गा रहा है—आपके सर्वोच्च सगीतज्ञ उसके गले, लय और भाव से ईर्ष्या करेगे। दोनो किसान चिन्तन करते है, विचार करते है और वे अपने ज्ञान को विस्तृत करने के लिए उत्सुक है। आप उन्हे सिखाइये, उन्हे अवकाश और अवसर दीजिये।

इन्ही लोगो के लिए मुझे कार्य करना है। मेरा जीवन इनके लिए ही अर्पित होगा। मनुष्य-समाज को उन्नत करने की ऊची बातो का दम भरने

वाले साधारण समाज से दूर रहते है। उनकी ये ऊची बाते अपने अन्तर्द्वन्द्व से छुटकारा पाने का मात्र उपाय है।

और इसलिए मैने भूगोल परिषद को नकारात्मक उत्तर भेज दिया।

: ४ :

ज़ार का नया रूप

१८६२ मे मैने सेण्ट पीटर्सबर्ग छोडा था। आज वह बिलकुल परिवर्तित था। कवि मैकोफ ने मुझसे कहा—"अच्छा, चर्नीव्स्की के युग का पीटर्सबर्ग तुम्हारे मस्तिष्क मे है!" मै उस सेण्ट पीटर्सबर्ग से भली भाति परिचित था। और अब? सगीत और भोग-विलास का साम्राज्य था, समाज का उच्च वर्ग दरबार की नकल करने मे व्यस्त था।

दरबार मे और उसके आस-पास उदार विचारो का नितान्त अभाव था। १८६२ के युग के प्रमुख व्यक्ति, म्यूरेवियोफ और मिल्यूटिन जैसे नरम विचारो के आदमी भी सन्देह की दृष्टि से देखे जाते थे। उस काल का केवल एक व्यक्ति युद्ध-मत्री मिलटिन ही अपने पद पर था, क्योकि फौज मे जो सुधार उसने प्रारम्भ किये थे, उनके पूरे होने मे अभी और कुछ समय चाहिए था। सुधार-युग के अन्य सभी व्यक्ति हटा दिये गए थे।

एक बार मै परराष्ट्र विभाग के एक उच्च कर्मचारी से बातचीत कर रहा था। वह एक अन्य उच्च पदाधिकारी की तीव्र आलोचना कर रहा था। मैने उसके पक्ष मे कहा—"कम-से-कम यह तो आप मानेगे ही कि उसने निकोलस प्रथम के अधीन कोई पद स्वीकार नही किया।" उक्त अधिकारी ने तुरन्त उत्तर दिया, "और अब वह शूवालोफ और ट्रैपोव के शासन मे कार्य कर रहा है!" स्थिति इतनी स्पष्ट थी कि मुझे चुप हो जाना पडा।

शूवालोफ राजकीय पुलिस का सर्वोच्च अधिकारी था तथा ट्रैपोव सेण्ट पीटर्सबर्ग की पुलिस का अफ़सर। वास्तव मे रूस के ये ही शासक थे। अलैक्जैण्डर द्वितीय तो उनके हाथ की कठपुतली था और ये दोनो अधिकारी आतक द्वारा शासन करते थे। ट्रैपोव ने सम्राट को वुरी तरह भयभीत कर दिया था। अगर ट्रैपोव को सम्राट के पास पहुचने मे थोडी भी देर हो जाय—वह प्रतिदिन की रिपोर्ट पेश करने महल जाता था—तो सम्राट पूछता—"शहर मे अमन तो है?"

राजकुमारी को छोडने के वाद सम्राट ने नैपोलियन तृतीय के भूतपूर्व ए० डी० सी० जनरल फ्लूरी से गहरी मित्रता जोड ली थी। फ्रास की २ दिसम्बर, १८५२ की दरबारी उथल-पुथल के पीछे यही धूर्त तो था। सम्राट सदैव उसके साथ रहता था। इस मित्रता के विषय मे इससे अधिक कहने की आवश्यकता नही।

शूवालोव ने जार की वर्तमान मनोवृत्ति का पूरा-पूरा फायदा उठाया। एक के वाद एक उसने कई प्रतिक्रियावादी कानून वनाए। जव कभी जार उनपर हस्ताक्षर करने मे हिचकिचाता, शूवालोव उसके सामने भावी क्रान्ति तथा लुई १६ वे के दुर्भाग्य का भयानक चित्र उपस्थित कर देता ओर जार वश की रक्षा की दुहाई देकर उससे हस्ताक्षर करा ही लेता! जार अलैक्जैण्डर कभी-कभी इस स्थिति से दुखी होता। मनहूसियत और उदासी उसपर छा जाती, अत्यन्त विषादपूर्ण स्वर मे वह कहता कि मेरा शासन प्रारम्भ मे कैसा उदार था और अव वह किस प्रकार दमन की ओर वढ रहा है! तव शूवालोव जार के मनबहलाव के लिए शिकार की योजना वना डालता। अनेक दरवारी लोग और सुन्दर लडकिया जार के साथ शिकार के लिए जगल को जाती। जार अच्छा शिकारी था, वहुत नजदीक से शिकार कर सकता था। दो-एक रीछ मारे जाते और वहा शिकार के इस वातावरण मे शूवालोव जार से घोर दमनकारी कानूनो पर हस्ताक्षर करा लेता!

यह सच है कि अलैक्ज़ैण्डर द्वितीय जनसाधारण की मनोवृत्ति का आदमी नही था। लेकिन उसमे दो परस्पर विरोधी व्यक्तित्व निरन्तर

रहे—दोनो ही व्यक्तित्व पूर्णत विकसित थे और उनमे सदैव सघर्ष चलता रहा और यह आन्तरिक सघर्ष, जैसे-जैसे उसकी उम्र बढती गई, उग्रतर होता गया। वह अपने व्यवहार मे अत्यन्त मृदु हो सकता था और दूसरे ही क्षण अत्यन्त क्रूरता का कार्य भी कर सकता था। वास्तविक खतरे का सामना करते समय वह अपना धैर्य और सन्तुलन रख सकता था। साथ ही वह सदैव अपने काल्पनिक खतरो से भयभीत रहता। निस्सन्देह वह कायर नही था, जगली रीछ का मुकावला वह सामने से कर सकता था। एक वार जव एक घायल रीछ ने उसके साथी पर आक्रमण किया, तो उसने रीछ के विलकुल नजदीक जाकर अपनी दुनाली मे उसे मारा था! फिर भी वह अपने जीवन-भर अपनी कल्पना के भयो से आक्रान्त रहा। अपने मित्रो के साथ वह अत्यन्त दयालुता से व्यवहार करता, लेकिन उसके साथ ही उसमे अत्यन्त क्रूर निर्ममता भी थी, जिसका प्रदर्शन उसने पोलैण्ड के विद्रोहियो, और वाद को रूसी युवको के दमन मे किया। इस प्रकार उसमे दो व्यक्तित्व साथ-साथ थे। वह घोर-से-घोर प्रतिक्रियावादी कानूनो पर हस्ताक्षर कर देता और उसके वाद तुरन्त ही वह उसी कारण विपाद से भर जाता! अपने जीवन के अन्तिम दिनो मे तो यह आन्तरिक सघर्ष और भी तीव्र और दुःखपूर्ण हो गया था।

१८७२ मे शूवालोव इग्लैण्ड का राजदूत वना दिया गया, लेकिन उसके मित्र पोटापोफ ने १८७७ तक वही प्रतिक्रियावादी नीति जारी रखी। इस वीच राजकीय कोप तथा राज्य की जागीरो को वुरी तरह वरवाद किया गया और लूटा गया! कुछ समय उपरान्त जव पोटापोफ पागल हो गया तथा ट्रैपोव को निकाल दिया गया, तव इस वेईमानी तथा लूट के सैकडो उदाहरण उनके विरोधियो द्वारा राजकीय ससद के सामने पेश किये गए और जनता के सामने आये। एक उदाहरण पर्याप्त होगा। पोटापोफ के एक मित्र ने लिथुआनिया के किसानो को वुरी तरह लूटा और जव उन किसानो ने ज़ार अपील करने का प्रयत्न किया तो गृह मत्रालय की सहायता से उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया, कोड़े लगवाये गए और फौज द्वारा गोली से उडवा दिया गया! वैसे तो इतिहास मे इस प्रकार की घटनाओ की भरमार रही

है, लेकिन उपरोक्त शर्मनाक लूट की मिसाल पाना मुश्किल है। जब वीरा ने ट्रैपोव पर गोली चलाकर उसे घायल कर दिया, उसने एक राजनैतिक कैदी को जेल मे कोडे लगवाये थे, तब पोटापोफ और उसके मित्रो की लूट जनता के सामने आई और उसे बर्खास्त कर दिया गया। ट्रैपोव ने सदैव जार को यही समझा रखा था कि वह निर्धन है! लेकिन उसने जब वसीयत की, तब जनता को मालूम पडा कि उसने एक अच्छी धनराशि अपने वारिसो के लिए छोडी है। कुछ दरबारियो ने अलैक्जैण्डर द्वितीय को इसकी सूचना दे दी और तब शूवालोफ, पोटापोव तथा ट्रैपोव के गुट के कारनामे राजकीय ससद के सामने पेश हुए।

इसी प्रकार की लूट अन्य सब मत्रालयो मे भी जारी थी, विशेषत रेलवे तथा औद्योगिक विभाग मे तो वह अपनी चरम सीमा पर थी। स्वयं अलैक्जैण्डर द्वितीय ने अपने एक पुत्र से कहा था, "नौ सेना अमुक व्यक्ति की जेब मे है।" यदि कोई व्यक्ति नये औद्योगिक कारखानो के खोलने की अनुमति चाहता, तो खुली शर्त थी कि वह विभिन्न मत्रालयो के कर्मचारियो को फायदे की एक निश्चित रकम का वायदा कर दे। मेरे एक मित्र का इरादा सेण्ट पीटर्सबर्ग मे कुछ उद्योग खोलने का था। गृह मत्रालय ने उससे स्पष्ट कह दिया कि उसे मुनाफे का २५ प्रतिशत अमुक व्यक्ति को देना होगा, १५ प्रतिशत वित्त मत्रालय के एक विशेष व्यक्ति को भेट करना पडेगा, १० प्रतिशत उसी मत्रालय के एक दूसरे आदमी को और ५ प्रतिशत चौथे व्यक्ति को और ये सौदे खुले आम होते थे। जार को यह सब मालूम था, आय-लेखा-अध्यक्ष की रिपोर्ट के ऊपर उसके नोटो से यह स्पष्ट है। लेकिन इन बेईमान व्यक्तियो को वह नौकरी मे रखे हुए था, क्योकि उसका विश्वास था कि वे क्रान्ति मे उसकी रक्षा कर रहे है। जब उस बेईमानी से जनता अत्यधिक क्षुब्ध हो उठती तभी उन्हे वह नौकरी से हटाता।

सम्पन्न युवक सरदार जार का अनुसरण करते थे। एक सरदार तो एक छोटे-से होटल मे वह भयकर रास रचते थे कि एक रात पुलिस अधिकारियो को हस्तक्षेप करना पडा और होटल के मालिक को चेतावनी देनी पडी कि यदि भविष्य मे कभी भी इन राजकुमार को होटल का कमरा

उठाया गया, तो उसे साइबेरिया की हवा खानी पड़ेगी ! होटल के मालिक ने मुझे वह सजा हुआ कमरा दिखाकर कहा था, "एक ओर तो मुझे राज-घराने के एक विशिष्ट सदस्य का कोपभाजन बनना पड़ता और दूसरी ओर जनरल ट्रेपोव मुझे साइबेरिया भेजने को धमकाता। लेकिन मैंने तो जनरल की आज्ञा मानी—आजकल तो उसीके हाथ में सम्पूर्ण सत्ता है।" एक दूसरे बड़े सरदार के कारनामे मनोविज्ञान-विषयक अध्ययन के अंतर्गत आते हैं और तीसरे को अपनी माता के जवाहरात चुराने के अपराध में तुर्किस्तान भेज दिया गया था।

सम्राज्ञी, जार द्वारा परित्यक्त होकर और शायद दरबार के ये रंग-ढंग देखकर, भक्ति की ओर झुक गई थी और महल के एक जैसूट पादरी की शिष्या हो गई थी। राज्य में ये जैसूट एक बड़ी शक्ति हो गये थे और शिक्षा को अपने कब्ज़े में करना चाहते थे।

यह बात निर्विवाद है कि रूस के ग्रामीण पादरियों का सम्पूर्ण समय उनके दैनिक कर्तव्यों, जन्म, विवाह, मृतक आदि संस्कारों, में ही चला जाता है और वे अध्यापन की ओर यथोचित समय नहीं दे पाते। उन्हें ग्रामीण स्कूलों में धार्मिक शिक्षा देने के लिए कुछ पैसा मिलता है, तो भी वे इस कार्य को किसी दूसरे को सौंप देते हैं, लेकिन फिर भी पादरियों का उच्च वर्ग जार की वर्तमान मनोवृत्ति, काल्पनिक क्रान्ति के भय, से फायदा उठाकर सम्पूर्ण शिक्षा को अपने कब्ज़े में लेने का प्रयत्न कर रहा था। उनका आदर्श था, "बिना पादरियों के स्कूल निरर्थक हैं।" सारे रूस को शिक्षा की आव-श्यकता थी। फिर भी चालीस लाख डालर की जो अत्यल्प रकम बजट में प्राथमिक शिक्षा के लिए रखी जाती थी, वह भी शिक्षा-विभाग खर्च नहीं करता था और लगभग इतनी ही रकम राज्य इन पादरियों को स्कूल खोलने के लिए सहायता स्वरूप दे देता था। इनके अधिकांश स्कूल केवल कागज पर ही रहे।

के लगभग रूस मे और विशेषत सेण्ट पीटर्सबर्ग मे अनेक उत्साही व्यक्ति थे, जो अपने आदर्शो के लिए सबकुछ त्यागने को तैयार थे। मै मन मे सोचता—"उन आदर्शवादी व्यक्तियो को आज क्या हो गया है?" मै उनमे से कुछसे मिला। उनका एक ही उत्तर था—"प्यारे जवान भाई, कुछ विवेक से काम लो।" "तिनके से लोहा मजबूत होता है।" "पत्थर की दीवार को सिर से तोडना असम्भव है।"—ऐसी कहावतो की रूसी भाषा मे कमी नही है और ये ही उनके जीवन-दर्शन का सार थी। "अपने जीवन मे हमने यथासम्भव कार्य कर दिया—अब हमसे आशा मत रखो", "धैर्य रखो—ऐसी स्थिति बहुत दिन तक नही चलेगी।" वे लोग हमे ऐसी ही सलाहे देते। हम युवको मे कुछ करने की, सघर्ष मे कूदने की—और यदि आवश्यकता हो तो जीवन उत्सर्ग करने की—उत्कट अभिलाषा थी। उनसे हम लोग केवल आशीर्वाद या कुछ बौद्धिक सहायता की माग करते थे। लेकिन उतना भी उनके लिए सम्भव नही था।

राजनैतिक वातावरण कुछ ऐसा था कि हमारे सर्वोच्च नेता मौन रखने मे खैरियत समझते थे। अप्रैल, १८६६ के बाद यानी कारकोजोफ द्वारा जार पर गोली चलाने के बाद, राजकीय पुलिस सर्वशक्तिमान हो गई थी। चाहे किसीने कुछ भी किया हो या न किया हो—केवल उग्र विचारो के 'सन्देह' पर वह गिरफ्तार हो सकता था, किसी राजनैतिक कार्य-कर्त्ता के प्रति सहानुभूति रखने पर अथवा एक साधारण पत्र पर जो आधी रात तलाशी मे मिला या 'खतरनाक' विचारो पर ही उसे कैद मे डाल दिया जाता था, और राजनैतिक कार्यो के लिए उस समय जेल के मानी थे—सेण्ट पीटर अथवा सेण्ट पाल की जेल मे वर्षो का एकान्तवास, या साइ-बेरिया को निर्वासन अथवा जेल मे अनेक यातनाए!

काराकोजोफ के सहयोगियो के आन्दोलन के विषय मे आजतक रूस मे भी पूरी-पूरी जानकारी नही। मै उस समय साइबेरिया मे था। इसलिए उस सम्बन्ध मे मेरा ज्ञान भी सुनी हुई बातो पर ही आधारित है। इस आन्दोलन की दो प्रमुख धाराए थी। एक धारा तो 'जनता के बीच चलो' का प्रारम्भ था, जो आगे चलकर महान आन्दोलन मे परिवर्तित हो गया।

दूसरी धारा प्रधानत. राजनैतिक थी। युवको के अनेक दल, जिनमे से बहुतो के सामने विश्वविद्यालयो मे प्रतिभाशाली अध्यापक, इतिहासकार अथवा वैज्ञानिक होने के मार्ग खुले थे, १८६४ के लगभग जनता के बीच जाकर बस गये और उसे शिक्षित करने का उन्होने सकल्प ले लिया, वह भी सरकार के विरोध के बावजूद! ये युवक सिर्फ साधारण कारीगरो के रूप मे औद्योगिक नगरो मे गये। वहा उन्होने सहयोगी सस्थाएं स्थापित की, स्कूल चलाये। उन्हे आशा थी कि धैर्य और लगन से इस भाति वे जनता को शिक्षित कर सकेंगे और उससे जनसाधारण का सास्कृतिक धरातल ऊचा होगा। युवको मे असीम उत्साह था, इस आन्दोलन मे जनता ने यथेष्ट धन भी लगाया। मेरा विश्वास है कि आगे चलकर जो अनेक आन्दोलन चले, उनकी तुलना मे यह आन्दोलन सबसे अधिक व्यावहारिक था।

दूसरी तरफ, काराकोजोफ, इशूटिन तथा उनके घनिष्ट मित्रो के कार्यो मे इस आन्दोलन का राजनैतिक रूप था। १८५२ से १८६६ तक जार की नीति निश्चय ही प्रतिक्रियावादी हो गई थी। उनके चारो ओर अत्यन्त दकियानूसी और प्रतिक्रियावादी व्यक्तियो का जमाव था। पुरानी गुलामी की प्रथा और सामन्ती न्याय के पुन. स्थापित होने की आशका लोगो को थी। काराकोजोफ और उनके सहयोगी इसलिए इस निर्णय पर पहुचे कि यदि इस जार का शासन कुछ समय और चला, तो जो कुछ थोडा-बहुत सुधार हुआ है, वह भी नष्ट हो जायगा और रूस को एक बार फिर निकोलस प्रथम के अत्याचारो का युग देखना पडेगा। फिर उस समय अलैक्जैण्डर द्वितीय के उत्तराधिकारी के उदार विचारो से लोगो को बड़ी-बडी आशाए थी। काराकोजोफ ने अलैक्जैण्डर द्वितीय पर, जब वह ग्रीष्मकालीन उपवन से अपनी गाडी मे बैठने के लिए आ रहे थे, गोली चला दी! निशाना चूक गया और काराकोजोफ वही गिरफ्तार हो गये।

मास्को के प्रतिक्रियावादियो के नेता काराकोजोफ ने तुरन्त देश के सब उदार और उग्र विचारवालो पर काराकोजोफ के कार्य से सम्बद्ध होने का इल्जाम लगाया! निश्चय ही यह सब सरासर झूठ था। उसने अपने

पत्र मे इस इलजाम का प्रचार किया और सम्पूर्ण मास्को को इस झूठ पर विश्वास करा दिया कि वास्तव मे काराकोजोफ के कार्य के पीछे ग्राण्ड ड्यूक कान्स्टेनटाइन का हाथ था! शूवालोव तथा ट्रैपोव ने इन इलजामो का और अलैक्जैण्डर द्वितीय के भय का पूरा-पूरा लाभ उठाया।

मिखाइल म्यूरावियोफ को, जो पोलैण्ड के विद्रोह मे 'जल्लाद' के नाम से विख्यात हो चुका था, आज्ञा दी गई कि वह इस तथाकथित षडयन्त्र की पूरी-पूरी खोज करे। उसने हजारो तलाशिया ली, सैकडो व्यक्ति गिरफ्तार किये। वह अभिमान से कहा करता था कि उसे 'वन्दियो से अपराध स्वीकार कराने के सैकडो तरीके मालूम है। वास्तव मे वह घोरतम यातनाए देने मे चूकनेवाला नही था। काराकोजोफ को अपराध स्वीकार करने के लिए अनेक भयकर तथा निकृष्ट यातनाए दी गईं, लेकिन कोई फल नही निकला।

अनेक राजकीय गुप्त पत्र शीतकालीन महल मे वन्द थे। इतिहासकार उनमे से कुछको ही प्रकाश मे लाये है। लेकिन म्यूरावियोफ के कारनामे अव भी वही वन्द पडे है। निम्नलिखित घटना से शायद उनपर कुछ प्रकाश पडता हो :

१८६६ के लगभग मैं साइवेरिया मे था। हमारे अधिकारियो मे से एक की मुलाकात इर्कूट्स्क जाते समय दो सिपाहियो से हुई। ये सिपाही एक चोर को साइवेरिया पहुचाकर लौट रहे थे। हमारे अधिकारियो ने एक रात को उन सिपाहियो से चाय पीते समय कुछ वातचीत की। इन सिपाहियो मे एक काराकोजोफ से परिचित था।

उसने सुनाया, "वह वडा चतुर था। जव वह किले मे वन्द था हम लोगो को आज्ञा दी गई थी कि उसे सोने न दिया जाय। हमारी वदली प्रति दो घण्टे वाद हो जाती थी। इसलिए हम लोग उसे एक छोटे-से स्टूल पर विठलाये रखते थे और जैसे ही वह ऊघने लगता, हम लोग उसे धक्का देकर जगा देते। और करते ही क्या? हमे ऐसी आज्ञा थी। और वह भी कैसा चतुर था! वह टाग के ऊपर टाग रखकर वैठता था और अपनी एक टाग हिलाता रहता, जिससे हम लोगो को मालूम पडे कि वह जाग रहा

है और इस बीच वह कुछ नींद ले लेता ! लेकिन शीघ्र ही हमने यह ताड लिया और जो लोग हमारे बाद आये उन्हे हमने यह बता दिया। अब हम लोग, चाहे वह टाग हिला रहा हो या नही, सदैव झकझोरते रहते।" मेरे मित्र ने पूछा, "यह कबतक चलता रहा ?" उन्होने उत्तर दिया "बहुत दिन तक यही क्रम चलता रहा, एक हफ्ते से भी ज्यादा।"

जिस सरलता से यह बात सुनाई गई, उससे इसकी सचाई मे कोई सन्देह नही रह जाता। निस्सन्देह काराकोजोफ को इस प्रकार की यातनाएं दी गई थी। काराकोजोफ को जब फासी पर लटकाया गया, उस समय हमारा एक पुराना सहपाठी अपनी टुकडी के साथ उपस्थित था। उसने सुनाया था, "जब वह किले के भीतर से गाडी मे लाया गया, तो मुझे लगा जैसे किसी रबड के गुड्डे को फासी के लिए लाया जा रहा था। मालूम पडता था कि काराकोजोफ की लाश को ला रहे हो। उसका सिर, हाथ और सम्पूर्ण शरीर ही जर्जर और निर्जीव थे, मानो उसके शरीर मे कोई हड्डी ही नही थी। बडा भयकर दृश्य था। गाडी रुकी तो दो सिपाहियो ने उसे गाडी से उतारा। मैने देखा कि उसने बडा प्रयत्न करके चलने की कोशिश की और फासी के तख्ते पर चढा। तब मालूम पडा कि वह गुड्डा नही था और न वह बेहोश ही था। सभी अधिकारी उसे देखकर स्तब्ध थे।"

उस महाप्राण दृढ मनुष्य की फासी के समय की परिस्थिति का कारण सप्ताहो तक निरन्तर नीद न आना था। मै एक बात यहा और लिख दूं। एक कैदी के विषय मे तो मुझे भली भाति मालूम है कि १८७९ मे एड्रियन साबूरोफ नामक कैदी को उसके नैतिक बल को तोडने के लिए दवाइया दी गई थी। म्यूरावियोफ और क्या यातनाएं देता था, मुझे पता नही है। लेकिन मुझे इतना भली भाति विदित है कि काराकोजोफ को तो ये यातनाए निश्चित रूप से दी गई थी।

म्यूरावियोफ़ ने जार को वचन दिया था कि वह सेण्ट पीटर्सबर्ग से उदार और उग्र विचारो को उखाड फेंकेगा। वे सब आदमी, जिनका किसी भी भाति कभी उग्र विचारों से सम्पर्क रहा था, निरन्तर भयभीत रहते थे। वे युवको से दूर रहते थे कि कही उनके साथ किसी खतरनाक स्थिति मे न

पड जाय। इस तरह 'पिता' और 'पुत्र' के बीच एक खाई, जिसका तुर्गनेव ने अपने उपन्यास मे वर्णन किया है, उत्पन्न हो गई थी। इतना ही नही, तीस वर्ष से ऊपर के व्यक्तियो और बीस वर्ष के लगभग के युवको के बीच भी कोई सम्पर्क नही था। फलस्वरूप रूसी युवको को न केवल अपने पिताओ से, जो गुलामी के समर्थक थे, सघर्ष करना था, वरन उनके अग्रजो ने भी उनका साथ छोड दिया था। कुछ राजनैतिक सुधारों की माग मे भी साथ देने से 'बडे भाई' सकोच करते थे। शायद ही कभी इतिहास मे ऐसा अवसर उपस्थित हुआ हो कि अल्पसख्यक निस्सहाय और निराश्रित युवक इतने प्रबल शत्रु से सघर्ष कर रहे हो। उनके पिताओ तथा अग्रजो ने उन्हे निराधार छोड दिया था और इन युवको का अपराध क्या था ? यही कि उन्होने अपने इन्ही पिताओ और अग्रजो की थाती को हृदयगम किया था और जीवन मे उसे चरितार्थ करने का प्रयत्न कर रहे थे। शायद ही कभी इससे अधिक दुखद और खेदपूर्ण परिस्थितियो मे कोई सघर्ष चला हो।

: ६ :

स्त्रियों में जागृति

सेण्ट पीटर्सबर्ग के जीवन का केवल एक ही पहलू मुझे अच्छा लगा, यानी युवको और युवतियो दोनो के बीच आन्दोलन की लहर। अनेक धाराओ ने इस महान आन्दोलन मे योग दिया था। शीघ्र ही इसने गुप्त क्रान्ति का रूप धारण कर लिया और सम्पूर्ण रूस का ध्यान अगले पद्रह वर्षो तक उस तरफ लगा रहा। उसके विषय मे तो मैं अगले अध्याय मे लिखूगा। यहा तो मैं खुले आन्दोलन के विषय मे लिखूंगा, अर्थात् महिला-जगत मे जागृति। उस समय सेण्ट पीटर्सबर्ग इसका केन्द्र था।

मेरे भाई की पत्नी स्त्रियो की शिक्षण सस्था मे पढ रही थी। वहा से लौटकर प्रति दिन शाम को वह वहा के उत्साहपूर्ण वातावरण के विषय मे कुछ-न-कुछ सुनाती थी। स्त्रियो के लिए मेडीकल कालेज और विश्व-

विद्यालय खोलने की योजनाए वहा बनती थी। शिक्षा की विभिन्न पद्धतियो, तथा अध्ययनक्रमो के विषय मे चर्चाए होती। अनेक निर्धन लडकिया शिक्षा प्राप्त करने के लिए सेण्ट पीटर्सबर्ग आ गई थी, इस आशा मे कि उन्हे भी कभी उच्च शिक्षा का अवसर मिलेगा। वे कोई भी कार्य करने को तैयार थी। इन लडकियो की सहायता करने के लिए अनुवादको, प्रकाशको, मुद्रको, जिल्द बाधनेवालो की अनेक समितिया सगठित की गई थी। स्त्रियो के इन केन्द्रो मे उत्साह की लहर दौड रही थी।

चूकि सरकार ने स्पष्ट कर दिया था कि तत्कालीन विश्वविद्यालयो मे लड़कियो को स्थान नही दिया जा सकता, वे स्वय अपने विश्वविद्यालय चलाने के लिए प्रयत्नशील थी। शिक्षा मत्रालय ने उनसे कहा था कि लडकिया हाई स्कूल की परीक्षा पास करके विश्वविद्यालय के लेक्चर नही समझ सकती। उन्होने उत्तर दिया—"बहुत अच्छा, आप हमे उच्चतर माध्यमिक शिक्षण सस्था खोलने दीजिये। विश्वविद्यालय की तैयारी के लिए राज्य से हम कोई अनुदान की माग नही करती, हमे केवल अनुमति दीजिये।" और मत्रालय ने उन्हे यह अनुमति नही दी।

तब उन्होने सेण्ट पीटर्सबर्ग के विभिन्न भागो मे और घरो मे प्राइवेट सस्थाए खोल दी। विश्वविद्यालयो के अनेक अध्यापको ने स्वय ही इस आन्दोलन मे अपना योग दिया। यद्यपि वे स्वय निर्धन थे, लेकिन उन्होने इस कार्य के लिए किसी भी प्रकार का वेतन लेना बिल्कुल अस्वीकार कर दिया। ग्रीष्म ऋतु मे जीवविज्ञान के प्राध्यापको की देखरेख मे सेण्ट पीटर्सबर्ग के निकटस्थ स्थलो की सामूहिक यात्राए की जाती। प्रसूति शिक्षण मे उन्होने अध्यापको से प्रत्येक विषय को और अधिक गहराई और विस्तार से पढाने की प्रार्थना की। वे ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रत्येक अवसर और सम्भावना का लाभ लेने के लिए तत्पर थी।

डा० ग्रूबर की एनेटोमीकल लेबोरेटरी मे उन्हे किसी तरह प्रवेश मिल गया और वहा अपने सुन्दर कार्य से उन्होने इस महान वैज्ञानिक को अपने पक्ष मे कर लिया। यदि उन्हे मालूम पडता कि कोई प्राध्यापक उन्हे रविवार अथवा सप्ताह के दिनो मे रात्रि को लेबोरेटरी मे काम करने के लिए अनुमति दे सकता है, तो वे इस अवसर का पूरा लाभ उठाती।

अन्त मे शिक्षा मत्रालय के आदेशो के विरुद्ध उन्होने उच्चतर माध्यमिक शिक्षण सस्था खोल दी । भविष्य की माताओ को अध्यापन की पद्धतियां सीखने के लिए कबतक रोका जा सकता था? लेकिन चूकि वनस्पति-शास्त्र अथवा गणित का अध्ययन केवल किताबी नही हो सकता था, इस-लिए ये और अन्य ऐसे ही विषय, शीघ्र ही शिक्षण सस्था के कोर्स मे शामिल कर दिये गए। फिर विश्वविद्यालय मे प्रवेश करने के लिए यह पूरा शिक्षण-क्रम हो गया।

इस प्रकार धीरे-धीरे लडकियो ने अपने अधिकार विस्तृत कर लिये । यदि उन्हे मालूम पडता कि किसी जर्मन विश्वविद्यालय मे अमुक प्राध्यापक लडकियो को लेने को तैयार है, वे वही पहुच जाती और वहा दाखिल हो जाती। इस प्रकार अनेक रूसी युवतिया हीडलबर्ग मे कानून और इतिहास का, और बर्लिन मे गणित का अध्ययन कर रही थी। जूरिक विश्वविद्यालय मे तो सैकडो लडकिया शिक्षा प्राप्त कर रही थी । उससे भी बढकर बात यह थी कि वहा के प्राध्यापक उनकी प्रशसा करते नही थकते थे । जब १८७२ मे मै जूरिक पहुचा तो मैने वहा के कुछ विद्यार्थियो से परिचय प्राप्त किया। मुझे आश्चर्य हुआ कि छोटी-छोटी लडकिया भौतिक विज्ञान के जटिल प्रश्नो को उच्च गणित की सहायता से ऐसे हल कर रही थी मानो उन्होने वर्षो गणित पढा हो। एक रूसी लडकी सोफी कोवालेव्स्की, जिसने वीयरस्ट्रास के अधीन बर्लिन मे गणित की शिक्षा प्राप्त की थी ,आगे चलकर एक सुप्रसिद्ध गणितज्ञ हो गई। स्टोकहोम विश्वविद्यालय मे उसे प्राध्यापक नियुक्त किया गया। मै समझता हू कि इससे पहले कभी किसी लडकी को लडको के विश्वविद्यालय मे प्राध्यापक के पद पर नियुक्त नही किया गया था। और वह अभी इतनी छोटी थी कि उसके साथी उसके छोटे नाम सोन्या से ही पुकारते थे !

अलैक्जैण्डर द्वितीय शिक्षित स्त्रियो को अत्यन्त घृणा की दृष्टि से देखते थे। यदि उन्हे कभी कोई लडकी चश्मा लगाए दीख जाती, तो भय के मारे काप जाते! उनका विश्वास था कि अवश्य ही वह निहिलिस्ट होगी और उन्हे गोली मारने के अवसर की तलाश मे है। राजकीय पुलिस

की भी दृष्टि मे प्रत्येक शिक्षित युवती क्रान्तिकारी थी। लेकिन इन सब बाधाओ और अडचनो के बावजूद युवतियो ने अनेक शिक्षण-सस्थाए खोल ली। जब बहुत लडकिया विदेशो से डाक्टरी की परीक्षा पास करके लौटी तो उन्होने १८७२ मे सरकार को एक मेडिकल कालेज खोलने की अनुमति देने के लिए मजबूर कर दिया। यह सब अपने साधनो से किया गया। जब सरकार ने रूसी लडकियो को जूरिक से वापस बुलाया, जिससे वहा उनका निर्वासित क्रान्तिकारियो से सम्पर्क न हो सके, तो उन्होने रूसी सरकार को चार विश्वविद्यालय खोलने के लिए मजबूर कर दिया। शीघ्र ही इनमे लगभग एक हजार छात्राए हो गई।

सचमुच यह एक महान आन्दोलन था और इसे आश्चर्यजनक सफलता मिली। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि अनेक स्त्रियो ने विभिन्न परिस्थितियो मे असीम उत्साह दिखलाया और इसीलिए उन्हे सफलता मिली। क्रीमियन युद्ध मे वे पहले ही 'सिस्टर्स' के रूप मे कार्य कर चुकी थी, वे अनेक स्कूलो का सगठन कर चुकी थी, और ग्रामो मे अध्यापिकाओ के रूप मे उन्होने अत्यन्त योग्यतापूर्वक कार्य किया था। उसके पश्चात १८७८ के तुर्की-युद्ध मे डाक्टरो और नर्सो की हैसियत से उन्होने जो महान् सेवा की थी, उसकी फौजी अफसरो तथा स्वय अलैक्जैण्डर द्वितीय ने भी प्रशसा की थी। मै ऐसी दो महिलाओ से परिचित हू, जिनके पीछे आज पुलिस है। इन दोनो ने युद्ध के दौरान नर्सो का काम किया था। इनमे से एक महिला, जिसे आज पुलिस अत्यन्त खतरनाक मानती है, (उसने मेरे जेल से भागने मे प्रमुख भाग लिया था) घायल सिपाहियो के एक बडे अस्पताल की मुख्य नर्स नियुक्त की गई थी। दरअसल, स्त्रिया किसी भी जनोपयोगी पद पर कार्य करने के लिए तत्पर थी, चाहे वह समाज की दृष्टि मे कितना ही पतित क्यो न हो और उसमे कितने ही कष्ट क्यो न उठाने पडे। निस्सन्देह उन्होने अपने अधिकारो को अपने खून से अर्जित किया था।

इस आन्दोलन का एक पहलू और भी था। इसमे वृद्धाओ और युवतियो के बीच कोई खाई नही थी। जिन स्त्रियो ने इस आन्दोलन को प्रारम्भ किया था, उन्होने नई पीढी से सम्पर्क कायम रखा था। यद्यपि

अब युवतियो के विचार वयोवृद्ध स्त्रियो से कही अधिक उग्र थे, लेकिन फिर भी बूढी महिलाओ ने उन्हे अपने आशीर्वाद से वचित नही किया।

उन्होने अपने उद्देश्य ऊचे रखे--राजनैतिक आन्दोलनो से वे दूर रही, लेकिन एक बात का उन्हे सदैव स्मरण रहा कि उनके आन्दोलन की वास्तविक शक्ति जन-साधारण की लडकिया ही है। वे अत्यन्त शुद्ध आचारो की थी, लेकिन फिर भी उन्होने उन युवतियो से, जो छोटे-छोटे बाल रखे, विना कोई शृगार किये और व्यवहार मे आधुनिकता लिये घूमती थी, अपना सम्पर्क नही छोडा। वे उनसे मिलती थी, उनके बीच कभी-कभी मतभेद भी हो जाते थे, लेकिन उन्होने इन युवतियो को कभी भर्त्सना की दृष्टि से नही देखा, मानो वे इन युवतियो से कहती हो--"हम मखमली पोशाके पहनती हैं, क्योकि हमे इन मूर्खो के बीच मे रहना है, जो मखमली पोशाक को 'राजनैतिक विश्वसनीयता' का चिन्ह मानते है, लेकिन तुम अपनी रुचि और विचारो मे स्वतत्र रहो।" जब जूरिक मे अध्ययन करने-वाली लडकियो को रूसी सरकार ने वापस बुला लिया, तो इन वृद्ध महिलाओं ने लडकियो का विरोध नही किया। उन्होने केवल सरकार से यही कहा, "आप विदेश मे इनका अध्ययन नही चाहते, ठीक है। पर इनके लिए यहा रूस मे विश्वविद्यालय स्थापित कीजिये, अन्यथा हमारी लडकिया और भी अधिक सख्या मे विदेश जायगी और वहा राजनैतिक निर्वासितों से सम्पर्क स्थापित करेगी।"

जव उनके ऊपर विद्रोहियो को प्रोत्साहन देने का अपराध लगाया गया और लडकियो के विश्वविद्यालयो को वन्द करने की धमकी दी गई तो उन्होने अधिकारियो को उत्तर दिया, "हा, अनेक लडकिया क्रान्ति-कारिणी हो जाती है, लेकिन क्या आप इसके लिए सब विश्वविद्यालय वन्द कर देगे?" हमारे कितने राजनैतिक नेताओ मे इतना नैतिक साहस है कि वे अपने से अधिक उग्र दल के साथ इस प्रकार सहानुभूति का व्यवहार कर सके?

इन स्त्रियो के इस उदार और सफल दृष्टिकोण का मुख्य कारण यह था कि इनमे से कोई भी कोरी नेता नही थी। इसके विपरीत उनमे से अधिकाश की सहानुभूति जन-साधारण के साथ थी। मुझे भली भाति स्मरण

है कि इस आन्दोलन की सुप्रसिद्ध नेत्री कुमारी स्टैसोवा ने १८६१ मे रविवारीय स्कूलो मे कैसी रुचि ली थी। वह और उसकी अन्य सहेलिया कारखानो मे काम करनेवाली स्त्रियो की मित्र हो गई थी और उनके शोषक मालिको के विरुद्ध इन स्त्रियो ने कई वार सघर्ष भी किया था। उन्होने ग्रामीण पाठशालाओ की ओर भी ध्यान दिया था। इस आन्दोलन के द्वारा महिलाओ ने जो अधिकार अर्जित किये थे, वे केवल उच्च शिक्षा प्राप्त करने तक ही सीमित नही थे। उनका उद्देश्य उससे भी अधिक महत्व-पूर्ण था कि वह समाज के लिए किस प्रकार अपनेको उपयोगी वना सके। उनकी असाधारण सफलता का यही कारण था।

: ७ :

पिताजी की मृत्यु

कुछ वर्षो से पिताजी का स्वास्थ्य निरन्तर गिरता जा रहा था। जव अलैक्जैण्डर और मै १८७१ की वसन्त ऋतु मे उनके दर्शन करने गए, डाक्टरो ने कहा कि अगली शीत ऋतु के वाद उनका जीवित रहना सम्भव नही। वह उसी पुराने ढग से रह रहे थे, लेकिन उनके चारो ओर का वाता-वरण वदल गया था। वडे-वडे सामन्त, जो कभी यहा वडी शान से रहते थे, चले गये थे। गुलामो के मुक्त होने पर उन्हे जो कुछ मुआवजा मिला था, उसे उन्होने खर्च कर दिया था। उसके पश्चात अपनी जायदादो को वैंक मे वार-वार गिरवी रखकर उन्हे जो कुछ मिला था उसे भी खर्च कर, अव वह ग्रामो मे अथवा किसी छोटे वस्बे मे किसी तरह अपने दिन काट रहे थे, उनके मकानो पर व्यापारियो, ठेकेदारो आदि ने कब्जा कर लिया था। जो थोडे-से पुराने कुटुम्व अव भी यहा रह रहे थे, उनके यहा नवीन जीवन के लिए सघर्ष चल रहा था। यहा दो-चार अवकाश-प्राप्त फौजी अफसर भी थे, जो नई विचारधारा को निरन्तर कोसते रहते और निकट भविष्य मे ही रूस के अवश्यम्भावी पतन की चर्चा करते रहते। ये फौजी

: ८ :

अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर-संघ

अगले वर्ष बसन्त ऋतु मे मैने पश्चिमी यूरोप की प्रथम बार यात्रा की। जबतक गाडी रूस के उत्तरी-पश्चिमी प्रान्तो मे होकर गुजरती है, मालूम पडता है कि हम किसी रेगिस्तान को पार कर रहे है। सैकडो मील तक छोटे-छोटे पौधे दीखते है—कभी-कभी बर्फ से ढका कोई छोटा गन्दा गाव दीख जाता है या कभी कोई सकरी पगडडी मिल जाती है। फिर जैसे ही गाडी प्रशिया मे प्रवेश करती है, सम्पूर्ण दृश्य बदल जाता है। स्वच्छ ग्राम, अच्छे खेत, बढिया उद्यान, सुन्दर सडके दीख पडती है और जब जर्मनी के भीतर घुसते है तो यह भेद और भी गहरा हो जाता है। बर्लिन भी हमारे रूसी कस्बो के मुकाबले मे सजीव शहर दीख पडता था।

और जलवायु मे भेद ! दो दिन पहले सेण्ट पीटर्सबर्ग से जब मैं चला था तो वह बर्फ से ढका था और आज मै जर्मनी मे बिना ओवरकोट के प्लैटफार्म पर सुहाती धूप मे टहल रहा था ! उसके बाद राइन नदी आई और फिर स्विटजरलैण्ड। छोटे-छोटे स्वच्छ होटल। होटलो मे बाहर नाश्ता किया जा रहा था, क्योकि बरफ से ढके पहाडो के दृश्य सामने थे। उसके पहले मैने कभी भी इतनी अच्छी तरह महसूस नही किया था कि रूस के उत्तरी भाग मे स्थित होने के क्या मानी होते है और इस बात ने उसके इतिहास पर कितना व्यापक और गहरा प्रभाव छोडा है। तभी मुझे ज्ञात हुआ कि दक्षिणी प्रदेशो के प्रति रूस के असाधारण आकर्षण का क्या रहस्य है, और रूस ने काले सागर तक पहुचने के लिए निरन्तर प्रयास क्यो किये है। साइबेरिया-निवासियो की मचूरिया मे बसने की लालसा का कारण भी मेरे सामने स्पष्ट हो गया।

उस समय जूरिक मे अनेक छात्र और छात्राए थी। पोलीटैक्नीक के समीप "ओबरस्ट्रास" रूसियो का केन्द्र था। ये रूसी विद्यार्थी, विशेषतः लडकिया, बहुत कम खर्चे मे अपना काम चलाते थे। चाय, रोटी के

कुछ टुकडे, कुछ दूध और गोश्त का एक पतला टुकडा, साम्यवादी जगत के नवीनतम समाचार अथवा किसी नवीनतम पढी हुई पुस्तक की चर्चा के साथ, बस यही उनका भोजन था। जिनके पास इस सादा जीवन के लिए आवश्यकता से अधिक पैसा था, वे उसे किसी उपयोगी कार्य, जैसे पुस्तकालय अथवा वहा के मजदूरो के पत्रो के चलाने के लिए, दे देते थे। जहातक उनकी पोशाक का सवाल है, कम-से-कम खर्चे मे वे काम चलाते थे। पुश्किन ने एक प्रसिद्ध कविता मे लिखा है—"सोलह-वर्षीया लडकी को कौन-सी पोशाक नही फबेगी?" हमारी रूसी लडकियां तो ज्विगली के इस शहर के निवासियो को मानो चुनौती देती हुई कहती हो—"ऐसी कौन-सी पोशाक है, जो एक लडकी को शोभा नही देती, जब वह मेधावी तथा उत्साहपूर्ण है?"

इसके साथ ही ये विद्यार्थी अत्यधिक परिश्रम करते थे और चूंकि विश्वविद्यालय के प्राध्यापक इन रूसी छात्राओ की उन्नति का उदाहरण अन्य लडको के सामने रखते थे।

वर्षो से मेरी इच्छा अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर संघ के विषय मे जानकारी प्राप्त करने की रही थी। रूसी पत्र बहुधा उसका उल्लेख करते थे, लेकिन उन्हे उसके सिद्धान्तो अथवा कार्यो के विषय मे लिखने की अनुमति नही थी। मैं मानता था कि वह एक महान आन्दोलन होगा और उसकी सम्भावनाए विस्तृत होगी, लेकिन मैं उसके उद्देश्यो और प्रवृत्ति से पूर्णत अपरिचित था। अब जब मैं स्विटजरलैण्ड मे था, मैने अपनी लालसा पूरी करने का निश्चय किया।

स्थानीय अधिवेशन होते थे। इन सभाओ मे वर्तमान सामाजिक व्यवस्था की अत्यन्त जटिल समस्याओ पर अत्यन्त गम्भीर वाद-विवाद होता। अन्तर्राष्ट्रीय सघ के इन स्थानीय अधिवेशनो मे उपस्थित मजदूरो की सख्या और उससे भी अधिक उनकी गम्भीरता ओर उत्साह मध्य-वर्ग के लिए चिन्ता का विषय वन गई थी! स्विटजरलैण्ड मे जो ईर्ष्या और द्वेष अवतक सम्पन्न मजदूरो (घडी वनानेवालो) तथा साधारण मजदूरो (जुलाहे आदि) के वीच चला आता था, और जिसके परिणामस्वरूप अबतक कोई सामूहिक कदम नही उठाया जा सकता था, अब समाप्त हो रहा था। मजदूर अव जोर देकर कहते थे कि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था मे सवसे मुख्य ओर महत्वपूर्ण विभाजन तो पूजीपतियो और उन गरीवो के वीच है, जिनके भाग्य मे स्वय निर्धन रहते हुए जन्म से लेकर मृत्यु तक चन्द अमीरो के लाभ के लिए सम्पत्ति पैदा करना बदा है।

इटली मे, विशेषत मध्य और उत्तरी इटली मे, अन्तर्राष्ट्रीय सघ की अनेक शाखाए थी। इटली की राष्ट्रीय एकता, जिसके लिए युगो तक सघर्ष होता रहा था, अव केवल व्यर्थ घोषित की जानी थी। मजदूरो के सामने उद्देश्य था—स्वय अपनी क्रान्ति करना। उनकी माग थी कि किसानो को जमीन और मजदूरो को कारखाने मिलने चाहिए, और राज्य का केन्द्रीय सगठन समाप्त होना चाहिए, क्योकि उसका ऐतिहासिक उद्देश्य मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को सरक्षण देना और कायम रखना रहा है। स्पेन मे इसी प्रकार के सगठन कैटेलोनिया, वैलेनशिया और ऐण्डेलूशिया मे थे। स्पेन के लगभग अस्सी हजार मजदूर सघ को नियमित चन्दा देते थे। आवादी के लगभग सभी क्रियाशील और वौद्धिक व्यक्ति उसमे सम्मिलित थे।

वैलजियम, हालैण्ड और पुर्त्तगाल मे भी यह आन्दोलन तेजी से वढ रहा था। वैलजियम के कोयले के अधिकाश मजदूर तथा जुलाहे उसमे सम्मिलित हो गये थे। इग्लैण्ड मे भी स्वभावत परम्पराप्रिय मजदूर इस आन्दोलन मे शामिल हो गये थे। आस्ट्रिया और हगरी के मजदूर भी आन्दोलन मे शामिल थे। जहातक फ्रास का प्रश्न है वहा उस समय

किसी अन्तर्राष्ट्रीय सघ की स्थापना असम्भव थी। कम्यून की पराजय के पश्चात वहा सघ के समर्थको के विरुद्ध अत्यधिक दमनकारी कानून वना दिये गए थे। लेकिन वहा भी सभी इस वात को स्वीकार करते थे कि प्रतिक्रिया की यह लहर ज्यादा दिन टिकेगी नही और फ्रास के मजदूर शीघ्र ही सघ मे शामिल होकर फिर उसका नेतृत्व करेगे।

जूरिक मे आते ही मै अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-सघ की एक स्थानीय शाखा का सदस्य हो गया। मैने अपने रूसी मित्रो से पूछा कि अन्य देशो मे इस आन्दोलन की प्रगति की जानकारी मुझे कैसे मिल सकती है। उनका उत्तर था--"पढो।" मेरी साली ने, जो उस समय जूरिक मे अध्ययन कर रही थी, पिछले दो वर्षो मे प्रकाशित अनेक समाचार-पत्र और पुस्तिकाए मुझे ला दी। मै उन्हे दिन-रात पढता और जो प्रभाव उस समय मेरे ऊपर पडा, वह आज तक अमिट है। उस समय जो अनेक विचार मेरे मस्तिष्क मे आये, उनकी स्मृति ओबरस्ट्रास के उस छोटे-से कमरे से सम्बद्ध है। उस कमरे की खिडकी से नीली झील और उसके पीछे पहाडो के दर्शन होते थे। यही वह स्थान था, जहा स्विटजरलैण्ड के निवासियो ने अपनी स्वतत्रता के लिए सघर्ष किया था।

साम्यवादी साहित्य पुस्तको की दृष्टि से कभी समृद्ध नही रहा। वह तो उन मजदूरो के लिए लिखा जाता है, जिनके लिए एक-एक पैसे की कीमत हे। साम्यवादी साहित्य की शक्ति तो छोटी-छोटी पुस्तिकाओ और उसके समाचार-पत्रो मे है। इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति साम्यवाद के विषय मे अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहता है, उसे पुस्तको से वही चीज प्राप्त नही होती, जिसकी उसे सबसे अधिक जरूरत है! उन पुस्तको मे सिद्धान्त मिलते है, लेकिन आपको यह ज्ञात नही होता कि मजदूर साम्यवादी सिद्धान्त क्यो अपनाते है, अथवा ये सिद्धान्त कार्यान्वित कैसे हो सकते हैं। ये वाते तो आपको केवल साम्यवादी समाचार-पत्रो—विशेषतः उनके सम्पादकीय विचारो—से ही ज्ञात होती हैं। आन्दोलन की गम्भीरता और उसकी नैतिक शक्ति, मनुष्यो के ऊपर उसके प्रभाव की गहराई और साम्यवादी सिद्धान्तो के लिए मजदूरो ने जीवन मे कितना त्याग और कष्ट

सहन किया है, इन बातो का ज्ञान आपको इन समाचारपत्रों से ही प्राप्त होगा। साम्यवाद की अव्यावहारिकता अथवा उसके मद विकास की सारी चर्चाए निरर्थक है। विकास की गति को जानने के लिए आवश्यक है कि हम उन लोगो को नजदीक से जाने, जिनके विकास की चर्चा हम कर रहे है। किसी राशि के विषय मे हम क्या कह सकते है जब हमे उसकी सख्याए ही ज्ञात न हो?

जितना ही अधिक मैने पढा, उतना ही स्पष्ट मुझे दीखा कि मेरे सामने एक नई दुनिया है, जिससे सिद्धान्तो के शास्त्री तो पूर्णत अपरिचित है। उसे मै केवल मजदूर सघ मे रहकर और मजदूरो के दैनिक जीवन मे घुलमिलकर ही जान सकता था। इसलिए मैने उनके बीच मे दो महीने रहने का निश्चय किया। मेरे रूसी मित्रो ने इस विचार का स्वागत किया और जूरिक मे कुछ दिन रहने के पश्चात मैने जिनेवा के लिए प्रस्थान कर दिया, जो अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन का बडा केन्द्र था।

जिनेवा शाखा के अधिवेशन विस्तृत मैसोनिक टैम्पिल यूनिक मे होते थे। इसके हाल मे दो हजार आदमी आ सकते थे। प्रत्येक शाम को विभिन्न कमेटियो की बैठक लगे हुए कमरो मे होती थी, अथवा इन कमरो मे इतिहास, भौतिक शास्त्र, इजीनियरिंग की कक्षाए लगती थी। मध्यम वर्ग के जो थोडे-से व्यक्ति इस आन्दोलन मे थे, वे मुख्यत पेरिस कम्यून के फ्रासीसी थे, वे मजदूरो को बिना फीस के इन विषयो की शिक्षा देते थे। सक्षेप मे यह जनता का विश्वविद्यालय होने के साथ-ही-साथ उनका सभा-भवन भी था। प्रारम्भ ही मे मैने मजदूरो के बीच रहने का निश्चय किया। प्रत्येक दिन हाल मे शाम को एक कोने मे उनके साथ थोडी-सी खट्टी शराब लेता। शीघ्र ही उनमे अनेक मेरे परिचित हो गये। विशेषत अलसैस का एक सगतराश, जो कम्यून के पश्चात फ्रास से चला आया था, मेरा घनिष्ठ मित्र हो गया। उसके बच्चे मेरे भाई के दो स्वर्गीय बच्चो की उम्र के थे और उन बच्चो के द्वारा मै शीघ्र ही उसके कुटुम्ब मे हिलमिल गया। इस प्रकार मै आन्दोलन को भीतर से देख सका और उसके प्रति मजदूरो की भावना को भी समझ सका।

मजदूरो की आशाओ का केन्द्र अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन था। कुछ युवक अपना दिन का काम समाप्त करके टैम्पिल यूनिक मे इकट्ठे हो जाते थे और हर तरह अपनी ज्ञान-वृद्धि करते थे। वहा के भाषण सुनते, व्याख्याता उनके सामने उज्ज्वल भविष्य का चित्र उपस्थित करते, जब सम्पत्ति के उत्पादन के सम्पूर्ण साधनो पर सामूहिक अधिकार होगा मानव-समाज बन्धुत्व की भावना पर आधारित होगा और जाति, वर्ण अथवा राष्ट्रीयता का कोई भेद नही होगा। सभीको आशा थी कि एक बडी सामाजिक क्रान्ति—शान्ति से अथवा अशान्ति से—होगी और उससे आर्थिक दशा परिवर्तित हो जायगी। वर्ग-युद्ध के लिए वे उत्सुक नही थे, लेकिन वे सब कहते थे कि यदि सत्ताधारी अपनी ज़िद पर अडे रहे, तो युद्ध अवश्य होना चाहिए, जिससे पददलित मानव-समाज को स्वतन्त्रता और समृद्धि के दर्शन हो सके।

कोई भी आदमी बिना मजदूरो के बीच मे रहे मजदूरो के ऊपर इस आन्दोलन के प्रभाव को भली भाति नही समझ सकता था कि वे इसपर कितना विश्वास करते थे, कितने प्रेम से वे इसकी चर्चा करते थे और इसके लिए उन्होने कितना त्याग किया था। अपने समाचार-पत्र चलाने के लिए, अधिवेशन करने के लिए, अपने बन्धुओ की सहायता करने के लिए वर्षो तक कभी-कभी स्वय भूखे रहकर भी, हजारो मजदूरो ने अपना समय, शक्ति और पैसा दिया। एक और चीज, जिसने मुझे प्रभावित किया, वह थी मजदूरो के ऊपर आन्दोलन का नैतिक प्रभाव। पेरिस से आये हुए मजदूरो मे से अधिकाश शराब छूते ही नही थे और सभीने सिगरेट भी छोड रखी थी। "इस कमजोरी को मै क्यो रखू," वे कहते थे। वे सब प्रकार की क्षुद्रता या तुच्छता से ऊपर उठे हुए थे। उनकी तो महान और उज्ज्वल आकाक्षाए थी।

बाहर से देखनेवाले इस बात को भली भाति नही समझ पाते कि अपने आन्दोलन को चलाने के लिए मजदूरो को कितना त्याग करना पड़ता है। अन्तर्राष्ट्रीय सघ की शाखा मे खुलकर सम्मिलित होने के लिए बड़े नैतिक साहस की आवश्यकता थी। इसके मानी थे अपने मालिक की नाराजी का

मौका मिलते ही नौकरी से बर्खास्तगी और परिणामस्वरूप महीनों तक की बेकारी! अनुकूल परिस्थितियो मे भी मजदूरो के सगठन के लिए निरन्तर त्याग की आवश्यकता होती है। यूरोप के गरीब मजदूरो के लिए एक पैसे का दान देना भी उनके अत्यधिक सीमित साधनो पर एक बोझ ही है और ये पैसे वे प्रति सप्ताह देते थे। मजदूरो के लिए सघ की सभाओ मे बार-बार उपस्थित होना भी एक त्याग ही है। हम लोगो के लिए दो घण्टे के लिए सभा मे शामिल होना तफरीह हो सकती है। मजदूर तो प्रात पांच-छ बजे से अपने काम पर लग जाते है। उनके लिए इन सभाओ मे शामिल होने के मानी है आवश्यक आराम के समय मे से दो घण्टे काट देना।

मजदूरो का यह त्याग मेरे लिए निरन्तर आत्म-ग्लानि का विषय बना रहा। मैने देखा कि मजदूर अपनी ज्ञान-वृद्धि के लिए कितने उत्सुक थे और इस काम मे उनकी सहायता करने के लिए कितने कम आदमी आगे बढते थे। मैने देखा, गरीब मजदूरो को अपने सगठन के प्रचार और विस्तार के लिए शिक्षित और साधन-सम्पन्न व्यक्तियो की सहायता की कितनी आवश्यकता है। मजदूरो की इस निस्सहाय अवस्था से अपना राजनैतिक स्वार्थ सिद्ध करनेवालो को छोडकर, बहुत थोडे ही व्यक्ति निःस्वार्थ सहायता के लिए आगे आते थे। मुझे अधिकाधिक विश्वास हो रहा था कि मै इन्हीके लिए अपना जीवन अर्पित कर दू। स्टेपनियाक ने अपनी पुस्तक 'निहिलिस्ट का जीवन' मे लिखा है कि प्रत्येक क्रान्तिकारी के जीवन मे एक ऐसा क्षण आता है, जब कोई घटना—चाहे वह स्वय मे अत्यन्त साधारण हो, उसे क्राति के लिए अपना जीवन अर्पित करने के लिए प्रेरित कर देती है। मुझे वह क्षण भली भाति याद है। टैम्पिल यूनिक की एक मीटिंग के बाद का समय था। मुझे जोर से महसूस हुआ कि जो शिक्षित आदमी अपनी शिक्षा, ज्ञान, शक्ति को इन मजदूरो को अर्पित नही करता, वास्तव मे वह कायर है। मैने मन मे सोचा, "ये आदमी है—इन्हे अपनी गुलामी महसूस होती है, उससे मुक्त होने का प्रयत्न करते हैं; लेकिन इनके सहायक कहा है? वे व्यक्ति कहा है, जो इनकी निःस्वार्थ

सेवा के लिए आगे बढेगे और अपनी महत्वाकाक्षाओ की पूर्ति के लिए इनका शोषण नही करेगे ?"

लेकिन कुछ ही समय पश्चात टैम्पिल यूनिक मे चल रहे आन्दोलन के विषय मे मेरे मस्तिष्क मे कुछ सन्देह होने लगा। एक रात को जिनेवा के एक प्रसिद्ध वकील श्री . . मीटिग मे पधारे। उन्होने सफाई देते हुए कहा कि वह अभी तक आन्दोलन मे इसलिए शरीक नही हुए कि वह अपने वकालत को ठीक करने मे लगे हुए थे और अब जब वह व्यवस्थित हो गई थी, तो वह मजदूरो के सगठन मे भाग लेने उपस्थित थे। मुझे इस प्रकार की अजीब स्वीकारोक्ति से खेद हुआ। मैंने अपनी भावनाए अपने सगतराश मित्र से व्यक्त की। उसने उत्तर दिया कि यह वकीलसाहब पिछले चुनाव मे उग्र दल का साथ लेकर पराजित हो गये थे, और अब मजदूरों की वोटो के बल पर चुनाव जीतने की आशा मे इधर आये हैं। अन्त मे मेरे मित्र ने कहा, "अभी तो हम इस प्रकार के व्यक्तियो की सहायता स्वीकार कर लेते है। लेकिन जब क्राति होगी तो हमारा पहला कदम इस प्रकार के व्यक्तियों को उखाड फेकना होगा।"

फिर एक मीटिग बुलाई गई। जिनेवा के पूंजीपतियो के एक पत्र ने लिखा था कि टैम्पिल यूनिक मे एक षडयत्र चल रहा है। मकान बनाने वाले मजदूर १८६९ की भाति ही एक आम हडताल की योजना बना रहे है। कहा गया था, कि यह मीटिंग इस आरोप का विरोध करने के लिए की गई थी। हजारो मजदूर इस मीटिग मे शरीक हुए। एक व्यक्ति श्री ऊटिन ने उसमे एक प्रस्ताव रखा, जिसमे मज़दूरो की सम्भावित हडताल के सुझाव का जोरदार शब्दो मे विरोध किया गया था। प्रस्ताव से मुझे बडा आश्चर्य हुआ। मैंने सोचा, इस सुझाव को आरोप का रूप क्यो दिया जा रहा है। उक्त सज्जन ने अपने व्याख्यान के अन्त मे कहा— "अगर आप लोग इस प्रस्ताव से सहमत हैं, तो मैं इसे तुरन्त ही समाचार-पत्रों को दे दूंगा।" वह प्लेटफार्म छोडने ही वाले थे कि मीटिंग मे से किसी ने कहा कि इसपर बहस होनी चाहिए। और फिर एक के बाद एक अनेक मकान बनाने वाले बोले। उन्होने कहा कि मज़दूरी इतनी कम हो गई है कि

गुजारा चलाना मुश्किल हो गया है। शीघ्र ही वसन्त ऋतु मे काफी काम की आशा है और इससे फायदा उठाकर वे अपनी मजदूरी बढाने की सोच रहे है और यदि मजदूरी नही बढाई गई, तो वे हडताल करने का विचार कर रहे है ।

मुझे बडा क्रोध आया और अगले दिन मैने उन सज्जन से उनकी नीति की भर्त्सना की। मैने उनसे कहा, "एक नेता की हैसियत से तुम्हे मालूम होना चाहिए था कि हडताल की चर्चा हो रही थी।" तबतक नेताओ की नीति पर मुझे सन्देह नही था।

मैंने इन्ही नेताओ को मजदूरो के सामने जोशीले व्याख्यान देते देखा था। उनके इस प्रकार के गुप्त षड्यत्र ने मेरी धारणा बदल दी। मै बडा निराश हुआ। मैने अपने मित्र से कहा कि मै जिनेवा के अन्तर्राष्ट्रीय सगठन की दूसरी शाखा को, जो 'बाकूनिस्ट' नाम से प्रख्यात थी, (उस समय अराजकवादी नाम बहुत प्रचलित नही था) देखना चाहूगा। ऊटिन ने तुरन्त ही मुझे उस शाखा मे काम करनेवाले एक अन्य रूसी सज्जन, निकोलस जूकोव्स्की, के नाम परिचय-पत्र दे दिया। आह भरकर उसने मुझसे कहा, "तुम अब हमारे सघ मे नही आओगे, उन्हीके साथ रह जाओगे।" उसका अन्दाज ठीक था।

: ९ :

जूरा-संघ

पहले मैं न्यूचैटिल गया और फिर लगभग एक सप्ताह जूरा पार्वत्य प्रदेश मे घडी बनानेवालो के बीच रहा। इस प्रकार जूरा के उस प्रसिद्ध मजदूर-सघ से मेरा प्रथम परिचय हुआ। उस सघ ने आगामी वर्षो मे समाजवाद के विकास मे महत्वपूर्ण योग दिया और उसमे शासन-विहीन अथवा अराजकवादी तत्वो का समावेश किया।

१८७२ मे जूरा का सघ अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-सघ की जनरल कौसिल की सत्ता के विरुद्ध विद्रोह कर रहा था। यहा का सघ वास्तव मे मजदूरो का था। मजदूर इसे इसी दृष्टि से देखते थे, न कि एक राजनैतिक पार्टी के रूप मे। उदाहरण के लिए पूर्वी बेलजियम मे मजदूरो के सघ के विधान मे एक धारा थी कि कोई व्यक्ति जबतक कि वह हाथ से मजदूरी न करता हो, उनके सघ का सदस्य नही हो सकता था, यहातक कि फोरमैनो का भी प्रवेश निषिद्ध था।

और ये मजदूर सिद्धान्तत सघवादी थे। प्रत्येक राष्ट्र, प्रत्येक प्रदेश, यहातक कि प्रत्येक स्थानीय शाखा को अपनी प्रवृत्तियो के अनुसार विकास करने की पूर्ण स्वाधीनता थी। लेकिन पुराने विचारो के मध्यमवर्ग के कुछ क्रान्तिकारी अन्तर्राष्ट्रीय सघ मे प्रवेश कर गये थे। उन्होने इस सघ मे भी केन्द्रीकरण की प्रवृत्तियो का समावेश कर दिया था, राष्ट्रीय और सघीय परिषदो के अतिरिक्त लन्दन मे एक जनरल कौसिल बना दी गई थी। इसका उद्देश्य विभिन्न राष्ट्रीय परिषदो के बीच सम्पर्क स्थापित करना था। मार्क्स और ऐंजिल्स इस कौसिल के प्रमख कार्यकर्ता थे। लेकिन शीघ्र ही मालूम पड़ने लगा कि इस प्रकार की केन्द्रीय परिषद से बडी असुविधा होती है। केन्द्रीय परिषद केवल डाकखाने का कार्य करने से सन्तुष्ट नहीं थी। उसने आन्दोलन को सचालित करने का प्रयत्न किया, वह स्थानीय शाखाओ अथवा व्यक्तिगत मजदूरो के कार्यो की प्रशसा या आलोचना करने लगी। जब पेरिस मे कम्यून का विद्रोह हुआ, तो नेताओ को आदेश दिया गया कि उन्हे "केवल अनुसरण करना है"—अगले चौबीस घण्टे मे उन्हे क्या करना है, इसका आभास भी उन्हे नही था। इस प्रकार जनरल कौसिल पेरिस के विद्रोह को लन्दन से सचालित करने का यत्न कर रही थी। वह प्रतिदिन की घटनाओ की रिपोर्ट मागती थी, आदेश देती थी, कुछ कार्यो की अनुमति देती थी और कुछ पर अकुश लगाती थी। सक्षेप मे, इस प्रकार 'सचालन-परिषद' रखने की हानियो को उसने स्पष्ट कर दिया। जब जनरल कौसिल ने १८७१ मे अपने एक गुप्त अधिवेशन मे सघ की शक्तियो को चुनावो की ओर प्रवृत्त कराने का निश्चय किया, तो उसका

अनिष्टकारी प्रभाव और भी अधिक स्पष्ट हो गया। इस प्रस्ताव से जनता का ध्यान शासन के, चाहे मूलत वह कितना ही जनतात्रिक हो, अनिष्टकारी प्रभाव की ओर गया। अराजकवाद की यह पहली चिनगारी थी। जूरा का सघ केन्द्रीय कौसिल के विरोध का केन्द्र बन गया।

जिनेवा के टैम्पिल यूनिक मे मजदूरो और नेताओ के बीच जो खाई थी, वह मुझे जूरा मे नही दिखाई दी। कुछ व्यक्ति साधारण मजदूरो से अधिक बुद्धिमान और क्रियाशील थे, बस इससे अधिक कुछ नही था। जेम्स गुलौमी एक प्रूफरीडर और छोटे-से प्रेस का व्यवस्थापक था। वह अत्यन्त होशियार और सुशिक्षित व्यक्ति था। जीवन मे ऐसे प्रतिभावान व्यक्ति मुझे कम ही मिले है। प्रेस के कार्य से उसकी आमदनी इतनी कम थी कि उसकी राते जर्मन भाषा से फ्रेच मे उपन्यास अनुवाद करते जाती। और इस अनुवाद की मजदूरी उसे ८ फ्राक प्रति १६ पृष्ठ मिलती थी।

जब मै न्यूचैटिल आया तो उसने खेदपूर्वक मुझसे कहा कि उसके पास बातचीत करने के लिए घटे-दो घटे का भी समय नही। उसी दिन प्रेस से पत्र का प्रथम अक निकलनेवाला था। वह पत्र का सयुक्त सम्पादक और प्रूफरीडर तो था ही, इसके अतिरिक्त उसे स्वय अको पर कागज लपेटना था और सौ से अधिक व्यक्तियो के पते भी लिखने थे।

मैने पते लिखने के लिए अपनी सेवाए अर्पित की, लेकिन वह सम्भव नही था, क्योकि सब पते या तो उसकी स्मृति मे थे या छोटे पुर्जो पर घसीटकर लिखे हुए थे, जो अन्य कोई व्यक्ति पढ भी नही सकता था। मैने निवेदन किया—"तो फिर मै शाम को आपके कार्यालय मे आकर पत्रो पर कागज लपेट दूगा। उससे जो आपका समय बचे, वह मुझे दे दीजिये।"

हम दोनो एक-दूसरे को भली भाति समझ गये थे। गुलामी ने प्रेमपूर्वक हाथ मिलाया। यही से उसकी और मेरी स्थायी मैत्री प्रारम्भ हुई। हम दोनो तीसरे पहर से आफिस मे काम करते। वह पते लिखता और मैं पत्रो पर कागज लपेटता। हमारा अन्य साथी एक फ्रासीसी कम्पोजीटर था। वह एक उपन्यास को कम्पोज कर रहा था। वह उपन्यास के अशो

को, जिन्हे वह कम्पोज कर रहा था, जोर से पढता और उन्हीके साथ हमारे साथ वाचचीत भी करता जाता था ।

रात तक गिलैमी काम करता। फिर हम लोग दो घण्टे के लिए विचार-विमर्श के लिए टहलने निकलते। लौटकर वह फिर जूरा-सघ के मुख पत्र के सम्पादन के कार्य पर जुट जाता।

न्यूचैटिल मे मैंने मैलोन से भी परिचय प्राप्त किया। उसका जन्म एक गाव मे हुआ था। बचपन मे वह भेडे चराता था। बाद को वह पेरिस आया। वहा टोकनी बनाने का काम सीखा। अपने मित्र जिल्दसाज वार्लिन और वढई पिण्डी के साथ वह अन्तर्राष्ट्रीय सघ का मुख्य कार्यकर्ता था। तीनो ही पेरिस के मजदूरो के वीच अत्यन्त लोकप्रिय थे और जव वहा विद्रोह प्रारम्भ हुआ, तो ये तीनो भारी बहुमत से कम्यून की कौसिल के सदस्य निर्वाचित हुए थे। मैलोन पेरिस के कम्यून का मेयर भी निर्वाचित हुआ था। अब स्विटजरलैण्ड मे वह टोकनी वनाकर अपनी जीविका चलाता था। कुछ रुपये मासिक पर उसने शहर के वाहर पहाडी पर एक खुला अहाता किराए पर ले रखा था और काम करते हुए न्यूगैटिल की झील से विहगम दृश्य को देखता रहा था। रात को वह पत्र लिखता, कम्यून पर पुस्तक लिखता, मजदूरो के पत्रो के लिए लेख तैयार करता और इस प्रकार वह लेखक वन गया था।

प्रति दिन शाम को मै उससे मिलने जाता और उस परिश्रमी, शान्त, सरल हृदय सज्जन से पेरिस के विद्रोह का विवरण सुनता। उसके सम्बन्ध मे उसने अभी ही एक पुस्तक लिखी थी—'फ्रासीसी मजदूरो की तीसरी पराजय।'

एक दिन प्रात काल मैं पहाड पर चढकर उसके यहा पहुचा ही था कि उसने अत्यन्त प्रसन्नता से कहा, "पिन्डी अभी जीवित है—यह है उसका पत्र। वह स्विटजरलैण्ड मे ही है। २५-२६ मई को वह टूलेरी मे दीखा था। उसके वाद उसके विपय मे कोई समाचार नही मिला और यह मान लिया गया था कि वह मर गया होगा। वास्तव मे वह पेरिस मे ही छिप गया था।" मैलोन की उगलिया सुन्दर टोकनी वना रही थी और वह

शान्ति से मुझे पेरिस के विद्रोह के विषय मे सुना रहा था। वारसाई की फौज ने न जाने कितने व्यक्तियो को पिण्डी, और वार्लिन समझकर गोली से उडा दिया। उसने मुझे जिल्दसाज वार्लिन और डैलेक्लूज (जो पराजय के पश्चात स्वय जीवित नही रहना चाहता था) तथा अन्य नेताओ की मृत्यु के विषय मे सुनाया। उसने उस बीभत्स रक्तपात के विषय मे बतलाया, जो पूजीपतियो ने राजधानी मे प्रवेश करने पर किया था।

जब वह बच्चो की वीरता की बाते करता तो उसके होठ फडकने लगते थे। उसने जब मुझे एक वीर लडके की कहानी सुनाई, तो उसका गला लगभग भर आया। वारसाई की फौज उसे गोली मारने जा रही थी। उसने फौजी अफसर से कुछ समय की अनुमति मागी, जिससे वह अपनी घडी अपनी माता को, जो पास ही रहती थी, दे आवे। फौजी अफसर ने दयावश उस बच्चे को अनुमति दे दी, यह सोचकर कि शायद वह लौटकर नही आवेगा। लेकिन कुछ ही मिनटो मे वह बालक लौट आया और उसने दीवार के सहारे लाशो के बीच खडे होकर कहा—"मै तैयार हू।" बारह गोलियो ने उसकी जीवन-लीला समाप्त कर दी।

मई १८७१ मे 'स्टैण्डर्ड', 'डेली टेलीग्राफ' तथा 'टाइम्स' के सम्वाद-दाताओ ने पेरिस-विद्रोह के विषय मे जो समाचार भेजे थे, उन्हे सकलित करके एक पुस्तक बना दी थी। शायद जीवन मे इससे अधिक दुःखपूर्ण पुस्तक मैने कोई नही पढी। इस पुस्तक को पढते हुए मानवमात्र के प्रति मेरी आस्था डिगने लगी। मुझमे यही भावना बनी रहती, यदि मैं उन पराजित विद्रोहियो के सम्पर्क मे नही आता, जिन्होने स्वय वे भयकर यातनाए झेली थी। उनमे घृणा के भाव नाममात्र को नही थे। अपने विचारो की अन्तिम सफलता पर उन्हे दृढ विश्वास था। भयकर भूतकाल को भूलकर उनकी शान्त तथा स्थिर दृष्टि केवल भविष्य पर थी।

जूरा-सघ मे नेताओ और मजदूरो के बीच कोई भेद नही था और इसलिए प्रत्येक समस्या पर हर मजदूर की अपनी स्वाधीन राय थी। मैंने देखा कि मजदूरो का यहा 'नेतृत्व' नही हो रहा, थोडे-से राजनैतिक व्यक्तियो के हितो के लिए वे अन्धानुकरण नही कर रहे। उनके नेता उन्ही

मे से कुछ अधिक क्रियाशील मजदूर थे। मेरा यह दृढ विश्वास है कि जूरा-सघ ने साम्यवाद के विकास मे जो महत्वपूर्ण योग दिया है, उसका कारण केवल यही नही है कि उन्होने अराजकवाद और सघीय विचारो को महत्व दिया वरन् उनकी कार्यपद्धति भी इसके लिए उत्तरदायी है। बिना उनके सक्रिय सहयोग के ये विचार बहुत समय तक केवल शास्त्रीय सिद्धान्त ही बने रहते।

अराजकवाद के सैद्धान्तिक पहलू का जूरा-सघ और विशेषतः बाकूनिन प्रचार कर रहे थे। राज्य साम्यवाद अर्थात् आर्थिक तानाशाही, जो राजनैतिक तानाशाही से भी अधिक खतरनाक होगी, मैने यही सुनी और इस आन्दोलन का क्रान्तिकारी रूप भी देखा। इन सबसे मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ। लेकिन जूरा-सघ के मजदूरो मे समानता की भावना, विचारो की स्वाधीनता और आदर्श के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा ने मेरे हृदयतत्री के तार हिला दिये। जब मैं इन मजदूरो के बीच एक सप्ताह रहने के पश्चात लौटा तो मेरे साम्यवाद के विचार दृढ हो गये थे। मैं अराजकवादी हो गया था।

: १० :

बाकूनिन

बाकूनिन उस समय लोकार्नो मे थे। उस समय दुर्भाग्यवश मैं उनसे नही मिला। अब मैं इसके लिए पछताता हू, क्योकि चार वर्ष पश्चात जब मैं स्विटजरलैण्ड लौटा, तबतक वह स्वर्गवासी हो चुके थे। बाकूनिन ने ही जूरा-सघ के मजदूरो के विचारो और ध्येयो को स्पष्टता दी थी। उस महापुरुष ने ही उन्हे अदम्य और उत्कट क्रान्तिकारी उत्साह दिया था। जैसे ही बाकूनिन ने देखा कि गिलौमी द्वारा सम्पादित पत्र साम्यवादी आन्दोलन मे एक नवीन विचारधारा की किरण फेक रहा है, वह वहा

पहुच गये। इस पत्र के लिए उन्होने "मनुष्य जाति की स्वाधीनता और प्रगति" पर अनेक सुन्दर और गम्भीर लेख लिखे। अपने मित्रो को उन्होने उत्साह दिया और इस प्रकार उन्होने अराजकवाद के प्रचार का वह केन्द्र स्थापित किया, जिससे बाद को यूरोप के अन्य देशो मे ये विचार फैले।

उसके बाद वह लोकार्नो चले गये। वहा से इटली मे उन्होने इसी आन्दोलन का सूत्रपात किया। अपने मित्र फानेली के द्वारा उन्होने स्पेन मे भी यही प्रचार किया। उनके चले जाने के बाद जूरा-सघ ने स्वतत्रता-पूर्वक इस प्रचार-कार्य को जारी रखा। जूरा-सघ के मजदूरो की बातचीत मे 'माइकेल' का नाम अक्सर आता था, लेकिन वह एक प्रामाणित नेता के रूप मे नही वरन् एक घनिष्ट तथा स्नेही मित्र अथवा सखा के रूप मे स्मरण किये जाते थे। जिस चीज ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया वह यह थी कि माइकेल का नाम एक विद्वान के रूप मे नही वरन् एक नैतिक शक्ति के रूप मे स्मरण किया जाता था। अराजकवाद पर बातचीत मे मैने कभी नही सुना, "बाकूनिन ऐसा कहते है", अथवा "बाकूनिन के विचार ये है", मानो वह कोई प्रमाण हो। उनके विचार और लेखो को दलील नही माना जाता था, जैसाकि अन्य राजनैतिक सगठनो मे होता है। इस प्रकार के सब विवादास्पद मामलो मे प्रत्येक मजदूर अपनी बात कहता था। हो सकता है कि उसकी विचारधारा को बाकूनिन ने प्रभावित किया हो, अथवा स्वय बाकूनिन ने ही जूरा के मित्रो से प्रेरणा ग्रहण की हो, लेकिन प्रत्येक की युक्ति मे उसीका व्यक्तित्व बोलता था। केवल एक बार मैने बाकूनिन का नाम स्वय प्रमाण के रूप मे सुना और उससे मैं इतना अधिक प्रभावित हुआ कि आज भी मुझे उस स्थान का भली भाति स्मरण है, जहा वह बातचीत हुई थी। कुछ युवक ऐसी बाते कर रहे थे जो स्त्री-जाति के लिए बहुत सम्मानपूर्ण नही थी। उसी समय एक महिला ने कहा—"खेद है कि माइकेल यहा मौजूद नही है, नही तो उसने आपको ठीक रास्ता दिखा दिया होता।" बातचीत एक साथ वही बन्द हो गई। उस क्रान्तिकारी का महान व्यक्तित्व, जिसने क्रान्ति के ही लिए सबकुछ

अर्पित कर दिया था, उसीके लिए जीवित था और जिसने क्रान्ति से ही अपने जीवन को श्रेष्ठ और पवित्रतम बनाने की प्रेरणा ग्रहण की थी, वही सबको प्रेरित कर रहा था।

मै इस यात्रा मे समाजशास्त्र के ऊपर कुछ निश्चित विचार लेकर लौटा। आजतक उन विचारो का मेरे ऊपर प्रभाव है। आजतक मैं उन्ही विचारो को अधिक निश्चित तथा मूर्त रूप देने मे लगा हुआ हू।

लेकिन एक चीज थी, जिसे स्वीकार कर लेने के पहले मुझे घटो और रातो गम्भीर चिन्तन करना पडा। मुझे स्पष्ट दीख पडता था कि यह परिवर्तन, जिससे उत्पादन के सम्पूर्ण साधन समाज के हाथो आ जायगे, चाहे फिर वह समाज समाजवादी प्रजातन्त्र का हो अथवा स्वतत्र समुदायो का अराजकवादी समूह, एक अभूतपूर्व महान क्रान्ति होगी, जिसका दृष्टान्त हमारे इतिहास मे नही है। फिर इस क्रान्ति मे मजदूरो के विरुद्ध पतित सामन्त नही होगे, जिनके खिलाफ फ्रासीसी किसान और प्रजातत्रवादी पिछली शताब्दी मे लडे थे। वह लडाई भी कम भयकर नही हुई थी। इस क्रान्ति मे तो मजदूरो को मध्यम वर्ग से लोहा लेना पडेगा, जो शारीरिक और बौद्धिक दृष्टि से कही अधिक शक्तिशाली है और जिनके हाथ मे सशक्त सरकार भी है। लेकिन मैंने देखा कि कोई भी क्रान्ति, चाहे वह शान्तिपूर्ण हो अथवा हिसात्मक, तबतक नही होती जबतक कि नये आदर्श उसी वर्ग मे व्याप्त नही हो जाते, जिसके राजनैतिक और आर्थिक अधिकार नष्ट करने के लिए क्राति हो रही है। मैंने रूस मे गुलामी प्रथा का अन्त देखा था, और मैं जानता था कि यदि स्वय सामन्तो मे ही इस अन्यायपूर्ण प्रथा के विरुद्ध भावना व्याप्त नही हो गई होती, तो गुलामी प्रथा का अन्त इतनी सुगमता और सरलता से नही होता जितना १८६१ मे हो गया। मैंने देखा कि मजदूरो की वर्तमान पतित स्थिति को नष्ट करने के विचार स्वय मध्यम वर्ग मे व्याप्त हो रहे थे। वर्तमान आर्थिक व्यवस्था के प्रबल समर्थक अब अपने विशेषाधिकारो के औचित्य की बात नही करते थे। वे अब इस परिवर्तन के लिए 'उपयुक्त अवसर' की बात करने लगे थे। वे इस प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता से इन्कार नही करते थे।

फिर मेरी समझ मे आया कि क्रान्तिया अर्थात् शीघ्र परिवर्तन और वेगपूर्ण विकास के युग मनुष्य-समाज के लिए उतने ही स्वाभाविक है जितना कि मद विकास, जो सभ्य मानव-समाज मे निरन्तर होता रहता है। जब कभी द्रुतगामी विकास तथा पुनर्निर्माण का युग आता है, सदैव ही छोटे या बडे पैमाने पर गृहयुद्ध आरम्भ हो जाता है। इसलिए समस्या यह नही है कि क्रान्तिया न हो। वे तो अनिवार्य है। हमारा प्रयत्न तो यही होना चाहिए कि किस तरह कम-से-कम गृहयुद्ध के द्वारा ही अधिकतम फल मिल सके, अर्थात् उस गृहयुद्ध के शिकार न्यूनतम व्यक्ति हो और पारस्परिक कटुता यथासम्भव कम हो। इसके लिए एक ही उपाय है—यानी समाज के दलित वर्ग के सामने अपने उद्देश्यो की और उन्हे प्राप्त करने के साधनो की स्पष्ट रूपरेखा होनी चाहिए, और तदर्थ उनमे पर्याप्त उत्साह होना चाहिए। उस स्थिति मे उच्च वर्ग के श्रेष्ठ और बौद्धिक नेताओ का सहयोग उन्हे मिल जायगा।

इसलिए मैं इस निष्कर्ष पर पहुचा कि जब मानव-समाज के विकास मे सघर्ष अनिवार्य है और गृहयुद्धो का छिडना अवश्यम्भावी है, तब हमे देख लेना चाहिए कि ये सघर्ष अस्पष्ट आकाक्षाओ के ऊपर नही, वरन् सुनिश्चित उद्देश्यो के लिए ही हो। अर्थात् इन सघर्षो का आधार गौण विषय न हो। हमारे उद्देश्य महान् होने चाहिए जिससे उनकी महानता मनुष्यो को प्रेरणा प्रदान कर सके। चूंकि ये आकाक्षाए और उद्देश्य श्रेष्ठ और महान होगी, इसलिए उन लोगो का भी सहयोग प्राप्त हो जायगा, जो साधारणत सामूहिक रूप मे परिवर्तन के विरुद्ध है। जब सघर्ष महान प्रश्नो पर होगा, समाज का वायुमण्डल भी स्वच्छतर होगा। और उस स्थिति मे दोनो पक्षो के आहत व्यक्तियो की सख्या निश्चय ही बहुत कम होगी। इसके विपरीत जब सघर्ष तुच्छ विषयो को लेकर होगा तो हिसा तथा मारकाट कही अधिक होगी, क्योकि उसमे मनुष्य की निम्नतम प्रवृत्तिया उभरती हैं। इन विचारो को लेकर मै रूस लौटा।

: ११ :

तस्कर व्यापारी

मै अपने साथ कुछ पुस्तके और साम्यवादी पत्रिकाए ले आया था। रूस मे इस प्रकार के साहित्य का प्रवेश 'सर्वथा निषिद्ध' था और अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-सघ के अधिवेशनो की रिपोर्टे तथा साम्यवादी पत्र बेलजियम मे भी किसी कीमत पर दुष्प्राप्य थे। मैने अपने मन मे सोचा—'क्या मै इन्हे छोड दू ? सेण्ट पीटर्सबर्ग मे मेरे भाई और मित्र इन्हे पढने के लिए कितने उत्सुक होगे।' और मैने निश्चय किया कि किसी भी तरह मुझे इन्हे रूस मे ले ही जाना है।

मै वियना तथा वारसा होता हुआ सेण्ट पीटर्सबर्ग आया। हजारो यहूदी पोलैण्ड की सीमा पर अवैध व्यापार के द्वारा अपनी जीविका चलाते है। मैने सोचा कि यदि मुझे कोई ऐसा यहूदी मिल जाय, तो सीमा के उस पार मेरा सामान सुरक्षित पहुच जायगा। लेकिन सीमा के पास किसी छोटे स्टेशन पर उतरना, जब अन्य यात्री, सीधे यात्रा करे, और फिर वहा अवैध व्यापारियो को ढूंढना व्यावहारिक प्रतीत नही हुआ। इसलिए मै चक्कर के रास्ते क्रैको गया। मैने सोचा—"पुराने पोलैण्ड की यह राजधानी सीमा के पास ही है और वहा मुझे कुछ यहूदी अवश्य मिल जायगे, जो मेरे कार्य को करा देगे।"

मै शाम को पहुचा। अगले दिन सुबह मै होटल से इस कार्य के लिए निकला। मुझे आश्चर्य हुआ कि इस उजडे हुए शहर मे हर गली, हर मोड पर जहा भी आंखे जाती, यहूदी ही दीख पडते। उनकी वही परम्परागत लम्बी पोशाक थी। उनकी आखे पोलैण्ड के सामन्तो और व्यापारियो की खोज मे थी, जो उन्हे कुछ कार्य दे सके और उसके बदले मे कुछ चादी के टुकडे। मुझे तो एक यहूदी की आवश्यकता थी और यहा अनेक थे। मै किससे बातचीत करूं ? मैने शहर का चक्कर लगाया, और फिर अन्त मे निराश होकर मैने अपने होटल के बाहर खडे हुए यहूदी से बात करने

का निश्चय किया। मैने उससे अपना मन्तव्य प्रकट किया कि मुझे पुस्तकों और पत्रिकाओ के एक बडल को रूस मे ले जाना है।

उसने उत्तर दिया—"यह तो बहुत आसानी से हो जायगा। मै अभी आपके पास कम्बलो तथा हड्डियो, (यही नाम चलने दिया जाय) के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की कम्पनी के प्रतिनिधि को लाता हू। वे लोग ससार मे सबसे बड़े अवैध व्यापारी है और उनसे आपका काम बन जायगा।" लगभग आधा घटे बाद सचमुच वह एक व्यक्ति को लेकर आया। वह सुन्दर नवयुवक था जो रूसी, जर्मनी और पोलिश भाषाए साधिकार बोलता था।

उसने मेरे बण्डल को देखा—हाथ से उठाकर उसका वजन भापा और मुझसे पूछा—इसमे कैसी किताबे है ?

"इन सभी पुस्तको का प्रवेश रूस मे बिलकुल निषिद्ध है और इसीलिए किसी तरह अवैध रूप मे इन्हे रूस मे पहुचाना है।"

उसने उत्तर दिया—"हम लोग पुस्तको का काम नही करते, हमारा व्यापार कीमती रेशम का है। अगर मै अपने आदमियो को रेशमी कपडो की भाति इनके वजन के हिसाब से मजदूरी दूगा तो आपको बहुत पैसा देना पडेगा। और फिर वास्तव मे मै पुस्तको के कार्य को नापसन्द करता हू। कोई चूक हो जाय, तो 'वे' लोग इसको राजनैतिक रूप दे देगे और परिणामस्वरूप हमारी कम्पनी को अपने बचाव मे बडी रकमे खर्च करनी पडेगी।"

मुझे स्वभावत उसकी बात से धक्का लगा। वह भाप गया और तुरन्त ही उसने कहा—"आप चिन्ता न करे। यह होटल का प्रबन्धक किसी तरह आपका काम करा देगा।" और वह चला गया।

होटल के प्रबन्धक ने हँसते हुए कहा—"हा, इनकी सुविधा के लिए इस छोटे-से कार्य का प्रबन्ध आसानी से किया जा सकता है।"

लगभग एक घण्टे मे वह एक अन्य नवयुवक को लेकर आया। उसने मेरा बण्डल उठाया, बाहर दरवाजे के पास रक्खा और कहा, "ठीक है—अगर आप कल जायगे, तो रूस मे अमुक स्टेशन पर यह आपको मिल जायगा।"

मैने पूछा—"इसमे कितना पैसा लगेगा ?"

उसने उत्तर दिया—"आप कितना दे सकते है ?"

मैंने अपना सारा पैसा मेज पर रखकर कहा—"इतना मेरी यात्रा के लिए काफी होगा, वाकी तुम्हारा है। मै तीसरे दर्जे मे यात्रा करूगा।"

"वाह-वाह" दोनो व्यक्तियो ने एक साथ आश्चर्य से कहा—"आप क्या कह रहे है ? इस प्रकार का सभ्रान्त व्यक्ति तीसरे दर्जे मे चलेगा ? कभी नही। यह ठीक नही। हमारे लिए पाच डालर काफी होगे। और एक डालर यदि आपकी अनुमति और इच्छा हो तो इस प्रवन्ध के लिए। हम लोग डकैत नही, ईमानदार व्यापारी है," और उन्होने ज्यादा पैसा लेने से इन्कार कर दिया।

मैंने सीमान्त पर अवैध व्यापार करनेवाले यहूदियो के विषय मे वहुत सुन रखा था, लेकिन ऐसे अनुभव की मैने कभी कल्पना भी नही की थी। वाद को जव हम लोगो ने विदेशो से पुस्तके मगाई, अथवा जव अनेक क्रान्तिकारियो ने वाहर जाते या आते हुए सीमान्त पार किया, [illegible] भी किसी अवैध व्यापारी ने इन परिस्थितियो से लाभ उठाकर [illegible] पैसा वसूल करने की चेष्टा नही की और न किसीने [illegible] किया।

: १२ :

निहिलिज़्म और 'जनता के बीच' आन्दोलन

इस बीच रूस के शिक्षित युवको मे एक जोरदार आन्दोलन का विकास हो रहा था। गुलामी प्रथा का अन्त हो गया था। लेकिन अढाई सौ साल तक जो गुलामी की प्रथा प्रचलित रही, उसके परिणामस्वरूप सामाजिक गुलामी की अनेक आदते और परम्पराए विकसित हो गई थी, यथा मानवता की अवहेलना, पिताओ की तानाशाही, स्त्रियो की वनावटी विनम्रता, लडके, लडकियो का दिखावटी आज्ञापालन आदि-आदि। इस शताब्दी के प्रारम्भ मे सम्पूर्ण यूरोप मे कुटुम्बो मे तानाशाही प्रचलित थी। थैकरे और डिकिन्स के उपन्यासो मे वह चित्रित है। लेकिन जिस हद तक यह घरेलू ताना-शाही रूस मे प्रचलित थी, वैसी अन्यत्र कही नही थी। कुटुम्ब मे, फौज के अधिकारियो और सिपाहियो के बीच, मजदूर और पूजीपतियो के बीच, सक्षेप मे रूस के सम्पूर्ण जीवन पर इसका प्रभाव था। उमीके परिणाम-स्वरूप अनेक दूषित परम्पराए, नैतिक कायरता, कुरीतिया हमारे जीवन का अग वन गई थी। उस समय के अच्छे आदमी भी गुलामी के युग की इन देनो की प्रशसा करते थे।

कानून से इस स्थिति को नही सुधारा जा सकता था। एक शक्तिशाली सामाजिक आन्दोलन के द्वारा ही इस व्यवस्था की जड पर कुठाराघात किया जा सकता था, और दैनिक जीवन की आदतो और मान्यताओ को सुधारा जा सकता था। रूस मे, अन्य देशो की अपेक्षा, यह आन्दोलन, कही अधिक सशक्त रूप मे हुआ। तुर्गनेव ने अपने सुप्रसिद्ध उपन्यास 'पिता और पुत्र' मे इस आन्दोलन को 'निहिलिज्म' की सज्ञा दी थी।

पश्चिमी यूरोप मे इस आन्दोलन के विषय मे गलतफहमी है। उदाहरण के लिए समाचार-पत्रो मे निहिलिज्म को आतकवाद का पर्याय माना जाता है। अलैक्जैण्डर द्वितीय के शासन के अन्त मे जो क्रान्तिकारी आन्दोलन चला और जिसमे जार की हत्या कर दी गई, उसे ही निहिलिज्म

समझ लिया गया है। लेकिन यह गलत है । आतकवाद का जन्म तो राजनैतिक आन्दोलन मे विशेष परिस्थितियो के कारण हुआ था। वह कुछ समय तक चला और फिर समाप्त हो गया। वह फिर जीवित हो सकता है और फिर खतम हो जायगा, लेकिन निहिलिस्ट आन्दोलन ने तो रूस के शिक्षित वर्ग पर अपनी अमिट छाप छोड दी और उसका प्रभाव युगो तक स्थायी रहेगा। यदि निहिलिज्म मे से अशिष्टता हटा दी जाय, और यह अशिष्टता इस प्रकार के आन्दोलन मे स्वाभाविक थी, तो हम देखेगे कि इसी आन्दोलन ने रूस के शिक्षित वर्ग के जीवन को एक विशेष मनोवृत्ति दी है, एक खास प्रकृति दी है, जो पश्चिमी यूरोप मे देखने को नही मिलती। अपनी आन्तरिक भावनाओ को स्पष्टत प्रकट करने की प्रतिभा, जिससे पश्चिमी यूरोप आश्चर्य-चकित है, निहिलिज्म की ही देन है।

सबसे पहले निहिलिस्ट ने 'सभ्य मनुष्य के परम्पराजन्य झूठ' के विरुद्ध विद्रोह किया। निहिलिस्ट की सबसे बडी विशेषता उसकी सरलता तथा निष्कपटता थी। उसने स्वय सपूर्ण तर्कहीन अन्धविश्वासो, आदतो और परम्पराओ को धता बता दी। तर्क के अतिरिक्त किसी भी सत्ता के सामने वह समर्पण करने को तैयार नही था। सामाजिक सस्थाओ और परम्पराओ का परीक्षण करते हुए वह किसी भी तरह की बनावट के विरुद्ध विद्रोह करता था।

और उसने अपने पूर्वजो के सब अन्धविश्वासो को छोड दिया था। उसकी मान्यता स्पेसर के विकासवाद और वैज्ञानिक भौतिकवाद मे थी। उसने सरल और निष्कपट धार्मिक विश्वासो, जो एक मनोवैज्ञानिक आवश्यकता है, के विरुद्ध कभी कुछ नही कहा। लेकिन वह धार्मिक आडम्बरो का जोरदार विरोध करता था।

के प्रति विनीत सौजन्य से उसे घृणा थी। उसके स्थान पर उसने एक खास रूखापन अपना लिया था। उसने अपने अग्रजो को आदर्शवादी भावुको की भाति बातचीत करते और साथ ही अपने घर की स्त्रियो, बच्चो और गुलामो से असभ्य व्यवहार करते देखा था। इस प्रकार की सस्ती भावुकता के विरुद्ध, जो निकृष्टतम जीवन से समझौता कर सकती थी, वह विद्रोह करता। कला के प्रति भी उसका यही नकारात्मक दृष्टिकोण था। सौन्दर्य, आदर्श, कला कला के लिए, सुन्दरता, आदि की चर्चा, जबकि कला की प्रत्येक वस्तु भूखे किसानो और मजदूरो के शोषण से प्राप्त पैसे से खरीदी जाती है, अथवा तथाकथित 'सौन्दर्य की उपासना' उसकी दृष्टि मे ढकोसला थी और उससे वह घृणा करता था। इस शताब्दी के महान कलाकार टालसटाय ने कला की जो आलोचना की है, उसे निहिलिस्ट ने पहले ही स्पष्ट घोषित किया था, "जूतो की एक जोडी आपकी मैडोनास और शेक्सपीयर-सम्बन्धी सरस चर्चा से कही अधिक महत्वपूर्ण है।"

प्रेमहीन विवाह और मैत्रीहीन हार्दिकता का भी उसने विरोध किया। निहिलिस्ट लडकी, जिसे उसका पिता गुडियो जैसा जीवन व्यतीत करने के लिए किसी सम्पन्न व्यक्ति से विवाह करने को बाध्य कर रहे थे, अपना घर और रेशम के कपडे छोडना अधिक पसन्द करती थी। वह अत्यन्त सादी काली ऊनी पोशाक पहनती, अपने बाल कटा देती ओर अपनी स्वाधीनता सुरक्षित रखने के लिए एक हाई स्कूल मे जाती। जब एक स्त्री देखती कि उसका विवाह अब वास्तव मे विवाह नही रहा, अर्थात् उसके और कानूनी पति के बीच न मैत्री है, न प्रेम, तो वह उस व्यर्थ बन्धन को तोडना अधिक पसन्द करती और इसलिए वह अपने बच्चो के साथ बाहर निकल पडती और निर्धनता अपना लेती। उसे यह एकान्त और कष्ट उस परम्परागत जीवन से अधिक भला लगता, क्योकि उसमे तो जीवन के प्रति झूठ-ही-झूठ था।

निहिलिस्ट के दैनिक जीवन की छोटी-से-छोटी बातो मे सचाई और निष्कपटता थी। सामाजिक व्यवहार की सब परम्पराओ को उसने छोड दिया था और अपनी बात को वह स्पष्ट, बेलाग और कुछ रूखेपन से कहता था।

दो महान रूसी उपन्यासकारो—तुर्गनेव और गोचेरौफ़ ने अपने उपन्यासो मे निहिलिस्ट का चित्रण किया है। गोचेरौफ ने अपने उपन्यास 'प्रैमीपिस' मे इस वर्ग के एक ऐसे व्यवित का चित्रण किया है—जो वास्तव मे उसका सच्चा प्रतिनिधि नही—और उसने निहिलिज्म का व्यग्य चित्र खीच दिया हे। तुर्गनेव महान कलाकार थे और वह स्वय इस वर्ग के प्रशसक थे। इसलिए उनसे व्यग्य चित्र की तो आशा नही की जा सकती, लेकिन उनके द्वारा वैजारोव के चरित्र-चित्रण से भी हम लोगो को सतोप नहीं हुआ। वैजारोव का अपने माता-पिता के प्रति व्यवहार हमे अत्यन्त [illegible] दीखा और फिर उसकी नागरिक कर्तव्यो के प्रति अवहेलना तो [illegible] बहुत बुरी लगी। रूसी युवक तुर्गनेव के नायक की केवल नकारात्मक [illegible] से सन्तुष्ट थे। व्यक्ति के अधिकारो की घोषणा और आडम्बरों [illegible] निहिलिज्म का पहला ही कदम था। उसका वास्तविक [illegible] व्यक्तियो, स्त्रियो और पुरुषो का निर्माण था—[illegible] एक महान उद्देश्य को लिये हुए हो। चर्नेश्वस्की [illegible] किया जाय' मे निहिलिस्टो का चित्रण कही अधि[illegible]

और आत्मोन्नति के लिए छोटे-छोटे समुदायो का निर्माण हो गया था। दर्शनशास्त्र, अर्थशास्त्र और नए रूसी इतिहासकारो की नवीनत रचनाओ का इन केन्द्रो मे विधिवत् अध्ययन किया जाता था और पढने के बाद उन पर वाद-विवाद होता था। यह अध्ययन और वाद-विवाद निरर्थक नही था। उसका उद्देश्य था—उनके सामने जो समस्याए है उन्हे, कैसे हल किया जाय? जनता के लिए वे कैसे उपयोगी हो सकते है? धीरे-धीरे उनकी समझ मे आया कि एक ही रास्ता है—जनता के बीच मे बस जाय, और जनता का जीवन ही अपना ले। हजारो रूसी युवक डाक्टर, अध्यापक, यहातक कि मजदूर, लुहार, बढई आदि के पेशे अपनाकर ग्रामो मे जाकर बस गये और वहा उन्होने किसानो से घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न किया। लडकियो ने शिक्षक परीक्षा पास की अथवा दाई का कार्य सीखा और सैकडो की सख्या मे वे ग्रामो मे बस गई और निर्धनो की सेवा मे लग गई।

इन युवको के मस्तिष्क मे सामाजिक पुनर्निर्माण अथवा क्रान्ति का कोई आदर्श नही था। उनका उद्देश्य तो केवल यही था कि वे किसानो को कुछ शिक्षा दे अथवा उनकी बीमारी मे कुछ सहायता करे और उनके निराशापूर्ण और दुखपूर्ण जीवन मे कुछ प्रकाश और आशा का प्रसार करे। उसके साथ-ही-साथ वे यह भी जानना चाहते थे कि स्वय इन किसानो की आशाए और आकाक्षाए क्या है?

जब मै स्विटजरलैण्ड से लौटा, उस समय यह आन्दोलन जोर से चल रहा था।

: १३ :

चकोव्स्की-केन्द्र

सेण्ट पीटर्सबर्ग पहुचते ही मैने अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-सघ के अपने सस्मरण मित्रो को सुनाये और अपनी पुस्तके उनको दिखलाई। वास्तव

मे वे मेरे मित्र नही थे। मै अपने साथियो से अवस्था मे काफी बडा था, और युवको मे कुछ ही वर्षो का अन्तर घनिष्ठ मित्रता मे बाधक हो जाता है। यहा यह भी लिख देना अनुचित न होगा कि जबसे १८६१ मे विश्व-विद्यालय मे भर्ती के नये नियम लागू किये गए थे, अच्छे युवक, जो स्वाधीन विचारो के थे, विद्यालय से हटा दिये गए थे। मेरी घनिष्ठता केवल एक युवक से थी—उसका नाम डिमिट्री कैलनिटज मान लिया जाय। उसका जन्म दक्षिणी रूस मे हुआ था और यद्यपि उसका नाम जर्मन था, तथापि वह शायद जर्मन बोल भी नही सकता था। उसका चेहरा भी रूसी ही अधिक था। वह अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि का था, उसने खूब पढा था और उसपर गम्भीरतापूर्वक चिन्तन भी किया था। उसे विज्ञान से प्रेम था, विज्ञान के लाभो से भी वह परिचित था। लेकिन, हममे से अधिकाश की भाति, शीघ्र ही वह इस निर्णय पर पहुच गया कि वैज्ञानिक होने के मानी थे भोग-विलास मे लिप्त आदमियो मे शरीक हो जाना। उसने विश्वविद्यालय मे दो वर्ष अध्ययन किया था और उसके वाद उसे छोडकर वह पूर्णत सामाजिक कार्यो मे लग गया। वह किसी तरह अपनी गुजर-बसर करता था। मुझे सन्देह है कि उसके पास रहने के लिए शायद कोई निश्चित स्थान भी था। कभी-कभी वह मेरे पास आता और पूछता—"क्या तुम्हारे पास कुछ कागज है?" और मुझसे कुछ कागज लेकर वह मेज के एक कोने मे बैठ जाता और घटे-दो-घटे बैठकर कुछ अनुवाद-कार्य करता। इस कार्य से उसे जो कुछ मिल जाता, उसीसे अपनी सीमित आवश्यकताओ की पूर्ति कर लेता। पश्चिमी यूरोप मे उससे कही कम योग्य व्यक्ति राजनैतिक अथवा साम्यवादी नेता वन जाता। कैलनिटज के दिमाग मे इस प्रकार के विचार कभी भी नही आये। कोई भी कार्य उसके लिए तुच्छ नही था और यह गुण केवल उसीमे नही था। उस समय विद्यार्थियो के केन्द्रो मे अधिकाश युवक ऐसे ही थे।

मेरे पहुचने के कुछ समय वाद ही कैलनिटज ने मुझे एक केन्द्र का सदस्य वनने के लिए कहा—उस समय युवको मे यह केन्द्र "चकोव्स्की का ममुदाय" के नाम से विख्यात था। इसी नाम से उसने रूस के सामाजिक

आन्दोलन मे महत्वपूर्ण योग दिया और इतिहास मे भी इसी नाम से उसे स्मरण किया जायगा। कैलनिटज ने मुझसे कहा, "अबतक इसके सदस्य अधिकाशत वैधानिक विचारो के रहे है। लेकिन वे अच्छे आदमी है, उनके दिमाग खुले हुए है और वे किसी भी अच्छे विचार का स्वागत करने को तैयार है।" मै चकोव्स्की से पहले से ही परिचित था और इस केन्द्र के कुछ सदस्यो को भी जानता था। प्रथम मिलन मे ही चकोव्स्की ने मुझे अत्यन्त प्रभावित किया और पिछले सत्ताईस वर्षो से हमारी मैत्री दृढतर होती रही है।

इस केन्द्र का आरम्भ बहुत थोडे युवक-युवतियो से हुआ था। ये लोग अपनी स्वय की शिक्षा और उन्नति के लिए इकट्ठे हुए थे। चकोव्स्की का भी उद्देश्य वही था। १८६९ मे नैचैईफ ने जनता के बीच कार्य करने के लिए उत्सुक युवको का एक गुप्त क्रान्तिकारी सगठन चलाने का प्रयत्न किया था। उसके लिए उसने पुराने षडयत्रकारियो के पथ का अनुसरण किया था। युवको मे अपने नेतृत्व को कायम रखने के लिए वह धोखे का भी आश्रय लेने को तत्पर था। इस प्रकार के साधन रूस मे कभी भी सफल नही हो सकते। परिणाम यह हुआ कि शीघ्र ही नैचैईफ का सगठन छिन्न-भिन्न हो गया। उसके सभी सदस्य गिरफ्तार हो गये और रूस के कुछ श्रेष्ठ और अच्छे युवक कुछ भी करने के पहले साइबेरिया भेज दिये गए। आत्म-शिक्षा का यह केन्द्र, जिसके विषय मे मै लिख रहा हू, नैचैईफ के साधनो के विरोध मे निर्मित हुआ था। कुछ मित्रो ने ठीक ही निश्चय किया कि नैतिक दृष्टि से विकसित व्यक्तित्व ही किसी सगठन का आधार हो सकता है, फिर चाहे वह सगठन भविष्य मे कोई भी रूप ले ले और कोई भी कार्य करे। यही कारण था कि चकोव्स्की का केन्द्र शीघ्र ही सम्पूर्ण रूस मे फैल गया और महत्वपूर्ण कार्य कर सका। जब शासन के क्रूर दमन के परिणामस्वरूप सघर्ष क्रान्तिकारी हो गया, तो जारशाही के विरुद्ध लडाई के लिए इसी केन्द्र के प्रतिभाशाली युवक-युवतिया आगे बढे।

लेकिन उस समय १८७२ मे चकोव्स्की का केन्द्र क्रान्ति से बहुत दूर था। वे अच्छी पुस्तको का प्रचार करते। उन्होने लैसेल, बेर्वी, मार्क्स,

आदि लेखको की सम्पूर्ण रचनाए तथा रूसी इतिहासकारो की पुस्तके खरीदी और विभिन्न स्थानो मे उन्हे विद्यार्थियो के बीच वितरित कर दिया। कुछ ही वर्षो मे रूस के अडतीस प्रान्तो मे, कोई ऐसा स्थान नही था, जहा इस केन्द्र के कुछ सदस्य इस प्रकार के साहित्य के प्रचार मे सलग्न न हो। धीरे-धीरे समय की गति के साथ केन्द्र आगे बढा। पश्चिमी यूरोप मे मजदूर-आन्दोलन की प्रगति के प्रभाव मे इस केन्द्र ने शिक्षित युवको मे साम्यवाद का प्रचार किया। फिर एक दिन विद्यार्थी और मजदूर के बीच खाई दूर हो गई और सेण्ट पीटर्सबर्ग और अन्य स्थानो मे मजदूरो से हमारा सीधा सम्पर्क स्थापित हो गया। १८७२ मे जब मै केन्द्र का सदस्य हुआ, यह स्थिति थी।

रूस के सभी गुप्त सगठनो का अत्यन्त क्रूरतापूर्वक दमन किया जाता है। पाश्चात्य जगत के मेरे पाठको को शायद यह जिज्ञासा हो कि इस केन्द्र मे मै कैसे दीक्षित हुआ और मैने क्या शपथे ली। उन्हे निराश होना पडेगा, क्योकि इस केन्द्र मे इस प्रकार की कोई चीज नही थी। इस तरह की विधियो को हम लोग हास्यास्पद ही समझते थे और कैलनिटज तुरन्त ही कोई ऐसा व्यग्य करता कि बात वही खतम हो जाती। केन्द्र की कोई नियमावली भी नही थी। केन्द्र के वही लोग सदस्य हो सकते थे, जो परस्पर भली भाति परिचित थे और जो बिल्कुल असदिग्ध थे। किसी नये सदस्य के भर्ती होने के पहले उसके चरित्र के ऊपर अत्यन्त स्पष्ट और गभीर बहस होती। रचमात्र अहकार अथवा बेईमानी उसकी सदस्यता को रोकने के लिए पर्याप्त थी। केन्द्र-सदस्यो की सख्या को कोई महत्व नही देता था। रूस के युवक और सम्पूर्ण देश के विविध समुदाय, जो विभिन्न कार्य उस समय कर रहे थे, उन्हे सचालित करने का जिम्मा भी हमारे केन्द्र ने नही लिया था।

केन्द्र कुछ मित्रो का समूह मात्र रहा। चकोव्स्की के केन्द्र की मीटिंग मे प्रथम दिन ही मुझे अनेक पुरुषो और स्त्रियो से मिलने का अवसर मिला। अपने जीवन मे उनसे श्रेष्ठतर व्यक्तियो का समूह मुझे नही दीखा।

: १४ :

जन-आन्दोलन

जब मै चकोव्स्की के केन्द्र का सदस्य बना, उसके सदस्य अपने भावी उद्देश्यो और कार्यों के विषय मे बहस कर रहे थे। उनमे से कुछकी राय थी कि शिक्षित युवको मे उदार और साम्यवादी विचारो के प्रचार को जारी रखा जाय। लेकिन अन्य लोगो का विश्वास था कि ऐसे युवको को तैयार किया जाय जो जन-साधारण को सगठित कर सके और इसलिए हमारा कार्यक्षेत्र किसानो और मजदूरो के बीच होना चाहिए। सेण्ट पीटर्सबर्ग और अन्य प्रान्तो मे जो सैकडो केन्द्र उस समय स्थापित थे, उन सबमे इसी भाति की चर्चाए चल रही थी। सभी जगह दूसरे प्रस्ताव को ही मान्यता मिली।

यदि हमारे युवक केवल सैद्धान्तिक साम्यवादी होते, तो वे 'उत्पादन के साधनो पर राजकीय अधिकार' का उद्देश्य बनाकर साम्यवादी सिद्धान्तो की घोषणा करते और सन्तुष्ट हो जाते। साथ ही कुछ राजनैतिक आन्दोलन भी चलाते रहते। पश्चिमी यूरोप और अमरीका मे अनेक मध्यवर्गीय साम्यवादी यह रास्ता अपनाते है। लेकिन हमारे रूसी युवको के लिए साम्यवाद का आकर्षण इससे भिन्न था। वे शास्त्रीय साम्यवादी नही थे। वे तो मजदूरो की भाति रहकर, अपने केन्द्रो मे अपने-पराये के भेदो का अन्त करके और अपने पूर्वजो से विरासत मे प्राप्त सम्पत्ति को तिलाजलि देकर साम्यवादी हुए थे। टाल्सटाय ने युद्ध के प्रति सक्रिय दृष्टिकोण अपनाने के लिए कहा था, अर्थात् फौजी पोशाक पहनते हुए युद्ध की आलोचना करने के बजाय प्रत्येक पुरुष फौज मे भर्ती होने से इकार करदे। यही दृष्टिकोण हम लोगो का पूजीवाद के प्रति था। प्रत्येक रूसी युवक-युवती ने अपने पूर्वजो की सम्पत्ति का उपभोग करने से इकार कर दिया। उनके लिए जनता मे घुल-मिल जाना आवश्यक था। हजारो ही युवक-युवतिया अपने घरबार छोडकर चले आये और विभिन्न कार्य करते हुए

ग्रामो और औद्योगिक नगरो मे बस गये। यह कोई सगठित आन्दोलन नही था। अन्तरात्मा की सहसा जागृति के अवसरो पर इस प्रकार के जन-आन्दोलन स्वत होते है। अनेक छोटे-छोटे समुदाय स्वतन्त्रता और विद्रोह के विचारो का प्रचार करने के लिए सगठित हो गये थे और उसके लिए उन्हे मजदूरो और किसानो के बीच जाना आवश्यक था। अनेक पाश्चात्य लेखको ने 'जनता के बीच चलो' आन्दोलन को विदेशी प्रभाव से उत्पन्न बतलाया है। "सभी जगह विदेशी आन्दोलनकर्ता है"—उस समय यह आम सरकारी धारणा थी। यह सच है कि हमारे रूसी युवको ने बाकूनिन की सशक्त आवाज को सुना था और अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-सघ के आन्दोलन से भी हम लोग अत्यन्त प्रभावित थे, लेकिन इस आन्दोलन का मूल स्रोत और भी गहरा था। 'विदेशी आन्दोलनकर्त्ताओ' के सम्पर्क और अन्तर्राष्ट्रीय सघ की स्थापना से पहले ही हमारा आन्दोलन प्रारम्भ हो चुका था। १८६६ मे कारकोजोव के समुदाय ने उसे आरम्भ किया था। तुर्गनेव को उसका आभास मिला और १८५९ मे उन्होने उस ओर सकेत किया था। चकोवस्की के केन्द्र मे मैने भी उस आन्दोलन को आगे बढाने का भरसक प्रयत्न किया, लेकिन मै तो केवल उस प्रवाह के साथ था, जो व्यक्तियो से कही अधिक शक्तिशाली होता है।

हम लोग अक्सर अपने देश के निरकुश शासक के विरोध मे राजनैतिक आन्दोलन की अनिवार्यता पर चर्चा किया करते थे। हम लोग देखते थे कि मूर्खतापूर्ण और क्रूर टैक्सो से अधिकाश किसान अवश्यम्भावी विनाश की ओर आगे बढ रहे है और टैक्सो को चुकाने के लिए अपने जानवरो को बेचकर वे अपनी स्थिति को और भी बदतर बनाते जा रहे है। हम 'स्वप्न-दर्शियो' को सम्पूर्ण आबादी का पूर्ण विनाश स्पष्ट दीख रहा था। दुर्भाग्य से वह शोचनीय स्थिति आज मध्य रूस मे आ गई है, स्वय रूसी सरकार इसे स्वीकार करती है। हम लोग जानते थे कि किस प्रकार हमारे देश को अत्यन्त बेशरमी से लूटा जा रहा है। अधिकारियो की गैर-कानूनी हरकतो और उनमे से अधिकाश की वहशियाना कार्यवाहियो से भी हम परिचित थे। हम लोग निरन्तर सुनते थे कि किस तरह हमारे मित्रो के

घरो पर रात को पुलिस आक्रमण करती थी, जेलो से वे गायब कर दिये जाते थे और बाद मे हमे मालूम पडता कि बिना किसी तरह के मुकदमे के वे लोग रूस के किसी दूरस्थ प्रदेश मे भेज दिये जाते थे। हमारे राष्ट्र की सर्वश्रेष्ठ बौद्धिक प्रतिभा को इस प्रकार कुचला जा रहा था, इसके विरुद्ध राजनैतिक आन्दोलन को हम आवश्यक मानते थे। लेकिन हमे इस प्रकार के सघर्ष के लिए कही कानूनी या अर्धकानूनी गुजाइश नही दीखती थी।

हमारे अग्रजो को हमारी साम्यवादी प्रवृतिया नापसन्द थी और हम उन्हे छोड नही सकते थे। यदि हम लोग उन्हे छोड भी देते तो भी कुछ लाभ नही था। सभी युवको को सरकार 'सन्देह' की दृष्टि से देखती थी, और इसलिए पुरानी पीढी के लोग उनसे कोई सम्पर्क रखने मे डरते थे। जनतत्रवादी प्रवृत्तियो का प्रत्येक युवक अथवा उच्च शिक्षा प्राप्त प्रत्येक युवती राजकीय पुलिस की दृष्टि मे खतरनाक थे और कैटकोव उन्हे राज्य का दुश्मन मानता था। कटे हुए बाल और नीला चश्मा पहने हुए लडकी, अथवा ओवरकोट के बजाय मोटा ऊनी कपडे पहने हुए विद्यार्थी—राज्य की दृष्टि मे 'अविश्वसनीय' थे। अगर किसी विद्यार्थी के निवास-स्थान पर अन्य विद्यार्थी आते, तो पुलिस उसके निवास पर छापे मारती और तलाशी लेती। कुछ विद्यार्थियो के निवासस्थानो पर पुलिस के ये रात के छापे और तलाशिया इतने साधारण हो गये थे कि कैलनिटज ने एक बार एक पुलिस अफसर से मजाक मे कहा था, "हर बार तलाशी लेते समय आप क्यो हमारी सब पुस्तके देखते है? आप उनकी एक सूची बना लीजिये। फिर प्रति माह आकर आप देख ले कि वे पुस्तके अलमारी मे है कि नही। कभी-कभी नई पुस्तके देखने पर आप उन्हे भी सूची मे जोड सकते है।" रचमात्र भी राजनैतिक सन्देह पर किसी युवक को स्कूल से हटाकर वर्षो तक जेल मे रखा जा सकता था और अन्तत उसे 'अनिश्चित अवधि के लिए' (यह शब्द सरकार के है) किसी दूरस्थ प्रदेश को भेजा जा सकता था। जब चकोव्स्की का केन्द्र केवल सरकारी सेन्सर से पासशुदा पुस्तके वितरित करता था, चकोव्स्की को दो बार गिरफ्तार किया गया और उन्हे चार-छ. मास के लिए जेल मे बन्द कर दिया गया। दूसरी बार तो उनकी

भी बदतर थी। फिर इन सस्थाओ के आधार पर राजनैतिक आन्दोलन कैसे चल सकता था ?

जब मै अपने पिताजी की तैम्बोव की जागीर का स्वामी हुआ, मेरे मन मे आया कि वही बसकर स्थानीय शासन सस्था के द्वारा किसानो की सेवा करू। कुछ किसानो और निर्धन पादरियो ने मुझे इसके लिए प्रोत्साहित किया। जहातक मेरा प्रश्न था, जो कुछ भी सेवा मुझसे बन पडती, उससे सन्तुष्ट हो जाता, यदि उसके द्वारा किसानो का कुछ भी हित हो सके। लेकिन एक दिन जब मेरे अनेक मित्र इकट्ठे थे, मैने उनसे पूछा—"मान लो, मै स्कूल चलाऊ, एक कृषि फार्म स्थापित करू, एक सहकारी-समिति सगठित करू और उसके साथ-ही-साथ अपने गाव के निजी किसान की, जिसे निरपराध ही तग किया जा रहा है रक्षा का भार भी अपने ऊपर लू ? क्या शासन यह सब कार्य मुझे करने देगा ?" "कभी नही"—सबने सर्वसम्मत उत्तर दिया था।

एक वृद्ध पादरी, जो आसपास के इलाके मे बहुत सम्मानित थे, कुछ दिन बाद मेरे पास विद्रोही विचारो के दो नेताओ को लेकर आये। उन्होने मुझसे कहा—"इन दोनो से बातचीत कीजिये। अगर तुमसे बन सके, तो इनके साथ जाओ और बाइबिल हाथ मे लेकर धार्मिक प्रवचन दो यह तो तुम जानते ही हो कि तुम क्या शिक्षा दोगे। अगर ये लोग तुम्हे छिपा ले तो ससार की कोई भी पुलिस तुम्हारा पता नही पा सकेगी इसके अतिरिक्त तुम और कुछ नही कर सकते। एक वृद्ध आदमी की तुम्हे यही राय है।" मैने उनसे स्पष्ट कह दिया कि विकलिफि (धार्मिक नेता) का कार्य करना मेरी रुचि के अनुकूल नही।

हमारे केन्द्र मे एक राजनैतिक आन्दोलन की आवश्यकता पर निरन्तर चर्चा होती रहती थी, लेकिन उसका कोई परिणाम नही निकलता था। समाज के सम्पन्न वर्ग का रुख इस ओर नितान्त लापरवाही और उपेक्षा का था। युवको मे दमन के कारण उद्विग्नता तो थी, लेकिन वह उस हद तक नही पहुची थी, जो छः-सात वर्ष पश्चात आतकवाद मे परिणत हो गई। इतना ही नही, यह इतिहास का एक अत्यन्त दुखद तत्व है कि जिन युवको

"यह सच नही हो सकता, यह तो शेखचिल्ली की गप है।" लेकिन यह सोलहो आना सच है। अनेक स्वायत्त शासन सस्थाओ के निर्वाचित सदस्य अपने पदो से हटा दिये गए, अपने प्रान्तो से निर्वासित कर दिये गए। उनका दोप केवल यही था कि उन्होने अत्यन्त भक्तिपूर्वक सम्राट से उन अधिकारो की याचना की थी जो कानून ने इन सस्थाओ को दिये थे। "प्रान्तीय परिषदों के निर्वाचित सदस्य आज्ञाकारी सेवक होने चाहिए और उन्हे गृहमत्री की आज्ञा माननी चाहिए।" सेण्ट पीटर्सवर्ग के शासन की यह दृढ आस्था थी। जहातक स्थानीय सस्थाओ मे कार्य करनेवाले साधारण कोटि के मनुष्यो—अध्यापक, डाक्टर आदि का सम्वन्ध था, वे तो केवल केन्द्रीय शासन के सर्वशक्तिमान पुलिस के दस्ते के एक हुक्म पर ही चौवीस घण्टे के भीतर निर्वासित किये जा सकते थे। कुल एक वर्ष पहले की घटना है। एक महिला ने, जिसके पति एक सम्पन्न जमीदार है और एक प्रान्तीय सभा मे प्रमुख स्थान रखते है और जो स्वय शिक्षा मे रुचि रखती है, अपने जन्म-दिवस की पार्टी मे आठ अध्यापको को निमत्रित किया। उन्होने अपने मन मे सोचा था—"बेचारो को किसानो के अतिरिक्त किसीसे मिलने का अवसर ही नही मिलता।" पार्टी के अगले दिन उनके मकान पर गाव का सिपाही आया और उन आठो अध्यापको के नाम बतलाने के लिए उनपर दवाव डालने लगा। उस महिला ने नाम वतलाने से इकार कर दिया। उस सिपाही ने उत्तर दिया—"कोई वात नही। मैं उनके नाम किसी तरह मालूम कर लूगा और अपनी रिपोर्ट भेज दूगा। अध्यापक किसी भी हालत मे इकट्ठे नही हो सकते और यदि वे इकट्ठे हुए है तो इसकी रिपोर्ट करना मेरा कर्त्तव्य है।" उक्त महिला की इज्जत के कारण इस झमेले मे अध्यापको की रक्षा हो गई। लेकिन यदि वे किसी अध्यापक के यहा एकत्रित हुए होते, तो पुलिस उनके यहा पहुचती और उनमे से आधे शिक्षा-मत्रालय द्वारा वर्खास्त कर दिये गए होते। अगर कही उनमे से किसीकी पुलिस से कहा-सुनी हो जाती, तो उसे दूरस्थ प्रदेश के लिए निर्वाचित कर दिया जाता। यह तो आज, स्वायत्त शासन सस्थाओ के तैतीस वर्ष चालू रहने के पश्चात, होता है। उस समय—१८७० के लगभग—तो स्थिति और

भी बदतर थी। फिर इन सस्थाओ के आधार पर राजनैतिक आन्दोलन कैसे चल सकता था ?

जब मै अपने पिताजी की तैम्बोव की जागीर का स्वामी हुआ, मेरे मन मे आया कि वही बसकर स्थानीय शासन सस्था के द्वारा किसानो की सेवा करू । कुछ किसानो और निर्धन पादरियो ने मुझे इसके लिए प्रोत्साहित किया। जहातक मेरा प्रश्न था, जो कुछ भी सेवा मुझसे बन पडती, उससे सन्तुष्ट हो जाता, यदि उसके द्वारा किसानो का कुछ भी हित हो सके। लेकिन एक दिन जब मेरे अनेक मित्र इकट्ठे थे, मैने उनसे पूछा—"मान लो, मै स्कूल चलाऊ, एक कृषि फार्म स्थापित करू, एक सहकारी-समिति सगठित करू और उसके साथ-ही-साथ अपने गाव के निजी किसान की, जिसे निरपराध ही तग किया जा रहा है रक्षा का भार भी अपने ऊपर लू ? क्या शासन यह सब कार्य मुझे करने देगा ?" "कभी नही"—सबने सर्वसम्मत उत्तर दिया था।

एक वृद्ध पादरी, जो आसपास के इलाके मे बहुत सम्मानित थे, कुछ दिन बाद मेरे पास विद्रोही विचारो के दो नेताओ को लेकर आये। उन्होने मुझसे कहा—"इन दोनो से बातचीत कीजिये। अगर तुमसे बन सके, तो इनके साथ जाओ और बाइबिल हाथ मे लेकर धार्मिक प्रवचन दो . यह तो तुम जानते ही हो कि तुम क्या शिक्षा दोगे। अगर ये लोग तुम्हे छिपा ले तो ससार की कोई भी पुलिस तुम्हारा पता नही पा सकेगी इसके अतिरिक्त तुम और कुछ नही कर सकते । एक वृद्ध आदमी की तुम्हे यही राय है।" मैने उनसे स्पष्ट कह दिया कि विकलिफि (धार्मिक नेता) का कार्य करना मेरी रुचि के अनुकूल नही।

हमारे केन्द्र मे एक राजनैतिक आन्दोलन की आवश्यकता पर निरन्तर चर्चा होती रहती थी, लेकिन उसका कोई परिणाम नही निकलता था। समाज के सम्पन्न वर्ग का रुख इस ओर नितान्त लापरवाही और उपेक्षा का था। युवको मे दमन के कारण उद्विग्नता तो थी, लेकिन वह उस हद तक नही पहुची थी, जो छः-सात वर्ष पश्चात आतकवाद मे परिणत हो गई। इतना ही नही, यह इतिहास का एक अत्यन्त दुखद तत्व है कि जिन युवकों

को जार ने हजारो की सख्या मे कठिन परिश्रम और अन्तत मृत्यु के लिए निर्वासित किया था, उन्होने १८७१ से १८७८ तक उसकी रक्षा की। साम्यवादी केन्द्रो की शिक्षा ही ऐसी थी कि कारकोजोव द्वारा जार के जीवन पर आक्रमणवाली घटना की पुनरावृत्ति नही हो सकती थी। उस युग की घोषणा थी—"रूस मे मजदूरो और किसानो के बीच मे साम्यवादी जन-आन्दोलन की तैयारी करो। जार और उसके मत्रियो की चिन्ता मत करो। अगर इस तरह का आन्दोलन प्रारम्भ होता है और यदि उस जन-आन्दोलन मे किसान जमीन पर कब्जा करने और गुलामी प्रथा के टैक्स न देने के लिए शामिल हो जाते है तो जार की सरकार तुरन्त ही पूंजीपतियो और सामन्तो का सहयोग प्राप्त करने और पार्लमेंट बुलाने को तत्पर हो जायगी।

इसके अतिरिक्त कुछ तत्व और भी थे। कुछ अन्य व्यक्ति अनुभव कर रहे थे कि जार प्रतिदिन अधिकाधिक प्रतिक्रियावादी होता जा रहा था और उसके साथ-ही-साथ वे युवराज की 'उदार भावनाओ' पर आशा लगाए थे। यह कोई नई बात नही थी। वास्तव मे गद्दी के सभी युवराजो को उदार समझा जाता है। ये सदस्य कारकोजोव का अनुसरण करने की बात दुहराते थे। लेकिन केन्द्र मे इस विचारधारा का जबर्दस्त विरोध था। मैं अब सत्य का उद्घाटन कर दू, जो अबतक प्रकाशित नही हुआ। दक्षिणी प्रान्तो से एक युवक जार की हत्या करने के निश्चित उद्देश्य से सेण्ट पीटर्सबर्ग आया था। चर्कोव्स्की केन्द्र के कुछ सदस्यो को जब यह बात मालूम हुई तो उन्होने उस युवक को भरसक समझाने की कोशिश की। फिर भी जब वह अपने निश्चय पर दृढ रहा तो उन्होने उससे कह दिया कि उसपर निरन्तर निगरानी रखी जायगी और जबरन उसे इस कार्य से रोका जायगा। उस समय शीतकालीन महल बहुत सुरक्षित नही था। इसलिए मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन्ही लोगो ने जार के जीवन की रक्षा की। उस समय वे लोग हिंसात्मक युद्ध के इतने विरोधी थे? बाद को जब उनके कष्ट असहनीय हो गये तभी उन्होने हिंसात्मक साधनो का प्रयोग किया।

: १५ :

मजदूरों में कार्य

चकोव्स्की के केन्द्र मे मैने गिरफ्तारी के पूर्व दो वर्ष कार्य किया। इन दो वर्षो ने मेरे विचारो और सम्पूर्ण जीवन पर गहरी छाप छोडी है। वे वर्ष बडे ही जोर से काम के थे, उनमे जीवन का उल्लास था, पूर्ण प्रस्फुटन था और था जीवन का वास्तविक आनन्द। वह कुटुम्ब था—उसके सभी सदस्य इतने उदार और मानवीय भावनाओ से परिपूर्ण थे कि मुझे ऐसी एक भी घटना का स्मरण नही जब हम लोगो मे कोई मनमुटाव हुआ हो। जिन्हे कभी राजनैतिक आन्दोलन का अनुभव रहा होगा, वे ही मेरे इस कथन का महत्व समझ सकते है।

अपने वैज्ञानिक जीवन को पूर्णत तिलाजलि देने के पहले मैने उचित समझा कि मै भोगोलिक सस्था के प्रति अपने कर्तव्यो को पूरा कर दू, अर्थात भूगोल परिषद के लिए अपनी फिनलैण्ट-यात्रा के अनुभवो की रिपोर्ट तैयार कर दू। उसके कुछ अन्य कार्य भी, जो मेरे हाथ मे थे, पूरे करने था। केन्द्र के सदस्यो ने मेरे इस निर्णय से पूर्ण सहमति प्रकट की। इसलिए मै भूगोल और भूतत्व की अपनी पुस्तको को पूरा करने मे लग गया।

हमारे केन्द्र की मीटिगे अक्सर हुआ करती थी। मै प्रत्येक मे शामिल होता था। उस समय हम लोग सेण्ट पीटर्सबर्ग के नजदीक एक छोटे-से मकान मे एकत्र होते थे। सोफी पैरोव्स्काया (यह उसका छद्म नाम था), कारीगर की स्त्री के रूप मे जिसके पास जाली पासपोर्ट था, उस मकान की तथाकथित किरायेदार थी। उसका जन्म एक कुलीन परिवार में हुआ था और उसके पिता सेण्ट पीटर्सबर्ग के फौजी शासक रहे थे। लेकिन वह अपनी माता की अनुमति से घर छोडकर हाई स्कूल मे दाखिल हो गई थी और एक सम्पन्न व्यापारी की तीन पुत्रियो के सहयोग से उसने आत्म-शिक्षा का छोटा-सा केन्द्र स्थापित किया था। वही बाद मे हमारे केन्द्र मे परिणत हो गया।

कारीगर की पत्नी के रूप मे, सादी सूती पोशाक और पुरुषो के जूते पहने, सिर पर सूती रूमाल बाधे और नेवा नदी से अपने कधो पर पानी लाते हुए देखकर अब उसको पहचानना भी मुश्किल था कि यही लडकी कभी राजधानी की अत्यन्त शानदार गोष्ठियो की केन्द्र थी। हम सभी उसे सम्मान की दृष्टि से देखते थे। जब हम देहाती जूते पहने हुए दलदल मे चलकर उसके यहा पहुचते तो कभी-कभी वह अपना असन्तोष और क्रोध व्यक्त करती। उस समय उसके सुन्दर चेहरे पर गम्भीरता आ जाती। अपने नैतिक विचारो मे वह तपस्विनी थी, लेकिन उपदेश देना उसका स्वभाव नही था। जब वह किसीके आचरण से असन्तुष्ट होती, तो वह केवल उसपर गम्भीर दृष्टि डालती, लेकिन उस दृष्टि मे व्यक्त होती थी उसकी उदारता और मानव-सुलभ कमजोरियो के लिए क्षमाशीलता। केवल एक बात मे वह अविचल थी। उसने एक बार एक व्यक्ति के विषय मे कहा था "स्त्री योग्य पुरुष", और जिस भाव-भगिमा से अपना कार्य करते हुए उसने ये शब्द कहे थे, मेरी स्मृति मे आज भी ताजे है।

पैरोव्स्काया अपने अन्त करण से जनतत्री भावनाओ से ओतप्रोत थी। उसके साथ-ही-साथ वह सच्ची क्रान्तिकारिणी थी। मजदूरो और किसानो के बीच कार्य करने के लिए उसने उन्हे काल्पनिक गुणो से विभूषित नही किया था। उनकी वास्तविकता से वह परिचित थी। उसने एक बार मुझसे कहा था, "हम लोगो ने एक महान कार्य प्रारम्भ किया है। शायद उसे पूरा करने मे दो पीढिया लग जायगी। लेकिन फिर भी उसे करना ही है।"

फासी के तख्ते पर चढने के कुछ समय पहले उसने जो पत्र अपनी माता के नाम लिखा था, वह इतिहास मे अनुपम है और एक स्त्री के कोमल और स्नेहपूर्ण उद्गारो का सर्वोत्कृष्ट रूप है।

निम्नलिखित घटना से स्पष्ट हो जायगा कि हमारे केन्द्र की अन्य महिलाए किस प्रकार की थी। एक रात कुप्रयानोव और मै एक आवश्यक सूचना देने पारवारा वी० नामक एक सदस्या के यहा गये। आधी रात का समय था। हम लोग ऊपर चढे। वह अपने छोटे कमरे मे बैठी थी और

मेज पर हमारे केन्द्र के प्रोग्राम की प्रतिलिपि करने मे व्यस्त थी। हम लोग जानते थे कि वह कितनी दृढप्रतिज्ञ है। हमे एक भद्दा मजाक करने की सूझी, जो पुरुष वर्ग कभी-कभी साधारणत कर बैठता है। "बी०" मैने कहा, "हम आपको लेने आये है, हम लोग अपने मित्रो को किले से छुडाने का प्रयत्न करेगे।" उसने कोई प्रश्न नही किया। तुरन्त उसने अपनी कलम रख दी, कुर्सी से उठी और कहा, "चलो, चले।" उसने यह बात इतनी सरलता से कही कि मै अपनी मूर्खता पर लज्जित हो गया और उससे सच बात कह दी। वह अपनी कुर्सी पर बैठ गई, उसकी आखो मे आसू आ गये ओर अत्यन्त करुण स्वर मे उसने कहा, "क्या यह केवल मजाक था ? आप इस तरह के मज़ाक क्यो करते है ?"

हमारे केन्द्र के एक अन्य लोकप्रिय सदस्य सर्गी क्रेव्शिन्सकी थे, जो इग्लैण्ड और अमरीका मे स्टैपनियाक के नाम से अत्यन्त सुप्रसिद्ध हुए। उन्हे हम लोग 'बालक' कहते थे, अपनी रक्षा के प्रति वह बहुत लापरवाह थे, लेकिन इस लापरवाही के मूल मे उनकी पूर्ण निर्भयता थी। एक ऐसे आदमी के लिए, जिसके पीछे पुलिस पडी है, अन्तत यही सर्वश्रेष्ठ नीति है। शीघ्र ही वह अपने वास्तविक नाम सर्गी के रूप मे मजदूरो के बीच कार्य करने के लिए प्रसिद्ध हो गये। पुलिस उनके पीछे थी। इतने पर भी उन्होने अपनेको छिपाने के लिए कोई प्रयत्न नही किया। मुझे स्मरण है कि एक दिन मीटिग मे उनकी मूर्खता के लिए बहुत डाटा भी गया था। मीटिग मे वह अक्सर देर ही से आते, क्योकि उन्हे बहुत दूर का फासला चलकर आना पडता था। एक दिन वह किसानो की तरह भेड की खाल ओढे मुख्य सडक पर वडी तेजी से दौडते हुए आये। उन्हे डाटकर कहा गया, "तुमने ऐसा किया क्यो ? तुमपर सन्देह हो सकता था और साधारण चोर समझकर गिरफ्तार हो सकते थे।" लेकिन जहा अन्य व्यक्तियो की सुरक्षा का प्रश्न आता वह अत्यन्त सजग थे।

हम लोगो का घनिष्ठ परिचय स्टेनली की प्रसिद्ध पुस्तक 'मैने लिविगस्टोन को कैसे ढूढा' से प्रारम्भ हुआ। एक दिन हमारी मीटिग रात के बारह बजे तक चलती रही, हम लोग उठने ही वाले थे कि एक लड़की ने एक

किताब हाथ मे लिये प्रवेश किया और पूछा कि क्या हम लोगो मे से कोई उस मुद्रित पुस्तक के १६ पृष्ठो का अगले दिन सुबह ८ बजे के पहले अनुवाद कर सकेगा ? मैंने स्टेनली की पुस्तक के पृष्ठो को देखा और कहा कि यदि कोई सहायक हो, तो काम रात मे ही पूरा हो सकता है। सर्गी ने अपनी सेवाए अर्पित की और हम लोगो ने मिलकर प्रात चार बजे तक १६ पृष्ठो का अनुवाद कर दिया। उसके बाद हमने दलिया, जो हमारे लिए छोड दिया गया था, खाया और घर के लिए रवाना हुए। उस रात से हम लोग घनिष्ठ मित्र हो गये।

मै सदैव ही ऐसे मनुष्यो का प्रशसक रहा हू, जो डटकर कार्य करने की क्षमता रखते हो। इसलिए अनुवाद-कार्य मे सर्गी की लगन ने मुझे अत्यन्त प्रभावित किया। बाद को जब मै उनके अधिक सम्पर्क मे आया तो उनके युवकोचित उत्साह, प्रतिभा, सरलता, सचाई, साहस और दृढता को देखने का अवसर मिला। उन्होने पढा था, और खूब चिन्तन किया था। सघर्ष के क्रान्तिकारी रूप के विषय मे हम दोनो के विचार एक-से ही थे।

१८७४ मे जनवरी अथवा फरवरी की बात है। मै मास्को मे अपने पुराने मकान मे ठहरा था। एक दिन प्रात काल मुझे सूचना मिली कि एक किसान मुझसे मिलना चाहता है। मै बाहर निकला और देखता क्या हू कि सर्गी खडे है। वह अभी ही त्वेर से भागकर आये थे। एक साथी रोगशौव के साथ वह लकडी चीरनेवालो के भेष मे देहात मे घूम रहे थे। काम बहुत मुश्किल था, लेकिन दोनो उसे ठीक तरह कर रहे थे और किसी-के लिए उन्हे पहचानना मुश्किल था। वह इस रूप मे लगभग पन्द्रह दिन तक घूमते रहे। किसीने उनपर सन्देह नही किया और वह निरन्तर अपना प्रचार-कार्य करते रहे। सर्गी को सम्पूर्ण बाइबिल कठस्थ थी। कभी वह धार्मिक उपदेशक के रूप मे किसानो को बाइबिल से उद्धरण देकर उपदेश देते कि उन्हे विद्रोह कर देना चाहिए, कभी वह अर्थशास्त्रियो की युक्तियो से उन्हे समझाते। किसान पूर्ण श्रद्धा से उनकी बाते सुनते, घर ले जाते और भोजन भी कराते। पन्द्रह दिन के भीतर ही उन्होने कुछ गावो मे खलबली मचा दी। उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैलने लगी। वृद्ध और युवक

किसान उनके विषय मे आपस मे चर्चा करने लगे। वे कहने लगे कि शीघ्र ही जमीदारो से जमीन छिन जायगी और उन्हे जार से पेशन मिलेगी। गाव के युवक पुलिस अधिकारियो से स्पष्टत कहने लगे, "कुछ समय और ठहरो। हमारा समय आने ही वाला है। तुम्हारा शासन अब कुछ ही दिन का और है।" लेकिन इन लकडी चीरनेवालो की ख्याति शीघ्र ही एक पुलिस अधिकारी तक पहुची और वे गिरफ्तार हो गये। आज्ञा हुई कि उन्हे दस मील दूर पर स्थित उच्च पुलिस अधिकारी के पास ले जाया जाय।

वह अनेक किसानो की निगरानी मे ले जाये जा रहे थे। मार्ग मे एक गाव पडता था। वहा एक उत्सव हो रहा था। गाव के किसान समारोह मे पी रहे थे। उन्होने कहा—"कैदी है? कोई बात नही, यहा आइये।" उन सबको दिन-भर गांव मे रखा गया। किसान उन्हे घर-घर ले गये और घरेलू शराब से उनका खूब स्वागत हुआ। गार्डों को मनचाहा अवसर मिला। उन्होने खूब शराब पी ओर अनुरोध किया कि कैदियो को भी पिलाई जाय। सर्गी ने सुनाया—"सौभाग्यवश उन्होने लकडी के इतने बडे गिलासो मे शराब दी कि मै गिलास के किनारे पर मुह लगाये रहता और कोई नही भाप पाता कि मैने कितनी पी। रात होते-होते पुलिस गार्ड बिलकुल धुत हो गये। वे इस हालत मे पुलिस अधिकारी के सामने उपस्थित हो नही सकते थे, इसलिए उन्होने उसी गाव मे रात बिताने की सोची। सर्गी किसानो से बाते करते रहे। जब वे लोग सोने जा रहे थे, एक युवक किसान ने सर्गी के कान मे कहा—"जब मै फाटक वन्द करने जाऊंगा, तो ताला नही लगाऊंगा।" सर्गी और उसके साथी उसका मतलव समझ गये और जैसे ही वे लोग सोये, वे दोनो बाहर आ गये। वे तेज दौडे और प्रातःकाल ५ वजे तक गाव से बीस मील दूर निकल आये थे। वहा से उन्होने पहली रेल पकडी और मास्को पहुच गये। इसके बाद सर्गी वही रहे और उन्होने केन्द्र का कार्य सभाल लिया। बाद मे जब सेण्ट पीटर्सबर्ग मे हम सब लोग गिरफ्तार हो गये थे, उनके अधीन मास्को का केन्द्र आन्दोलन का मुख्य स्तम्भ था।

जगह-जगह ग्रामो मे प्रचारक विभिन्न रूपो मे बस गये थे। लुहारो

की दूकाने खोल ली थी, कुछने छोटे फार्म स्थापित कर लिये थे। सम्पन्न घरानो के युवक दूकानो मे अथवा खेतो पर काम करते थे और इस प्रकार मजदूरो से निरन्तर सम्पर्क रखते थे। सम्पन्न घरो की कुछ लडकियो ने, जो जूरिक विश्वविद्यालय मे अध्ययन कर चुकी थी, एक दूसरा सगठन स्थापित कर रखा था। वे सूती मिलो मे मजदूर के रूप मे भी भर्ती हो गई। वहा वे प्रतिदिन चौदह सोलह घण्टे कार्य करती और मजदूरो की गन्दी बस्ती मे अन्य मजदूरो की भाति ही कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करती थी। वास्तव मे यह एक महान आन्दोलन था। इसमे कम-से-कम दो-तीन हजार व्यक्तियो ने भाग लिया और उसके लगभग दो-तीन गुने व्यक्तियो ने सक्रिय कार्य-कर्ताओ को विभिन्न भाति से सहयोग दिया। इनमे से लगभग आधे व्यक्तियो से सेण्ट पीटर्सबर्ग का हमारा केन्द्र नियमित पत्र-व्यवहार द्वारा सम्पर्क रखता था और यह सकेत लिपि मे ही होता था।

रूस मे साम्यवाद का नाम लेने पर भी रोक थी, इसलिए रूस मे प्रकाशित साहित्य हमारे प्रचार-कार्य के लिए यथेष्ट नही था। हमने विदेश मे अपना एक प्रेस कायम किया। मज़दूरो और किसानो के लिए छोटी-छोटी पुस्तिकाओ की आवश्यकता थी। हमारे केन्द्र की "साहित्यिक उपसमिति" पर, जिसका मै सदस्य था, इन पुस्तिकाओ की तैयारी का भार डाला गया। सर्गी ने दो पुस्तिकाए लिखी—एक चलती शैली मे और दूसरी साम्यवाद के विषय मे बच्चो के लिए कहानियो की शैली मे। दोनो ही अत्यन्त लोकप्रिय हुई। पुस्तक-पुस्तिकाए जो विदेश मे छपती थी, हजारो की सख्या मे रूस मे अवैध रूप से लाई जाती, विशेष स्थानो मे रखी जाती और फिर विभिन्न स्थानीय केन्द्रो को भेजी जाती। वहा से वे मजदूरो और किसानो के बीच वितरित होती। इस सब कार्य के लिए बडे सगठन की आवश्यकता थी। यात्रा बहुत करनी पडती। पत्र-व्यवहार भी बहुत था, विशेषत अपने सहायको और पुस्तके रखनेवालो को पुलिस से बचाने के लिए। विभिन्न प्रान्तीय केन्द्रो के लिए अलग-अलग सकेत लिपिया थी। इन सकेतो के स्थिर करने मे बहुधा छह-सात घटे लग जाते।

हमारी मीटिंगो का वातावरण बडा सौहार्दपूर्ण था। अध्यक्ष तथा अन्य

औपचारिकताए रूस की प्रवृत्ति के प्रतिकूल है और उनसे हम लोग पूर्णत मुक्त थे। यद्यपि हमारे वादविवाद काफी गरम होते थे, विशेषत कार्यक्रम के प्रश्नो पर, लेकिन हम लोग पश्चिमी पद्धति की औपचारिकता के बिना अपना कार्य सुगमता से चला लेते थे। हार्दिक भावो की अभिव्यक्ति, पारस्परिक सामजस्य की भावना और बाह्य प्रदर्शनो का नितान्त अभाव ही हमारी मीटिगो के सफल सचालन के कारण थे। अक्सर मीटिगो के दौरान मे हम लोग भोजन करते। जौ की रोटी, थोडा पनीर और प्यास बुझाने के लिए काफी मात्रा मे हलकी चाय--यही हमारा भोजन था। यह बात नही कि हमारे पास पैसे की कमी हो। पैसा तो काफी था, लेकिन वह छपाई के खर्चे के लिए, पुस्तको को लाने-ले जाने और मित्रो को पुलिस के चगुल से बचाने और नई-नई योजनाओं मे ही व्यय होता था।

सेण्ट पीटर्सबर्ग के मजदूरो मे शीघ्र ही हमारा विस्तृत परिचय हो गया। सर्डूकौव ने, जो सुशिक्षित युवक था, अनेक इजीनियरो से घनिष्ठता स्थापित कर ली। इनमे से अधिकाश इजीनियर तोपखाने के एक राजकीय कारखाने मे काम करते थे। उसने उनके बीच लगभग तीस सदस्यो का केन्द्र स्थापित कर लिया था। इन इजीनियरो को अच्छा-खासा वेतन मिलता था। उनमे से जो अविवाहित थे, वे तो काफी सम्पन्न थे। शीघ्र ही साम्यवादी साहित्य और नवीन विचारधाराओ का उन्हे ज्ञान हो गया। बकिल, लासेल, मिल, ड्रेपर, स्पील हेगन की रचनाओ से वे परिचित हो गये, साधारण विद्यार्थियो की भाति ही वे इनका अध्ययन कर रहे थे। बाद को कैलनिट्ज सर्गी और मै इस केन्द्र मे शामिल हो गये। हम लोग अकसर इस केन्द्र मे जाते और उनके बीच मे अनेक विषयो पर बोलते। हमे आशा थी कि कभी आगे चलकर ये इजीनियर साधारण मजदूरो के बीच अच्छा प्रचार करेगे। लेकिन अन्त मे हमे निराशा हुई। किसी स्वाधीन देश मे ये लोग सार्वजनिक मीटिगो के भाषणकर्त्ता हो जाते, लेकिन जिनेवा मे घडी बनानेवालो के बीच ऊची मजदूरी पानेवाले मजदूरो की भाति ये भी साधारण मजदूरो को घृणा की दृष्टि से देखते थे और साम्यवाद के लिए त्याग करने की भावना उनमे नही थी। बहुत बाद

को जब वे गिरफ्तार हो गये और तीन-चार वर्ष जेलो मे वन्द रखे गये, क्योकि उन्होने साम्यवादी विचार रखने का दुस्साहस किया था और इस प्रकार जब उन्होने रूसी तानाशाही का स्वयं अनुभव किया, तब उनमे से कुछ राजनैतिक आन्दोलनकर्त्ता और क्रान्तिकारी वन गये।

मेरी रुचि विशेपत. बनकरो और सूती मिलो मे काम करनेवाले मजदूरो मे थी। सेण्ट पीटर्सबर्ग मे ये लोग हजारो की सख्या मे है। वहा वे शीत ऋतु मे काम करते है और गर्मियो के तीन महीनो के लिए अपने खेतो पर काम करने के लिए अपने गावो को लौट जाते है। वे आधे किसान और आधे मजदूर थे। शीघ्र ही उनके बीच हमारा आन्दोलन फैल गया। शीघ्र ही वुनकरो ने हमारा परिचय बढइयो, कारीगरो आदि के समूहो से करा दिया। इनमे से कुछ समूहो मे सर्गी कैलन्ट्ज और हमारे दो अन्य साथी घुलमिल गये, और वहा रात-रात-भर साम्यवाद की चर्चा करते रहते। इसके अतिरिक्त हमारे कुछ सहायको ने सेण्ट पीटर्सबर्ग के विभिन्न भागो मे कुछ कमरे ले रखे थे। वहा हर रात को दस-बारह मजदूर आते, लिखने-पढने का कुछ अभ्यास करते और फिर उसके बाद बातचीत करते। समय-समय पर हममे से कोई अपने इन मजदूर मित्रो के गावो को जाते और वहा दो-तीन सप्ताह तक किसानो के बीच खुलकर प्रचार करते। यह तो स्वाभाविक ही था कि हममे जो लोग इन मजदूरो के बीच काम करते, वे उन्ही जैसे किसानी कपडे पहनते थे। रूस मे शिक्षितो और किसानो मे इतना भेद है और उनके बीच सम्पर्क इतना कम है कि यदि शहरी पोशाक पहने कोई व्यक्ति गाव मे पहुच जाय तो सारे गाव का ध्यान उस ओर चला जाता है। शहर मे भी यदि कोई व्यक्ति, जिसकी पोशाक और बोलचाल मजदूरो जैसी नही है, मजदूरो के साथ घूमे, तो तुरन्त पुलिस का सन्देह उसपर हो जाता है। कभी-कभी मुझे वडे आदमियो के यहा भोज पर जाना होता, अथवा अपने एक मित्र से मिलने शीतकालीन महल जाता। उसके बाद मै तुरन्त गाडी करके शहर से दूर एक गरीब विद्यार्थी के यहा पहुचता। वहा कीमती वस्त्र उतारकर किसानो की पोशाक पहनता और फिर किसानो से मज़ाक करता हुआ अपने मजदूर

मित्रो की गदी वस्तियो मे चला जाता। मै उन्हे विदेशो के मजदूर-सगठन के अपने अनुभव सुनाता। वे वडे ध्यान और उत्सुकता से मेरी वाते सुनते। फिर उनका प्रश्न होता—"हम लोग रूस मे क्या करे ?" हमारा उत्तर होता, "सगठन करो, आन्दोलन करो। इसके अतिरिक्त और कोई सरल उपाय नही।" हम लोग उन्हे फ्रास की राज्यक्रान्ति की कुछ रोचक कहानिया सुनाते। हमारा एक साथी एम० चोविल ग्रामो मे प्रचार करता था और उनके बीच जब्त पुस्तके वितरित करता था। सव किसान उसके प्रशसक हो गये थे और उसका अनुसरण करने के लिए उत्सुक थे। हम लोग कहते, "अपने साथियो मे प्रचार करो, सव सगठित हो जाओ। जब हम लोगो का सगठन व्यापक हो जायगा, तब हम लोग कुछ कर सकेगे।" वे पूर्णतः हमारे साथ थे। हमारी समस्या उनके उत्साह को रोकने की थी।

उनके बीच मे मेरे जीवन के मधुरतम क्षण वीते। १८७४ के वर्षारंभ के दिन की स्मृति आज तक ताजी है। ऐसा अवसर रूस मे मेरे स्वतत्र जीवन मे फिर नही आया। उसके पहले की शाम कुछ चुने हुए मित्रो के बीच वीती। वहा नागरिको के अधिकार, देश का उद्धार आदि के विषय मे वडी ही प्रेरणाप्रद और उत्साहपूर्ण वाते कही गई। लेकिन इन सव जोशीले व्याख्यानो से भी ऊपर उठकर एक वात वहा स्पष्ट हुई कि क्या ये व्याख्यानदाता खतरे का सामना करने को तैयार है? अपने हृदयगत भावो के समर्थन मे उन्होने तरह-तरह के तर्क किये। देश का विकास धीमा है, निम्न वर्ग अकर्मण्य है, वलिदान निरर्थक है आदि-आदि। मैं इस वातचीत से अत्यन्त दुखित होकर घर लौटा।

अगले दिन मै वुनकरो की एक सभा मे गया। वह एक अधेरे तहखाने मे हुई थी। मै किसानो की पोशाक पहने था और शीघ्र ही उनमे घुलमिल गया। मेरे साथी ने, जो उन कार्यकर्ताओ से परिचित था, मेरा परिचय कराते हुए केवल इतना कहा, "यह है हमारे मित्र वोरोडिन। वोरोडिन, आप विदेशो के अनुभव हमे सुनाइये।" और मै पश्चिमी यूरोप मे मजदूरो के आन्दोलन, उनके सघर्ष, कठिनाइयो तथा आशाओ पर वोला।

श्रोताओ मे अधिकाश अधेड उम्र के आदमी थे। वे वडे ध्यान से

मेरी बातो को सुन रहे थे। अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-सघ के उद्देश्यो, उसकी सफलता आदि पर उन्होने मुझसे अनेक प्रश्न किये और फिर सवाल आया कि हम लोग रूस मे क्या कर सकते है, हमारे प्रचार का क्या फल होगा ? मैने आन्दोलन के खतरो को स्पष्टत बतलाया--"हम लोग किसी भी समय सम्भवत साइबेरिया भेज दिये जायगे। और आप लोग महीनो तक जेल मे बन्द रखे जायगे, क्योकि आप हमारी बाते सुन रहे है।" इस खेदपूर्ण सम्भावना से वे भयभीत नही हुए। "आखिर साइबेरिया मे भी मनुष्य ही है--केवल रीछ नही।" "जहा मनुष्य रहते है वहां हम भी रह सकते है।" "स्थिति इतनी भयकर नही," "अगर तुम भेडियो से डरते हो तो जगल मे जाते ही क्यो हो ?" ये थे उनके उत्तर, जब हम विदा हो रहे थे। बाद मे जब उनमे से अनेक गिरफ्तार हुए, तो सबने बडे साहसपूर्वक स्थिति का सामना किया और किसीने भी विश्वासघात नही किया।

: १६ :

मेरी गिरफ़्तारी

जिन दो वर्षो का मै वर्णन कर रहा हू, उस बीच सेण्ट पीटर्सबर्ग और विभिन्न प्रान्तो मे अनेक गिरफ्तारिया हुई। हर महीने सूचना मिलती कि हमारा अमुक साथी पकड लिया गया, कभी इस, कभी उस प्रान्तीय सगठन के सदस्य बन्दी बना लिये गए। १८७३ के अन्त मे गिरफ्तारिया और भी अधिक हो गई। नवम्बर मे सेण्ट पीटर्सबर्ग के पास के इलाके मे हमारे एक प्रमुख कार्यालय पर पुलिस ने छापा मारा। वहा से पैरोव्स्काया और तीन अन्य साथी गिरफ्तार हो गये और उस इलाके के मजदूरो से हमारा सम्पर्क टूट गया। हम लोगो ने शहर से और भी दूर एक नया केन्द्र स्थापित किया, लेकिन उस स्थान को भी शीघ्र ही छोडना पडा। पुलिस अत्यन्त सतर्क हो गई थी। मजदूरो के मुहल्लो मे किसी विद्यार्थी की उपस्थित पर तुरन्त कार्यवाही हो जाती। मजदूरो के बीच मे गुप्तचर

छोड दिये गए थे और उनपर बडी निगरानी रखी जाती थी। कैलनिट्ज, सर्गी और मै किसानो के कपडो मे पुलिस की निगाह से बचकर इन इलाको मे जाते रहे। कैलनिट्ज और सर्गी मजदूरो की बस्ती मे बडे ख्याति-प्राप्त थे और पुलिस उन्हे पकडने को लालायित थी। अगर कही एक मित्र के यहा रात को तलाशी मे पुलिस को वे मिल जाते, तो वे तुरन्त गिरफ्तार हो जाते। अक्सर कैलनिट्ज को सोने के लिए सुरक्षित स्थान पाने के लिए दिन-दिन-भर भटकना पडता था। "क्या मै आज रात आपके यहा व्यतीत कर सकता हू?" वह अपने एक मित्र के यहा जाकर १० बजे पूछता। उत्तर मिलता, "असम्भव! कुछ समय से मेरे स्थान पर पुलिस की कडी निगरानी है। के. ..यहा आओ"। "मै उसीके यहा से आ रहा हू। वह कहता है कि खुफिया पुलिस उसके मकान के चारो ओर है।" "तो अमुक सज्जन के यहा चले जाओ। वह मेरा अच्छा मित्र है और उसपर पुलिस का सन्देह भी नही। लेकिन उसका मकान यहा से काफी दूर है, पर तुम गाडी किराये पर कर लेना। यह है पैसा।" लेकिन सिद्धान्तत: कैलनिट्ज गाडी नही करता और रात को सोने के लिए वह शहर के दूसरे कोने तक पैदल ही जाता था। फिर अन्तत: किसी ऐसे मित्र के यहा पहुच जाता जिसके कमरे पर किसी भी क्षण पुलिस पहुच सकती थी।

जनवरी १८७४ के प्रारम्भ मे हमारा एक दूसरा अड्डा, जो बुनकरों के बीच प्रचार का मुख्य केन्द्र था, पुलिस के हाथो आ गया। हमारे कुछ अत्यन्त सफल कार्यकर्त्ता पुलिस के हाथ मे पड गये। हमारा केन्द्र दिन-प्रतिदिन कमजोर होता जा रहा था, उसकी मीटिंग करना मुश्किल हो रहा था। हम लोग कुछ युवको को लेकर नये केन्द्र स्थापित करने के लिए प्रयत्न कर रहे थे, जिससे हमारी गिरफ्तारी के बाद कार्य चलता रहे। चकोव्स्की दक्षिण मे थे। कैलनिट्ज और सर्गी को हमने किसी तरह ठेलठाल कर सेण्ट पीटर्सबर्ग के बाहर भेज दिया था। हममे से कुल पाच-छ. व्यक्ति अपने केन्द्र की सारी प्रवृत्तियो को चलाने के लिए रह गये थे। मेरा विचार था कि भौगोलिक परिषद के सामने अपनी रिपोर्ट पेश करके रूस के दक्षिण-पश्चिमी प्रदेशो की ओर चला जाऊ। वहा मेरी योजना उसी प्रकार की

भूमि परिषद स्थापित करने की थी, जैसी आयरलैण्ड मे १८८० के लगभग बडी सफल सिद्ध हुई।

दो मास तक कुछ शान्ति रही। उसके बाद मार्च के मध्य मे मालूम हुआ कि लगभग सभी इजीनियर गिरफ्तार हो गये। उनके साथ नीजोव्किन नामक एक भूतपूर्व विद्यार्थी भी पकड लिया गया। हमे सन्देह था कि स्वय छूटने के लिए वह हमारे विषय मे सारा भेद खोल देगा। कैलन्दिट्ज, सर्गी और मेरे अतिरिक्त वह हमारे केन्द्र के सस्थापक सर्डूकौफ से भी परिचित था। कुछ दिनो बाद ही दो बुनकर, जो अत्यन्त अविश्वसनीय थे और जो अपने साथियो का कुछ रुपया भी खा गये थे, पकड लिये गए। ये मेरे छद्मनाम बोरोडिन को जानते थे। इस बात की पूर्ण सम्भावना थी कि इन दोनो की सहायता से पुलिस बोरोडिन, जिसने किसानो के भेष मे बुनकरो के सामने भाषण दिया था, के पीछे पड जायगी। एक सप्ताह के भीतर ही सर्डूकौफ और मुझको छोडकर हमारे केन्द्र के सभी सदस्य गिरफ्तार कर लिये गए।

अब हमारे सामने एक ही चारा था कि सेण्ट पीटर्सबर्ग छोड दे। लेकिन यह हम लोग करना नही चाहते थे। विदेशो मे पुस्तिकाए छपाने और फिर रूस मे उनको अवैध रूप से लाने का बडा सगठन था। विभिन्न प्रान्तो मे स्थापित अनेक केन्द्रो से हमारा सम्पर्क था। सेण्ट पीटर्सबर्ग मे हमारे मजदूर कार्यकर्त्ता थे, यही राजधानी के मजदूरो मे प्रचार-कार्य करने के लिए हमारे चार केन्द्र थे। इन सबका प्रबन्ध करने और आपस मे सम्पर्क बनाये रखने के लिए हमे कुछ कार्यकर्त्ताओ की आवश्यकता थी। यह सब हम यकायक छोड नही सकते थे जब तक कि हमे इन सब सम्पर्को को बनाये रखने के लिए कुछ कार्यकर्त्ता न मिल जाय। सर्डूकौफ और मैने दो नये सदस्यो को भर्ती करने और उन्हे सारा कार्य सौपने का निश्चय किया। हम हर शाम को शहर के विभिन्न भागो मे मिलते थे। चूकि हमारे पास विभिन्न नाम और पते लिखित नही थे, (केवल अवैध व्यापार के पते ही सकेत लिपि मे एक सुरक्षित स्थान पर रख दिये गए थे), हमे अपने नये सदस्यो के सामने सैकडो नाम और पते बार-बार दोहराने पडे,

जबतक कि वे सब उन्हे कण्ठस्थ नही हो गये। हर शाम को इस तरह हम लोग रूस के पूरे नक्शे का अध्ययन कर जाते थे—विशेषत पश्चिमी सीमावर्ती भागो का जहा हमारे अनेक मित्र तस्कर व्यापारियो से पुस्तके प्राप्त करते थे। फिर हम छद्मभेष मे अपने नये सदस्यो को सहानुभूति रखनेवाले कुछ मित्रो से और अपने कुछ कार्यकर्त्ताओ से, जो अभी तक गिरफ्तार नही हुए थे, परिचय कराने ले जाते।

इस स्थिति मे यही किया जा सकता था कि अपना निवासस्थान छोड दिया जाय और किसी अन्य भाग मे दूसरे नाम से रहा जाय। सर्डूकौफ ने अपना घर छोड दिया था, लेकिन चूकि उसके पास पासपोर्ट नही था, वह मित्रो के यहा छिप गया। मुझे भी यही करना चाहिए था, लेकिन कुछ विशेष परिस्थितियो के कारण मुझे रुकना पडा। मैने हाल ही मे फिनलैण्ड और रूस मे हिमखडो के निर्माण के ऊपर अपना निबन्ध समाप्त किया था और इसे भौगोलिक परिषद् की मीटिग मे पढना था। मीटिंग के लिए निमन्त्रण-पत्र भेज दिये गए थे, लेकिन ठीक निश्चित तारीख को सेण्ट पीटर्सबर्ग की दोनो भौगोलिक परिषदो ने अपनी मीटिग की और उन्होने भौगोलिक परिषद् से प्रार्थना की कि मेरी रिपोर्ट एक सप्ताह बाद पेश की जाय। यह बात सर्वविदित थी कि मै अपनी रिपोर्ट मे मध्य रूस तक हिमखण्डो के विस्तार की चर्चा करूगा और हमारे भूगर्भशास्त्री—मेरे शिक्षक और मित्र फ्रैडरिक शमिट इस कल्पना को अत्यधिक महत्वपूर्ण मानते थे और इसके लिए पूरी-पूरी तैयारी करना चाहते थे। इसलिए मुझे एक सप्ताह तक और यही रुकना पडा।

अनेक अजनवी आदमी मेरे घर का चक्कर लगाते थे और तरह-तरह के बहानो से मुझसे मुलाकात करते। एक सज्जन मेरी तैम्बोव की जागीर का जगल खरीदना चाहते थे और उस जागीर मे कही पेड का नामनिशान नही था। एक दिन मैने अपने मकान के सामने उपरोक्त दो गिरफ्तार बुनकरो मे से एक को देखा। मै समझ गया कि मेरे मकान पर पुलिस की दृष्टि है। लेकिन फिर भी मुझे ऐसा व्यवहार करना था, मानो कुछ हुआ ही

नही, क्योकि मुझे अगले शुक्र की रात को भौगोलिक परिषद् मे उपस्थित होना था।

परिषद का अधिवेशन हुआ। खूब वादविवाद हुआ। कम-से-कम एक बात मे हमारी विजय हुई। सबने स्वीकार किया कि रूस मे जल-विप्लव-सम्बन्धी पुरानी मान्यताए निराधार है और उस सम्बन्ध मे फिर से खोज होनी चाहिए। मुझे अत्यन्त सन्तोष हुआ, जब हमारे एक प्रमुख भूगर्भशास्त्री ने कहा, "सज्जनो, चाहे हिमखड हो या न हो, हमे एक बात स्वीकार करनी पडेगी कि अबतक हमने जो बहती हुई बर्फ की बाते कही है, वास्तविक अन्वेपण से उसकी पुष्टि नही होती।" और उस मीटिंग मे अगले वर्ष के लिए परिपद् की प्रादेशिक शाखा के सभापति-पद के लिए मेरा नाम प्रस्तावित किया गया। उस समय मै यही सोच रहा था कि कही आज की रात ही पुलिस की जेल मे न बीते।

सबसे अच्छा यही होता कि मै अपने निवास-स्थान को न लौटता। लेकिन मै पिछले कुछ दिनो के श्रम से बुरी तरह थक गया था और इसलिए घर लौटा। उस रात पुलिस नही आई। मै अपने कागजो को देख गया और अपने मित्रो से सम्बन्धित सव पत्रो को नष्ट कर दिया। अपने सामान को बाध दिया और प्रस्थान की तैयारी कर ली। मै जानता था कि मेरे मकान पर पुलिस की दृष्टि है, लेकिन मै सोचता था कि पुलिस आधी रात के बाद ही आवेगी और मै झुटपुटे मे शाम को ही चुपचाप निकल जाऊगा। शाम हुई। जैसे ही मै चलने को हुआ, एक नौकरानी ने कहा, "अच्छा हो, आप पीछे से निकल जाय।" मैं उसका तात्पर्य समझ गया और तुरन्त पीछे के रास्ते से निकल गया। एक गाडी दरवाजे पर खडी थी और मै उसमे झपटकर बैठ गया। कोचवान मुझे नेव्स्की प्रोसपैक्ट ले गया। कोई पीछा नही कर रहा था और मैंने अपनेको सुरक्षित समझा। लेकिन तुरन्त ही मुझे मेरी गाडी के पीछे एक गाडी जोर से दौडती दीख पडी। पता नही, क्यो मेरा घोडा अड गया और शीघ्र ही यह गाडी मेरी गाडी के बराबर आ गई।

मैंने आश्चर्य से देखा, उस गाडी मे उन दो बुनकरो मे से एक बैठा था।

और उसके साथ एक अन्य आदमी था। उस बुनकर ने हाथ हिलाया मानों वह मुझसे कुछ कहना चाहता है। मैने अपनी गाडी रुकवा दी। मैने सोचा, शायद वह जेल से छूट आया है और मेरे लिए कोई आवश्यक सन्देश लाया है। लेकिन जैसे ही मेरी गाडी रुकी, बुनकर का साथी—वह गुप्तचर था—जोर से चिल्लाया, "महाशय बोरोडिन—प्रिस क्रोपाटकिन, मै आपको गिरफ्तार करता हू।" उसने पुलिसवालो को इशारा किया—सेण्ट पीटर्सबर्ग की मुख्य सडको पर सैकडो ही पुलिसवाले रहते है—और तुरन्त ही वह मेरी गाडी मे आ गया। मुझे एक पत्र दिखलाया, जिसपर सेण्ट पीटर्सबर्ग की पुलिस की मुहर थी। उसने कहा—"मुझे आदेश दिया गया है, आपको गवर्नर जनरल के पास ले चलू।" विरोध करना असम्भव था, दो पुलिसवाले पास ही खडे थे। मैने अपने कोचवान से कहा कि गाडी को मोडकर गवर्नर जनरल के यहा चलो। बुनकर अपनी गाडी मे बैठा रहा ओर हमारे पीछे चला।

अब यह स्पष्ट हो गया कि पुलिस दस दिन से मुझे गिरफ्तार करने के लिए पशोपेश मे थी, क्योकि वे लोग निश्चय नही कर पा रहे थे कि मै और बोरोडिन एक ही व्यक्ति है। जुलाहे के इशारे के उत्तर मे मेरे रुकने से उनके सन्देह दूर हो गये।

जब मै घर से प्रस्थान कर रहा था, एक युवक मास्को से आया। वह मेरे लिए मेरे मित्र वोइनारलस्की का एक पत्र लाया था, और दूसरा पत्र कैलनिट्ज का पोलकोफ के लिए था। पहले पत्र मे लिखा था कि मास्को मे एक गुप्त प्रेस की व्यवस्था हो गई थी ओर वहा के कार्य की प्रगति के कुछ उत्साहप्रद समाचार भी थे। मैने उसे पढकर नष्ट कर दिया। दूसरा साधारण मनोरजक पत्र था, इसलिए उसे मैने अपने पास रख लिया। अब जबकि मै गिरफ्तार हो गया था, मैने उसे भी नष्ट करने की सोची। मैने गुप्तचर से आदेश-पत्र को फिर से दिखलाने को कहा। जबतक वह उसे अपनी जेब मे तलाश कर रहा था, मैने उस पत्र को उसकी निगाह बचाकर फर्श पर डाल दिया। लेकिन जब हम लोग गवर्नर जनरल के यहा पहुचे, तो बुनकर ने उस पत्र को गुप्तचर को दिया और कहा, "मैने इन महाशय को इसे फर्श पर डालते देखा था, इसलिए उठा लिया।"

अब न्याय अधिकारियो, मुखबिर तथा सरकारी वकील की प्रतीक्षा मे घटो इतजार करना था। पुलिस सरकारी वकील को जगह-जगह ले जाती थी और तलाशियो मे साथ रखती है, जिससे वह उनकी कार्यवाहियो को कानूनी रूप दे सके। कई घटे के इतजार के वाद यह महाशय—न्याय के प्रतिनिधि—वरामद हुए। मै अपने घर से ले जाया गया और मेरे कागज-पत्रो को तलाशी ली गई। तलाशी प्रात काल तीन वजे तक चली, लेकिन पुलिस को एक टुकडा भी नही मिला, जो मेरे अथवा मेरे मित्रो के विरोध मे हो।

अपने मकान से मुझे पुलिस के तीसरे दस्ते के कार्यालय मे ले जाया गया। निकोलस प्रथम के शासन-काल से आज तक रूस मे इसी सर्वशक्तिमान सस्था की सत्ता रही है। वस्तुत वह "राज्य के भीतर राज्य" है। पीटर प्रथम के शासन-काल मे गुप्तचर विभाग के अन्तर्गत इसका सगठन किया गया था। इसके द्वारा राज्य के विरोधियो को अत्यन्त घृणित यातनाए दी जाती थी, जिनसे अन्तत उनकी मृत्यु ही हो जाती। घोर प्रतिक्रियावादी निकोलस प्रथम ने इस विभाग का सगठन किया और इसमे पुलिस का एक दस्ता और शामिल कर दिया। रूसी साम्राज्य की जनता स्वय जार से भी अधिक इस दस्ते के मुख्य अधिकारी से भयभीत थी।

रूस के हर प्रान्त मे, प्रत्येक वडे शहर मे, यहातक कि हर रेलवे स्टेशन पर, इनके सिपाही तैनात रहते है। ये अपने जनरल अथवा कर्नल को सीधी रिपोर्ट देते है और ये अधिकारीगण फौजी पुलिस के प्रमुख को सूचना भेजते है। अन्तिम अधिकारी सम्राट से रोज मिलता है और उसे आवश्यक सूचना देता है। साम्राज्य के सभी अधिकारियो पर इस फौजी पुलिस की आख है। प्रत्येक नागरिक के सम्पूर्ण व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन पर दृष्टि रखना उनका कर्त्तव्य है। प्रान्तो के गवर्नर, मन्त्रिगण और वडे-वडे सामन्त भी उनकी दृष्टि से मुक्त नही है। स्वय सम्राट के जीवन पर भी उनकी आख है। महल के अन्दर की छोटी-छोटी घटनाए उनको विदित रहती है। महल के वाहर जार जो कुछ भी करता है, उन्हे मालूम

रहता है। परिणामस्वरूप फौजी पुलिस का प्रमुख अधिकारी जार का अत्यन्त घनिष्ठ विश्वासपात्र हो जाता है।

अलैक्जैण्डर द्वितीय के शासनकाल मे पुलिस का तीसरा दस्ता सर्व-शक्तिमान हो गया था। जिसे चाहे वे गिरफ्तार करते, जबतक चाहते उन्हे कैद मे रखते, और अपनी इच्छानुसार हजारो को उत्तरी-पूर्वी रूस अथवा साइबेरिया भेज देते। गृहमत्री के हस्ताक्षर तो नाममात्र को थे, क्योकि यह पुलिस उसके अधीन नही थी और न वह उनके कार्यो को जानता ही था।

सुबह के चार बजे मेरी परीक्षा आरम्भ हुई। मुझसे गम्भीरतापूर्वक कहा गया, "आपपर अपराध लगाया जाता है कि आप एक ऐसे गुप्त सगठन के सदस्य है, जिसका उद्देश्य वर्तमान शासन-प्रणाली को उखाडना है और आप महामहिम जार के जीवन के विरुद्ध षडयत्र कर रहे थे। क्या इस अपराध को स्वीकार करते है?"

"जबतक कि मै न्यायालय के सामने उपस्थित नही किया जाता, जहा मै सार्वजनिक रूप से अपना वक्तव्य दे सकूं, मै आपको कोई उत्तर नही दूगा।"

सरकारी वकील ने एक लिपिक को लिखाया, "लिखिये, अपनेको अपराधी स्वीकार नही करता", फिर रुककर कहा, "फिर भी मुझे आपसे कुछ प्रश्न पूछने है। क्या आप निकोलाइ चकोव्स्की नामक व्यक्ति को जानते है?"

"यदि आप मुझसे प्रश्न पूछने पर ही उतारू है, तो जो भी प्रश्न आप करे, उसके उत्तर मे आप 'नही' लिख लीजिये।"

"लेकिन यदि हम आपसे पूछे कि क्या आप पोलकोफ को जानते है, जिनके सम्बन्ध मे अभी आपने कहा था?"

"जब आप इस प्रकार का कोई प्रश्न करे, तो निश्चित होकर 'नही' लिखिये। अगर आप मुझसे पूछे कि क्या मैं अपने भाई, बहन अथवा विमाता को जानता हू, तो उत्तर मे 'नही' लिखिये। आपको मुझसे कोई दूसरा जवाब नही मिलेगा, क्योकि मै जानता हू कि जैसे ही मैने किसी व्यक्ति के सम्बन्ध मे 'हा' कहा, आप उसके विरुद्ध कार्यवाही प्रारम्भ कर

देगे, उसकी तलाशी लेगे, उसे तग करेगे और फिर कहेगे कि मैंने उसका नाम आपको बतलाया।"

प्रश्नो की एक लम्बी सूची पढी गई, जिसके उत्तर मे मैं धैर्यपूर्वक 'नही' कहता रहा। एक घटे तक यह हुआ। इस बीच मुझे मालूम हो गया कि दो बुनकरो को छोडकर शेष सब साथियो ने शानदार परीक्षा दी है। ये बुनकर केवल यही जानते थे कि मैं दो बार कुछ कार्यकर्ताओ से मिला था। फौजी पुलिस को हमारे केन्द्र के विषय मे कुछ भी ज्ञात नही था।

फोजी पुलिस का एक अधिकारी, मुझे कोठरी मे ले जाते हुए, मुझसे बोला, "प्रिस, यह आप क्या कर रहे है? आपका उत्तर न देना आपके लिए घातक होगा।"

"यह मेरा अधिकार है। क्या आप ऐसा नही समझते?"

"हा, ठीक है लेकिन . आप जानते है. . .आशा है, आपके लिए यह कमरा आरामदेह होगा। आपकी गिरफ्तारी के समय से ही इसे गर्म रखा गया है।"

मैंने कमरे को काफी सन्तोषजनक पाया और गहरी नीद मे सो गया। अगले दिन सुबह पुलिसमैन ने मुझे जगाया और प्रातःकालीन चाय दी। उसके बाद एक अन्य व्यक्ति आया और शान्त भाव से कहा, "यह है कागज़ और पेन्सिल। अपना पत्र लिख लीजिये।" यह हमारे प्रति सहानुभूति रखनेवाला व्यक्ति था, जिसे मैं भली भाति जानता था। तीसरे दस्ते के कैदियो के साथ हमारा पत्र-व्यवहार उसीके माध्यम से चलता था।

चारो ओर मैं दीवारो पर निरन्तर खटपट सुन रहा था। इस प्रकार धीमे खटखट करके कैदी आपस मे बातचीत कर रहे थे। चूकि मैं नया ही आया था, मैं इस चारो ओर की आवाज़ से कुछ भी समझ नही सका।

एक बात की मुझे चिन्ता थी। जब मेरे घर पर तलाशी हुई थी, उस समय मैंने सरकारी वकील को फौजी पुलिस अधिकारी से कहते सुना था कि मेरे मित्र पोलकोफ के घर की भी तलाशी ली जाय। कैलन्ट्ज का पत्र उसीके नाम था। पोलकोफ प्राणिशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र का अत्यन्त

प्रतिभाशाली युवक विद्यार्थी था। उसके साथ मैने साइबेरिया की यात्रा की थी। मगोलिया के सीमान्त पर उसका जन्म अत्यन्त निर्धन कज्ज़ाक परिवार मे हुआ था। अनेक विपत्तियो से जूझता हुआ वह सेण्ट पीटर्सबर्ग आया था, विश्वविद्यालय मे प्रवेश किया था और वहा प्राणिशास्त्र के विद्यार्थी के रूप मे अच्छी ख्याति प्राप्त की थी। अब वह अन्तिम परीक्षा देनेवाला था। साइबेरिया-यात्रा के समय से ही हम लोग मित्र थे और कुछ समय तक सेण्ट पीटर्सबर्ग मे साथ-साथ भी रहे थे। लेकिन मेरे राजनैतिक कार्यों मे उसने कभी भी कोई रुचि नही ली।

मैने उसके सम्बन्ध मे सरकारी वकील से कहा—"मै आपसे सत्य कहता हू कि पोलकोफ ने कभी भी कोई राजनैतिक कार्य नही किया। कल उसे परीक्षा देनी है। आप एक युवक के वैज्ञानिक जीवन का सदैव के लिए अन्त कर देगे। वर्षो तक अनेक विघ्न-बाधाओ को पार करके उसने आज यह स्थिति प्राप्त की है। मै जानता हू कि आप उन चीज़ो को कोई महत्व नही देते, लेकिन विश्वविद्यालय के अधिकारियो को उससे रूसी विज्ञान के लिए अनेक आशाए थी।

फिर भी पोलकोफ के घर की तलाशी हुई, लेकिन उसे परीक्षा देने के लिए तीन दिन की मुहलत मिल गई। कुछ समय पश्चात मुझे सरकारी वकील के सामने पेश किया गया। उसने बडे गर्व से मेरे हाथ का लिखा हुआ एक लिफाफा दिखलाया—उसमे मेरे ही हाथ का लिखा हुआ यह पर्चा था—"कृपया इस पैकेट को बी० ई० के पास ले जाइये—उसे वह अपने पास रखे जबतक कि निश्चित रूप मे उसे मागा न जाय।" जिस व्यक्ति को यह पर्चा लिखा गया था, उसका नाम कही नही लिखा था। सरकारी वकील ने कहा, "यह पत्र पोलकोफ के मकान पर मिला है। अब, प्रिस, उसका भाग्य आपके हाथ मे है। अगर आप हमे बतला दे कि बी० ई० कौन है, तो पौलेकोफ को छोड दिया जायगा। लेकिन यदि आप बतलाने से इकार करते है, तो उसे तबतक जेल मे सडाया जायगा, जबतक कि वह हमे उस व्यक्ति का नाम नही बतलाता।"

मैने लिफाफे को देखा, जिसपर काली स्याही मे लिखा था। उस

पत्र को देखा जो पेसिल से लिखा हुआ था। मुझे तुरन्त स्मरण हो आया कि किन परिस्थितियो मे मैने दोनो को लिखा था। मैने तुरन्त ही कहा, "मै निश्चित रूप से कह सकता हू कि लिफाफा और यह पत्र साथ-साथ नही मिले। आपने ही इस पत्र को लिफाफे मे रख दिया है।"

सरकारी वकील झेप गया। मैने आगे कहा, "आप तो व्यावहारिक आदमी है। आपने यह भी नही देखा कि दोनो अलग-अलग पेसिलो से लिखे गए है। अब आप यह सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहे है कि दोनो साथ थे, तो जवाब मे मैं आपसे कहता हू कि यह पत्र पौलकोफ को नही भेजा गया।"

वह कुछ देर तक झिझका, लेकिन फिर अपना होश सभालकर बोला, "पौलकोफ ने स्वीकार किया है कि यह पत्र आपने उसे लिखा था।"

मै जानता था कि वह झूठ बोल रहा था। पौलकोफ अपने स्वय के सम्बन्ध मे सबकुछ स्वीकार कर सकता था, लेकिन अन्य किसी व्यक्ति को फसाने की अपेक्षा वह साइबेरिया भेजा जाना स्वीकार कर लेता। इसलिए, सरकारी वकील से आखे मिलाकर मैने उत्तर दिया, "नही, उसने कदापि ऐसा नही कहा। आप स्वय जानते है कि आप झूठ बोल रहे है।"

वह गरम हो गया—अथवा ऐसा दिखावा किया। उसने कहा, "अच्छा, अगर आप यहा कुछ इन्तजार करे, तो मै आपके पास इस सम्बन्ध मे पौलकोफ का लिखित वक्तव्य ले आऊगा। साथ के कमरे मे ही उसकी परीक्षा हो रही है।"

"ठीक, मै प्रतीक्षा करने के लिए तैयार हू।"

मैं सोफा पर बैठ गया। कई सिगरेट पी गया। पर वक्तव्य नही आया, आजतक नही आया।

मुझे अपनी कोठरी मे वापस नही ले जाया गया। आध घटे बाद सरकारी वकील एक फौजी अफसर के साथ आया और मुझसे कहा, "हमने आपसे आवश्यक प्रश्न पूछ लिये। अब आप दूसरी जगह भेज दिये जायगे।"

बाद को, जब कभी मैं सरकारी वकील से मिलता, मै उसे खिझाया करता, "हा, पौलकोफ के उस वक्तव्य का क्या हुआ ?"

चार पहियोवाली एक गाडी दरवाजे पर तैयार थी। मुझे उसमे बैठने के लिए कहा गया और एक वलिष्ठ कज्जाक फौजी अधिकारी मेरे साथ बैठा। मैंने उससे वातचीत करने का प्रयत्न किया, लेकिन वह केवल गुर्राता ही था। गाडी ने चेन पुल पार किया, फिर परेड का मैदान पार करती हुई नहरो के किनारे चली। मैने अधिकारी से पूछा, "क्या हम लोग लिटे.व्स्की जेल की ओर जा रहे है ?" मै जानता था कि हमारे अनेक साथी वहा वन्द थे। उसने कोई उत्तर नही दिया। अगले दो वर्षो तक जो मौन व्यवहार मुझसे किया गया, वह इसी गाडी मे प्रारम्भ हुआ। लेकिन जव हमारी गाडी किले के पुल के ऊपर से निकली, तो मैं समझ गया कि मुझे सेण्ट पीटर और सेण्ट पाल की जेल मे ले जाया जा रहा है।

मैं नदी के सुन्दर दृश्य को देखकर पुलकित था। मै जानता था कि मै फिर इसे नही देख सकूगा। सूर्यास्त हो रहा था। पश्चिम मे फिनलैण्ड की खाडी पर गहरे भूरे वादल घिरे हुए थे। मेरे ऊपर हल्के वादल उड रहे थे, वीच मे कभी-कभी नीला आसमान दीख पडता था। गाडी वाईं ओर मुडी और किले के दरवाजे मे प्रवेश किया।

"अव मुझे यहा दो वर्ष रहना पडेगा।" मैने अधिकारी से कहा।

कज्जाक अधिकारी और मै किले मे पहुच गये थे। उसकी अव जवान खुली, उसने उत्तर दिया—"नही इतने दिन क्यो ? आपका मामला तो करीव-करीव तैयार हो गया है, पन्द्रह दिन के भीतर ही कचहरी मे पेश हो जायगा।"

मैने कहा, "मेरा मामला वहुत सरल है। लेकिन कचहरी मे मुझे पेश करने के पहले आप रूस के सव साम्यवादियो को गिरफ्तार करने की कोशिश करेगे और उनकी सख्या वहुत है। दो वर्षों मे आप सवको गिरफ्तार नही कर सकेगे।" उस समय मुझे भी ज्ञात नही था कि मैने कितनी ठीक भविष्यवाणी की।

गाडी किले के फौजी कमाण्डर के दरवाजे पर रुकी और हम लोगो ने उनके वाहर के कमरे मे प्रवेश किया। एक दुवले वृद्ध व्यक्ति, जनरल कोरसाकोफ, ने कमरे मे प्रवेश किया। उनके चेहरे पर झुझलाहट थी।

मेरे साथी अधिकारी ने धीमे-से उनसे बातचीत की। उस वृद्ध अधिकारी ने कुछ घृणा-मिश्रित भावना से उससे कहा—"ठीक है," और फिर वह मेरी ओर मुडा। स्पष्ट था कि वह एक नये व्यक्ति के आगमन से प्रसन्न नही था। उसे अपने कार्य पर कुछ लज्जा आ रही थी, मानो कह रहा हो—"मै तो सिपाही हू, यह मेरा कर्तव्य है।" कुछ समय बाद ही हम लोग फिर गाडी मे चढ गये। शीघ्र ही अगले दरवाजे पर उतरे। वहा हमे काफी देर इन्तजार करना पडा, सकरे रास्तो को पारकर हम लोग तीसरे लोहे के दरवाजे पर पहुचे। उसे पारकर एक पटे हुए अधेरे रास्ते पर चलकर एक छोटे कमरे मे घुसे। कमरे मे नमी थी और पूर्ण अधेरा था। किले के अधिकारी ने कज्जाक की पुस्तक पर हस्ताक्षर किया कि मै यहा पहुच गया। मेरे कपडे उतरवा दिये गए और जेल की पोशाक पहनने को कहा गया— हरी फ्लैनल का चोगा, मोटे-मोटे ऊनी मोज़े, नाव जैसी शक्ल के पीले स्लीपर—वे इतने बडे थे कि जब मैने चलने का प्रयत्न किया तो उन्हे पैरो मे रखना एक समस्या थी। मुझे सदैव ही चोगे और स्लीपर नापसन्द थे और मोटे मोजो से तो घृणा थी। रेशम की बनियान भी मुझसे उतरवा दी गई। उस नम कमरे मे उससे काफी मदद मिलती, लेकिन उसे पहने रहने की आज्ञा नही थी। स्वाभाविक तौर पर मैने इसका विरोध किया, और ऊधम मचाना शुरू किया। करीब एक घटे बाद जनरल कौरसकोफ की आज्ञा से वह मुझे वापस मिली।

मुझे फिर एक अधेरी सकरी गली मे ले जाया गया। हथियारबन्द सतरी वहा टहल रहे थे और मुझे एक कोठरी मे बन्द कर दिया गया। मेरे घुसते ही लकडी का भारी दरवाजा बन्द कर दिया गया और ताला डाल दिया गया। उस अधेरी कोठरी मे मैं अकेला था।

खण्ड ५

कारावास में

: १ :

स्वस्थ रहने का संकल्प

यही वह भयकर किले-रूपी जेल थी, जिसमे पिछले दोसौ वर्ष से रूस की सर्वोत्तम शक्ति का विनाश किया गया था और जिसका नाम सेण्ट पीटर्सवर्ग मे डर के मारे वडी दवी जवान से लिया जाता है।

हा, इसी कारावास मे रूसी जार पीटर प्रथम ने अपने लडके एलेक्सिस को घोर यातनाए दी थी और फिर उसे अपने हाथ से मार डाला था। यही राजकुमारी ताराकानोवा एक कोठरी मे रखी गई थी और जव उसमे पानी भर आया था, तो वहा के चूहे अपनी जान वचाने के लिए उस राजकुमारी के शरीर पर चढ गये थे। यहीपर मिनिच ने अपने शत्रुओ पर जुल्म किये थे और यही कैथराइन द्वितीय ने अपने दुश्मनो को जिन्दा गडवा दिया था, उन लोगो को जिन्होने उसके अपने पति की हत्या का विरोध किया था। पीटर प्रथम के शासन-काल से यह जेलखाना हत्या और अत्याचारो का अड्डा वना रहा था। यहा कितने ही आदमी जिन्दा दफना दिये गए थे या धीरे-धीरे मृत्यु के घाट उतार दिये गए थे अथवा नमी और अन्धकार से परिपूर्ण इन कालकोठरियो मे वे पागल हो गये थे।

यही पर दिसेम्वरिस्ट लोगो को, जिन्होने रूस मे सर्वप्रथम प्रजातंत्र का झंडा फहराने की कोशिश की थी, पहले-पहल शहादत का मजा चखाया गया था। यहीं रैलीव, शेव चेन्को, दोस्तोव्स्की, वाकूनिन, चर्निव्स्की, पिसारैफ को कारावास का दण्ड भुगतना पटा था। इसी जेल मे तत्कालीन

सर्वोत्तम साहित्यसेवी ठूसे गये थे। यहीपर कारकोजोफ पर जुल्म किये गए थे और उन्हे फासी का दण्ड दिया गया था।

यही किसी कोठरी मे आज भी नैचैईफ बन्दी है, जिन्हे स्विटजरलैण्ड ने साधारण चोर-डाकू की भाति रूस को सौप दिया था। आज ये खतरनाक राजनैतिक बन्दी है और शायद कभी मुक्त नही किये जायगे। इन्ही कोठरियो मे दो-तीन और व्यक्ति भी बन्द है। कहा जाता है कि अलैक्जैण्डर ने उन्हे आजीवन कारावास का दण्ड दिया था। उनका अपराध यह था कि उन्हे महल का एक रहस्य मालूम हो गया था।

इन सभीकी मूर्तिया मेरी कल्पना के चित्रपट पर खिच गई। लेकिन मेरा ध्यान खासतौर पर अटका रहा बाकूनिन पर, जिन्हे आस्ट्रिया की एक जेल मे १८४८ के विद्रोह के बाद दो वर्ष तक दीवार मे जजीर बाधकर रखा गया था और फिर आस्ट्रिया की सरकार ने उन्हे जार निकोलस को सौप दिया था। जार ने उन्हे उसके बाद छ वर्ष तक इस जेल मे डाले रखा। लेकिन बाकूनिन ने धैर्य और साहस के साथ इन यातनाओ को सहा और जब वह जेल से बाहर निकले, तब अपने स्वतत्र साथियो से अधिक शक्तिशाली और ताजे प्रतीत हुए। मैने सोचा कि जब बाकूनिन ने अपने कठोर जीवन के छह वर्ष यह सफलतापूर्वक काट दिये थे, तब मै भी काट दूगा। मै यहा मरूगा नही।

मेरा पहला प्रयत्न था कि किसी तरह खिडकी तक पहुचा जाय। वह इतनी ऊची थी कि हाथ उठाकर भी मै वहातक मुश्किल से पहुच पाता। दीवार पाच फुट चौडी थी और उसीमे यह लम्बी सकरी खिडकी थी। मोटे-मोटे लोहे के सीखचे लगे थे। इस खिडकी से करीब एक गज पीछे किले की बाहरी भारी दीवार थी। निगाह बिलकुल ऊची रखकर ही मुझे थोडा आकाश दीख पडता था।

मैंने कमरे का निरीक्षण प्रारम्भ किया। टकसाल की चिमनी से मैने अदाज लगाया कि मैं किले के दक्षिणी-पश्चिमी भाग मे हू। दीवार इतनी चौडी थी कि सूर्य की किरणे यहा गर्मी के मौसम मे भी नही आ सकती थी। कमरे मे एक लोहे की चारपाई थी, लकडी की छोटी मेज और एक स्टूल।

फर्श रगीन लकडी का था, दीवारो पर पीला कागज था। कपडे पर पीला कागज चिपकाया गया था और कपडे के पीछे देखने पर मुझे मालूम हुआ कि तार का जाल था। तार के जाल के पीछे लकडी थी और उसके पीछे थी पत्थर की दीवार। कमरे के भीतर हाथ धोने के लिए एक वर्तन था। खाना देने के लिए एक दरवाजे मे छेद था।

चारो ओर पूर्ण सन्नाटा था। मै खिडकी के पास स्टूल खीच ले जाता और थोडा आकाश देखने का प्रयत्न करता। मै शहर की आवाज सुनने की कोशिश करता, लेकिन प्रयत्न निष्फल होता। यह भयकर सन्नाटा मुझे भारी लगने लगा और मैंने गाने का प्रयत्न किया, पहले धीमे-धीमे और फिर कुछ जोर से।

मै अपने एक प्रिय गायक की पक्ति तन्मय होकर गाने लगा—"क्या मुझे सदैव के लिए प्रेम करना छोडना पडेगा?"

वाहर से भारी आवाज आई—"गाना बन्द करो।"

"मै तो गाऊगा।"

"नही, तुम नही गा सकते।"

"लेकिन मै तो गाऊगा।"

उसके वाद गवर्नर आया। उसने मुझे समझाने की कोशिश की कि मुझे गाना नही चाहिए, क्योकि इसकी रिपोर्ट जेल के उच्च अधिकारी को करनी पडेगी।

"लेकिन मेरा गला रुध जायगा, मेरे फेफडे ही वेकार हो जायगे, अगर मैं गाना नही गाता।" मैने उससे कहा।

"अच्छा तो धीमे गाइये, जहातक हो सके मन-ही-मन मे।" अधिकारी ने समझाते हुए कहा।

लेकिन यह सब व्यर्थ था। कुछ दिनो मे मुझे गाने की इच्छा ही नही रही। मैं सिद्धान्तत. गाने का प्रयत्न करता, लेकिन वह निष्फल होता।

मैंने निश्चय किया "मेरा मुख्य ध्येय अपनेको स्वस्थ रखना होगा। मै बीमार नही पडूगा।" मैंने कल्पना की कि मैं दो साल के लिए सुदूर उत्तर मे अपने अन्वेषण के लिए एक झोपडी मे हू। मैं खूब कसरत करूगा,

जिमनास्टिक का अभ्यास करूगा और हिम्मत नही हारूगा। कमरे की दस कदम लम्बाई कम नही है। अगर मै इसके डेढ सौ चक्कर लगाऊ तो मै लगभग एक मील चल लूगा। मै इस प्रकार पांच मील रोज टहलता। फिर अपने भारी स्टूल पर दिन मे दो बार जिमनास्टिक का अभ्यास करता।

मेरे जेल मे आने के कुछ ही समय पश्चात् अधिकारी मुझे कुछ पुस्तके देने आया। उनमे से एक मेरी प्रिय पुस्तक जार्ज लुई की 'शरीर-शास्त्र' का रूसी अनुवाद था। मैने कागज और कलम दवात की माग की, लेकिन अधिकारियो ने साफ इकार कर दिया। दवात-कलम केवल जार की अनुमति से ही जेल मे मिल सकते थे। मेरे मन को यह निष्क्रियता भारी लगने लगी। मैने अपनी कल्पना मे ही रूसी इतिहास के आधार पर कुछ उपन्यासो की रचना प्रारम्भ कर दी। मै उनके कथानक, विवरण, वार्त्तालाप आदि बनाता। सबको आदि से अन्त तक याद करता। यदि दो-तीन मास तक यही क्रम रहता, तो कितना श्रम मेरे ऊपर पडता, इसकी कल्पना की जा सकती है।

लेकिन मेरे भाई अलैक्जैण्डर ने मेरे लिए स्याही-कलम सुलभ कर दिये। एक दिन उसी मौन फौजी अधिकारी के साथ मुझे गाडी मे पुलिस के तीसरे दस्ते मे ले जाया गया। यहा मुझे अपने भाई के साथ दो फौजी अधिकारियो के सामने मिलने की अनुमति मिली थी।

जब मै गिरफ्तार हुआ उस समय अलैक्जैण्डर जूरिक मे थे। अपनी युवावस्था से ही उनकी उत्कट अभिलाषा कही ऐसी जगह जाने की थी, जहा मनुष्य स्वाधीनतापूर्वक विचार कर सकते है, इच्छानुसार पढ सकते है और विचारो को प्रकट करने मे स्वतत्र है। रूसी जीवन से उन्हे घृणा थी। सरलता और निष्कपटता उनके चरित्र की प्रमुख विशेषताए थी। किसी भी रूप मे अहकार और कपट उन्हे असहनीय थे। रूस मे स्वतन्त्र विचारो पर प्रतिबन्ध, दमन के सामने रूसियो का समर्पण और रूसी लेखको के अस्पष्ट लेख उनकी सरल प्रकृति के बिल्कुल विपरीत थे। मेरे पश्चिमी यूरोप से आने के बाद वह स्विटजरलैण्ड चले गये थे और उन्होने वही बसने का निश्चय किया। सेण्ट पीटर्सबर्ग मे उनके दो बच्चे

एक कुछ ही घटो मे हैजा से से और दूसरा तपेदिक से चल बस थ। इसके वाद तो वह जगह उनके लिए और भी घृणित हो गई थी।

मेरे भाई ने आन्दोलन मे कोई भाग नही लिया था। जनता के विद्रोह की सम्भावना पर उनका विश्वास नही था, न उसका विचार था कि फ्रास की १७८९ की राष्ट्रीय महासभा जैसी कोई प्रतिनिधि सभा ही कुछ कार्य कर सकती है। जहातक साम्यवादी आन्दोलन का सम्बन्ध है, वह केवल उसकी जनसभाओ से ही परिचित थे। हमारे गुप्त सगठन का उन्हे कोई ज्ञान नही था।

स्विटजरलैण्ड मे वह जूरिक मे वस गये थे। उनका झुकाव अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-सघ की उदार विचारधारा की तरफ था। साम्यवादी सिद्धान्तो को वह मानते थे और उन सिद्धान्तो को उन्होने अत्यन्त सादा जीवन और कठोर श्रम द्वारा अपने जीवन मे उतारा था। उनके जीवन का ध्येय था वैज्ञानिक कार्य। शीघ्र ही उनकी मित्रता निर्वासित कर्नल लैवरोफ से हो गई—दोनो ही कैण्ट के दार्शनिक सिद्धान्तो से प्रभावित थे।

जैसे ही उन्हे मेरी गिरफ्तारी की खबर मिली, उन्होने सारा कार्य छोड दिया, अपने जीवन के ध्येय को तिलाजलि देदी। अपने स्वतत्र जीवन को, जो उनके लिए उतना ही आवश्यक था जैसे पक्षियो के लिए स्वतत्र वायु, खतरे मे डाल दिया और मेरी सहायता करने के लिए सेण्ट पीटर्सवर्ग लौट आये।

मिलन के समय हम दोनो के प्रेमाश्रु वह निकले। मेरे भाई अत्यन्त उत्तेजित थे। उन्हे नीली पोशाकवाले सिपाहियो से घृणा थी और उन्होने अपने विचारो को उनके सामने ही स्पष्टत प्रकट भी कर दिया। सेण्ट पीटर्सवर्ग मे उनके आगमन से मेरे मन मे जवर्दस्त आशकाए उत्पन्न हो गई। यद्यपि उनके स्नेहपूर्ण चेहरे तथा प्रेमयुक्त नेत्रो को देखकर मुझे हर्ष हुआ और इस वात से कि मै महीने मे एक वार उनसे मिल सकूंगा, मुझे वडा सतोष था, तथापि मैं हृदय से चाहता था कि वह इस जगह से सैकडो मील दूर रहे, नही तो कभी वह भी पकड लिये जायगे और मेरी अन्तरात्मा वह रही थी—"शेर की माद मे भला तुम क्यो आये? तुरन्त

लौट जाओ।" लेकिन मै जानता था कि जबतक मैं जेल मे हू, मेरे भाई सेण्ट पीटर्सबर्ग मे ही रहेगे।

वह अच्छी तरह जानते थे कि निष्क्रियता मेरे लिए घातक होगी और आते ही उन्होने मेरे लिए कार्य करने की सुविधाए सुलभ करने के लिए अर्जी दे दी थी। भौगोलिक परिषद चाहती थी कि हिमकाल के ऊपर मैं अपनी पुस्तक समाप्त कर दू। अलैक्जैण्डर ने सेण्ट पीटर्सबर्ग के सम्पूर्ण वैज्ञानिक समाज को हिला दिया कि मुझे लिखने-पढने की सुविधा मिले। 'वैज्ञानिक परिषद' भी इस सम्बन्ध मे सचेत थी। परिणामस्वरूप मेरी गिरफ्तारी के दो-तीन महीने बाद गवर्नर मेरी कोठरी मे आये और मुझसे कहा कि सम्राट ने भूगोल समिति के लिए मुझे रिपोर्ट पूरी करने की आज्ञा दे दी है और इसलिए लिखने की सामग्री मिल जायगी। "लेकिन सूर्यास्त तक ही" उसने कहा। सेण्ट पीटर्सबर्ग मे जाडो के दिनो मे ३ बजे ही सूर्यास्त हो जाता है। लेकिन यह लाचारी थी। जार अलैक्जैण्डर ने स्वीकृति प्रदान करते समय "सूर्यास्त तक" शब्दो का प्रयोग किया था।

: २ :

लिखने-पढ़ने की सुविधा

अब मै काम कर सकता था।

आज मै उस सन्तोष और हर्ष को व्यक्त नही कर सकता, जो उस दिन लिखने-पढने की सुविधा मिलने पर मुझे अनुभव हुआ। मैं भयकर-से-भयकर नम कोठरी मे रहने, सूखी रोटी और पानी पर ही जिन्दगी बसर करने के लिए तैयार हो जाता, यदि मुझे काम करने की सुविधा मिल जाय।

केवल मैं ही एक कैदी था, जिसे लिखने-पढने की सुविधा मिली। मेरे अनेक साथी तीन-चार वर्ष तक जेल मे रखे गये और उन्हे केवल एक स्लेट मिली थी। वास्तव मे उस भयकर एकान्त मे एक स्लेट भी नियामत

थी और उन्होने उसका उपयोग नई भाषा सीखने और गणित के प्रश्नो को हल करने के लिए किया। लेकिन स्लेट पर जो कुछ लिखा जाता था, कुछ समय बाद ही नष्ट हो जाता।

अव मेरा जेल-जीवन अधिक नियमित हो गया। अब जीवन का उद्देश्य था। प्रात ९ बजे तक मै अपनी कोठरी के तीनसो चक्कर लगा लेता और अपने लिखने की सामग्री की प्रतीक्षा करता। भूगोल परिषद् के लिए मैने जो रिपोर्ट तैयार की थी, उसमे फिनलैण्ड की यात्रा का विवरण था और साथ ही हिमयुग का आधार क्या हो, इसकी चर्चा थी। अव मेरे पास पर्याप्त समय था और इसलिए मैने अपने विषय को फिर से सविस्तर लिखना प्रारम्भ किया। विज्ञान परिषद ने अपने सुन्दर पुस्तकालय की सुविधा मुझे दे दी थी ओर मेरी कोठरी के कोने शीघ्र ही पुस्तको ओर नकशो से भर गये। स्वीडन की भूगोल परिषद् के प्रकाशन, आर्कटिक प्रदेश के यात्रा-विवरण, लन्दन की भूगोल परिपद की त्रैमासिक पत्रिका के पुराने अक आदि सव मेरे पास थे। मैने अव दो वडी पुस्तके तैयार की। उनमे से पहली तो मेरे भाई और पोलकोफ ने भूगोल परिषद् की ओर से छपा दी और दूसरी जो पूर्ण नही हो पाई थी, पुलिस के तीसरे दस्ते के पास थी, जव मै वहा से भाग आया। १९०५ मे वह रूस के भूगोल परिपद को दे दी गई और उसने मुझे लन्दन भेज दिया।

तीसरे पहर ५ वजे—और जाडो मे ३ ही वजे—जैसे ही लैम्प कमरे मे आता, मुझसे लिखने का सामान छीन लिया जाता और मुझे काम वन्द करना पडता। तव मै पढने लगता, विशेषत इतिहास की पुस्तके।

मै सन्तो के जीवन-चरितो को भी पढ गया। उनमे जनसाधारण के वास्तविक जीवन से सम्वन्धित वह सामग्री मिलती है, जो अत्यन्त दुर्लभ है। मैंने इस वीच कई उपन्यास भी पढे।

शीत और कोठरी की नमी का असर मेरे स्वास्थ्य के ऊपर पड चुका था। भारी हृदय से हम लोग एक-दूसरे से विदा हुए।

इस मिलन के एक सप्ताह बाद जब मै अपने भाई से, अपनी पुस्तक की छपाई के विषय मे, पत्र की आशा कर रहा था, मुझे पौलकोफ का छोटा-सा पत्र मिला। उसने मुझे सूचित किया था कि अब वही पुस्तक के प्रूफ पढेगे और मुझे पुस्तक की छपाई के विषय मे जो कुछ लिखना हो, उन्ही को लिखू। पत्र पढते ही मुझे तुरन्त भास गया कि मेरे भाई को कुछ हो गया है। अगर वह बीमार होते तो पौलकोफ उल्लेख कर देते। बहुत दिन तक बडी फिक्र रही। सोचता, अवश्य ही अलैक्जैण्डर को गिरफ्तार कर लिया गया होगा और उनकी गिरफ्तारी का कारण मै ही रहा होऊगा। जीवन भारी लगने लगा। टहलना, व्यायाम, मेरा कार्य—सबसे जी उचट गया। दिन-भर कोठरी मे इधर-से-उधर चक्कर लगाता और मेरा मन निरन्तर अलैक्जैण्डर की गिरफ्तारी मे लगा रहता। जहातक मेरा, एक अविवाहित आदमी का, सवाल था, गिरफ्तारी के मानी थे केवल कुछ व्यक्तिगत असुविधा। लेकिन मेरे भाई तो विवाहित थे, अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम करते थे, उनके एक लडका भी था, जिसके ऊपर, अपने दो बच्चो को खोकर, वे दोनो लोग अपना सारा प्यार उडेल रहे थे।

सबसे भयकर थी अनिश्चितता। उन्होने ऐसा क्या किया होगा? उनकी गिरफ्तारी का कारण क्या था? अधिकारी उनपर क्या अपराध लगावेगे? हफ्ते निकल गये। चिन्ता बढती चली जा रही थी, लेकिन कोई खबर नही मिली। अन्त मे मुझे इधर-उधर से मालूम पडा कि उन्हे लैवरोफ को एक पत्र लिखने के अपराध मे गिरफ्तार किया गया है।

पूरी बात बहुत दिन बाद मुझे मालूम पडी। पिछली बार मुझसे मिलने के पश्चात उन्होने अपने पुराने मित्र को एक पत्र लिखा, जो उस समय लन्दन मे 'फारवर्ड' का सम्पादन कर रहे थे। उस पत्र मे उन्होने मेरे स्वास्थ्य के विषय मे चिन्ता व्यक्त की थी। साथ ही रूस मे तत्कालीन गिरफ्तारियो का उल्लेख करते हुए देश मे फैली तानाशाही के विरुद्ध अपने विचारो को स्पष्टत लिखा था। पुलिस के तीसरे दस्ते ने

पत्र को वीच मे रोक लिया और वे एक रात मेरे भाई के निवासस्थान की तलाशी लेने पहुचे। पुलिस ने असाधारण क्रूरता से तलाशी ली। आधी रात के वाद लगभग छः व्यक्ति उनके फ्लैट मे यकायक पहुच गये और सारे सामान को उलट-पुलट दिया। दीवारो तक को खोजा गया, विस्तरो को देखने के लिए वीमार वच्चे को उठा दिया गया। लेकिन उन्हे कुछ मिला नही, कुछ था ही नही।

मेरे भाई को तलाशी लेने का यह ढग वहुत वुरा लगा। अपनी स्वाभाविक स्पष्टवादिता से उन्होने तलाशी लेनेवाले पुलिस अधिकारी से कहा, "कप्तानसाहव, आपसे मुझे कोई शिकायत नही। आपको ज्यादा शिक्षा नही मिली और आप शायद समझते भी नही कि आप क्या कर रहे है।" फिर सरकारी वकील की ओर मुखातिव होकर उन्होने कहा—"लेकिन जनाव, आप तो जानते हैं कि इन सव कार्यवाहियो मे आपके सहयोग का क्या अर्थ है। आपको उच्च शिक्षा प्राप्त हुई है। आप कानून जानते है और आप जानते है कि जो कुछ भी नाममात्र का कानून इस देश मे है उसे किस तरह आप पैरोतले रौद रहे है। और इन लोगों की गैरकानूनी हरकतो को अपनी उपस्थिति से कानूनी रूप दे रहे हैं। आप मक्कार है।"

परिणाम यह हुआ कि पुलिसवाले उनके कट्टर दुश्मन हो गये। पुलिस ने उन्हे कैद कर लिया और तीसरे दस्ते की हवालात मे मई तक वन्द रखा। मेरे भाई का सुन्दर वालक, वीमारी मे वह और भी अधिक प्यारा और सुन्दर लगने लगा था, तपेदिक से वीमार था। डाक्टरो ने कह दिया कि वह कुछ ही दिनो और जीवित रह सकेगा। अलैक्जैण्डर ने, जिन्होने अभी तक अपने किसी दुश्मन से कोई भीख नही मागी थी, पुलिसवालो से याचना की कि उन्हे अपने वच्चे को अन्तिम वार देखने की अनुमति मिल जाय। उन्होने प्रार्थना की कि उन्हे केवल एक घटे के लिए घर हो आने दिया जाय अथवा पुलिस की हिरासत मे ही उन्हे ले जाया जाय। पुलिस-वालो ने इन्कार कर दिया। वदला लेने के अवसर को वह कव छोडनेवाले थे।

वच्चा मर गया। और जव मेरे भाई को पूर्वी साइवेरिया के छोटे-

से कस्बे मिनूसिन्स्क के लिए निर्वासित किया गया तो उनकी पत्नी लगभग विक्षिप्त हो गई। उन्हे दो फौजी कर्मचारियो के साथ जाना था। उनकी पत्नी बाद को जा सकती थी, उनके साथ जाने की अनुमति नही दी गई।

वह पूछते थे—"मुझे इतना तो बतला दिया जाय कि मेरा अपराध क्या है?" लेकिन उस पत्र के अतिरिक्त उनके खिलाफ कोई अपराध ही नही था। हमारे सम्बन्धियो को यह देश-निर्वासन बिलकुल गैरकानूनी और बदले की भावना से प्रेरित प्रतीत हुआ और वे समझते थे कि यह कुछ ही महीनो के लिए होगा। मेरे भाई ने गृहमत्री के यहा एक शिकायत का पत्र भेज दिया। उत्तर मिला कि गृहमत्री फौजी अधिकारियो के काम मे हस्तक्षेप करने मे असमर्थ है। उन्होने सीनेट के सामने दूसरा शिकायती पत्र भेजा, लेकिन उसका भी परिणाम कुछ नही निकला।

दो वर्ष पश्चात हमारी बहन हेलेन ने ज़ार के लिए एक प्रार्थना-पत्र लिखा। हमारे चचेरे भाई डिमिट्री, जो खारकौफ के गवर्नर जनरल और ज़ार के ए० डी० सी० थे, प्राय तीसरे दस्ते की इस कार्यवाही से अत्यन्त क्रुद्ध थे। उन्होने स्वय इस प्रार्थना-पत्र को जार के सामने पेश किया और साथ मे कुछ शब्द भी कहे। लेकिन अलैक्जैण्डर द्वितीय मे रोमनौफ वश की बदले लेने की भावना का पूर्णत विकास हुआ था। उसने प्रार्थना-पत्र पर लिख दिया 'उन्हे कुछ समय और रहने दिया जाय'। मेरे भाई साइबेरिया मे बारह वर्ष रहे और फिर रूस लौटकर नही आये।

: ४ :

ग्राण्ड ड्यूक से वार्त्तालाप

१८७४ की गर्मियो मे जो असख्य गिरफ्तारिया की गई और जिस प्रकार हमारे साथियो का दमन किया गया उसने रूसी युवक समाज की विचार-धारा मे भारी परिवर्तन कर दिया। उस समय तक हमारे केन्द्र की कार्य-

विधि यही थी कि मजदूरो और किसानो के वीच मे से कुछ ऐसे कार्यकर्त्ताओ को चुन लिया जाय जो साम्यवादी प्रचारक हो सके। लेकिन कारखानो मे गुप्तचरो का जाल विछ गया था और स्पष्ट था कि हम लोग कुछ भी करे, प्रचारक और कार्यकर्त्ता शीघ्र ही गिरफ्तार करके सदैव के लिए साइबेरिया भेज दिये जायगे। अव उस 'जनता के वीच चलो' आन्दोलन ने नया रूप ले लिया। हजारो युवक-युवती निर्द्वन्द्व होकर देहातो की ओर चल दिये और वहा के निवासियो को क्राति का सन्देश देने लगे। वे खुले आम पुस्तिकाए वाटते और क्रान्ति के गीत गाते। हम लोगो ने इस ग्रीष्म को 'पागल ग्रीष्म' की सज्ञा दी।

पुलिस घवडा गई। उनके पास इतने आदमी ही न थे कि हर प्रचारक का पीछा कर सके और उसे गिरफ्तार कर सके। फिर भी इस वीच पन्द्रहसौ से ऊपर व्यक्ति गिरफ्तार किये गए और उनमे से आवे वर्षो तक जेल मे वन्द रखे गये।

१८७५ की ग्रीष्म मे एक दिन मुझे अपनी कोठरी से लगी हुई कोठरी मे वूटो की हलकी आवाज सुनाई दी और उसके कुछ मिनट वाद वातचीत की भनक भी कान मे पडी। कोठरी के भीतर से एक महिला ने कुछ कहा और वाहर से भर्राई आवाज मे सन्तरी ने कुछ कहा। फिर मुझे कर्नल की चहल-पहल, सन्तरी को डाटना और ताला लगना सुनाई पडा। कर्नल ने कुछ कहा और भीतर से महिला ने तडककर कहा, "हम लोगो ने कोई वातचीत नही की। मैने उससे केवल निम्न कर्मचारी को वुलाने के लिए कहा था।" फिर दरवाजा वन्द कर दिया गया और मैंने कर्नल को सन्तरी को धीमे से डाटते हुए सुना।

अव मै अकेला नही था। मेरे पडोस मे एक महिला थी। उसने तुरन्त ही कठोर अनुशासन को तोड दिया। उस दिन से दीवारे, जो पिछले पन्द्रह मास से मौन थी, वोलने लगी। चारो ओर से मुझे दीवारो पर पैरो की धमक सुनाई पडती—एक, दो, तीन, चार. . .ग्यारह धमके, चौवीस धमके, चौदह धमके फिर शान्ति. उसके वाद तीन धमको के वाद तेतीस धमके। वार-वार ये धमके इसी क्रम मे सुनाई पडती—अन्त मे पडोसी

समझ जाता कि इन धमको का मतलब है—"तुम कौन हो ?" उसके बाद इस सक्षिप्त वर्णमाला मे वार्त्तालाप चल निकला।

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि मेरे बाई ओर मेरा मित्र सर्ड्रूकौफ है, जिसके साथ सकेत लिपि के द्वारा मै सब तरह की बातचीत कर सकूगा। लेकिन आदमियो से वार्त्तालाप जहा आनन्दप्रद था, वहा कष्टप्रद भी था। मेरे नीचे ही एक किसान बन्दी था, जिससे सर्ड्रूकौफ परिचित था। वह उससे धमको के द्वारा बातचीत करता रहता था। मेरे मना करने पर भी मेरे काम के समय वह यह बातचीत जारी रखता। मै भी कभी-कभी उससे बातचीत करता। यदि बिना किसी कार्य के जेल का एकाकी जीवन शिक्षितो के लिए बडा कष्टप्रद होता है, तो एक किसान के लिए यह और भी अधिक कठिन होता है। वह तो शारीरिक श्रम का अभ्यस्त होता है और पढने मे कुछ भी समय नही निकाल सकता। हमारा किसान मित्र अत्यन्त दुखी हो गया। यहा लाये जाने से पहले उसे एक दूसरी जेल मे दो वर्ष रखा गया था। उसका अपराध यही था कि उसने साम्यवादियो की बात को सुना था। उन दो वर्षो मे ही उसका दिमाग जवाब दे चुका था। धीरे-धीरे उसकी मानसिक स्थिति बिगडने लगी। हम दोनो के देखते-देखते उसकी बातचीत असम्बद्ध और पागलो जैसी होने लगी। नीचे से भयकर चीखने-चिल्लाने की आवाजे आती। हमारा पडोसी पागल हो गया था। लेकिन फिर भी उसे महीनो तक वही कैद रखा गया। बाद को उसे पागलखाने भेज दिया गया और वही वह खत्म हो गया। ऐसी परिस्थितियो मे एक व्यक्ति को पागल होते देखना अत्यन्त भयकर था। निश्चय ही मेरे मित्र सर्ड्रूकौफ के मानसिक स्वास्थ्य के ऊपर इसका बहुत बुरा प्रभाव पडा। चार साल जेल मे बन्द रहने के बाद जब न्यायालय से निर्दोष सिद्ध होने पर उसे छोडा गया तो उसने आत्मघात कर लिया।

एक दिन अकस्मात एक महान सज्जन मेरे कमरे मे आये। जार के भाई ग्राड ड्यूक निकोलस जेल का निरीक्षण करते हुए मेरी कोठरी के भीतर आये। उनके साथ केवल उनका एक ए० डी० सी० था। दरवाजा

बन्द कर दिया गया। मेरे पास आकर उन्होंने नमस्कार किया। वह मुझे व्यक्तिगत रूप से जानते थे और उन्होंने सरलता से बातचीत की, जैसे किसी पूर्वपरिचित से की जाती है। "क्रोपाटकिन, तुम तो फौजी स्कूल के विद्यार्थी और जार के पार्षद रहे थे। तुम कैसे इस झमेले मे फंस गये और अब इस कोठरी मे बन्द हो?"

मैंने उत्तर दिया, "प्रत्येक की धारणा अलग होती है?"

"धारणा! तो क्या तुम्हारी इच्छा क्रान्ति उभारने की थी।"

मै क्या उत्तर देता? यदि 'हां' कहता तो उसका मतलब यह लगाया जाता कि जिस व्यक्ति ने फौजी अधिकारियो के सामने उत्तर देने से इन्कार कर दिया, जार के भाई के सामने सबकुछ स्वीकार कर लिया। उसका ढंग ऐसा था जैसे फौजी स्कूल का कमाडर एक विद्यार्थी से अपराध कबूल कराता है। लेकिन मै "नहीं" भी नही कह सकता था, क्योंकि वह झूठ होता। मै निश्चय नहीं कर सका कि क्या उत्तर दू, इसलिए मै मौन बना रहा।

राष्ट्र के दुश्मन है और बातचीत का उनके ऊपर कोई असर होनेवाला नही।"

मैने उत्तर मे कहा—"आप सदैव ही अधिकारी है। मेरे लिए आपसे व्यक्तिगत तौर पर बात करना सम्भव नही।"

तब उन्होने विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछने प्रारम्भ किये—"क्या साइबेरिया मे दिसम्बर के विद्रोहियो के सम्पर्क मे आकर तुम्हारे विचार ऐसे हो गये ?"

"नही, मै केवल एक विद्रोही से परिचित था और उससे मेरी कोई विशेष बातचीत नही हुई।"

"तो फिर क्या सेण्ट पीटर्सबर्ग मे ही तुम्हारे विचार ऐसे हो गये ?"

"मै सदैव ही ऐसा था।"

"क्या कहा ? क्या फौजी स्कूल मे तुम्हारे विचार ऐसे ही थे ?" उन्होने कडककर कहा।

"तब मै लडका था। बाल्यावस्था मे जो कुछ अनिश्चित रूप मे रहता है, वही बडे होने पर निश्चित रूप धारण कर लेता है।"

उन्होने मुझसे कुछ प्रश्न और पूछे। उनके बोलने के ढग से मै समझ गया कि उनका उद्देश्य क्या है। वह मुझसे अपराध स्वीकार कराना चाहते थे। मैने कल्पना की कि फिर वह अपने भाई से कहेगे—"ये सब मजिस्ट्रेट निकम्मे है। उसने उन्हे कोई उत्तर नही दिया। मैने उससे कुल दस मिनट बातचीत की और उसने मुझसे सबकुछ कह दिया।" यह मुझे असह्य था। और जब अन्त मे उन्होने मुझसे कुछ इस तरह की चर्चा की, "तुम इन लोगो, किसान मजदूरो, के बीच कैसे फस गये ?" तो मैने तपाक से उत्तर दिया, "मैने आपसे कह दिया कि जो कुछ मुझे कहना था, मै मजिस्ट्रेट से कह चुका हू।" तुरन्त ही वह कोठरी के बाहर चले गये।

बाद को जेल के सिपाहियो ने ग्राड ड्यूक के साथ मेरी इस बातचीत को एक कहानी का रूप दे दिया। मेरे जेल से भागने के समय, जो व्यक्ति मेरी गाडी को हाक रहा था, वह फौजी टोपी पहने था, और उसके बडी

वडी मूछे थी। ग्राड ड्यूक निकोलस से उसकी आकृति कुछ-कुछ मिलती थी। इसलिए प्रचलित हो गया कि ग्राड ड्यूक ही मुझे जेल से भगाकर ले गये। समाचार-पत्रो के इस युग मे कहानी इस प्रकार गढी जाती है।

: ५ :

जेल से भागना

दो साल वीत चुके थे। मेरे साथियो मे से कई मर चुके थे, वहुत-से पागल हो गये थे। लेकिन हमारे मुकदमे की सुनवाई की कोई चर्चा ही नही थी। मेरा स्वास्थ्य भी दूसरे वर्ष का अन्त होते होते गिरने लगा था। लकडी का स्टूल, जिससे कसरत करता था, भारी लगने लगा और पाच मील का टहलना मानो वडा लम्वा सफर था। चूकि किले मे हम लोग साठ कैदी थे और जाडो मे दिन छोटे होते थे, हममे से प्रत्येक तीसरे दिन सिर्फ वीस मिनट के लिए वाहर टहलने ले जाया जाता था। मैने अपनी शक्ति को वनाये रखने की भरसक कोशिश की थी, लेकिन साल-भर उत्तरी ध्रुव की सर्दी मे रहने का असर होना ही था। साइवेरिया की यात्रा के वाद मेरे शरीर मे रक्त-रोग के जो लक्षण प्रकट होने लगे थे, वे अव कोठरी की नमी और अधेरे के कारण पूरी तरह से व्याप्त हो गये। इस तरह की जेल की उस भयकर बीमारी का मेरे शरीर पर पूरा-पूरा असर हो गया था।

आखिर १८७६ के मार्च अथवा अप्रैल मे हमे वताया गया कि तीसरे दस्ते (खुफिया पुलिस) ने प्रारम्भिक खोज-वीन पूरी कर ली है और हमारा मुकदमा न्यायाधीशो के पास भेज दिया गया है। इसलिए अव हम कचहरी के पासवाली जेल मे भेज दिये गए। वह जेल चार मजिल की एक वड़ी भारी इमारत थी, जिसमे कोठरी-ही-कोठरी थी। फ्रास और वेलजियम के कारागारो के नमूने पर हाल ही मे वनी थी। प्रत्येक कोठरी मे आगन की तरफ एक खिडकी थी और लोहे के छज्जो की ओर एक दरवाजा था। चारो मजिलो के ये छज्जे लोहे के एक जीने से मिले हुए थे।

हममे से अधिकाश को इस जेल मे आना अच्छा लगा। यहा उस किले से कही अधिक चहल-पहल थी और बाहर के आदमियो से पत्र-व्यवहार, अपने रिश्तेदारो से मिलने अथवा आपस मे बातचीत करने की सुविधा भी अधिक थी। बिना किसी रोक-थाम के दीवारो पर ठुक-ठुक जारी रहती थी। इसी तरह मैने अपने पडोसी युवको को पेरिस कम्यून का सारा इतिहास सुना दिया। पर इसमे लगभग एक सप्ताह लग गया।

लेकिन मेरा स्वास्थ्य और भी खराब हो गया। उस तग कोठरी का, जो एक कोने से दूसरे कोने तक सिर्फ चार कदम थी, सकीर्ण वातावरण मुझे असह्य था। जैसे ही भाप की नलिया चालू की जाती, वह बर्फ-जैसी ठडी कोठरी एक साथ हद से ज्यादा गरम हो जाती ! कोठरी मे टहलने के लिए जल्दी-जल्दी मुडना पडता था, इसलिए थोडी देर मे ही चक्कर आने लगते और दस मिनट की खुली हवा की कसरत भी, आगन तग होने के कारण, स्फूर्तिप्रद नही होती थी। जेल का वह डाक्टर, जिसके विषय मे जितना ही कम कहा जाय, उतना ही अच्छा, 'अपनी जेल मे' 'रक्त-रोग' का नाम भी नही सुनना चाहता था।

मुझे घर से खाना मगाने की अनुमति मिल गई थी, क्योकि मेरे एक रिश्तेदार वकील इस जेल के नजदीक ही रहते थे। लेकिन मेरी पाचन-क्रिया इतनी खराब हो गई थी कि मुश्किल से रोटी का छोटा टुकडा और एक-दो अडा खा पाता। मेरा स्वास्थ्य दिन-पर-दिन गिरने लगा और लोग कहने लगे कि अब मै बहुत दिनो जीवित नही रह सकूगा। अपनी कोठरी मे जाने के लिए जब मै जीना उतरता था, तो मुझे दो-तीन बार रुकना पडता था। मुझे याद है कि एक वृद्ध पहरेदार सिपाही ने मुझसे कहा था—"दु ख है कि तुम इस वसन्त के आखिर तक न बच सकोगे।"

मेरे रिश्तेदार अब अत्यन्त चिन्तित हो गये। मेरी बहन हेलेन ने मुझे जमानत पर छुडाने का प्रयत्न किया, लेकिन शूबिन (अफसर) ने व्यग्य से मुसकराते हुए उत्तर दिया—"अगर तुम डाक्टर का लिखा हुआ यह सर्टीफिकेट ले आओ कि तुम्हारा भाई दस दिन के भीतर मर जायगा, तो मै उसे छोड दूगा !" मेरी बहन यह जवाब पाकर कुर्सी पर धडाम से

गिर गई और अफसर के सामने ही सिसकने लगी, जिससे उसे सन्तोष ही हुआ होगा! लेकिन अत मे उसने अपनी यह प्रार्थना मजूर करा ही ली कि मेरा इलाज सेण्ट पीटर्सवर्ग मे फौजी अस्पताल के सबसे बडे डाक्टर द्वारा होना चाहिए। इस वृद्ध होशियार डाक्टर ने बहुत ही अच्छी तरह मेरी जाच की और वह इस निर्णय पर पहुचा कि मुझे कोई भयकर शारीरिक बीमारी नही, केवल शुद्ध वायु न मिलने के कारण रक्त रोग हो गया है। उसने मुझसे कहा—"केवल शुद्ध वायु की ही तुम्हें जरूरत है।" थोडी देर के लिए वह असमजस मे रहा, तत्पश्चात् उसने निश्चयपूर्वक कहा—"ज्यादा बातचीत फिजूल है। तुम्हे किसी भी हालत मे यहा न रहने दिया जाना चाहिए, दूसरी जगह भेजना ही है।"

दस दिन बाद मुझे एक फौजी अस्पताल मे भेज दिया गया। यह अस्पताल सेण्ट पीटर्सवर्ग के बाहर बना था। इसमे बीमार अफसरो और कैदियो के लिए एक छोटी जेल भी थी। मेरे दो साथी, जब यह निश्चित हो चुका कि वे शीघ्र ही तपेदिक से मर जायगे, इसी जेल मे भेजे गए थे। यहा जल्दी ही मेरी तन्दुरुस्ती ठीक होने लगी, मुझे फौजी गार्ड के कमरे के पास ही एक बडा कमरा मिला। कमरे मे दक्षिण की तरफ लोहे के सीकचो की एक खिडकी थी। खिडकी के सामने एक सडक थी, जिसके दोनो तरफ हरे-भरे पेड थे और सडक के उस पार खुली जगह थी, जहा दोमौ बढई मियादी बुखार के रोगियो के रहने के लिए छोटे-छोटे कमरे बनाते थे। रोज रात को करीब एक घटे तक ये बढई मिलकर गाना गाते थे। एक सतरी, जो मेरे कमरे पर ही तैनात था, सडक पर पहरा देता रहता था।

मै खिडकी को दिन-भर खुली रखता और धूप के, जो मुझे मुद्दत से नसीब नही हुई थी, मजे लिया करता। यहा वसन्त की स्वच्छ वायु मे अच्छी तरह सास लेने का अवसर मिला और मेरा स्वास्थ्य ठीक होने लगा। मै हल्का खाना पचा लेता, ताकत भी महसूस होने लगी और मैने अपना काम फिर नए उत्साह से आरम्भ कर दिया। जब मैने देखा कि मै अपनी पुस्तक का दूसरा भाग किसी भी तरह समाप्त नही कर सकता, तो उसका सारांश ही लिख डाला—यह बाद को पहले भाग मे ही छपा।

किले मे मैने एक साथी से, जो इस अस्पताल मे रह चुका था, सुना था कि यहा से भाग जाना बहुत मुश्किल नही है। शीघ्र ही मैने अपने मित्रो को यहा आने की सूचना दे दी। लेकिन भागना उतना आसान नही था, जितना मेरे दोस्त ने मुझसे कह रखा था। मेरा पहरा और भी ज्यादा कडा कर दिया गया और मेरा कमरे से बाहर निकलना भी बन्द कर दिया गया। अस्पताल के सिपाही और सतरी यदि कमरे मे आते, तो एक या दो मिनट से ज्यादा नही ठहरते थे ।

मित्रो ने मेरे छुटकारे के लिए कई एक योजनाए बनाईं । कुछ तो उनमे अत्यन्त मनोरजक थी। उदाहरण के लिए एक योजना यह थी कि मै खिडकी के लोहे के सीकचे काट लू। फिर किसी बरसात की रात को, जब सतरी अपने बक्स मे झपकी ले रहा हो, दो मित्र पीछे से आकर सन्दूक को इस होशियारी से उलट दे कि उसे चोट भी न लगे और वह सन्दूक से ढक जाय। इसी बीच मै खिडकी से बाहर कूद जाऊ! लेकिन अचानक ही इससे अच्छी तरकीब निकल आई।

"बाहर टहलने की अनुमति मागो।" एक सिपाही ने धीरे-से मुझसे कहा। मैने तदनुसार प्रार्थना की। डाक्टर ने मेरा समर्थन किया और हर रोज तीसरे पहर चार बजे के लगभग मुझे टहलने की आज्ञा मिल गई।

उस पहले दिन को—जब मै टहलने निकला—मै कभी नही भूलूगा। निकलते ही मैंने देखा कि करीब दो सौ गज लम्बा और डेढ सौ गज चौडा हरी घास का आगन है। फाटक खुला रहता और उसमे से अस्पताल, सडक और उसके राहगीर दीखते थे। जब मै जेल की सीढियो से उतरता, तो आगन और उस फाटक को देखता ही रह जाता, मानो पैर ही रुक गए हो! आगन मे एक तरफ जेल थी—करीब सौ गज लम्बी छोटी इमारत थी, जिसके दोनो तरफ सतरियो के छोटे बक्स थे। दोनो सतरी जेल के सामने इधर-से-उधर चक्कर लगाते रहते और इस तरह घास पर एक पग-डडी ही बन गई थी। मुझसे कहा गया कि मै इसी पगडडी पर टहला करू। चूकि दोनो सतरी भी इसीपर टहलते रहते थे, इसलिए मेरे और किसी सतरी

के बीच का फासला कभी दस-बारह गज से ज्यादा न रहता और अस्पताल के तीन सिपाही सीढियो पर बैठकर चौकसी करते रहते।

इस बडे अहाते की दूसरी ओर जलाऊ लकडी गाडियो मे से उतारी जा रही थी और कई किसान उसे दीवार के सहारे लगा रहे थे। अहाते के चारो तरफ मोटे तख्तो की दीवार थी और उसका फाटक गाडियो के आने-जाने के लिए खुला रहता था। यह खुला फाटक मुझे बहुत अच्छा लगता। मन मे सोचता, "मुझे इस तरह दृष्टि नही गडानी चाहिए।" फिर भी उसी तरफ देखता रहता! पहले दिन जब मुझे कोठरी मे वापस पहुचाया गया, तो तुरन्त बाहर के मित्रो को कापते हुए हाथो से अत्यन्त अस्पष्ट अक्षरो में मैने लिखा—"इस समय इशारे की भाषा मे लिखना असम्भव-सा प्रतीत होता है। यहा से भागना इतना आसान लगता है कि बुखार-जैसी कपकपी मालूम होती है। आज ये लोग मुझे बाहर आगन मे टहलाने ले गये थे। वहां फाटक खुला था और नजदीक कोई संतरी भी न था। इस फाटक से मै निकल भागूंगा, यहा के सतरी मुझे पकड नही सकेगे।" और फिर मैंने अपने भागने की तरकीब का खुलासा लिखा—"एक महिला को खुली गाडी मे अस्पताल आना है। वह गाडी से उतरे। गाडी फाटक से लगभग पचास कदम की दूरी पर खडी रहे। फाटक के बाहर एक आदमी टहलता रहे। जब चार बजे मै टहलने के लिए निकाला जाऊ, तो थोडी देर हाथ मे टोप लिये टहलूंगा। यह आदमी इसका मतलब समझे कि यहा मेरी तैयारी है। फिर आप लोगो को इशारा करना है कि "सडक साफ है।" बिना तुम्हारे इशारे के मै नही भागूंगा, और जब एक दफा फाटक से बाहर हो जाऊ तो गिरफ्तार नही होना है। या तो आप लोग सामने का हरा बगला, जो यहा से साफ दीखता है, किराए पर ले ले और उसकी खिडकी से इशारा कर दे और यदि यह सम्भव न हो, तो अपना इशारा रोशनी या आवाजों से करे जिससे गाडीवान किसी तरह उजाला कर दे। इससे भी बेहतर होगा कि कोई गाना होता रहे, जिसका मतलब होगा कि सडक साफ है। संतरी शिकारी कुत्ते की तरह मेरा पीछा करेगा, लेकिन किसी तरह मै उससे दस-पाच कदम आगे ही रहूंगा। सडक पर मै गाडी मे झपटकर बैठ जाऊंगा

और फिर हम लोग भाग जायगे। अगर इस बीच सतरी गोली मार देता है, तो फिर चारा ही क्या है ! उससे बचना अपनी सूझ से बाहर है और फिर यहा जेल के भीतर निश्चित मौत के मुकाबले मे यह खतरा कुछ बुरा तो है नही।"

कई सुझाव और भी दिये गए, लेकिन आखिर मे यही तरकीब स्वीकृत हुई। हमारे मित्रो ने तैयारिया शुरू कर दी। और इसमे कुछ ऐसे सज्जनो ने भी भाग लिया, जो मुझे बिलकुल न जानते थे। फिर भी उनका जोश ऐसा था मानो उनके अत्यन्त प्रिय मित्र का छुटकारा होने जा रहा हो। लेकिन इस उपाय मे कुछ मुश्किले थी और समय कम रह गया था। मै खूब मेहनत करता, राततक लिखता रहता, लेकिन फिर भी मेरा स्वास्थ्य अच्छा होने लगा, इतनी जल्दी कि स्वय मुझे आश्चर्य होता ! जब मैं पहले दिन आगन मे लाया गया था, तो धीरे-धीरे चलने मे भी थकान मालूम होती थी और अब मैं दौड सकता था ! लेकिन मै तो उसी तरह धीरे-धीरे टहलता था, वरना मेरा टहलना ही बन्द कर दिया जाता। डर लगा रहता कि कही मेरी स्वाभाविक फुर्ती सारा भेद न खोल दे और इस बीच मेरे साथियो को इसके लिए बहुत-से आदमी जुटाने थे, एक तेज घोडा और अनुभवी गाडीवान ढूढना था और ऐसी बीसियो बाधाओ का भी खयाल करना था, जो इस तरह के षड्यत्र मे तत्काल उपस्थित हो जाती है। इन सब तैयारियो मे लगभग एक माह लग गया और इस बीच किसी भी दिन मुझे पुरानी जेल मे भेजा जा सकता था !

आखिर भागने का दिन निश्चित हो गया। पुराने रिवाजो के अनुसार २९ जून सेण्ट पीटर और सेण्ट पाल का दिन है। मेरे मित्रो ने अपने षड्यत्र मे थोडी भावुकता का पुट देकर मेरे छुटकारे के लिए इसी दिन को निश्चित किया। उन्होने मुझे सूचित कर दिया था कि जब मै अपनी तैयारी का इशारा करूगा, तो वे एक लाल गुब्बारा उडाकर मुझे जता देगे कि बाहर सब मामला ठीक है। फिर एक गाडी आयेगी और आखिर मे एक गाना होगा, जिससे मुझे मालूम हो जायगा कि सडक साफ है।

२९ तारीख को मै बाहर निकला और टोप उतारकर गुब्बारे का

इन्तजार करने लगा। लेकिन वहा कुछ भी न था। आधा घटा बीता, सडक पर गाडी की खडखडाहट सुनाई दी, एक आदमी को गाते हुए भी सुना, लेकिन गुब्बारा नजर नही आया! घटा खत्म हुआ और मै अत्यन्त निराश होकर अपने कमरे मे लौट आया। सोचा कि कुछ बाधा आ गई होगी।

उस दिन सचमुच अनहोनी हो गई थी। सेण्ट पीटर्सबर्ग मे सैकडो गुब्बारे बाजार मे बिका करते है, लेकिन उस दिन एक भी गुब्बारा न था! एक छोटे बच्चे से एक गुब्बारा लिया, लेकिन वह पुराना था और उडा ही नही! फिर मेरे मित्र एक चश्मेवाले की दुकान से हाइड्रोजन बनाने का यत्र लाये। उससे एक गुब्बारा भरा भी, लेकिन वह उडा ही नही! हाइ-ड्रोजन मे नमी रह गई थी। समय थोडा बचा था। फिर एक छाते मे गुब्बारे को बाधा और एक महिला इस छाते को ऊचा करके अहाते की दीवार के सहारे सडक पर चली, लेकिन मुझे कुछ भी न दीख पडा—दीवार बहुत ऊची थी और वह महिला बहुत बोनी! बाद को ज्ञात हुआ कि उस दिन गुब्बारे का न मिलना ही ठीक हुआ। जब मेरे भागने का समय निकल गया, तो गाडी पूर्वनिश्चित रास्ते पर दौडाई गई और उसी सडक पर दस-बारह गाडिया अस्पताल के लिए लकडी ढो रही थी। इन गाडियो के कुछ घोडे दाईं ओर भागे, कुछ बाईं ओर। नतीजा यह हुआ कि हमारी गाडी बहुत धीमे-धीमे चल सकी और एक मोड पर तो बिलकुल ही रुक गई! अगर मैं उसमे होता, तो निश्चित रूप से पकड लिया गया होता।

अब उस सडक पर कई जगह इशारे देने का प्रबन्ध किया गया, जिससे मालूम हो जाय कि सडक साफ है या नही। अस्पताल से दो मील की दूरी तक मेरे साथी सतरियो की तरह खडे हुए। एक साथी हाथ मे रूमाल लिए सडक पर टहलता था—यदि सामने गाडी दीखे, तो वह रूमाल जेब मे रख ले। दूसरा साथी मूगफली खाते हुए एक पत्थर पर तैनात था—जैसे ही गाडिया दीखे, मूंगफली खाना बन्द कर दे। ये सब इशारे विभिन्न मित्रो द्वारा आखिर उस घोडागाडी तक पहुचने के थे। मेरे मित्रो ने सामने का हरा बगला भी, जो फाटक के सामने ही था, किराये पर ले लिया था,

और जैसे ही सडक साफ हो, उसकी खिडकी मे एक आदमी को वायलिन बजाना था।

अब अगला दिन निश्चिय हुआ, ज्यादा देरी खतरनाक होती। वास्तव मे अस्पताल के अधिकारियो ने गाडी का आना-जाना नोट कर लिया था। कुछ सन्देहात्मक खबरे भी उनके पास अवश्य पहुच गई होगी, क्योकि भागने से एक रात पहले मैने अफसर को सन्तरी से कहते हुए सुना था—"तुम्हारे कारतूस कहा है।" सन्तरी ने अपने कारतूस निकाल लिये, तो अफसर ने कहा—"क्या तुमसे नही कहा गया कि आज रात को चार कारतूस अपनी जेब मे तैयार रखना।" और वह तबतक वहा खडा रहा, जबतक सन्तरी ने चारो कारतूस अपनी जेब मे न रख लिये। और जब वह चलने लगा तो फिर आज्ञा दी—"मुस्तैद रहो।"

और उन सब इशारो की रूपरेखा मुझ तक पहुचानी थी। दूसरे दिन दो बजे मेरी एक रिश्तेदार महिला जेल आई, मुझे घडी देने। वैसे तो मेरे पास हर चीज एक अफसर की मार्फत आती थी, लेकिन चूंकि यह घडी खुली थी, मेरे पास सीधी पहुचा दी गई। इस घडी मे एक छोटा पुर्जा था, जिसमे सारी तरकीब लिखी थी। मै तो उसे पढकर काप गया। कितनी हिम्मत और कैसी दिलेरी का काम था! यदि किसीने घडी के ढक्कन को खोल लिया होता, तो वह महिला, जिसका पीछा पुलिस पहले से ही कर रही थी, तुरन्त वही गिरफ्तार हो जाती। लेकिन मैने देखा कि वह जेल के बाहर सडक पर निकल गई और नौ-दो ग्यारह हो गई।

सदैव की भाति मै चार बजे बाहर निकल आया और मैने अपना इशारा कर दिया। थोडी देर मे गाडी की खडखडाहट सुनाई दी और हरे बगले से वायलिन की ध्वनि भी आई। लेकिन उस वक्त मै अहाते के दूसरे कोने पर था। मै फाटक की तरफ चला। मन मे सोचा, "बस, कुछ क्षण और!" लेकिन फाटक के पास पहुचते ही सहसा वायलिन बजना बन्द हो गया। करीब पन्द्रह मिनट बडी फिक्र मे बीते। सोचता, "वायलिन बन्द क्यो हो गया!' कुछ समय उपरात ही देखा कि करीब एक दर्जन गाडिया फाटक से अहाते मे आईं। तुरन्त ही वायलिनवाले सज्जन ने एक जोशीली

चीज़ छेडी, मानो कह रहा हो—"बस, यही वक्त है। आखिरी मौका!" मै धीरे-धीरे कापता हुआ फाटक की ओर चला—इस आशका मे कि कही वायलिन फिर बन्द न हो जाय!

फाटक पर पहुचकर मैने मुडकर देखा कि सतरी पाच-छः कदम पीछे था और उल्टी तरफ देख रहा था। 'बस यही मौका है,' मेरे मन मे आया। तुरन्त मैने जेल की हरी पोशाक उतार फेकी और दौडने लगा। उस लम्बी-चौडी पोशाक को उतारने का अभ्यास मै बहुत दिन से कर रहा था। वह कोट इतना बडा था कि किसी भी तरह एक सपाटे मे उतरता ही नही था। मैने उसकी बाहो के नीचे की सिलाई काट दी, फिर भी काम नही चला। आखिर मैने उसे दो हरकतो मे उतारने का अभ्यास प्रारम्भ किया, पहले उसे बाह से उतारता और बाद को तुरन्त जमीन पर पटकता। धीरे-धीरे मै इस क्रिया मे पारगत हो गया।

मुझे अपनी शक्ति पर बहुत विश्वास नही था, इसलिए दम बाकी रखने के लिए शुरू मे धीरे-धीरे दौडा। लेकिन मै कुछ ही कदम भागा होऊगा कि किसान, जो दीवार के सहारे लकडी लगा रहे थे, चिल्लाने लगे—"पकडो! पकडो!! वह भाग रहा है!" और वे मुझे फाटक पर रोकने भी दौडे। अब तो मै पूरे जोर से दौडा। मेरे मन मे बस [illegible] एक ही बात थी—"बस दौडो?" फाटक के नजदीक गाडियो ने जो [illegible] बना दिये थे, उनका भी मैने खयाल नही किया!

मेरे मित्रो ने, जो हरे बगले से मुझे भागते देख रहे थे, कि सतरी ने तीन सिपाहियो के साथ मेरा पीछा किया। बीच फासला कम था और उसे बराबर यह विश्वास [illegible] मुझे पकड लेगा। कई दफा उसने अपनी बन्दूक [illegible] भोकने के लिए आगे बढाई भी। एक दफा तो [illegible]

अफसर फौजी टोप पहने बैठा था, उसने मेरी तरफ देखा भी नही। मन में सोचा, "बस, खात्मा हो गया!" मित्रो ने लिखा था कि सडक पर आने के बाद हर्गिज न घबराना। वहा तुम्हारी रक्षा के लिए कई साथी उपस्थित रहेगे। मैने निश्चय किया कि जिस गाडी मे दुश्मन बैठा है, वहा न बैठू। लेकिन जैसे ही मै गाडी के करीब पहुचा, मैने देखा कि इस अफसर के मेरे एक पुराने दोस्त की तरह के भूरे गलमुच्छे है। वह दोस्त हमारे गुट मे तो नही था, लेकिन मेरा निजी मित्र था और उसकी दिलेरी और खासकर खतरे के मौके पर उसकी हिम्मत को मै जानता था। मन मे सोचा, वह यहा इस वक्त कैसे आ सकता है!'. उसका नाम लेकर पुकारनेवाला ही था, लेकिन फिर अपनेको जब्त किया और उसका ध्यान आकर्षित करने-के लिए तालिया पीटी। अब उसने मेरी ओर मुह किया और तुरन्त मै उसे पहचान गया!

वह रिवाल्वर हाथ मे लिये तैयार था। मुझसे कहा—'जल्दी बैठो।" और तुरन्त गाडीवान से कहा—"जल्दी भगाओ, नही तो तुम्हारी जान की खैर नही।" घोडा बहुत ही अच्छा था। वह खास इसी मौके के लिए लाया गया था। पूरी तेजी से दोडा। पीछे से सैकडो आवाजे आ रही थी—"पकडो! पकडो! भाग न जाय!" मेरे मित्र ने उसी समय मुझे एक शानदार ओवरकोट पहना दिया। लेकिन पीछा करनेवालो से भी ज्यादा खतरा उस सतरी से था, जो अस्पताल के फाटक पर ही तैनात था, गाडी के खडे होने की जगह के ठीक सामने। वह थोडा ही आगे बढकर आसानी से मुझे गाडी मे चढने से रोक सकता था। इसलिए एक मित्र को इस सिपाही का ध्यान बटाने के लिए रखा गया था और इस मित्र ने किया भी वह काम बडी खूबी से। वह सिपाही पहले अस्पताल के रसायन-विभाग मे काम कर चुका था। मेरे मित्र ने खुर्दबीन और उसके द्वारा दीखनेवाली चीजो के बारे मे उससे बहस छेड दी। मनुष्य-शरीर पर रहनेवाले एक कीटाणु के विषय मे उसने सिपाही से पूछा—"तुमने कभी देखा है कि उसके कितनी लम्बी पूछ होती है?" "क्या बकते हो? पूछ?" फिर उसने कहा—"जीहा, उसके पूछ होती है और काफी बडी, खुर्दबीन

से साफ दीखती है।" सिपाही ने उत्तर दिया—"अच्छा, अपने ये किस्से तुम मुझे न सुनाओ।" मेरे मित्र ने फिर कहा—"मै इसके बारे मे ज्यादा जानता हू—सबसे पहले तो खुर्दबीन से मैने पूछ ही देखी थी!" जब मै उनके नजदीक से भागकर झपाटे के साथ गाडी मे बैठा, तो यही वहस चल रही थी! पाठको को यह घटना किस्सा-कहानी-सी जचेगी, पर है यह पूर्णतया सत्य।

गाडी तुरन्त एक तग गली मे मुड गई—उसी दीवार की तरफ, जिसके सहारे किसान लकडी रख रहे थे। अब ये सब किसान मेरा पीछा करने मे लगे थे। गाडी ने मोड इतने सपाटे से लिया कि करीब-करीब उलटने को ही गई। मै तुरन्त आगे की ओर बढ गया और मित्र को भी आगे खीच लिया, इससे गाडी पलटने से बच गई! तग सडक को पार कर हम बाई तरफ मुडे। वहा एक सार्वजनिक सस्था के सामने दो सशस्त्र सिपाही खडे थे; उन्होने हमारे साथी की फौजी टोपी को सलाम दी! वह अब भी काफी उत्तेजित था, इसलिए मैने उससे कहा—"शान्त हो।" उसने उत्तर दिया—"सब ठीक हो रहा है, फौजी आदमी हमे सलामी दे रहे है।" अब गाडी-वान ने मेरी तरफ मुह किया। मैने देखा कि वह भी अपना एक पुराना दोस्त है। हमारा घोडा तेज चाल से भागा जा रहा था। हर जगह हमे मित्र खडे मिले। वे हमे इशारा कर रहे थे ओर हमारी सफल यात्रा के लिए मगल-कामनाए! अब हम एक दरवाजे पर उतरे और गाडी को आगे भेज दिया। मै सीधा जीना चढ गया ओर अपनी साली से मिला। वह वेहद खुश हुई, साथ ही अत्यन्त ही चिन्तित भी। हर्ष और विषाद के आसू उसकी आखो मे थे। उसने मुझे तुरन्त दूसरी पोशाक पहनने और अपनी विख्यात दाढी को मुडा डालने के लिए कहा। दस मिनट के भीतर मेरा मित्र ओर मै घर से चल दिये और एक दूसरी गाडी ले ली।

इस बीच अस्पताल के पहरेदार सिपाही और उनका अफसर वाहर निकले और सोचने लगे कि क्या किया जाय। आस-पास एक मील तक कोई गाडी ही न थी, सभी गाडिया हमारे मित्रो ने किराए पर ले रखी थी। उस भीड की एक किसान बुढिया इन सवसे होशियार थी। उसने

धीरे-से कहा—"बेचारे कैदी ! वे लोग प्रोसपैक्ट पर अवश्य पहुचेगे, और अगर कोई आदमी इस राह दौडकर सीधा वहा पहुचा, तो वे सचमुच ही पकड जायगे।" यह बिलकुल ठीक कह रही थी। अफसर नजदीक-वाली गाडी पर गया और उन आदमियो से प्रार्थना की कि वे घोडे दे दे, ताकि वह हमे पकडने के लिए किसीको घोडे पर भेज सके। लेकिन उन आदमियो ने घोडे छोडने से कतई इन्कार कर दिया और अफसर ने भी बल-प्रयोग नही किया ! और वे वायलिन बजानेवाले सज्जन और वह महिला भी, जिन्होने हरा बगला किराए पर लिया था, बाहर निकल आये और उस बुढिया के साथ भीड मे शामिल हो गये ! जब भीड छट गई, तो वे भी चम्पत हुए !

उस दिन तीसरे पहर मौसम भी अच्छा था। हम लोग उन टापुओ की ओर चल दिये जिधर सेण्ट पीटर्सबर्ग के अधिकाश उच्च श्रेणी के लोग बसन्त ऋतु मे सूर्यास्त देखने जाया करते थे। रास्ते मे, बगल की सडक पर, एक नाई की दुकान पर मैने अपनी दाढी भी सफाचट कराली ! अब मुझे पहचानना काफी मुश्किल था। हम लोग उन टापुओ मे अपनी गाडी मे इधर-से-उधर काफी देरतक चक्कर लगाते रहे। हमसे कह दिया गया था कि अपने रात के विश्राम-स्थल पर जरा देर से पहुचे। अब सवाल था, इस बीच कहा जाय। मैने साथी से पूछा—"अब क्या करे ?" वह भी थोडी देर सोचता रहा और फिर तुरन्त गाडीवान से कहा—"डोनोन होटल ले चलो।" वह सेण्ट पीटर्सबर्ग का सबसे शानदार होटल था। वह बोला—"तुम्हे देखने के लिए कोई भी आदमी उस आलीशान होटल मे न पहुचेगा। वे तुम्हे सब जगह ढूढेगे, लेकिन उस जगह का किसीको खयाल भी न आवेगा। वहा हम लोग भोजन करेगे और फिर कुछ सुरा-पान भी—तुम्हारे छुटकारे की सफलता की खुशी मे !"

भला, ऐसे मुनासिब सुझाव का मै जवाब ही क्या देता ! इसलिए हम लोग डोनोन पहुचे। रात के भोजन का समय था। कमरो मे शानदार उजाला हो रहा था और वे आदमियो से भरे थे। उन सबको हमने पार किया और एक अलग कमरा किराए पर लिया और वहा तबतक रहे,

जबतक पूर्वनिर्दिष्ट स्थान पर हमारे पहुचने का समय नही हो गया। जिस मकान मे हम पहले-पहल उतरे थे, उसकी तलाशी हमारे वहा से हटने के थोडी देर बाद ही हो गई। लगभग सभी मित्रो के घरो की तलाशी हुई, लेकिन डोनोन मे ढूढने की किसीको न सूझी।

दो दिन बाद मुझे एक कमरे मे चले जाना था, जो मेरे लिए एक फर्जी नाम से किराए पर ले लिया गया था। लेकिन जो महिला मेरे साथ जानेवाली थी, उसने उस मकान को पहले देख आने की होशियारी की। उस मकान के चारो तरफ जासूस थे! कई मित्र मुझसे कहने आये कि वहा जाना अब खतरे से खाली नही। पुलिस अत्यन्त सतर्क हो गई थी। खुफिया-विभाग ने मेरी तस्वीर की सैकडो प्रतिया छपवाकर बटवा दी थी। जो जासूस मुझे पहचानते थे, मुझे सडको पर तलाश कर रहे थे। और जो जासूस मुझे पहचानते न थे, वे उन पहरेदारो को साथ लिये घूम रहे थे, जिन्होने मुझे जेल मे देखा था। जार बहुत ही क्रुद्ध था कि उसकी राजधानी मे ही दिन-दहाडे मै इस तरह भाग गया! उसने हुक्म दे दिया था—"क्रोपाटकिन को जरूर ही पकडना है।"

सेण्ट पीटर्सबर्ग मे बने रहना असम्भव था, इसलिए मै नजदीक के गावो मे छिपा रहा। पाच-छ दोस्तो के साथ मै उस गाव मे रहा, जहा इस मौसम मे सेण्ट पीटर्सबर्ग के लोग तफरीह के लिए आया करते थे। फिर तय किया गया कि मुझे कही बाहर ही चला जाना चाहिए। लेकिन एक विदेशी पत्र द्वारा हमे मालूम हो गया था कि बाल्टिक और फिनलैण्ड प्रदेशो की सीमाओ के सब स्थानो और स्टेशनो पर वे जासूस तैनात थे, जो मुझे पहचानते थे। इसलिए मैने निश्चित किया कि उस तरफ चलू, जिस ओर किसीका खयाल ही न पहुचे। एक मित्र का पासपोर्ट लेकर और दूसरे मित्र को साथ लेकर मैने फिनलैण्ड की सीमा पार की और सीधा बोथीनिया की खाडी के एक बन्दरगाह पर पहुचा। वहा से मै स्वीडन निकल गया।

जब मै जहाज पर बैठ गया और वह छूटने ही वाला था, तो मेरे साथी मित्र ने सेण्ट पीटर्सबर्ग की खबरे सुनाई। सरकार ने मेरी बहन हेलेन

को गिरफ्तार कर लिया था। मेरे भाई की साली भी, जो भाई और भाभी के साइबेरिया चले जाने के बाद मुझसे हर महीने मिलने आती थी, हिरासत मे ले ली गई थी। मेरी बहन को तो मेरे जेल से भागने के बारे मे कुछ भी पता न था। जब मै भाग आया था, उसके बाद मेरे एक मित्र ने उसको यह खबर सुनाई थी। मेरी बहन ने बहुत-कुछ कहा, आरजू-मिन्नत की कि मुझे कुछ भी पता नही, लेकिन फिर भी पुलिस उसको उसके बच्चो से अलग करके ले गई और पन्द्रह दिन जेल मे रखा। मेरे भाई की साली को शायद कुछ भास तो हो गया था कि कुछ तैयारिया हो रही है, लेकिन उनमे उसका हाथ बिलकुल न था। अधिकारियो मे यदि तनिक भी बुद्धि होती, तो समझ लेते कि जो महिला हर महीने नियमपूर्वक मुझसे मिलने आती थी, कम-से-कम वह तो इस षड्यत्र मे शामिल न होगी। उसको दो महीने जेल मे रखा गया। उसके पति ने, जो एक प्रतिष्ठित वकील था, उसके छुडाने का भरपूर प्रयत्न किया। उसे अधिकारियो से उत्तर मिला—हमे भी मालूम हो गया है कि इस षड्यत्र मे इस महिला का कोई हाथ नही। लेकिन जिस दिन हमने इसे गिरफ्तार किया था, हमने जार को यह सूचना भेज दी थी कि षड्यत्र की सचालिका गिरफ्तार कर ली गई है। और अब जार को यह समझाने मे देर लगेगी कि षड्यत्र से इस औरत का कोई सम्बन्ध नही !"

बिना कही रुके मै स्वीडन पार कर गया और क्रिश्चियाना पहुचा। वहा हल नामक बन्दरगाह के लिए जहाज मिलने तक इन्तजार करता रहा। जब मै जहाज पर पहुच गया, तो मैंने जरा चिन्तित होकर सोचा, जहाज के ऊपर झडा कहा का है—नारवे का, जर्मनी का या इग्लैण्ड का ? तुरन्त मुझे दीखा, जहाज के ऊपर यूनियन जैक फहरा रहा है—वही झडा, जिसके नीचे इटालियन, रूसी, फ्रासीसी और सभी देशो के शरणार्थियो को शरण मिली है ! मैंने हृदय से उस पताका का अभिनन्दन किया !

खण्ड ६
पश्चिमी यूरोप

: १ :

इंग्लैण्ड में

जब हमारा जहाज इंग्लैण्ड के समुद्र-तट के करीब पहुचा, उस समय उत्तरी समुद्र मे तूफान आ रहा था। लेकिन मुझे तूफान अच्छा लग रहा था। दो वर्ष उस कोठरी मे रहने के बाद मेरा रोम-रोम जीवित हो उठा था और जीवन का पूरा आनन्द लेने के लिए लालायित था।

मेरी इच्छा थी कि मै सिर्फ कुछ महीने रूस के बाहर रहू, जिससे इस बीच मेरे भागने का ऊधम शान्त हो जाय और मै कुछ स्वस्थ हो जाऊ। लेकिन कुछ ऐसी परिस्थितिया हुई कि फिर मै रूस नही जा सका। शीघ्र ही अराजकवादी आन्दोलन मे लग गया और मैंने महसूस किया कि इस आन्दोलन मे मै यही से योग दे सकता हू। अपनी जन्मभूमि मे मुझे इतने अधिक आदमी जानते थे कि किसान-मजदूरो के बीच खुले आम प्रचार करना मेरे लिए असम्भव था। और फिर, बाद को रूसी आन्दोलन ने तानाशाही के खिलाफ षड्यन्त्र और हिंसात्मक संघर्ष का रूप ले लिया था— जनतन्त्रात्मक आन्दोलन को छोड दिया गया था। लेकिन मेरी आकांक्षा थी कि जनता के बीच सर्वसाधारण के हित के विचारो का प्रचार किया जाय, उनके बीच उन सिद्धान्तो और आदर्शों को स्थापित किया जाय जो भावी सामाजिक क्रान्ति के आधार बने। इन सिद्धान्तो और आदर्शों को

जनता के ऊपर थोपा न जाय, वरन् उसकी प्रेरणाशक्ति विकासित की जाय। इसलिए मैने उन लोगो को सहयोग देने का निश्चय किया, जो पश्चिमी यूरोप मे इस दिशा मे काम कर रहे थे।

ऐडिनबरा पहुचकर मैने कुछ रूसी और जूरा के मजदूर-सघ के मित्रो को अपने इग्लैण्ड सकुशल पहुचने की सूचना दी। एक साम्यवादी को अपनी जीविका के लिए अपने ही ऊपर अवलम्बित होना चाहिए, इसलिए शीघ्र ही मैने अपने लिए काम तलाश करने की कोशिश की।

हमारे जहाज पर नारवे के एक प्रोफेसर थे। मैने इन प्रोफेसर महोदय से अच्छा सम्पर्क स्थापित किया। उन्होने मुझे एक पत्र दिया, जिसमे अटलाटिक सागर के अभियान का विवरण था। यात्री-दल कुछ ही समय पहले लौटा था।

ऐडिनबरा पहुचकर मैने अग्रेजी मे इस यात्रा पर एक नोट लिखा और 'नेचर' को भेज दिया। पत्रिका के उपसम्पादक ने नोट की स्वीकृति भेजते हुए अत्यन्त उदारतापूर्वक लिखा कि मेरी अग्रेजी ठीक है, लेकिन कुछ अधिक साहित्यिक रूप देने की जरूरत है। मै यहा लिख दू कि मैने रूस मे अग्रेजी भाषा सीखी थी और अपने भाई की सहायता से पेज और हर्बर्ट स्पेसर की पुस्तको का अनुवाद भी किया था। लेकिन मैने अग्रेजी पुस्तको से सीखी थी और मेरा उच्चारण बडा भद्दा था। मुझे अपनी मकान-मालकिन को अपनी बात समझाने मे बडी दिक्कत पडती। मुझे साहित्यिक अग्रेजी का बिल्कुल ज्ञान नही था और मुझसे सचमुच बडी भयकर भूले होती होगी। मुझे स्मरण है कि एक बार मैने उससे लिखकर शिकायत की थी कि उषाकालीन चाय के समय मुझे 'चाय का एक प्याला' नही वरन् चाय के कई प्याले चाहिए। मेरा विश्वास है कि मेरी मकान-मालकिन ने मुझे देहाती ही समझा होगा। लेकिन मै यह बात यहा स्पष्ट कर दू कि अबतक प्राणिशास्त्र और भूगर्भ-शास्त्र पर मैने जो कुछ अग्रेजी साहित्य पढा था, उसमे कही भी 'चायपान' जैसे महत्वपूर्ण विषय का कोई उल्लेख नही दीखा था।

रूस की भौगोलिक परिषद की पत्रिका मेरे पास आती थी। उसके

आधार पर मै शीघ्र ही 'टाइम्स' के लिए रूस की भौगोलिक खोजो के ऊपर लिखने लगा। प्रजैव्ल्सकी उस समय मध्य एशिया मे थे और उनका यात्रा-विवरण इग्लैण्ड मे बडे चाव से पढा जाता था।

जो कुछ रुपया मै अपने साथ लाया था समाप्त हो रहा था। रूस मे अपने मित्रो को मै अपना पता बता नही सकता था, क्योकि मेरे पत्र रोक लिये जाते थे। इसलिए कुछ ही सप्ताहो बाद मै लन्दन चला गया, इस आशा से कि शायद वहा कुछ अधिक नियमित काम मिल जाय। लन्दन मे पी० एल० लैवरोफ अपना 'फारवर्ड' नामक पत्र चला रहे थे। लेकिन चूकि मुझे जल्दी ही रूस लौटने की आशा थी और यह सोचकर कि पत्र के कार्यालय पर गुप्तचरो की आख होगी, मै उनके कार्यालय की ओर नही गया।

मै 'नेचर' के कार्यालय मे गया। वहा उपसम्पादक महोदय जे० स्काट कैल्टी ने मेरा हार्दिक स्वागत किया। सम्पादक महोदय पत्र में छोटी-छोटी टिप्पणियो की सख्या बढाना चाहते थे। मेरी टिप्पणी लिखने की शैली उन्हे पसन्द आई थी। कार्यालय मे मेज का एक कोना मेरे लिए सुरक्षित कर दिया गया। विभिन्न भाषाओ के वैज्ञानिक पत्र वहा रख दिये गए। उन्होने कहा, "मि० लैवेशोफ, आप प्रत्येक सोमवार को यहा आइये, इन पत्रिकाओ को देख जाइये। अगर इनमे से कोई लेख आपको महत्वपूर्ण जचे तो उसपर टिप्पणी लिख दीजिये अथवा उसपर निशान लगा दीजिये—हम उसे विशेषज्ञ के पास भेज देगे।" मि० कैल्टी नही जानते थे कि तीन बार प्रयास करने के बाद मै अग्रेजी मे टिप्पणी लिख पाता था। इसलिए मै वैज्ञानिक पत्रिकाए घर ले जाने लगा। 'नेचर' मे कुछ टिप्पणिया लिखकर और 'टाइम्स' मे कुछ समाचार देकर मेरे खाने पीने का सन्तोषजनक प्रबन्ध हो गया। 'टाइम्स' से बृहस्पति को साप्ताहिक मजदूरी अच्छी-खासी मिल जाती थी। लेकिन कभी-कभी कई हफ्ते निकल जाते जब प्रजैव्ल्सकी की यात्रा अथवा रूस के अन्य भागो से कोई उल्लेखनीय समाचार ही नही आता था। तब मुझे सिर्फ सूखी रोटी व चाय पर ही सन्तोष करना पड़ता।

एक दिन मि० कैल्टी ने अनेक रूसी किताबे मुझे आलोचना के लिए दी। मैने पुस्तको को उलटा-पलटा और देखा कि यह सब तो मेरी ही लिखी हुई थी। मेरे भाई नियमित रूप से मेरी रचनाओ को 'नेचर' पत्र को भेजते रहे थे। मै बडे असमजस मे था। बैग मे रखकर पुस्तके घर ले आया। मैने सोचा—"अब मैं क्या करू? मै इनकी प्रशसा कर नही सकता, क्योकि ये मेरी ही रचनाए है और मै इनकी कडी आलोचना भी नही कर सकता, क्योकि पुस्तको मे वर्णित विचार मेरे अब भी है।" मैने पुस्तको को अगले दिन लौटा देने का निश्चय किया। मि० कैल्टी से मैंने कह दिया कि मैने लैवेशोफ के छद्मनाम से अपना परिचय दिया था, वास्तव मे मै ही इन पुस्तको का लेखक हू और इसलिए इनकी आलोचना नही कर सकता।

मि० कैल्टी समाचारपत्रो मे क्रोपाटकिन के रूसी जेल से भागने का वृत्तान्त पढ चुके थे। उन्हे मुझे वहा सकुशल देखकर बडी प्रसन्नता हुई। जहा-तक मेरे सकोच का प्रश्न था, उन्होने कहा कि न तो मुझे पुस्तको की प्रशसा करनी है और न कटु आलोचना, केवल पुस्तको का साराश लिख दू। उसी दिन से मि० कैल्टी से मेरी उस मैत्री का आरम्भ हुआ, जो आज तक कायम है।

नवम्बर अथवा दिसम्बर, १८७६ मे लैवशोफ के पत्र मे एक सूचना थी कि 'क' के लिए एक पत्र रूस से आया था और वह उसे पत्र के कार्यालय से ले जाय। मैंने सोचा, हो-न-हो, यह पत्र मेरे लिए ही है। मै पत्र के कार्यालय गया और शीघ्र ही वहा के कर्मचारियो से घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित हो गया।

जब मैं पहली बार पत्र के कार्यालय मे गया, मेरी दाढी मुडी हुई थी और सिर पर टोप था। मैने दरवाजा खोलनेवाली महिला से शुद्ध अग्रेजी मे पूछा—"क्या मि० लैवशोफ यहा है?" मैने सोचा था कि कोई मुझे पहचान नही सकेगा। मैने अपना नाम तो बताया ही नही था। महिला ने यद्यपि मुझे नही देखा था, लेकिन जूरिक मे मेरे भाई से भली भाति परिचित रही थी। उसने तुरन्त मुझे पहचान लिया और ऊपर कहने दौडी

और अन्तत वह क्रान्ति करना, जिससे मानव-समाज के इतिहास मे नवीन अध्याय का प्रारम्भ हो। यह आदर्श था जिसने यूरोप के लाखो मजदूरो मे प्राण फूके और जिससे आकर्षित होकर श्रेष्ठ विचारक आन्दोलन मे आये।

लेकिन शीघ्र ही सस्था मे दो दल हो गये। १८७० के युद्ध मे फ्रास की पूर्ण पराजय हो गई थी। पेरिस के कम्यून के विद्रोह को पूरी तरह दबा दिया गया था। अत्यन्त कठोर नियमो द्वारा फ्रास के मजदूरो का सघ से सम्बन्ध विच्छेद कर दिया गया था। दूसरी तरफ 'सगठित जर्मनी' मे जनतत्री व्यवस्था की स्थापना हो गई। परिणामस्वरूप जर्मनो ने साम्यवादी आन्दोलन के उद्देश्य और कार्यविधि मे परिवर्तन करने का प्रयत्न किया। वर्तमान राज्यो के भीतर 'सत्ता हथियाना', इस दल का उद्देश्य हो गया और उसने अपना नाम 'सामाजिक जनतत्र' रख लिया। जर्मनी की लोकसभा के लिए पहले चुनावो मे इस दल को जो सफलता मिली, उससे बडी-बडी आशाए हो गईं। लोगो को आशा हो गई कि शताब्दी के अन्त तक लोकसभा मे दल को बहुमत प्राप्त हो जायगा और फिर यह दल कानून पास करके साम्यवादी लोकतत्री राज्य की स्थापना कर देगा। दल की कार्यप्रणाली मे अब मजदूर-सघो को कोई स्थान नही था। उसका साम्यवादी आदर्श अब राज्य-समाजवाद, यानी राज्य पूजीवाद मे परिणत हो गया था।

धीरे-धीरे जर्मनी मे समाजिक जनतत्री दल की नीति और कार्य-प्रणाली चुनाव की समस्याओ से प्रभावित होने लगी। मजदूर-सघो को घृणा की दृष्टि से देखा जाने लगा, हडतालो का विरोध किया जाने लगा, क्योकि मजदूरो का सारा ध्यान चुनावो पर केन्द्रित होना चाहिए और ये दोनो उसमे बाधक होते है। उन दिनो यदि यूरोप के किसी देश मे जनता का विद्रोह अथवा क्रान्तिकारी आन्दोलन होता, तो पूंजीवादी पत्रो से भी अधिक उसकी भर्त्सना जर्मनी का यह दल करता था।

लेकिन पश्चिमी यूरोप के देशो मे इस दल को बहुत कम अनुयायी मिले। इन देशो के मज़दूर अन्तर्राष्ट्रीय सघ के मौलिक सिद्धान्तो के प्रति सच्चे रहे।

फ्रास तथा जर्मनी के युद्ध के बाद ही साम्यवादी आन्दोलन की दोनो धाराओ मे भेद स्पष्ट हो गये। सघ ने एक स्थायी परिषद की स्थापना कर रखी थी, जिसका केन्द्र लन्दन था। चूकि दो जर्मन मार्क्स और ऐंजिल्स उसके प्रमुख कार्यकर्ता थे, यह सामाजिक साम्यवाद का केन्द्र हो गया। इसके विपरीत पश्चिमी यूरोप के मजदूर-सघो के नेता बाकूनिन और उनके मित्र थे।

मार्क्स और बाकूनिन के अनुयायियो के बीच विरोध व्यक्तिगत कारणो से नही था। यह तो सघात्मक और एकात्मक सिद्धांतो के बीच, स्वतत्र इकाइयो और राज्य के पितृात्मक शासन के बीच, जन साधारण की स्वतत्र कार्यप्रवृत्ति और मौजूदा पूजीवादी व्यवस्था मे कानूनो द्वारा सुधार करने की भावना के बीच सघर्ष था अथवा कहे कि यह तो पश्चिमी यूरोप की भावना और जर्मनी के अहकार के बीच सघर्ष था। जर्मनी पिछले युद्ध मे फ्रास की पराजय के पश्चात विज्ञान, दर्शन, राजनीति आदि मे अपनी श्रेष्ठता घोषित कर रहा था। साम्यवाद के क्षेत्र मे भी उसकी यही भावना थी। अपने साम्यवादी विचारो को वे वैज्ञानिक कहते तथा उसके दूसरे रूपो को काल्पनिक बतलाते थे।

अन्तर्राष्ट्रीय सघ की १८७२ की हेग-काग्रेस के अवसर पर, लन्दन की कार्यकारिणी ने, झूठे बहुमत के आधार पर बाकूनिन, उनके मित्र गिलैमी तथा जूरा-सघ को अन्तर्राष्ट्रीय सघ से निकाल दिया। वे इतने से ही सन्तुष्ट नही हुए, चूंकि यह निश्चित था कि स्पेन, इटली और बेलजियम के मजदूर-सघ जूरा-सघ का साथ देगे, इसलिए उन्होने इस काग्रेस मे सघ को ही भग कर दिया। सामाजिक साम्यवादियो की एक नई कार्यकारिणी न्यूयार्क मे, जहा मजदूरो का कोई भी सगठन नही था, बनाई गई। वही वह समाप्त हो गई। इस बीच अन्तर्राष्ट्रीय सघ की स्पेन, इटली, बेलजियम और जूरा की शाखाए निरन्तर चलती रही और अगले पांच-छः वर्षो तक सघ के वार्षिक अधिवेशन होते रहे।

जिस समय मै स्विटज़रलैण्ड आया, जूरा का मजदूर-संघ अन्तर्राष्ट्रीय सघ का केन्द्र था। बाकूनिन की मृत्यु हो चुकी थी (जुलाई १, १८७६),

लेकिन उनकी प्रेरणा से प्रारम्भ किया हुआ कार्य अब भी चल रहा था।

फ्रास, स्पेन और इटली मे स्थिति यह थी कि वहा के मजदूरो की अन्तर्राष्ट्रीय प्रवृत्तियो के कारण ही वहा की सरकारे मजदूर-आन्दोलन को दमन करने का साहस नही कर सकी।

मेरा यह दृढ मत है कि यदि १८७१ के बाद यूरोप मे प्रतिक्रियावाद की लहर नही फैली, तो इसका मुख्य श्रेय उस भावना को है, जिसे अन्तर्राष्ट्रीय सघ ने फ्रास-जर्मनी के युद्ध के पश्चात पश्चिमी यूरोप मे विकसित किया था और जिसे आजतक अराजकतावादी, ब्लैंकिस्टस, मेजिनी के अनुयायियो और स्पेन के मजदूरो ने जीवित रखा है।

मार्क्स के अनुयायियो को अपने चुनावो मे व्यस्त रहने के कारण, इन परिस्थितियो का कोई ज्ञान ही नही था। उन्हे चिन्ता थी तो यही थी कि किसी तरह बिस्मार्क की क्रोधाग्नि न भडक उठे। वे भयभीत थे कि जर्मनी मे क्रान्तिकारी भावना न उभरे, क्योकि उसके परिणाम-स्वरूप बिस्मार्क दमन करना प्रारम्भ कर देता और उसके सहने की शक्ति उनमे नही थी। नतीजा यह कि पश्चिमी यूरोप के क्रान्तिकारी आन्दोलनो को वे उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे। उन्हे क्रान्तिकारी भावना मात्र से ही इतनी घृणा थी कि जहा-कही क्रान्ति के लक्षण दीख पडते थे, रूस मे भी, तो वे उसका पूरी शक्ति से विरोध करते।

उस समय मार्शल मैकमहोन के शासन-काल में फ्रास मे क्रान्तिकारी पत्रो के प्रकाशन पर रोक थी। इसलिए फ्रास मे कोई क्रान्तिकारी पत्र नही था। स्पेन के पत्र भली-भाति सम्पादित थे। लेकिन स्पेन के बाहर उनका कोई प्रचार नही था। जहातक इटली के पत्रो का सम्बन्ध है, उनका प्रकाशन अत्यन्त अनियमित था। इसलिए जूरा-सघ के पत्र ही, जो फ्रासीसी भाषा मे प्रकाशित होते थे, पश्चिमी यूरोप मे क्राति की भावना को जीवित रखे थे। मै फिर इस बात को दोहरा दू कि इस क्रान्ति की भावना ने ही प्रतिक्रियावादी लहर से यूरोप की रक्षा की। यही वह भूमि थी, जहा बाकूनिन और उनके मित्रो ने अराजकवाद के सैद्धान्तिक आधारो का निर्माण किया और सम्पूर्ण यूरोप मे उसका प्रचार किया।

: ३ :

संघ के कार्यकर्त्ता

विभिन्न राष्ट्रो के अनेक प्रतिभाशाली व्यक्ति, जो बाकूनिन के घनिष्ठ सम्पर्क मे रहे थे, इस समय जूरा-सघ के सदस्य थे। सघ के मुखपत्र के सम्पादक जेम्स गिलौमी थे। उनका जन्म न्यूचैल के एक सामन्ती परिवार मे हुआ था। वह अनेक वर्षो तक अध्यापक रह चुके थे। कद मे छोटे, दुबले और ऊपर से शुष्क प्रतीत होते थे। लेकिन वास्तव मे उनका हृदय नवनीत जैसा कोमल था, जिसका परिचय उनके मित्रो को ही होता था। उनमे कार्य करने की शक्ति अपार थी और नेतृत्व के गुण उनमे नैसर्गिक थे। सघ के मुखपत्र को जीवित रखने के लिए आठ वर्ष तक उन्होने और सघर्ष किया तथा सघ के प्रत्येक कार्य मे रुचि ली। बाद मे उन्हे स्विटजरलैण्ड छोडना पडा, क्योकि वहा जीविका चलाने के लिए उनको कोई कार्य नही मिल सका और वह फ्रास चले गये। वहा शिक्षा के क्षेत्र मे जो महान कार्य किया, उसके कारण इतिहास मे कभी उनका नाम अत्यन्त आदर से स्मरण किया जायगा।

अधीमार स्विटजगुबल स्विजरलैण्ड के निवासी थे, हँसमुख, जिन्दादिल और पैनी दृष्टि के। वह घडी बनाने का काम करते थे। हाथ से काम करना उन्होने कभी नही छोडा। घोर आर्थिक सकट के दिनो मे भी अपने बडे कुटुम्ब का पालन वह सदैव उल्लास के वातावरण मे ही करते रहे। उनका विशेष गुण था अत्यन्त जटिल राजनैतिक तथा आर्थिक समस्या को उसके सैद्धान्तिक रूप से बिना विलग किये, एक मजदूर के दृष्टिकोण से सोचना। सम्पूर्ण पहाडी प्रदेश मे और अन्य देशो के मजदूरो मे भी वह अत्यन्त लोकप्रिय थे। इसके विपरीत थे स्पिच्गिर नामक एक अन्य व्यक्ति। वह भी स्विटजरलैण्ड के निवासी और घडी बनानेवाले थे। स्वभाव से दार्शनिक, चाल-ढाल और सोचने मे सुस्त तथा शरीर से सुडौल। घडी बनाते हुए ही वह विभिन्न विषयो का चिन्तन करते रहते।

इन तीन व्यक्तियो के चारो ओर सैकडो युवक और वयस्क मजदूर थे। अधिकाश घडी बनाने के काम मे लगे थे। उनके हृदय मे स्वतन्त्रता की अग्नि प्रज्वलित हो रही थी और वे सब आन्दोलन मे प्रत्येक प्रकार का आत्म-त्याग करने को तत्पर थे।

पेरिस कम्यून के अनेक योद्धा फ्रास से भागकर सघ मे शामिल हो गये थे। प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता ऐलिसी रैक्लूस इन्हीमे से एक थे। रहन-सहन मे अत्यन्त सादा और अनेक विषयो के आचार्य थे। यद्यपि उन्होने अनेक व्यक्तियो को प्रेरणा दी थी, लेकिन किसीपर शासन करना उनकी प्रकृति के सर्वथा प्रतिकूल था। हृदय से वह अराजकवादी थे। मनुष्य-समाज के विस्तृत इतिहास का उन्हे अच्छा ज्ञान था। उनकी पुस्तके इस शताब्दी की श्रेष्ठ रचनाओ मे से हैं। उनकी शैली हृदय और आत्मा को झकझोर देनेवाली है। यह महान विद्वान लेखक जब अराजकवादी पत्र के कार्यालय मे प्रवेश करता, तो वह सम्पादक से, जो उनके सामने सिर्फ बालक ही थे, कहता, "आज्ञा दीजिये, क्या करना है?" एक साधारण सहायक की भाति वह एक कोने मे बैठ जाते और पत्र के लिए लिखना आरम्भ कर देते। पेरिस कम्यून के दौरान उन्होने साधारण सिपाहियो के साथ राइफिल से युद्ध किया था। अपनी विश्वविख्यात भूगोल की पुस्तक के लिखने मे जब उनका सहायक कहता है—"क्या करना है?" तो वह कहते है—"ये है पुस्तके, यह है मेज़, मन मे जो आये कीजिये।"

उनके साथी थे लाफ्राकेस नामक एक बुजुर्ग व्यक्ति। प्रारम्भ मे वह अध्यापक रहे थे। अपने जीवन मे तीन बार उन्हे देशनिकाला हुआ था। कम्यून के विद्रोह मे उन्होने भाग लिया था। विद्रोह-दमन के बाद उन्हे फ्रास छोडना पडा। उनके विषय मे विख्यात था कि वह करोडो रुपये लेकर भाग आये थेऔर 'यह व्यक्ति' लोज़ान नामक रेलवे स्टेशन पर कुली का काम करता था और भारी सामान ढोते-ढोते अधमरा हो गया था, क्योकि यह काम उसकी शक्ति के बाहर था। पेरिस कम्यून के ऊपर उसकी पुस्तक उसके ऐतिहासिक महत्व पर अच्छा प्रकाश डालती है।

हमारे एक दूसरे साथी, पिन्डी नामक व्यक्ति थे। वह भी पेरिस कम्यून

के ही भूतपूर्व कार्यकर्ता थे। वह उत्तर फ्रास मे बढई थे। अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर-मघ द्वारा सचालित पेरिस की एक हडताल के दौरान वह अपने उत्साह और कार्य के लिए इतने लोकप्रिय हो गये थे कि कम्यून के सदस्य निर्वाचित हुए। वार्साई की फौज ने जव पेरिस मे प्रवेश किया था और सैकडो ही वन्दियो को गोली से उडाया था, तो उसने तीन व्यक्तियो को पिन्डी समझकर मार डाला था। लेकिन युद्ध समाप्त होने के पश्चात पिन्डी को एक वहादुर लडकी ने छिपा रखा था। वाद मे वह उनकी पत्नी हो गई। पूरे एक साल के वाद वे लोग छिपकर पेरिस से भाग आये और स्विटज़रलैण्ड मे बस गये। यहा पिंडी ने धातु-परीक्षण का कार्य सीख लिया और उसमे दक्षता प्राप्त कर ली। दिन-भर वह भट्टी के पास काम करते और रात को प्रचार-कार्य करते।

पॉल ब्राऊसी उस समय युवक डाक्टर थे। वह अत्यन्त उत्साही, कुशाग्र बुद्धि और लगनवाले युवक थे। दो पत्रो का, एक फ्रासीसी भाषा मे दूसरा जर्मन भाषा मे, वह सम्पादन करते थे और उसके साथ-ही-साथ हज़ारो ही पत्र लिखते और निरन्तर सगठन-कार्य करते थे।

स्विटजरलैण्ड के हमारे साथियो मे दो इटालियन थे, जो वहा के इतिहास मे युगो तक जीवित रहेगे। दोनो ही वाकूनिन के मित्र रहे थे—कैफीरो और मैलाटेस्टा। कैफीरो उच्च कोटि के आदर्शवादी थे। उन्होने अपने स्वय के भविष्य की विना कुछ चिन्ता किये अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति आन्दोलन के लिए अर्पित कर दी थी। वह अत्युच्च कोटि के दार्श-निक चिन्तक थे। किसीको कष्ट देना उनकी प्रकृति के सर्वथा प्रतिकूल था। फिर भी जब उन्हे साम्यवादी विद्रोह की सम्भावना दीख पडी, तो वह वन्दूक लेकर आगे वढ गये। मैलाटेस्टा डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। उन्होने क्रान्ति के लिए डाक्टरी छोड दी और अपनी सम्पत्ति को तिलाजलि दे दी। शुद्ध आदर्शवादी, अत्यन्त उत्साही, उन्होने जीवन-भर इसकी चिन्ता नही की कि शाम को खाने के लिए उन्हे रोटी का टुकडा और रात को सोने के लिए विस्तर भी मिलेगा कि नही। रहने के लिए उनके पास अपने एक कमरा भी नही था। वह अपने गुज़ारे के लिए दिन-भर

नये तरीको के विकास करने के लिए पूर्ण स्वाधीनता होगी, व्यक्ति की प्रेरणा को प्रोत्साहन दिया जायगा और एकरूपता तथा केन्द्रीकरण की प्रवृत्तियो के लिए कोई स्थान नही होगा। इसके अतिरिक्त यह समाज स्थिर नही होगा, निरन्तर परिवर्तनशील, प्रगतिशील होगा, क्योकि यह जीवित होगा। शासनतत्र की कोई आवश्यकता नही होगी, क्योकि स्वतत्र समझौतो और सघो से वे सब कार्य सम्पन्न हो जायगे, जो आज सरकारे करती है। यदि कोई सघर्ष हो, वैसे इन सघर्षो की सख्या आज की अपेक्षा बहुत कम रह जायगी, तो उसे मध्यस्थ के द्वारा हल कर लिया जायगा।

इस महान परिवर्तन की महत्ता को हम सब लोग समझते थे। आज तो भूमि, कारखानो, खानो, मकानो आदि के ऊपर व्यक्तिगत स्वामित्व अधिक उत्पादन के लिए आवश्यक समझा जाता है और मजदूरी की व्यवस्था मनुष्य को कार्य करने के लिए प्रेरक मानी जाती है। हम लोग जानते थे कि सम्पत्ति और उत्पादन को समाज के अधीन करने के विचारो के प्रचार मे अभी समय लगेगा। हम लोग जानते थे कि उसके लिए निरन्तर प्रचार करना पडेगा, कई बार सघर्ष होगा और पूजीवाद के विरुद्ध व्यक्तिगत और सामूहिक विद्रोह करने पडेगे। पुर्ननिर्माण के छोटे-छोटे प्रयत्न और आशिक विद्रोह करने होगे। तव कही व्यक्तिगत पूजीवाद के वर्त्तमान विचारो मे परिवर्तन होगा। हम लोग यह भी जानते थे कि सत्ता और शासन की अनिवार्य आवश्यकता के विचार, जो पीढियो से हमारे अन्दर घर कर गये है, एक साथ ही सभ्य मानव-समाज नही छोड सकेगा। उसके लिए अनेक वर्षो तक प्रचार करना पडेगा। सत्ता के विरुद्ध अनेक बार विद्रोह करना पडेगा। साथ ही इतिहास को फिर से लिखना पडेगा। तव कही मनुष्यो को स्पष्ट होगा कि जिन वस्तुओ के लिए वे अपने शासको और कानूनो को श्रेय दे रहे थे, वे वास्तव मे उनकी सामाजिक भावनाओ और आदतो से उद्भूत थे। लेकिन हम यह भी जानते थे कि इन दोनो दिशाओ मे प्रचार करके हम मानव-समाज की स्वाभाविक प्रगति को वढावा ही दे रहे है।

हम जानते थे कि यदि व्यक्ति को विचार-प्रकाशन और कार्य की पूर्ण स्वाधीनता दी जाती है, तो अपने सिद्धान्तो के अतिक्रमण होने का खतरा

है। निहिलिस्ट आन्दोलन मे मुझे यह अनुभव हुआ था। लेकिन हम लोगो ने विश्वास किया और अनुभव ने सिद्ध कर दिया कि हम ठीक थे, क्योंकि सामाजिक जीवन मे विचारो और कार्यों की स्पष्ट और खुली आलोचना से ही विचारो मे स्पष्टता आती है और उसी स्थिति मे स्वाभाविक खतरे दूर किये जा सकते है। वास्तव मे हम उस पुरानी कहावत के अनुसार कार्य कर रहे थे कि स्वतत्रता की क्षणिक असुविधाओ का सर्वश्रेष्ठ इलाज और भी अधिक स्वतत्रता ही है।

हमारे अनेक पूर्ववर्त्ती लेखको ने आदर्श व्यवस्था का चित्रण कभी सत्ता के आधार पर और कभी स्वाधीनता के सिद्धान्त पर किया था। राबर्ट ओविन और फौरियर ने स्तूपाकार व्यवस्था के स्थान पर स्वतत्र और स्वय विकसित होनेवाले समाज का आदर्श ससार के सामने रखा था। प्राउधन ने उनके कार्य को आगे बढाया। बाकूनिन ने इतिहास और दर्शन के अपने गहन और विस्तृत अध्ययन के आधार पर वर्तमान व्यवस्था की आलोचना करके उसी परम्परा को आगे बढाया। लेकिन यह सब प्रारम्भिक कार्य ही था।

समस्या के विभिन्न पहलुओ पर विचार-विमर्श होता । फिर विभिन्न शाखाओ के निष्कर्ष प्रत्येक सघ के वार्षिक अधिवेशन मे रखे जाते और अन्त मे वह निष्कर्ष अगले अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन मे रखा जाता । जिस सामाजिक व्यवस्था की स्थापना के लिए हम प्रयत्नशील थे, वह इस प्रकार सिद्धान्त और व्यवहार मे नीचे से निर्मित की जा रही थी। इस प्रकार जूरा-सघ ने अराजकवादी आदर्श को स्पष्ट करने मे अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया।

जहातक मेरा सम्बन्ध है, इन परिस्थितियो मे कार्य करते हुए मै धीरे-धीरे इस निष्कर्ष पर पहुचा कि अराजकवाद केवल एक कार्य-पद्धति अथवा स्वतत्र समाज का चित्र नही, वह तो एक जीवन-दर्शन है, जो स्वाभाविक और सामाजिक है और उसका विवेचन आध्यात्मिक अथवा द्वन्द्वात्मक पद्धतियो से नही होना चाहिए। मैने देखा कि इसका अध्ययन उसी पद्धति से होना चाहिए, जिससे हम प्राकृतिक विज्ञानो का अध्ययन करते है। यह अध्ययन हर्बर्ट स्पेन्सर की भाति समानताओ और तुलनाओ की पद्धति से नही, वरन् मानव-जाति के इतिहास के निष्कर्षो के दृढ आधारो पर होना चाहिए। इस दिशा मे जो कुछ भी मुझसे सम्भव था, मैने किया।

: ५ :

घेंट-अधिवेशन

१८७७ के जाडो मे बेलजियम मे दो अधिवेशन हुए, एक अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-सघ का वरवियर्स मे और दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादियो का घेट मे। घेट का अधिवेशन विशेष महत्वपूर्ण था, क्योकि यह पहले से विदित था कि वहा जर्मनी के समाजवादी सम्पूर्ण यूरोप के मजदूर-आन्दोलन को एक सगठन मे लाने का प्रयत्न करेगे और एक केन्द्रीय समिति की स्थापना पर बल देगे। पश्चिमी यूरोप के मज़दूर-सगठनो की आन्तरिक

स्वतन्त्रता को बनाये रखने के लिए हम लोगो ने इस अधिवेशन मे अच्छी सख्या मे पहुचने का प्रयत्न किया। मै लैवेगोफ के छद्म नाम से गया। कम्पोजीटर वर्नर और इजीनियर रिके वेसिल से पैदल चलकर आये थे। यद्यपि हम लोग कुल नौ अराजकवादी थे, फिर भी हमने केन्द्रीकरण की योजना को पास नही होने दिया।

आज इसे बाईस वर्ष हो गये। इस बीच साम्यवादियो के अनेक अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन हुए है और प्रत्येक अवसर पर यही सघर्ष दुहराया गया है, अर्थात् समाजवादी जनतत्री सम्पूर्ण यूरोप के मजदूर-आन्दोलन को अपने झडे के नीचे लाने का प्रयत्न करते रहे है और अराजकवादी उनके प्रयत्नो को विफल करते रहे है। इसमे कितनी ही शक्ति का अपव्यय हुआ है, कितने ही कटु शब्द कहे गए है और इस सबका एकमात्र कारण यह है कि "वर्तमान राज्यो मे सत्ता हथियाने" के आदर्श के अनुयायी इस बात को नही समझ सकते कि केवल इस उद्देश्य मे ही साम्यवादी आन्दोलन की इतिश्री नही हो जाती।

मेरे लिए घेट-अधिवेशन का अन्त अजीब परिस्थितियो मे हुआ। अधिवेशन प्रारम्भ होने के तीन-चार दिन बाद ही बेलजियम की पुलिस को लैवेगोफ की वास्तविकता मालूम हो गई। सरकार ने मुझे गिरफ्तार करने की आज्ञा दी, क्योकि मैने होटल मे गलत नाम देने का अपराध किया था। मेरे मित्रो ने मुझे चेतावनी दी। उन्होने कहा कि वहा की सरकार मुझे रूसी सरकार को लौटा सकती है। उन्होने जोर देकर कहा कि मुझे तुरन्त ही अधिवेशन छोडकर चले जाना चाहिए। वे लोग मुझे होटल

से बुद्धिमत्ता टपकती थी। उनके व्यवहार मे पूर्ण सरलता और निष्कपटता थी। श्रेष्ठ रूसी लेखको के चरित्र की यह एक विशेषता है। उनकी मानसिक शक्तियां अत्यधिक विकसित थी। उनकी मृत्यु के पश्चात जब डाक्टरो ने उनके मस्तिष्क को तौला, तो उन सब मस्तिष्को से, जिनकी तोल तब-तक हो चुकी थी, इतना अधिक भारी निकला कि उन्हे अपनी तराजू पर ही आशका होने लगी। दूसरी तराजू मगाई गई और फिर वही तौल निकली।

विशेषत उनका वार्त्तालाप मनोहारी होता था। जब वह किसी विचार को प्रतिपादित करते, तो वह तथ्य नही देते थे, यद्यपि वह दार्शनिक चर्चाओं मे बडे दक्ष थे। वह एक सुन्दर चित्र-सा उपस्थित कर देते थे—ऐसा प्रतीत होता मानो हम उनके किसी उपन्यास को पढ रहे हो।

एक बार उन्होने कहा, "तुम्हे तो फ्रास, जर्मनी और अन्य देशो के निवासियो का अच्छा अनुभव होगा। क्या तुमने देखा कि उनके और हम रूसियो के आचार-विचार मे गहरी खाई है, इतनी गहरी कि हम लोग इन विषयो मे एकमत हो ही नही सकते ?"

उत्तर मे मैने निवेदन किया कि मुझे ऐसा अनुभव नही हुआ।

उन्होने कहा, "हा, दोनो मे भेद है। एक घटना मै सुनाता हू। एक रात को हम लोग एक नाटक का अभिनय देखने गये। मेरे साथ फ्लौबर्ट, डौडेट और जोला थे। सभी उदार विचारो के थे। नाटक का विषय यह था कि एक स्त्री अपने पति से अलग हो गई थी। उसने फिर प्रेम किया और एक दूसरे पुरुष के साथ रहने लगी। वर्षो वे बडे प्रसन्न रहे। पहले पति से उसके दो बच्चे—एक लडका और एक लडकी—तलाक के समय बहुत छोटे थे। अब वे सत्रह-अठारह वर्ष के हो गये थे और इन वर्षो मे दोनो बच्चो ने इसी पुरुष को अपना पिता समझा था। वह भी उन्हे पिता जैसा ही स्नेह करता था। दृश्य मे पूरा कुटुम्ब नाश्ते पर बैठा था। लडकी प्रवेश करती है, अपने इस 'पिता' के पास पहुचती है और वह उसे चुम्बन करने के लिए उठता है। तभी यकायक लडका, जिसे किसी तरह वास्तविकता ज्ञात हो गई है, आगे बढकर जोर से कहता है, "ऐसा करने का साहस न करो।"

"इस दृश्य पर सारा हाल गूंज उठा। बडी जोर की करतल ध्वनि हुई। फ्लौबर्ट और अन्य साथियो ने उसमे योग दिया। मुझे बडी ग्लानि हुई।

"मैने कहा, 'यह क्या है।' यह कुटुम्ब सब तरह सुखी था। यह पुरुष इन बच्चो के वास्तविक पिता से अधिक अच्छा पिता था। बच्चो की माता उसे प्यार करती थी और उसके साथ सन्तुष्ट थी। इस नासमझ और भ्रष्ट लडके को तो इसकी कार्यवाही के ऊपर कोडे लगाने चाहिए।" लेकिन यह सब व्यर्थ था। मैंने बाद को इसी विषय को लेकर उनसे घटों वाद-विवाद किया, लेकिन उनमे से कोई मुझसे सहमत नही हो सका।"

मैं तुर्गनेव के विचारो से सहमत न हो सका। मैने कहा कि उनका परिचय अधिकागत मध्यम वर्ग के व्यक्तियो से है। मैंने निवेदन किया कि मेरा परिचय केवल मजदूरो से रहा है और सभी राष्ट्रो के मजदूरो-किसानो मे समानता है।

लेकिन मैं गलती पर था। बाद को जब मुझे फ्रास के मजदूरो के घनिष्ठ सम्पर्क मे आने का अवसर मिला, तो मैंने तुर्गनेव के विचारो की सचाई को समझा। फ्रास और रूस के मध्यम वर्ग और मज़दूरो के बीच विवाह-सम्बन्धी विचारो मे सचमुच गहरी खाई है। इसी तरह अन्य बातो मे भी रूसी तथा अन्य राष्ट्रो के दृष्टिकोण मे स्पष्ट अन्तर है।

तुर्गनेव की मृत्यु के पश्चात् किसीने लिखा था कि इस विषय पर वह एक उपन्यास लिखनेवाले थे। अगर उन्होने उसका प्रारम्भ किया होगा, तो उक्त घटना का उल्लेख उस पाडुलिपि मे अवश्य होगा।

हमारी शताब्दी के उपन्यासकारो मे तुर्गनेव सर्वश्रेष्ठ कलाकार थे। रूसी पाठको को उनका गद्य मधुर सगीत जैसा मनोहर लगता है। उनके प्रमुख उपन्यासो—रूडिन, ऑन द ईव, फादर्स एण्ड सस, स्मोक, तथा वर्जिन सोइल मे रूस मे १८४८ के बाद विकसित शिक्षित युवको के चरित्र का सफल चित्रण है। यह चित्रण अपनी मानवीय सहानुभूति और कलात्मक सौन्दर्य की दृष्टि से ससार के साहित्य मे अनुपम है। लेकिन फिर भी जब उनका 'फादर एण्ड संस' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ तो रूसी युवको ने उसका ज़ोरदार विरोध किया था। रूसी युवको का कहना

था कि बैजारोव के चरित्र मे निहिलिस्टो का सच्चा चित्रण नही किया गया है। कुछने यहातक कहा कि इस चित्रण के द्वारा निहिलिस्टो का उपहास किया गया है। इस गलतफहमी से तुर्गनेव को वडी वेदना हुई। यद्यपि वाद को तुर्गनेव के 'वर्जिन सोइल' लिखने के पश्चात उनका और रूसी युवको का सेण्ट पीटर्सबर्ग मे मिलन हो गया था, लेकिन इन आक्रमणो से उन्हे जो मानसिक कष्ट हुआ, उसकी याद उन्हे सदैव बनी रही।

लैवरौफ से वह सुन चुके थे कि मै उनकी रचनाओ का घोर प्रशसक था। एक दिन उन्होने मुझसे बैजारोव के विषय मे मेरी सम्मति पूछी। मैने स्पष्टत उत्तर दिया, "बैजारोव का निहिलिस्ट के रूप मे प्रशसनीय चित्रण किया गया है। लेकिन कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि बैजारोव को आपसे उतना स्नेह नही मिला जो आपने अपने अन्य मुख्य चरित्रो को दिया है।"

तुर्गनेव ने उत्साह से कहा, "बात इसके विपरीत है। मै बैजारोव को अत्यधिक स्नेह करता था। घर पहुचकर मै अपनी डायरी आपको दिखलाऊगा कि जिस दिन मैने बैजारोव की मृत्यु से उपन्यास का अन्त किया है, उस दिन मै कितना रोया था।"

तुर्गनेव सचमुच बैजारोव की बौद्धिक प्रतिभा के प्रशसक थे। वह अपने चरितनायक की निहिलिस्ट विचारधारा से इतने एकाकार हो गये थे कि बैजारोव के नाम से एक डायरी रखते थे और उसमे तत्कालीन घटनाओ का बैजारोव की दृष्टि से मूल्याकन करते थे। लेकिन मै सोचता हू कि बैजारोव के प्रति उनके हृदय मे स्नेह कम और सम्मान अधिक था।

"क्या तुम मिश्किन को जानते थे?" उन्होने एक बार १८७८ मे मुझसे पूछा। हम लोगो के मुकदमे के दौरान मिश्किन अत्यन्त सशक्त व्यक्ति सिद्ध हुआ था। उन्होने कहा, "मै उसके विषय मे अधिक-से-अधिक जानना चाहता हू। वह आदमी है। हैमलैट के सशय और असमजस से बिलकुल मुक्त।" ऐसा कहते हुए उनका लक्ष्य क्रान्तिकारियो का वह वर्ग था, जो उनके 'वर्जिन सोइल' लिखने के बाद आन्दोलन मे अवतीर्ण हुआ।

१८८१ के जाडो मे मैने उनके दर्शन किये—यही उनसे मेरी अन्तिम

मुलाकात थी। वह बहुत बीमार थे। जार अलैक्जैण्डर तृतीय को पत्र लिखने की सोच रहे थे । जार गद्दी पर बैठे ही थे और अपनी नीति निर्धारित नही कर पाये थे। वह जार को लिखना चाहते थे कि रूस मे वैधानिक शासन स्थापित कर दिया जाय। अत्यन्त खेदपूर्ण स्वर मे उन्होने कहा, "मैं सोचता हू कि मुझे अवश्य लिखना चाहिए। लेकिन मुझे प्रतीत होता है कि मै लिख नही पाऊगा।" वास्तव मे उस समय भी रीढ की हड्डी मे कैंसर होने के करण उन्हे बेहद पीडा हो रही थी और उन्हे बैठकर कुछ क्षण बोलने मे भी बेहद कष्ट होता था। उस समय वह नही लिख सके। और कुछ सप्ताह बाद लिखना निरर्थक होता। अलैक्ज़ैण्डर तृतीय ने अपने उद्देश्यो की घोषणा कर दी थी।

: ७ :

पत्र-सम्पादन और साहित्यिक कार्य

इस बीच रूस मे घटनाओ ने नया मोड ले लिया था। १८७६ का रूस और तुर्की के मध्य युद्ध समाप्त हो चुका था। उसके परिणाम-स्वरूप रूस मे व्यापक निराशा छाई हुई थी। जनता को यह भी ज्ञात था कि युद्ध के दौरान सरकारी रुपये का बडे पैमाने पर गबन किया गया, जैसा कि क्रीमिया के युद्ध मे हुआ था।

१८७७ के अन्त मे जिस समय यह व्यापक निराशा फैली हुई थी, उसी समय हमारे १९३ व्यक्तियो का विख्यात मुकदमा न्यायालय के सामने पेश हुआ। वे आन्दोलन के दौरान १८७३ मे गिरफ्तार हुए थे। सम्पूर्ण देश की सहानुभूति अपराधियो के साथ थी। जब जनता को मालूम हुआ कि ये अपराधी मुकदमे के पहले ही तीन-चार साल जेल मे काट चुके थे, और उनमे से इक्कीस तो आत्महत्या कर चुके थे अथवा पागल हो चुके थे, तो जनता की हमदर्दी उनके लिए और भी बढ गई, यहातक कि कुछ न्यायाधीश भी प्रभावित हो गये थे।

न्यायाधीशो ने केवल कुछ अभियुक्तो को लम्बी सजाए दी । शेष को बहुत मामूली सजाए दी गईं । न्यायाधीशो ने कहा कि ये वन्दी मुकदमे के पहले ही इतनी लम्बी और कठोर कैदे काट चुके है कि अव उन्हे और सजा देना न्याययुक्त नही होगा। अनेक व्यक्तियो को आशा थी कि सम्राट सजाओ को और घटा देगे। लेकिन सव आश्चर्यचकित रह गये जब सम्राट ने इन सजाओ को और बढा दिया। जिनको न्यायालय से मुक्त कर दिया था, वे निर्वासित करके साइबेरिया भेज दिये गए और जिन्हे मामूली सजाए दी गई थी, उन्हे प.च से लेकर बारह वर्ष तक के सपरिश्रम कारावास का दण्ड दिया गया। यह सब तीसरे दस्ते के प्रधान जनरल मैजेटसोव की करतूत थी।

उसी समय एक घटना और घटी। सेण्ट पीटर्सबर्ग के पुलिस कप्तान जनरल ट्रैपोव एक जेल का निरीक्षण करने गए। वहा बोगोलूवौफ नामक एक र.जनैतिक वन्दी ने अपना टोप उतारकर उनका अभिवादन नही किया। बस इसी बात पर टैपोव उसपर बरस पडे, उसे बुरी तरह मारा और जब उसने कुछ सघर्ष करने का यत्न किया तो उसे कोडे लगवा दिये। जेल के अन्य वन्दियो को जब यह ज्ञात हुआ, तो उन्होने अपना विरोध प्रकट किया। परिणाम-स्वरूप पुलिस ने उन सबको पीटा। रूसी राजनैतिक वन्दी साइवेरिया अथवा अन्य जेलो मे घोर कष्ट सहन कर रहे थे, लेकिन वे पिटने के लिए कतई तैयार नही थे। वीरा जासूलिच नामक एक युवती, जो वोगोलूवौफ से विलकुल परिचित भी नही थी, एक रिवालवर लेकर पुलिस कप्तान के पास पहुच गई और उसके ऊपर गोली चला दी। ट्रैपोव घायल हो गया। अलैक्जैण्डर द्वितीय उस लडकी को देखने आये और निश्चय ही उसकी सुन्दरता तथा शील से प्रभावित हुए होगे। सेण्ट पीटर्स-वर्ग मे ट्रैपोव के अनेक दुश्मन थे और उन्होने इस मामले को साधारण जूरी न्याय.लय के सामने रखवा दिया। वीरा ने न्यायालय के सामने कहा कि जव उसके पास जनता के समक्ष सारा मामला लाने का और कोई चारा नही रहा था तभी उसने वाध्य होकर शस्त्र उठाये। इसके पहले लन्दन के 'टाइम्स' पत्र के सेण्ट पीटर्सवर्ग-स्थित सम्वाददाता को ट्रैपोव को मारने

की अग्रिम सूचना दी थी कि वह इस पत्र को भेज दे, लेकिन उसने इसे भेजा नही। उसके बाद वह ट्रैपोव को गोली मारने चली गई। अब चूंकि सम्पूर्ण जनता इस मामले से अवगत हो गई थी, उसे खुशी थी कि ट्रैपोव केवल घायल ही हुए। जूरी ने उसे छोड दिया। न्यायालय से निकलते समय जब पुलिस ने उसे फिर गिरफ्तार करने का प्रयत्न किया, तो वहा एकत्र जनता ने उसे छुडा लिया। कुछ समय बाद उसने रूस छोड दिया और स्विटजरलैण्ड मे हमारे पास आ गई।

इस घटना से यूरोप मे खलबली मच गई। जब उसके छूटने का समाचार आया, उस समय मै पेरिस मे था। उस दिन कार्यवश मुझे अनेक समाचारपत्रो के कार्यालयो मे जाना पडा। मैने देखा कि सम्पादक बडे जोश मे है और वीरा के ऊपर प्रशसात्मक लेख लिख रहे है। एक अत्यन्त गम्भीर और प्रतिष्ठित पत्र ने उस वर्ष की समीक्षा करते हुए लिखा था कि सन् १८७८ मे दो व्यक्तियो ने यूरोप के जनमत के ऊपर सबसे अधिक प्रभाव डाला—एक बर्लिन काग्रेस मे प्रिंस गोर्टचकोव और दूसरी वीरा जसूलिच ने। इन दोनो के चित्रो को साथ-साथ अनेक कलैण्डरो पर प्रकाशित किया गया था। यूरोप के मजदूरो पर तो वीरा के त्याग का ज़बर्दस्त प्रभाव पडा था।

इसके कुछ महीने पश्चात् बिना किसी पूर्व षड्यन्त्र के एक के बाद एक चार राज्यो के शासको की हत्या के प्रयत्न हुए। यूरोप की सरकारे सहसा विश्वास नही कर सकी कि तीन सम्राटो के जीवन पर इन प्रयत्नो के पीछे कोई अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र नही है। तुरन्त ही वे इस निष्कर्ष पर पहुचे कि जूरा-सघ और अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-सघ इनके लिए उत्तरदायी है।

आज इन घटनाओ को बीस वर्ष हो गये है। मै निश्चयपूर्वक कह सकता हू कि यह निराधार कल्पना ही थी। लेकिन यूरोप की सरकारे स्विटजरलैण्ड पर टूट पडी। वहा की सरकार से कहा गया कि वह ऐसे क्रान्तिकारियो को आश्रय देती है, जो यह षड्यन्त्र करते है। जूरा-सघ के मुखपत्र के सम्पादक पाल ब्राउसी को गिरफ्तार कर लिया गया और उनपर मुकदमा चलाया गया। न्यायाधीशो ने देखा कि ब्राउसी अथवा जूरा-सघ

न्यायाधीशो ने केवल कुछ अभियुक्तो को लम्बी सजाए दी । शेष को बहुत मामूली सजाए दी गईं । न्यायाधीशो ने कहा कि ये बन्दी मुकदमे के पहले ही इतनी लम्बी और कठोर कैदे काट चुके है कि अब उन्हे और सजा देना न्याययुक्त नही होगा। अनेक व्यक्तियो को आशा थी कि सम्राट सजाओ को और घटा देगे। लेकिन सब आश्चर्यचकित रह गये जब सम्राट ने इन सजाओ को ओर बढा दिया। जिनको न्यायालय से मुक्त कर दिया था, वे निर्वासित करके साइबेरिया भेज दिये गए और जिन्हे मामूली सजाए दी गई थी, उन्हे प.च से लेकर बारह वर्ष तक के सपरिश्रम कारावास का दण्ड दिया गया। यह सब तीसरे दस्ते के प्रधान जनरल मैजेटसोव की करतूत थी।

उसी समय एक घटना और घटी। सेण्ट पीटर्सबर्ग के पुलिस कप्तान जनरल ट्रैपोव एक जेल का निरीक्षण करने गए। वहा बोगोलूबौफ नामक एक र.जनैतिक बन्दी ने अपना टोप उतारकर उनका अभिवादन नही किया। बस इसी बात पर टैपोव उसपर बरस पडे, उसे बुरी तरह मारा और जब उसने कुछ सघर्ष करने का यत्न किया तो उसे कोडे लगवा दिये। जेल के अन्य बन्दियो को जब यह ज्ञात हुआ, तो उन्होने अपना विरोध प्रकट किया। परिणाम-स्वरूप पुलिस ने उन सबको पीटा। रूसी राजनैतिक बन्दी साइबेरिया अथवा अन्य जेलो मे घोर कष्ट सहन कर रहे थे, लेकिन वे पिटने के लिए कतई तैयार नही थे। वीरा जासूलिच नामक एक युवती, जो बोगोलूबौफ से बिलकुल परिचित भी नही थी, एक रिवालवर लेकर पुलिस कप्तान के पास पहुच गई और उसके ऊपर गोली चला दी। ट्रैपोव घायल हो गया। अलैक्ज़ैण्डर द्वितीय उस लडकी को देखने आये और निश्चय ही उसकी सुन्दरता तथा शील से प्रभावित हुए होगे। सेण्ट पीटर्स-बर्ग मे ट्रैपोव के अनेक दुश्मन थे और उन्होने इस मामले को साधारण जूरी न्यायालय के सामने रखवा दिया। वीरा ने न्यायालय के सामने कहा कि जब उसके पास जनता के समक्ष सारा मामला लाने का और कोई चारा नही रहा था तभी उसने बाध्य होकर शस्त्र उठाये। इसके पहले लन्दन के 'टाइम्स' पत्र के सेण्ट पीटर्सबर्ग-स्थित सम्वाददाता को ट्रैपोव को मारने

की अग्रिम सूचना दी थी कि वह इस पत्र को भेज दे, लेकिन उसने इसे भेजा नही। उसके बाद वह ट्रैपोव को गोली मारने चली गई। अब चूंकि सम्पूर्ण जनता इस मामले से अवगत हो गई थी, उसे खुशी थी कि ट्रैपोव केवल घायल ही हुए। जूरी ने उसे छोड दिया। न्यायालय से निकलते समय जब पुलिस ने उसे फिर गिरफ्तार करने का प्रयत्न किया, तो वहा एकत्र जनता ने उसे छुडा लिया। कुछ समय बाद उसने रूस छोड दिया और स्विटजरलैण्ड मे हमारे पास आ गई।

इस घटना से यूरोप मे खलबली मच गई। जब उसके छूटने का समाचार आया, उस समय मै पेरिस मे था। उस दिन कार्यवश मुझे अनेक समाचारपत्रो के कार्यालयो मे जाना पडा। मैने देखा कि सम्पादक बडे जोश मे है और वीरा के ऊपर प्रशसात्मक लेख लिख रहे है। एक अत्यन्त गम्भीर और प्रतिष्ठित पत्र ने उस वर्ष की समीक्षा करते हुए लिखा था कि सन् १८७८ मे दो व्यक्तियो ने यूरोप के जनमत के ऊपर सबसे अधिक प्रभाव डाला—एक बर्लिन काग्रेस मे प्रिंस गोर्टचकोव और दूसरी वीरा जसूलिच ने। इन दोनो के चित्रो को साथ-साथ अनेक कलैण्डरो पर प्रकाशित किया गया था। यूरोप के मजदूरो पर तो वीरा के त्याग का जबर्दस्त प्रभाव पडा था।

इसके कुछ महीने पश्चात् बिना किसी पूर्व षड्यत्र के एक के बाद एक चार राज्यो के शासको की हत्या के प्रयत्न हुए। यूरोप की सरकारे सहसा विश्वास नही कर सकी कि तीन सम्राटो के जीवन पर इन प्रयत्नो के पीछे कोई अन्तर्राष्ट्रीय षड्यत्र नही है। तुरन्त ही वे इस निष्कर्ष पर पहुचे कि जूरा-सघ और अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-सघ इनके लिए उत्तरदायी है।

आज इन घटनाओ को बीस वर्ष हो गये है। मै निश्चयपूर्वक कह सकता हू कि यह निराधार कल्पना ही थी। लेकिन यूरोप की सरकारे स्विटजरलैण्ड पर टूट पडी। वहा की सरकार से कहा गया कि वह ऐसे क्रान्तिकारियो को आश्रय देती है, जो यह षड्यत्र करते है। जूरा-सघ के मुखपत्र के सम्पादक पाल ब्राउसी को गिरफ्तार कर लिया गया और उनपर मुकदमा चलाया गया। न्यायाधीशो ने देखा कि ब्राउसी अथवा जूरा-सघ

का इन हत्याओ से कोई भी सम्बन्ध नही है और उन्होने ब्राउसी को उनके लेखो पर केवल दो मास की जेल कर दी। लेकिन सरकार ने पत्र को वन्द कर दिया और स्विटजरलैण्ड के सब मुद्रको को आदेश दिया कि ऐसे किसी पत्र को नही छापे। इस प्रकार अब जूरा-सघ का कोई पत्र नही रहा।

इन परिस्थितियो मे मुझे —एक विदेशी को—सघ के मुखपत्र का सम्पादन-भार सम्भालना पडा। कोई चारा ही नही था। डुमारथेरे और हर्जिग नामक मित्रो के सहयोग से मैंने फरवरी १८७९ मे जिनेवा मे "ला रिवोल्टी' नामक पाक्षिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ कर दिया। पत्र का अधिकाश मुझे ही लिखना पडता था। हम लोगो के पास पत्र चलाने के लिए कुल तेईस फ्राक (चार डालर के करीव) की पूंजी थी। लेकिन हम लोगो ने चन्दा इकट्ठा करना शुरू किया और पत्र का पहला अक किसी तरह निकाल दिया। पत्र की सामग्री क्रान्तिकारी थी, लेकिन उसका भाव उदार था। मैंने भरसक ऐसी शैली मे लिखा था कि जटिल राजनैतिक और आर्थिक प्रश्न एक साधारण मजदूर की समझ मे आ जाय। अबतक हमारे पत्रो का प्रचार छ: सौ से अधिक नही वढा था। हम लोगो ने 'ला रिवोल्टी' की दो हजार प्रतिया छापी और कुछ ही दिनो मे सब बिक गई। पत्र को आशातीत सफलता मिली थी और आज भी वह पत्र पेरिस से निकलता है।

अक्सर साम्यवादी पत्र मौजूदा व्यवस्था के दोषो और अन्यायो की फेहरिस्त हो जाते है। कारखानो तथा खानो मे मजदूरो के प्रति दुर्व्यवहार का वर्णन रहता है, हडतालो मे मजदूरो के कष्टो का चित्रण किया जाता है और उनकी लाचार परिस्थिति को बार-बार दुहराया जाता है। परिणाम यह होता है कि पाठको पर निराशाजनक प्रभाव पडता है। फिर इस निराशा को कम करने, पाठको मे उत्साह लाने के लिए सम्पादक जोशीले शब्दो का प्रयोग करता है। इसके विपरीत मैने सोचा कि एक क्रान्तिकारी पत्र मे उन परिस्थितियो का ब्योरा रहना चाहिए जो एक नये युग के आगमन की सूचक है, अर्थात् प्राचीन व्यवस्था के खिलाफ विद्रोहो और नई सामाजिक व्यवस्था की झलको का वर्णन उसमे रहना

चाहिए। इन परिस्थितियो का ध्यानपूर्वक अध्ययन कराना चाहिए, उनमे पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए और उन्हे जनता के सामने ऐसे रूप मे उपस्थित करना चाहिए कि कैसे इस तरह नवीन सामाजिक व्यवस्था के निर्माण की तैयारिया हो रही है। नवीन सामाजिक व्यवस्था के निर्माण मे लगी मानव-जाति के प्रयत्नो के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करना ही क्रान्तिकारी पत्र का उद्देश्य होना चाहिए। निराशा से नही वरन आशा से क्रान्तिया सफल होती है।

इसी विचार-पद्धति को मैने सरलतम भाषा मे पाठको के सामने रखा, जिससे छोटे-से-छोटा पाठक भी स्वय समझ सके कि समाज किस दिशा मे आगे बढ रहा है, और यदि लेखक गलत निष्कर्ष निकाल रहा है, तो वह उसको उसकी भूल बतला सके। वर्तमान व्यवस्था की आलोचना करने मे मेरा उद्देश्य यही रहता था कि उसके दोषो के मूल कारणो को स्पष्ट किया जाय और पाठक समझ जाय कि पुरानी व्यवस्थाओ के प्रति परम्परागत तथा रुढिगत श्रद्धा और मानसिक गुलामी ही सब दोषो की जड है।

डुमारथेरे ओर हर्जिग इस कार्य मे मुझे भरपूर सहायता देते थे। डुमारथेरे का जन्म सैवोय के अत्यन्त निर्धन परिवार मे हुआ था। प्राथमिक पाठशाला से अधिक पढने का अवसर उसे नही मिला था। फिर भी उससे अधिक कुशाग्र बुद्धिवाला व्यक्ति मेरे देखने मे नही आया। घटनाओ और व्यक्तियो के विषय मे उसकी सम्मतिया बहुमूल्य होती। तत्कालीन साम्यवादी साहित्य का उसने अच्छा अध्ययन किया था। हर्जिग का जन्म जिनेवा मे हुआ था। वह क्लर्क था और अत्यधिक सकोची और लजीले स्वभाव का व्यक्ति था। लेकिन जब मै गिरफ्तार हो गया और उसपर पत्र के सम्पादन की जिम्मेदारी आ पडी, तो वह अपनी दृढ इच्छा-शक्ति से ही लिखना सीख गया। जिनेवा के मालिको ने उसका बहिष्कार-सा कर रखा था। अपने कुटुम्ब के साथ उसकी स्थिति दयनीय हो चुकी थी, लेकिन फिर भी वह पत्र का सचालन करता रहा, जबतक उसे पेरिस ले जाने का प्रबन्ध न हो गया।

मै स्वीकार करता हू कि हमारे सामने कुछ मुश्किले भी आई। हमारे कुल चार-पाच अक ही निकले थे कि मुद्रक महोदय ने हमसे कह दिया कि हम लोग पत्र के लिए कोई दूसरा प्रेस तलाश कर ले। जहातक मजदूरो के पत्रो का सम्बन्ध है, सविधान मे वर्णित 'प्रकाशन की स्वतत्रता' अत्यन्त सीमित है--कानून तो है ही, इसके अतिरिक्त भी कुछ बाधाए है। मुद्रक को हमारे पत्र से कोई शिकायत नही थी, वह स्वय उसे पसन्द करते थे। लेकिन स्विटरजलैण्ड मे सभी प्रेसवाले सरकार पर आश्रित रहते है, क्योकि वह उन्हे रिपोर्ट आदि छापने का काम देती है। हमारे मुद्रक से स्पष्टत: कह दिया गया था कि यदि वह हमारे पत्र को छापेगे तो उन्हे सरकारी काम की आशा छोड देनी होगी। मै स्विटरजरलैण्ड के सम्पूर्ण फ्रासीसी भाषाभाषी प्रदेश मे घूमा, सभी प्रेस-मालिको से बातचीत की, लेकिन सबने मुझे यही उत्तर दिया, "सरकारी काम के बिना हमारा गुजारा नही चल सकता और यदि हम आपका पत्र छापते है, तो सरकार से काम नही मिल सकेगा।"

हम लोगो ने एक छोटे-से कमरे मे अपना छापाखाना स्थापित किया। हमारे कम्पोजीटर जॉन रूसी थे। वह कुल ६० फ्राक प्रति मास पर हमारे पत्र को कम्पोज करते थे। शाम को रुखा-सूखा भोजन मिल जाय और कभी-कभी रात्रि को देखने को नाटक, बस इसीसे वह सन्तुष्ट थे। इससे अधिक की उन्हे आकाक्षा नही थी। एक दिन मुझे वह बादामी कागज मे लपेटे एक पार्सल ले जाते हुए जिनेवा की सडक पर मिल गये। मैने पूछा, "जॉन, क्या स्नान करने जा रहे हो?" उन्होने अपनी स्वाभाविक मुस्कान से उत्तर दिया—"नही, मकान बदल रहा हू।"

दुर्भाग्यवश वह फ्रासीसी कम जानते थे। मै अपने लेख भरसक सुन्दर लिखने का प्रयत्न करता था। उस समय मुझे खेद होता था कि अपने स्कूल-जीवन मे मैंने इस ओर क्यो लापरवाही की। लेकिन जॉन का फ्रासीसी भाषा का ज्ञान अत्यन्त साधारण था। परिणाम यह होता था कि वह शब्द को भयकर रूप मे कम्पोज कर देते। लेकिन कम्पोज करने मे वह जगह छोड़ देते थे, इसलिए कुछ अक्षरो के ठीक करने से काम बन जाता था।

हम लोगो के सम्वन्ध अत्यन्त मधुर थे और फिर तो उनकी देख-रेख मे मैंने कम्पोजिग का कार्य भी सीख लिया था। शीघ्र ही हमारी प्रकाशन सस्था लोकप्रिय हो गई—विशेपत अपनी छोटी-छोटी पुस्तिकाओ के लिए। डुमारथेरे ने कभी उनकी कीमत एक पेनी से अधिक नही बढने दी। इन पुस्तिकाओ को एक नई शैली मे ही लिखना पडा। मै पहले उन लेखको के प्रति ईर्ष्या करता था, जो अपने विचारो को प्रकट करने के लिए सैकडो कागज रग सकते है और टेलीरैंड की इस प्रसिद्ध उक्ति का सहारा ले सकते है "सक्षेप करने के लिए मेरे पास समय नही था।" लेकिन जब मुझे वर्पो के अध्ययन के परिणामो को एक पेनी की पुस्तिका के लिए सक्षेप करना पडता, तो मुझे बहुत समय लगता। लेकिन हम लोग मजदूरो के लिए लिख रहे थे और एक साधारण मजदूर के लिए एक पेनी भी मूल्यवान है। परिणाम यह हुआ कि हमारी एक पेनी और आधी पेनी की पुस्तिकाए हजारो की सख्या मे बिकी और अन्य देशो मे उनका अनुवाद हुआ। उस समय के मेरे सम्पादकीय लेखो को बाद मे—जब मैं जेल मे था—ऐलिसी रेक्लूज ने 'विद्रोही का निवेदन' पुस्तक के अधिकाश लेख 'क्रान्ति की भावना'[१] मे प्रकाशित करवाये।

प्रथम वर्ष हमे अपने सीमित साधनो पर ही आश्रित रहना पडा। लेकिन धीरे-धीरे ऐलिसी रैक्लूज हमारे कार्य मे अधिक सहयोग देने लगे। मेरी गिरफ्तारी के बाद तो उन्होने पत्र को बहुत उन्नत कर दिया। रैक्लूज ने रूसी एशिया के ऊपर अपने महान ग्रथ की रचना मे सहायता करने के लिए मुझे निमत्रित किया था। उन्होने रूसी भाषा सीख ली थी, लेकिन उन्हे आशा थी कि चूकि मै साइबेरिया से भली-भाति परिचित था, मै उनकी सहायता कर सकूगा। मेरी पत्नी का स्वास्थ्य जिनेवा मे खराब रहता था, इसलिए हम लोग १८८० मे रैक्लूज़ के पास क्लेरेस चले गये। हम लोगो ने वहा एक छोटा-सा मकान किराये पर लिया। नीचे जिनेवा की झील थी और सामने बरफ से ढके पहाड। एक छोटा-सा झरना, जो बरसात मे भयकर रूप ले लेता था, हमारी खिड़कियो के नीचे था और

[१]यह पुस्तक 'सस्ता साहित्य मडल' से प्रकाशित हुई है।

सामने की पहाडी पर चैटेलार्ड का प्राचीन किला था। यही मैने अपनी पत्नी की सहायता से अपने जीवन के सर्वोत्तम लेख लिखे। 'नवयुवको से दो बाते'[1] नामक लेख, जो विभिन्न भाषाओ मे लाखो की तादाद मे छपा, यही लिखा गया था। निबन्ध लिखने के पहले मै पत्नी से अच्छी तरह उसके सम्बन्ध मे वाद-विवाद करता, वह मेरे लेखो की अत्यधिक कठोर आलोचक थी। वास्तव मे यही मैने उन सब रचनाओ की भूमिका और सामग्री तैयार की, जो बाद को मैने लिखी। समान भावो के शिक्षित व्यक्तियो के बीच सम्पर्क—हम अराजकवादियो के लिए—सम्भव नही है। राजकीय प्रतिबन्धो के कारण हम लोग इधर-उधर छिटके पडे है। क्लेरेस मे रैक्लूज और लाफ्रैंकेस का सम्पर्क मेरे लिए सुलभ था। साथ ही मज़दूरो से भी मेरा सम्पर्क था। परिणाम यह हुआ कि यद्यपि वहा मैने भूगोल-सम्बन्धी अन्वेषण-कार्य किया, फिर भी अराजकवाद के प्रचार के लिए बहुत-कुछ लिखा।

: ८ :

ज़ार अलैक्जैण्डर की हत्या

रूस मे स्वतत्रता के लिए सघर्ष दिन प्रतिदिन तीव्रतर होता जा रहा था। अनेक राजनैतिक मुकदमे यथा—१९३ का मुकदमा, ५० अपराधियो का मुकदमा, डोलगूशिन के केन्द्र का मुकदमा आदि—न्यायालय के सामने लाये जा चुके थे। इन सबमे बस एक ही बात दुहराई गई थी। युवक किसानो और मजदूरो के पास गये और उन्हे साम्यवाद का सन्देश सुनाया, उन्होने विदेशो मे छपी हुई साम्यवादी पुस्तिकाए बाटी, विद्रोह करने और वर्तमान कष्टपूर्ण आर्थिक व्यवस्था के विरुद्ध सघर्ष करने के लिए उन्होने किसानो को प्रेरित किया। सक्षेप मे, ऐसा कोई कार्य नही किया गया था, जो ससार के अन्य देशो मे साम्यवादी आन्दोलनो मे न होता हो। जार के विरुद्ध षड्यत्र अथवा सशस्त्र क्रान्ति की तैयारी के कोई भी सबूत

[1] "सस्ता साहित्य मडल' से प्रकाशित

नही पाये गए। कोई थे ही नही । उस समय अधिकाश रूसी युवको के लिए ऐसे कार्यो के प्रति कोई आकर्षण नही था। इतना ही नही, १८७० से १८७८ के बीच के आन्दोलन की समीक्षा करते हुए आज मै अधिकार-पूर्वक कह सकता हू कि उन युवको मे से अधिकाश सन्तुष्ट हो जाते, यदि उन्हे केवल किसानो और मजदूरो के बीच रहने दिया जाता, जिससे वे उन्हे शिक्षित कर सके, और स्थानीय शासन आदि मे कोई उपयोगी सेवा-कार्य कर सके। उन युवको से मेरा घनिष्ठ परिचय रहा था। इसलिए यह बात साधिकार कह सकता हू ।

लेकिन सजाए अत्यधिक भयकर दी गई, क्योकि यह आन्दोलन रूस की तत्कालीन स्थिति से उत्पन्न हुआ था और साधारण सजाओ से नही दबाया जा सकता था। छ., दस अथवा बारह वर्ष के लिए खानो मे कडी मेहनत और उसके पश्चात जीवन-भर के लिए साइबेरिया को निर्वासन, यह आम सजा थी। एक लडकी को नौ वर्ष की कडी मेहनत और तत्पश्चात जीवन-भर के लिए साइबेरिया मे निर्वासन की सजा दी गई। उसका अपराध केवल इतना था कि उसने एक मजदूर को साम्यवादी पुस्तिका दी थी। कुमारी गुकोव्स्काया नामक चौदह वर्ष की लडकी को जीवनभर के लिए साइबेरिया मे निर्वासन की सजा दी गई। उसका अपराध यही था कि उसने कोवाल्स्की और उसके साथियो को, जो फासी दिये जाने के लिए भेजे जा रहे थे, छुडाने के लिए भीड को उत्तेजित किया था। यहा यह स्पष्ट कर दिया जाय कि अधिकारियो की दृष्टि मे भी यह कार्य बहुत आश्चर्य-जनक नही था, क्योकि रूस मे किसी भी अपराध के लिए फासी की सजा नही है। फिर राजनैतिक अपराधो के लिए फासी उस समय तक एक विस्मय और आश्चर्य की बात थी। साइबेरिया के जीवन से ऊबकर इस लडकी ने शीघ्र ही येनसी नदी मे डूबकर अपने प्राण दे दिये। जिन व्यक्तियो को न्यायालय निर्दोष पाकर छोड देते थे, उन्हे भी पुलिस अधि-कारी साइबेरिया और उत्तर-पूर्वी रूस के छोटे ग्रामो मे निर्वासित कर देते थे। वहा उन्हे ३ रूबल (उस समय ७ रु०) मासिक भत्ते पर अपना जीवन निर्वाह करना पडता था। इन गावो मे कोई उद्योग नही है, और निर्वासित व्यक्तियो को पढाने की सख्त मुमानियत थी।

मानो युवको को और भी अधिक उत्तेजित करने के लिए, उनके साथियों को सीधे साइबेरिया नही भेजा जाता था। पहले उन्हे कुछ वर्षो के लिए केन्द्रीय जेलो मे बन्द रखा जाता था। और सचमुच ये जेले भयकर थी। एक जेल मे, एक वर्ष के कैदियो की मृत्यु-सख्या २० प्रतिशत हो गई थी। केन्द्रीय जेलो मे, साइबेरिया के कठोर परिश्रम-कारागृहो मे और किलो मे कैदियो को भूखहडताल करनी पडती थी, जिससे उन्हे कुछ सहूलियते मिल जायं, यानी करने के लिए कुछ काम और पढने की सुविधा मिल जाय, अन्यथा कुछ ही महीनो मे वे पागल हो जाते। लेकिन इन भूखहडतालो का भी पुलिस अधिकारियो पर कोई प्रभाव नहीं पडता था। खारकोफ मे कैदियो को रस्सो से बाधकर जबरन खाना दिया गया था। जेलो के इन भयक़र कारनामो की खबरे बाहर लोगो को मालूम हो गई, दूर साइबेरिया के बन्दियो तक ये खबरे पहुची। शायद ही कोई हफ्ता जाता हो जब इस प्रकार के जघन्य कृत्यो की कोई घटना न आती हो।

हमारे युवक इन घटनाओ से उत्तेजित हो गये थे। वे कहते, "अन्य देशो के निवासी अन्याय का विरोध कर सकते है। एक अग्रेज़ अथवा एक फ्रासीसी ऐसी ज्यादतियो को सहन नही करेगा। हम क्यो चुप रहे ? हम भी पुलिस की रात की तलाशियो का अस्त्रो से विरोध करेगे। चूकि उनके द्वारा गिरफ्तारी के मानी है बुरी तरह घिसघिसकर मौत—इसलिए उन्हे भी मालूम हो जाय कि वे अपनी जान पर खेलकर ही गिरफ्तार कर सकेगे।" ओडेसा मे जब पुलिस कोवालस्की और उसके साथियो को रात को गिरफ्तार करने पहुची, तो उसका रिवाल्वर से मुकाबला किया गया।

अलैक्ज़ैण्डर द्वितीय ने इस नई परिस्थिति का मुकाबला करने के लिए सम्पूर्ण देश मे पुलिस राज कायम कर दिया। रूस को कुछ जिलो मे बाट दिया गया, हर जिला एक गवर्नर जनरल के अधीन कर दिया गया और उन्हे अपराधियो को फासी देने की आज्ञा दे दी गई। कोवालस्की और उसके मित्रो को, यद्यपि उन्होने किसीकी हत्या नही की थी, फासी दे दी गई। फासी साधारण सजा हो गई। दो वर्षो मे तेईस व्यक्ति फासी पर लटका दिये गए। इनमे उन्नीस वर्ष का एक लडका भी था। उसे एक रेलवे

स्टेशन पर क्रान्तिकारी पोस्टर लगाते पकडा गया था। बस, यही आरोप उसपर लगाया गया था। वह बालक ही था, लेकिन एक पुरुष की भाति उसने मौत का आलिगन किया।

इस नवीन सघर्ष मे तीन उच्च पदाधिकारी और खुफिया पुलिस के तीन साधारण अधिकारी मारे गये। जनरल मैजेन्टसोव को, जिसने १९३ के मुकदमे के निर्णय के बाद जार से सजाए दुगुनी करा दी थी, सेन्ट पीटर्स-बर्ग मे दिन दहाडे गोली मार दी गई। एक अन्य फौजी अधिकारी को, जो इससे भी अधिक कुकृत्य का अपराधी था, कीव मे मार डाला गया। और खारकोफ के गवर्नर जनरल, मेरे चचेरे भाई डिमिट्री क्रोपाटकिन को, जब वह थियेटर से घर लौट रहे थे, मौत के घाट उतार दिया। केन्द्रीय जेल, जिसमे पहली भूख हडताल हुई थी, उन्हीके अधीन थी। वास्तव मे वह बुरे व्यक्ति नही थे। मैं जानता हू कि व्यक्तिगत रूप से वह राजनैतिक बन्दियो के प्रति सहानुभूति रखते थे। लेकिन वह कमजोर थे तथा दरबारी थे। सकोचवश इन मामलो मे वह हस्तक्षेप नही करते थे। उनके कहने मात्र से राजनैतिक बन्दियो के प्रति दुर्व्यवहार बन्द हो सकता था। जार अलैक्जैण्डर उन्हे प्रेम करते थे और दरबार मे उनकी स्थिति इतनी दृढ थी कि सम्भवत. उनके हस्तक्षेप का अनुमोदन ही होता। इस घटना के दो वर्ष पहले जब उन्होने सेण्ट पीटर्सबर्ग आकर जार को सूचना दी कि खारकोफ प्रान्त के गरीब किसानो के विद्रोह के दौरान उन्होने शान्ति और दया से कार्य किया, तो जार ने कहा था—"धन्यवाद, तुमने मेरी इच्छा के अनुकूल ही कार्य किया है।" लेकिन इस बार उन्होने जेलरो का समर्थन किया और खारकोफ के युवक अपने बन्दी मित्रो के प्रति दुर्व्यवहार से इतने उद्विग्न हो गये कि उनमे से एक ने उनको गोली मार दी।

लेकिन अबतक इस सघर्ष मे जार के व्यक्तित्व को अलग रखा गया था और १८७९ तक उनके ऊपर किसीने आक्रमण नही किया था। गुलामो के मुक्तिदाता के रूप मे उनका यश पुलिस के हजारो सिपाहियो की अपेक्षा कही अधिक उनकी रक्षा कर रहा था। लेकिन जिस प्रकार पोलैण्ड के विद्रोह के समय उसका तानाशाही रूप जाग्रत हो गया था और कैटकोफ

के प्रभाव मे उन्होने विद्रोह का क्रूरतापूर्वक दमन किया, उसी प्रकार आज भी उसी दुष्ट कैटकोफ की सलाह से वह फासी देने के लिए केवल फौजी शासको की नियुक्ति करते रहे।

और इन परिस्थितियो मे, शिक्षित युवको ने उनकी तानाशाही के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इसके परिणामस्वरूप उनके जीवन पर अनेक विफल प्रयत्न किये गए और अन्त मे १८८१ मे उन्हे मार दिया गया।

सब जानते है क्या हुआ। जार लोहे की गाडी मे लौट रहे थे। उन्हे रोकने के लिए उसपर बम फेका गया। उनके अगरक्षक घायल हो गये। रैसाकोफ, जिसने बम फेका था, वही गिरफ्तार हो गया। यद्यपि कोचवान ने जार से अनुरोध किया था कि वह गाडी से बाहर न निकले और उस स्थिति मे भी वह गाडी को ले जाने के लिए तत्पर था, लेकिन जार ने गाडी से उतरने की ज़िद की। उन्होने निश्चय किया कि अपनी फौजी शान के अनुरूप उन्हे घायल अगरक्षको को देखना और उन्हे सान्त्वना देनी चाहिए। वह रैसाकोफ के पास पहुचे और उससे कुछ पूछा। फिर जैसे ही वह ग्रीनेवैट्स्की नामक दूसरे युवक के पास से निकला, इस युवक ने अपने और जार के बीच एक बम फेक दिया। दोनो कुछ समय बाद मर गये।

अलैक्ज़ैण्डर की लाश बरफ पर पडी हुई थी—बुरी तरह खून वह रहा था। उसके साथी-सगी सब तितर-बितर हो गये थे। परेड से लौटते हुए फौजी विद्यार्थियो ने जार को उठाया। उसके कापते हुए शरीर को अपनी पोशाक से ढका और उसके खुले सिर पर अपनी टोपी लगा दी। उस समय भी एक क्रान्तिकारी, ऐमीलियैनोफ, आगे बढा। उसके हाथ मे कागज से ढका बम था। उसी समय गिरफ्तार होने और अन्तत. फासी पर चढने का खतरा होते हुए भी यह क्रान्तिकारी घायल जार को उठाने के लिए फौजी विद्यार्थियो के सहायतार्थ पहुच गया। मनुष्य की प्रकृति बडी विलक्षण है।

अलैक्जैण्डर द्वितीय के जीवन-नाटक का दुखान्त इस प्रकार हुआ। जनता नही समझ सकी कि जिस जार ने रूस के लिए इतना किया, क्रान्तिकारियो के हाथ क्योकर मारा गया? मेरे लिए यह सब स्पष्ट था। मैने उनके

व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओ को देखा था। वह प्रकृति से तानाशाह थे। शिक्षा ने उनकी हिसात्मक प्रवृत्तियो को कुछ दबा-भर दिया था। उसमे फौजी पराक्रम था—लेकिन एक राजनीतिज्ञ की वीरता नही थी। वह अत्यन्त आवेशपूर्ण थे, लेकिन उनकी इच्छाशक्ति कमजोर थी। मुझे तो शेक्सपीयर के नाटको की तरह उसका जीवन दुखान्त की ओर अनिवार्यत. अग्रसर होता दीख रहा था। पोलैण्ड मे विद्रोहियो को फासी देने के पश्चात् जब १३ जून, १८६२ को मैने उन्हे फौजी अफसरो के सामने भाषण देते सुना था, उसी समय मेरे लिए तो उनके जीवन का अन्त स्पष्ट हो गया था।

: ९ :

मेरा निष्कासन

सेण्ट पीटर्सबर्ग मे राजपरिवार बुरी तरह भयभीत हो गया। अलैक्जैण्डर तृतीय विशालकाय और बलशाली होते हुए भी वीर नही था। शीतमहल मे जाना उसने अस्वीकार कर दिया और अपने पितामह पॉल प्रथम के गैटचीना महल मे रहने लगा। मै उस प्राचीन किले से भली भाति परिचित हू। चारो ओर गहरी खाई है और रक्षको के लिए अनेक अट्टालिकाए है। अध्ययन-कक्ष मे चोर दरवाजे है, जिनमे से दुश्मनो को नीचे पानी मे चट्टानो पर फेका जा सकता है। मैने चोर जीना देखा है, जो जमीन मे नीचे जेलखाने को जाता है, और भीतर-ही-भीतर एक रास्ता है, जो एक झील पर निकलता है। पॉल प्रथम के सभी महल इसी नकशे के बने हुए है। इसी बीच एनिचकोफ महल के नीचे एक गैलरी का निर्माण हो रहा था, जो बिजली के सामान से लैस थी, जिससे क्रान्तिकारियो के आक्रमण से वह सुरक्षित रहे।

जार की सुरक्षा के लिए एक गुप्त सगठन बनाया गया। तिगुने वेतन दे-देकर अनेक अधिकारी इसमे गुप्तचर का कार्य करने के लिए भर्ती किये गए। मज़ेदार घटनाए घटने लगी। दो अधिकारी बिना जाने कि वे एक

ही दल के सदस्य है एक दूसरे को रेल-यात्रा मे राज्यविरोधी वार्तालाप के लिए फुसलाते, फिर एक दूसरे को गिरफ्तार करने की तैयारी करते और ठीक मौके पर मालूम पडता कि उनकी सारी मेहनत बेकार हुई। यह सगठन आज भी 'सुरक्षा' के नाम से कायम है और समय-समय पर वर्तमान जार को झूठे खतरो का भय दिखाकर अपनी स्थिति बनाये हुए है।

उसी समय 'पवित्र समुदाय' नामक एक अन्यतम गुप्त सगठन का निर्माण किया गया। इसका नेता जार का भाई व्लाडीमीर था। उस सगठन का उद्देश्य विभिन्न तरीको से क्रान्तिकारियो का विरोध करना था। एक तरीका यह भी था कि अन्य देशो मे बसे रूसी शरणार्थियो की हत्या कर दी जाय। मेरा नाम भी इस सूची मे था। सगठन के नेता ने पवित्र समुदाय के सदस्यो को डांटा कि वे सब-के-सब कायर है। क्या उनमे कोई भी ऐसा नही, जो ऐसे क्रान्तिकारी निर्वासितो की हत्या कर सके। एक अधिकारी, जो मेरे साथ पार्षद रहा था, मेरी हत्या करने के लिए नियुक्त किया गया।

वास्तव मे देश से बाहर बसे हुए निर्वासित व्यक्तियो का सेण्ट पीटर्सबर्ग मे स्थित कार्यकारिणी से कोई सम्पर्क नही था। सुदूर स्विटजरलैण्ड मे निरापद रहकर षड्यत्रो को संचालन करने का प्रयत्न सर्वथा मूर्खतापूर्ण होता, जब सेण्ट पीटर्सबर्ग मे कार्य करनेवाले सदैव मृत्यु के साया मे कार्य करते थे। मैने और स्टैपनियाक ने बार-बार लिखा है, हम लोग स्थिति और स्थान से दूर रहकर षड्यत्रो की योजना बनाने की जिम्मेदारी कभी भी स्वीकार नही कर सकते थे। लेकिन सेण्ट पीटर्सबर्ग की पुलिस के लिए यह अच्छा बहाना था कि वे जार की रक्षा करने मे असमर्थ है, क्योकि सब षड्यत्रो की योजनाए देश के बाहर बनती हैं और इसके समर्थन मे उन्होने अपने गुप्तचरो से रिपोर्टे प्राप्त कर ली।

अलैक्ज़ैण्डर द्वितीय की मृत्यु के कुछ समय पश्चात् स्विटजरलैण्ड के सघीय शासन ने मुझे वहा से निर्वासित कर दिया। मुझे इससे खेद नही हुआ। यूरोप के राज्य निरन्तर स्विटजरलैण्ड से शिकायत कर रहे थे कि वह निर्वासितो को अपने यहा क्यो शरण दिये हुए है। रूस के सरकारी

अखबार जार पर निरन्तर दबाव डाल रहे थे कि स्विटजरलैण्ड की अध्यापिकाए और परिचारिकाए—उनकी सख्या काफी थी—रूस से निष्कासित कर दी जाय। इसलिए स्विटजरलैण्ड के शासको ने मुझे निष्कासित करके रूसी पुलिस को कुछ सन्तोष दिया। लेकिन मुझे तो दु.ख स्वय स्विटजरलैण्ड के लिए है, मुझे निष्कासित करके उन्होने इस रूसी मत को कि "षड्यत्रो का सचालन स्विटजरलैण्ड मे होता है" स्वीकार कर लिया और अपनी कमजोरी को भी मान लिया। तुरन्त ही इटली और फ्रास ने इसका पूरा-पूरा फायदा उठाया। इसके दो वर्ष पश्चात् जब फ्रास के प्रथम प्रधान मत्री ने इटली और जर्मनी के सामने स्विटजरलैण्ड के विभाजन का प्रस्ताव रखा, तो उसने यही युक्ति दी होगी कि स्वय स्विटजरलैण्ड की सरकार स्वीकार कर चुकी है कि उनका देश अन्तर्राष्ट्रीय षड्यत्रों का केन्द्र है।

जैसे ही मैं लन्दन से लौटकर आया, मुझे निष्कासन की आज्ञा दे दी गई। मै अराजकवादियो के काग्रेस-अधिवेशन के लिए लन्दन गया था और उसके पश्चात् कुछ समय के लिए वहा रुक गया। वहा रूसी घटनाओ पर अपने दृष्टिकोण से 'न्यूकैसिल क्रानिकल' मे कुछ लेख लिखे। उस समय इग्लैण्ड के अखबारो मे रूस-सम्बन्धी समाचारो मे रूसी सरकार का दृष्टिकोण ही रहता था। इसलिए मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ जब मि० जोसेफ कौविन ने अपने पत्र 'न्यूकैसिल क्रानिकल' मे हम लोगो के दृष्टिकोण को उपस्थित करने के लिए मुझे मौका दिया।

मै अपनी पत्नी के पास स्विटजरलैण्ड पहुचा ही था कि मुझे देश छोड़ देने की आज्ञा दी गई। हम लोगो के पास जो थोडा सामान था, उसे हमने अगले रेलवे स्टेशन को रवाना कर दिया और हम अपने प्रिय पहाडो के अन्तिम दर्शन करते हुए एगिल तक पैदल ही चले।

मेरी स्त्री जिनेवा विश्वविद्यालय से विज्ञान की बी० एस-सी० परीक्षा देनेवाली थी। इसलिए हम लोग जिनेवा झील के सैवोय तट पर फ्रास के एक छोटे-से ग्राम थौनोन मे दो महीने रहे।

पवित्र समुदाय ने मेरी हत्या का जो निर्णय किया था, उसकी सूचना रूस के एक उच्च अधिकारी ने मुझे भेज दी। यहातक कि जो महिला

इस षडयत्र का सचालन करने के लिए सेण्ट पीटर्सबर्ग से जिनेवा भेजी गई थी उसका नाम भी मुझे मालूम हो गया था। मैने केवल इस षडयत्र की सूचना और नाम जिनेवा स्थित 'टाइम्स' के सवाददाता को भेज दिया और उसे लिख दिया कि अगर मेरे ऊपर कोई आक्रमण हो, तो वह उन्हे छपवा दे। इस सम्बन्ध मे 'ला िवोल्टी' मे एक नोट भी दे दिया। उसके बाद मैने उसकी सब चिन्ता छोड दी। मेरी पत्नी उस ओर से लापरवाह नही हुई। जिस किसान महिला के यहा हम थौनोन मे रहते थे, उसे स्वतत्र रूप से इसकी सूचना मिल गई थी। वह मेरी रक्षा के लिए अत्यधिक चिन्तित रहती। उसकी झोपडी कस्बे के बाहर थी। जब कभी मैं रात को कस्बे की तरफ जाता, यथा अपनी पत्नी को स्टेशन से लाने के लिए—वह कोई-न-कोई बहाना ढूंढकर मेरे साथ अपने पति को लालटेन लेकर भेज देती। वह कहती—"मि० क्रोपाटकिन, जरा देर रुक जाइये, मेरे पति उस ओर कुछ खरीदने जा रहे है। और आप तो जानते ही है वह सदैव अपने साथ लालटेन ले जाते है," या वह मुझसे बिना कुछ कहे, अपने भाई को मेरे पीछे-पीछे भेज देती।

: १० :

इंगलैण्ड का तत्कालीन वातावरण

अक्तूबर-नवम्बर १८८१ मे जैसे ही मेरी पत्नी की परीक्षा समाप्त हुई, हम लोग थौनोन से लन्दन चले गये और वहा लगभग एक वर्ष रहे। उस समय लन्दन और सम्पूर्ण इग्लैण्ड का बौद्धिक जगत सुषुप्तावस्था मे था। यह सर्वविदित है कि १८४० के लगभग इग्लैण्ड यूरोप मे साम्यवादी आन्दोलन का नेता था। वहा मजदूरो के बीच साम्यवादी विचारो का अच्छा प्रचार था। आज जिसे हम वैज्ञानिक अथवा अराजकवादी साम्यवाद कहते हैं वह यहा उन दिनो प्रतिपादित हो चुका था। लेकिन उसके बाद प्रतिक्रिया प्रारम्भ हुई। और अब इग्लैण्ड मे ही नही, सम्पूर्ण यूरोप मे सर्वत्र शान्ति थी।

इस समय मैने इग्लैण्ड मे एक वर्ष बिताया। वह वास्तव मे मेरे लिए निर्वासन-काल था। मेरे जैसे उग्र साम्यवादी विचारो के व्यक्ति के लिए वहा का वातावरण दमघोटू था। बर्न्स, चैम्पियन, हार्डी तथा अन्य मजदूर नेता अभी सामने नही आये थे, फेबियन आन्दोलन का अभी जन्म नही हुआ था, मारिस ने अभी अपनेको साम्यवादी घोषित नही किया था और ट्रेड यूनियने, जो लन्दन के कुछ उद्योगो तक ही सीमित थी, साम्यवाद की विरोधी थी। उस समय साम्यवादी आन्दोलन के एकमात्र नेता हिडमैन दम्पति थे। १८८१ मे उन्होने एक छोटा-सा अधिवेशन किया था और हम लोग अक्सर मजाक मे कहा करते थे कि श्रीमती हिडमैन ने प्रतिनिधियो को अपने घर पर टिका लिया था।

चकोवस्की उस समय लन्दन मे थे और हम लोगो ने मजदूरो के बीच साम्यवाद का प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया। कुछ कार्यकर्त्ताओ के साथ हम लोग कुछ केन्द्रो मे जाते। वहा रूसी युवको के "जनता के बीच चलो" आन्दोलन और साम्यवाद की चर्चा करते। सुननेवालो की सख्या अत्यधिक सीमित होती। शायद ही कभी दस-बारह व्यक्तियो से अधिक रहते। कभी-कभी कोई वृद्ध चार्टिस्ट श्रोताओ मे से उठता और कहता—"आप जो कुछ कह रहे है वह चालीस वर्ष पहले ही कहा जा चुका है।" सब मजदूर तालिया बजाकर उसका अनुमोदन करते।

मि० हिडमैन ने अभी ही मार्क्स के साम्यवाद के ऊपर अपनी पुस्तक "इग्लैण्ड सबके लिए" प्रकाशित की थी। मुझे स्मरण है कि एक दिन १८८२ की गर्मियो मे मैने उनसे एक साम्यवादी पत्र के प्रकाशन के लिय अनुरोध किया। मैने उन्हे बतलाया कि हम लोगो ने कितने कम साधनो से 'ला रिवोल्टी' का प्रकाशन प्रारभ किया था और कहा कि इसमे आपको निश्चय ही सफलता मिलेगी। लेकिन सारा वातावरण इतना उत्साहहीन था कि वह इससे सहमत नही हो सके और शायद यह ठीक था।

१८८२ की गर्मियो मे मैने अपनी टूटी-फूटी अग्रेजी मे डरहम के मजदूरो के वार्षिक अधिवेशन मे भाषण दिया। न्यूकैसिल, ग्लासगो और एडिनबरा मे भी रूसी आन्दोलन पर भाषण दिये और इन स्थानो मे मेरा

अच्छा स्वागत हुआ। लेकिन मेरी पत्नी और मै लन्दन मे एकाकी अनुभव करने लगे। इग्लैण्ड मे साम्यवादी आन्दोलन के सफल होने की सम्भावना नही थी। इसलिए हम लोगो ने फ्रास लौटने का निश्चय किया। हम जानते थे कि फ्रास मे मै शीघ्र ही गिरफ्तार हो जाऊगा। लेकिन हम लोग अक्सर आपस मे कहते—"इस कब्र की शान्ति से तो फ्रास का जेलखाना ही बेहतर है।"

: ११ :

फ्रांस में गुप्तचरों के कारनामे

हम लोग फिर थौनोन मे अपनी भूतपूर्व मेजबान श्रीमती सैनसोक्स के यहा रहने लगे। मेरी पत्नी के भाई, जिन्हे तपेदिक हो गई थी, स्विटजरलैण्ड से हम लोगो के पास आ गये।

मैने रूसी गुप्तचर इतनी संख्या मे कभी नही देखे, जितने थौनोन मे अपने दो मास के इस निवास मे देखे। जैसे ही हमने मकान किराए पर लिया, एक सन्देहात्मक व्यक्ति ने, जो अपनेको अंग्रेज कहता था, मकान का दूसरा भाग ले लिया। रूसी गुप्तचरो की भीड मकान के पास मडराने लगी। मकान के भीतर वे किसी-न-किसी बहाने आते अथवा मकान के सामने चहलकदमी करते। मै कल्पना कर सकता हू कि वे कैसी रिपोर्टे लिखते होगे। एक गुप्तचर के लिए रिपोर्ट करना आवश्यक है। अगर वह लिख दे कि वह एक सप्ताह तक सडक पर चहलकदमी करता रहा और उसने कुछ भी नही देखा, तो वह तुरन्त बर्खास्त कर दिया जायगा।

वह समय रूसी गुप्तचरो का स्वर्णयुग था। इग्नातीयेफ की नीति सफल हुई थी। पुलिस के दो-तीन विभागो मे आपस मे होड लगी थी—प्रत्येक के पास मनचाही रकमे थी और वे भयकर षड्यन्त्रो मे सलग्न थे। उदाहरण के लिए पुलिस के एक विभाग के अध्यक्ष सुर्डाकिन ने जिनेवा मे क्रान्तिकारियो के सामने इग्नातीयेफ की घोर निन्दा की और उन्हे आश्वासन दिया

कि इग्नातीयेफ, टालसटाय और ब्लाडीमीर की हत्या करने के लिए रूस मे क्रान्तिकारियो को सब सुविधाए प्रदान की जायगी। साथ मे उसने यह भी कहा कि इन सबकी हत्या के बाद वह गृहमत्री हो जायगा और जार पूरी तरह उसके हाथो मे रहेगा। रूसी पुलिस की इन सरगरमियों के परिणामस्वरूप अन्त मे बलगेरिया के राजकुमार का अपहरण हुआ।

फ्रासीसी पुलिस भी जागरूक थी। उनके लिए चिन्ता का विषय था कि आखिर मै थौनोन मे कर क्या रहा हू। मै 'ला रिवोल्टी' का सम्पादन कर रहा था और अग्रेजी विश्वकोश तथा 'न्यूकैसिल क्रॉनीकिल' के लिए लेख लिखता था। लेकिन इसकी वे क्या रिपोर्ट करते? एक दिन वहा का स्थानीय पुलिस अधिकारी मकान-मालकिन के पास आया। उसने गली में से मशीन की आवाज सुनी थी और उसका सन्देह था कि मेरे पास कोई गुप्त छापाखाना होगा। इसलिए वह मेरी अनुपस्थिति मे आया और मकान-मालकिन से छापाखाना दिखलाने का अनुरोध किया। उसने उत्तर दिया कि वहा छापाखाना नही, शायद उसने उसकी सीने की मशीन की आवाज सुनी होगी। लेकिन इस कोरे उत्तर से उसे कब सन्तोष होनेवाला था। उसने मालकिन को अपनी मशीन चलाने पर बाध्य किया। उसने घर के भीतर और फिर सडक से उस आवाज को सुना और तब वह आश्वस्त हुआ कि उसने यही आवाज सुनी थी।

"लेकिन वह दिन-भर किया क्या करता है?" उसने मकान-मालकिन से पूछा।

"वह लिखता रहता है।"

"लेकिन वह दिन-भर नही लिख सकता।"

"दोपहर को वह बगीचे मे लकडी चीरता है और शाम को ४ और ५ के बीच टहलता है।"

"अच्छा, यह बात है, जब शाम हो जाती है तब टहलने निकलता है।" और उसने अपनी नोटबुक मे लिख लिया—"केवल शाम को झुटपुटे मे बाहर निकलता है।"

उस समय मै रूसी गुप्तचरो की इस विशेष चिन्ता को नही समझ

लायन्स मे भी आन्दोलन उग्र और हिंसात्मक हो रहा था। शहर मे अराजक-वादी अच्छी सख्या मे थे। वे अवसरवादी राजनैतिक नेताओ की कोई मीटिंग ही नही होने देते थे, जबतक उनमे वे स्वय न बोल ले। वे इन सभाओ मे प्रस्ताव लाते थे कि खदानो मे उत्पादन के सब साधनो और मकानो का राष्ट्रीयकरण कर देना चाहिए। ये प्रस्ताव उल्लास और उत्साह से पास होते थे। मध्यवर्ग बुरी तरह भयभीत था।

जैसाकि ऐसी परिस्थितियो मे सदैव होता है, गरीब लोगो का सारा क्रोध मनोरजन और नाट्य गृहो पर टूटा, क्योकि वे भुखमरी और गरीबी के वातावरण मे और भी अधिक खलते है। गरीबो के लिए वे अमीरो के अहकार और धूर्त्तता के मूर्त रूप हो जाते है। इस प्रकार का एक होटल तहखाने मे था। उसका नाम थियेटर बैलीकूर था। वह रात-भर खुला रहता और वहा सुबह तक राजनैतिक नेता और पत्रकार सुन्दर स्त्रियो के साथ शराब पिया करते थे। एक रात किसी व्यक्ति ने इस होटल मे डाइनेमाइट फेंक दिया। एक साम्यवादी कार्यकर्त्ता, जो उस समय वही था, उसको बुझाने दौडा और वही उसमे मर गया। रास-रग मे विभोर कुछ राजनैतिक नेता घायल हो गये। अगले दिन एक फौजी भर्ती के दफ्तर पर डाइनेमाइट का धडाका हुआ। कहा जाता है कि कुमारी मरियम की बडी मूर्ति को—जो लायन्स की पहाडी पर स्थित है—अराजकवादी बम्ब से उडा देना चाहते थे। वास्तव मे लायन्स के स्कूल और जनता पर कैथोलिक पादरियो की सत्ता कल्पनातीत है। परिणामस्वरूप वहा की जनता उनसे अत्यधिक घृणा करने लगी थी।

लायन्स के अमीर भयभीत हो गये। लगभग साठ अराजकवादी गिरफ्तार कर लिये गए। लायन्स के अखबारो ने मुझे गिरफ्तार करने के लिए सरकार पर यह कहकर दबाव डाला कि मै इस आन्दोलन का नेता था और इसका सचालन करने के लिए ही इग्लैण्ड से आया था। रूसी गुप्तचर इस छोटे-से कस्बे मे फिर मडराने लगे। लगभग हर रोज मेरे पास पत्र आते। वे पुलिस द्वारा ही लिखे हुए थे। कि डाइनेमाइट मेरे पास भेजे जा रहे है। मैने इस तरह बहुत-से पत्र इकट्ठे कर लिये और उनपर 'पुलिस इन्टर-

नेशनल' लिख दिया। फासीसी पुलिस जब मेरे यहा तलाशी लेने आई तो इन पत्रो को उठा ले गई। लेकिन उन्होने कचहरी मे उन्हे पेश नही किया और न मुझे लौटाया।

मेरे घर की तलाशी ली गई। मेरी पत्नी को, जब वह जिनेवा जा रही थी, थोनोन स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया गया और उसकी भी तलाशी ली गई। लेकिन वहा भी कुछ नही मिला।

दस दिन बीत गये और मै जहा चाहे जा सकता था। मेरे पास मित्रों के कई पत्र आये कि मुझे फ्रास से भाग जाना चाहिए। इनमे एक पत्र रूसी सज्जन का था--शायद वह रूसी दूतावास मे अधिकारी थे---कि मुझे तुरन्त ही वहा से चला जाना चाहिए, अन्यथा अपराधियो के सम्बन्ध में रूस और फ्रास के बीच जो सन्धि शीघ्र ही होनेवाली है, उसके अन्तर्गत सबसे पहला शिकार मै ही होऊगा। लेकिन मै वही रहा। जब लन्दन मे 'टाइम्स' मे एक समाचार छपा कि मै थौनोन से कही भाग गया हू, तो मैने उस पत्र को इस समाचार का खडन करते हुए अपना पता लिख दिया। चूकि मेरे अनेक मित्र गिरफ्तार हो चुके थे, मैने भागने का कभी विचार ही नही किया।

२१ दिसम्बर की रात को मेरी गोदी मे मेरे बहनोई की मृत्यु हो गई। हम लोग जानते थे कि उसकी बीमारी असाध्य है, लेकिन फिर भी एक लम्बे अर्से तक मृत्यु से सघर्ष करते हुए एक युवक की मृत्यु का दृश्य बडा भयकर होता है। मेरी पत्नी और मै दोनो हिल गये थे। करीब तीन-चार घटे बाद, प्रात.काल के कुछ पहले, मुझे गिरफ्तार करने के लिए पुलिस आई। अपनी पत्नी की स्थिति को देखते हुए मैने पुलिस से अनुमति मागी कि मुझे अन्तिम सस्कार तक के लिए छुट्टी दे दी जाय। उसके बाद मै निश्चित समय पर स्वय जेल के दरवाजे पर पहुच जाऊगा। लेकिन उन्होने अनुमति नही दी और उसी रात को मुझे लायेन्स ले जाया गया। एलिसी रैक्लूज तार मिलते ही तुरन्त आ गये थे। जिनेवा से अनेक मित्र आये और यद्यपि अन्तिम सस्कार बिल्कुल साधारण था, लेकिन कस्बे की आधी आबादी मेरी पत्नी को यह दिखलाने के लिए उपस्थित थी कि गरीबो और किसानों

के हृदय शासकों के साथ न होकर हमारे साथ हैं। जब मेरे ऊपर अभियोग चल रहा था, किसान दूर-दूर से अखबार लेने शहर आते कि मेरे मुकदमे की क्या स्थिति है।

इस दौरान एक और घटना घटी, जिससे मैं द्रवित हो गया। इंग्लैण्ड के एक विख्यात और सम्मानित व्यक्ति द्वारा भेजे हुए एक अंग्रेज़ मित्र आये। वह मुझे जमानत पर छुड़ाने के लिए अपने साथ यथेष्ठ धन लाये थे और उन्होंने मेरे पास सन्देश भिजवाया कि मैं ज़मानत की बिल्कुल चिन्ता न करूं और तुरन्त फ्रांस से बाहर चला जाऊं। पता नहीं कैसे उन्होंने मुझसे मिलने की व्यवस्था की, लोहे के सीखचों के भीतर से नहीं जैसे मुझे पत्नी से मिलने की इजाजत मिली थी, वरन् आज़ादी से। मैंने उनके प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया। इससे उन्हें बड़ा खेद हुआ। लेकिन मैं भी अपने कृपालु और स्नेही मित्र के इस कार्य से द्रवित हो गया।

फ्रांसीसी सरकार एक बड़ा मुकदमा चलाना चाहती थी, जिससे जनता पर प्रभाव पड़े। लेकिन बम के धड़ाकों के लिए गिरफ्तार किये गए अराजकवादियों पर अभियोग सिद्ध करना लगभग असम्भव था। उसके लिए हम लोगों को जूरी के सामने पेश करना आवश्यक था और वे हमें सम्भवतः छोड़ देते। इसलिए सरकार ने चालाकी से हमपर अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर-संघ के सदस्य होने का अपराध लगाया। फ्रांस में एक कानून है। कम्यून के पतन के तुरन्त बाद उसे बनाया गया था। इसके अन्तर्गत उक्त संघ के सदस्यों पर पुलिस न्यायालय में मुकदमा चलाया जा सकता है। उसमें अधिकतम सज़ा पांच वर्ष है और पुलिस न्यायालय निश्चय ही सरकार की इच्छानुसार सज़ा दे सकती है।

जनवरी १८८३ के प्रारम्भ में लायन्स में मुकदमा प्रारम्भ हुआ और लगभग पन्द्रह दिन तक चला। अभियोग हास्यास्पद था। सभी लोग जानते थे कि लायन्स का कोई भी मज़दूर अन्तर्राष्ट्रीय संघ का सदस्य नहीं रहा था। मुकदमा बिल्कुल फेल हो गया, जैसाकि निम्नलिखित घटना से स्पष्ट हो जायगा। सरकार की तरफ से केवल एक गवाह था, जो गुप्तचर पुलिस का अध्यक्ष था। जहांतक तथ्यों का सम्बन्ध है उसकी रिपोर्ट सच

थी। उसने कहा कि शहर की सारी आबादी पर अराजकवादियो का प्रभाव था, उनकी मीटिगे होती थी और वे उनमे साम्यवाद और अराजकवाद का प्रचार करते थे। मैने देखा कि अबतक वह सच बोला था। मैने उससे प्रश्न किया, "क्या आपने कभी लायन्स मे किसी मीटिग मे 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सघ 'का नाम सुना ?"

उसने उत्तर दिया, "कभी नही।"

"१८८१ को लन्दन की काग्रेस से मै जब यहा आया और मैने अन्तर्राष्ट्रीय सघ स्थापित करने के लिए भरसक प्रयत्न किया, क्या मुझे उसमे सफलता मिली ?"

"नही, जनता को वह क्रान्तिकारी प्रतीत नही हुआ।"

"धन्यवाद" और फिर सरकारी वकील को सम्वोधित करते हुए मैने कहा—"आपके अभियोग को तो आपके ही गवाह ने खोखला सिद्ध कर दिया।"

फिर भी हम सबको अन्तर्राष्ट्रीय सघ से सम्बद्ध होने के लिए सजा दे दी गई। हममे से चार को चार सौ डालर का जुर्माना और पाच वर्ष की जेल हुई, शेष को चार वर्ष से एक वर्ष की जेल हुई। वास्तव मे अधिकारियो ने सघ के विषय मे कुछ भी सिद्ध करने का प्रयास नही किया। हमसे सिर्फ अराजकवाद के विपय मे प्रश्न किये गए, जिनके हमने उत्तर दे दिये। वम के धडाको के बारे मे भी कुछ नही कहा गया। हमारे कुछ सहयोगियो ने जब इसे स्पष्ट करने का प्रयत्न किया, तो उनसे कह दिया गया कि उनपर अभियोग बम के धडाको का नही, वरन् अन्तर्राष्ट्रीय सघ के सदस्य होने का है और उक्त सघ का सदस्य केवल मै ही था।

इस तरह के मुकदमो मे कुछ हास्यास्पद बाते होती है। यहा मेरा एक पत्र उसका कारण बना। अपराध सिद्ध करने के लिए पुलिस को कुछ मिला ही नही था। अनेक फ्रासीसी अराजकवादियो के घरो की तलाशी ली गई। लेकिन पुलिस को मेरे केवल दो पत्र मिले। उन्हीका भरपूर उपयोग करना था। इनमे एक पत्र मैने एक मजदूर को लिखा था, जब वह कुछ निराश हो रहा था। मैने उसे लिखा था कि हम लोग बडे महत्व-

पूर्ण समय मे रह रहे है, नये परिवर्तन हो रहे है, नवीन विचारो का प्रसार हो रहा है, आदि-आदि। इस पत्र पर सरकारी वकील बहुत नही बोले। मेरा दूसरा पत्र बारह पृष्ठो का था। उसे मैने एक दूसरे फ्रासीसी मित्र के नाम लिखा था—वह अपनी जीविका जूते बनाकर कमाता था, उसके बाई तरफ एक स्टोव रखा रहता जिसपर वह अपना भोजन स्वय बना लेता था और दाई तरफ रहता एक छोटा-सा स्टूल, जिसपर वह अपने साथियो को लम्बे-लम्बे पत्र लिखता रहता। जैसे ही अपने जीवन-निर्वाह के लायक उसने जूते बनाए, वह उस काम को बन्द करके, अपना शेप समय पत्रो के लिखने मे लगाता। उनमे वह अराजकवाद के सिद्धान्तो का प्रतिपादन करता। आज तो वह फ्रास मे एक सुप्रसिद्ध और सम्मानित लेखक है। लेकिन उस समय वह लेखन-कला से अपरिचित था। दस पृष्ठ लिख डालता और उसमे कही विराम अथवा एक कॉमा भी नही होता था। एक बार मैने विराम-चिन्हो की उपयोगिता और आवश्यकता पर उसे लम्बा पत्र लिखा था और समझाया था कि ऐसा करने से उसके लेख सुन्दर बन पडेगे।

उस पत्र को सरकारी वकील ने सुनाया और फिर कहा—"सज्जनो, आपने यह पत्र सुना"—और फिर न्यायाधीश को सम्बोधित करके कहा—"आपने इसे सुना। ऊपर से इसमे कुछ भी आपत्तिजनक नही प्रतीत होता। इसमे एक मजदूर को व्याकरण का पाठ पढाया गया है, "लेकिन"...यहा आकर उसकी आवाज अत्यन्त भावुक और उत्तेजित हो गई—"इसका उद्देश्य एक मजदूर को व्याकरण पढाना नही था, जो शायद वह स्वय आलस्यवश अपने स्कूल मे नही पढा और न इसका उद्देश्य उसकी जीविका के सम्बन्ध मे था। सज्जनो, इस पत्र का वास्तविक उद्देश्य था हमारी शासन-प्रणाली के विरुद्ध उस मजदूर को भडकाना, उसमे अराजकवाद के जहर का प्रवेश करना, जिससे वह हमारे समाज का कट्टर शत्रु हो जाय। सचमुच वह बडे दुर्भाग्य का दिन था जब क्रोपाटकिन ने हमारी भूमि पर पैर रखा।"

सरकारी वकील जब यह व्याख्यान दे रहा था, हम लोग अपनी हँसी नही रोक सके। न्यायाधीश उसको भौचक्के होकर देख रहे थे। लेकिन

वह तो भावनाओ में बह गया था और उसने अपना नाटकीय व्याख्यान जारी रखा।

हम लोगो को सजा देने के थोडे दिन बाद ही न्यायाधीश की पदोन्नति हो गई। और जहातक सरकारी वकील तथा दूसरे न्यायाधीश का सम्बन्ध है—लोग अविश्वास करेगे—रूसी सरकार ने उन्हे 'सेण्ट ऐनी का क्रॉस" नामक पदक प्रदान किया और फ्रास के गणतत्र ने उन्हे इसे स्वीकार करने की अनुमति दे दी। १८९२ की रूस-फ्रास के बीच सुप्रसिद्ध सन्धि का प्रारम्भ लायन्स के मुकदमे से हुआ था।

इस मुकदमे के दौरान सभी अभियुक्त दृढ रहे और बर्नार्ड और गोटि-अर जैसे सिद्धहस्त वक्ताओ ने अराजकवाद के ऊपर सुन्दर वक्तव्य दिये। फ्रास के ल ,भग सभी पत्रो मे वे प्रकाशित हुए और इस प्रकार यह मुकदमा फ्रास मे अराजकवाद के सम्बन्ध मे अनेक भ्रम दूर करने मे सफल हुआ। कुछ हद तक उससे अन्य देशो मे साम्यवाद के प्रचार मे भी सहायता मिली। इसके बाद तुरन्त ही प्रतिनिधि-सभा मे हम लोगो के छुटकारे के लिए एक प्रस्ताव पेश किया गया और उसके पक्ष मे सौ वोट मिले। जबतक हम लोग छोडे नही गये, लगातार हर साल यह प्रस्ताव पेश होता रहा और उसके समर्थको की सख्या उत्तरोत्तर वढती ही गई।

: १३ :

जेलों का अनैतिक प्रभाव

मुकदमा समाप्त हो चुका था, लेकिन हम लोगो को लायन्स की जेल मे दो मास और रहना पडा। हमारे अनेक सहयोगियो ने पुलिस न्यायालय के फैसले के विरुद्ध अपील की थी और हमे उसके निर्णय तक रुकना पडा। अपने चार साथियो के साथ मैने अपील मे कोई भाग नही लिया और अपने कमरे मे कार्य करता रहा। मेरे घनिष्ठ मित्र मार्टिन नजदीक की कोठरी

मे आ गये। जब हमे कोई वातचीत करनी होती, तो हम लोग रूस की तरह दीवारो पर खटखट करके विचार-परिवर्तन कर लेते।

लायन्स की जेल मे रहते हुए मैने कैदियो पर जेलो के भयकर प्रभाव को देखा। इन्ही अनुभवो के आधार पर वाद को मैने इस सारी व्यवस्था के निकम्मेपन और हानिकारक प्रभाव पर पुस्तक लिखी।

लायन्स की जेल की बिल्डिग नई थी और गोलाकार बनी हुई थी। जव मौसम साफ रहता, तो कैदियो को वाहर काम करने के लिए ले जाया जाता। मुख्यत उनसे रेशम के ढेर को पिटवाकर रेशम निकलवाया जाता था। कभी-कभी बच्चो को भी इस अहाते मे लाया जाता था। मै अपनी खिडकी से दुवले, भूखे, कातिहीन बच्चो को देखता, उनके दुवले चेहरो से रक्तहीनता स्पष्ट नजर आती। दिन-भर अपनी कोठरियो के भीतर या कडी धूप मे भी वे इन स्वास्थ्य-सहारक कार्यो मे जुटे रहते। इस तरह अपना स्वास्थ्य, इच्छाशक्ति और जीवन-शक्ति खोकर जव ये वच्चे जीवन मे पदार्पण करेगे तव उनका क्या होगा ? रक्तहीनता, कमजोरी, कार्य के प्रति अरुचि, इच्छा-शक्ति का अभाव, पिलपिला दिमाग, यह होगी उनकी स्थिति। अपराधो के मूल कारण यही तो है। इस प्रकार मानव-समाज के लिए घातक तत्वो को जेले जन्म देती है। और फिर उन 'शिक्षाओ' की ओर ध्यान दीजिये, जो वच्चे यहा सीखते है। अगर पूर्ण रूप से एकान्त मे भी रखा जाय, और यह सम्भव नही है, तो भी कुछ लाभ नही है। जेल का सारा वातावरण उन 'चालो' को प्रोत्साहन देता है, जो चोरी, गिरहकटी तथा अन्य समाज-विरोधी तत्वो के मूल मे हे। समाज इस व्यवस्था को उपेक्षा से देखता है, सिर्फ इसलिए कि वह अपनी बीमारियो की ओर आखे वन्द रखना चाहता है। अनेक अनुभवी व्यक्तियो से मैने कहावत सुनी है—"वाल्यावस्था मे जेल, फिर वह जीवन-भर के लिए जेल का हो जाता है।" जव मैं इन वच्चो को देखता और इनके भविष्य के विषय मे सोचता, तो वार-वार मैं अपने से प्रश्न करता—"कौन वडा अपराधी है—ये वालक अथवा जज, जो हर वर्ष सैकडो वच्चो को जेल-जीवन के लिए भेजता है?" यह ठीक है कि जज का अपराध अज्ञानतावश है।

लेकिन क्या सब अपराध, जिनके लिए व्यक्तियो को जेल भेजा जाता है, जान-बूझकर ही किये जाते है ?

एक तथ्य और था, जो जेल मे कुछ सप्ताह रहने के बाद ही मेरी समझ मे आया। पता नही क्यो, न्यायाधीशो और कानून-निर्माताओ का ध्यान इस तथ्य की ओर नही गया कि अधिकाशत सजा का भार स्वयं इन कैदियो पर नही, वरन् निरपराध व्यक्तियो पर पडता है।

मेरे लगभग सभी साथियो पर अपनी पत्नी और बच्चो अथवा बहन तथा वृद्धा माता के भरणपोषण का भार था। अब जब वे सब निराश्रित हो गई, तो लगभग इन सब स्त्रियो ने कुछ मजदूरी करने का प्रयत्न किया। कुछको काम मिल भी गया। लेकिन उनमे से कोई भी दस-बारह आने से अधिक नही कमा सका। और इसीमे उन्हे स्वय और अपने बच्चो का पालन करना था। निश्चय ही इसका परिणाम था हर तरह के कष्ट, स्वास्थ्य का नाश तथा शक्ति का ह्रास। तब मै समझा कि हमारे न्यायालय वास्तव मे कैदियो की अपेक्षा नितान्त निरपराध व्यक्तियो को विभिन्न यातनाए दे रहे है। एक प्रचलित भ्रम यह भी है कि अपराधी को शारीरिक और मानसिक यातनाए देकर उसे सजा दी जाती है। लेकिन मनुष्य-स्वभाव ही ऐसा है कि चाहे जैसी यातनाए उसे दीजिए, वह शीघ्र ही उनका अभ्यस्त हो जाता है। अगर मनुष्य अपनी परिस्थितियो मे कोई परिवर्तन नही कर सकता, तो वह उन्हे स्वीकार कर लेता है, उन्हे सहन करने की आदत डाल लेता, और उस तरफ से उदासीन हो जाता है। लेकिन उसकी लम्बी कैद के दौरान उसकी पत्नी-बच्चे और अन्य आश्रितो पर क्या बीतती है ? उन्हे उस कैदी से कही अधिक क्रूर यातनाए सहनी पडती है और इस अन्याय की ओर कोई ध्यान भी नही देता। मैं भी इसे देखकर ही समझ सका।

मार्च १८८३ मे हम बाईस व्यक्ति, जिन्हे एक वर्ष से अधिक की सजा हुई थी, क्लेअरवौक्स की केन्द्रीय जेल मे ले जाये गए। यह आदर्श जेल थी। कैदियो और अफसरो के बीच तो वह अपने उचित नाम 'कैद और भ्रष्टाचारगृह' के रूप मे प्रसिद्ध था।

जबतक हम ल्यान्स मे रहे, हमारे साथ हवालात के बन्दियो जैसा

व्यवहार किया गया—अर्थात् हम लोग अपने कपड़े पहनते थे बाहर से खाना मंगा सकते थे और थोड़े किराए पर बड़ा कमरा भी ले सकते थे। मैंने इस सुविधा का उपयोग किया और अंग्रेजी विश्वकोश तथा "१९ वीं शताब्दी" के लिए लेख लिखे। अब सवाल था कि क्लेअरवौक्स में हमारे साथ कैसा व्यवहार होगा। लेकिन फ्रांस में यह धारणा है कि राजनैतिक बन्दियों के लिए स्वतंत्रता का अपहरण और मजबूरन बेकारी ही इतने कष्टप्रद हो जाते हैं कि उन्हें अधिक कष्ट देने की आवश्यकता नहीं। इसलिए हम लोगों से कह दिया गया कि लायन्स की भांति ही यहां रहेंगे. यानी रहने के लिए अलग क्वार्टर मिलेंगे, अपने कपड़े पहन सकेंगे, कोई काम नहीं लिया जायगा और सिगरेट पी सकेंगे। जेल के अधिकारी ने कहा—'आप लोगों में से जो कुछ काम करके कमाना चाहते हैं, उन्हें इसकी सुविधा दे दी जायगी। उन कामों की मजदूरी थोड़ी है, लेकिन आपको जेल की वर्कशाप में काम करने की सुविधा नहीं दी जा सकती, क्योंकि उस हालत में आप लोगों को साधारण कैदियों के साथ रखना आवश्यक होगा।" अन्य कैदियों की भांति हम लोग जेल की कैण्टीन से कुछ अतिरिक्त भोजन तथा शराब भी रोज ले सकते थे।

क्लेअरवौक्स की जेल का पहला प्रभाव मेरे ऊपर अच्छा पड़ा। केन्द्रीय जेल पहुंचते ही हम लोगों को साफ-सुथरी कोठरियों में ले जाया गया। यद्यपि रात को काफी देर हो गई थी, हमें गरम खाना दिया गया, और कैन्टीन से थोड़ी शराब भी खरीदने की अनुमति दी गई। जेल के अधिकारियों का व्यवहार बहुत विनम्र था।

अगले दिन जेल के अधिकारी हमें उन कमरों को दिखलाने ले गये, जिनमें हमें रहना था। जब हमने उनसे कहा कि हमारी संख्या को देखते हुए ये कमरे कुछ छोटे होंगे और भीड़ के कारण बीमारी फैलने का भय रहेगा तो उन्होंने हमें दूसरे कमरे दे दिये। कमरों की खिड़कियों से एक बगीचा और आस-पास का सुन्दर दृश्य दीखता था।

इस तरह हम लोगों को तीन बड़े कमरे मिल गये। एक छोटा कमरा गोटियर और मुझे साहित्यिक कार्य करने के लिए दे दिया गया।

शायद यह अन्तिम सुविधा हमे इग्लैण्ड के अनेक वैज्ञानिको की कृपा से मिली थी। जैसे ही मुझे सजा हुई, उन्होने फ्रासीसी सरकार को मेरी मुक्ति के लिए एक प्रार्थना-पत्र भेजा था। अग्रेजी विश्वकोश के अनेक लेखको तथा हरबर्ट स्पेंसर, स्विनबर्न आदि ने उसपर हस्ताक्षर किये थे और विक्टर ह्यूगो ने अपने हस्ताक्षरो के साथ ही कुछ स्नेहपूर्ण शब्द भी जोड दिये थे। फ्रासीसी जनता ने हमारी सजा पर खेद प्रकट किया था। जब मेरी पत्नी ने पेरिस मे कहा कि मुझे कुछ पुस्तको की आवश्यकता है, तो वहा की विज्ञान परिषद ने अपने सम्पूर्ण पुस्तकालय का उपयोग करने की मुझे अनुमति दे दी और अर्नेस्ट रेनान ने मेरी पत्नी को एक सुन्दर पत्र लिखा कि उनका अउपपना निजी पुस्तकालय वे चाहे जैसे योग कर सकती है।

हमारे पास एक छोटा-सा बगीचा भी था, जहा हम लोग कुछ खेल-कर अपना मनोरजन कर लेते थे। शीघ्र ही हम लोगो ने दीवार के सहारे, कुछ भूमि पर, जो लगभग अस्सी वर्ग गज थी, सलाद गाजर और फूल उगाये। शीघ्र ही मैने अपने साथियो को खगोलशास्त्र, भौतिकशास्त्र, आदि विषयो की शिक्षा देने की व्यवस्था की। लगभग सबने अग्रेजी, जर्मन, इटालियन, स्पेनिश मे से एक भाषा सीख ली, कुछने दो भाषाओ मे दक्षता प्राप्त कर ली। हम लोगो ने जिल्दसाजी सीखने का भी अभ्यास किया।

लेकिन पहला वर्ष समाप्त होते-होते मेरा स्वास्थ्य जवाब देने लगा। क्लेअरवौक्स दलदली भूमि पर बसा हुआ है। मलेरिया का प्रकोप निरन्तर बना रहता है। मुझे कई बार मलेरिया हुआ और खुजली का भी कष्ट रहने लगा। तुरन्त ही मेरी पत्नी,जो विज्ञान की डाक्टरेट के लिए पेरिस मे अध्ययन कर रही थी, सबकुछ छोडकर क्लेअरवौक्स आ गई और पास ही एक छोटी-सी कोठरी मे रहने लगी। निश्चय ही जेल की दीवार के सामने उस कोठरी मे उसका जीवन सुखद नही था, लेकिन फिर भी जबतक मै छूटा नही, वह वही रही। पहली साल वह मुझसे दो महीने मे सिर्फ एक बार मिल सकती थी, मिलने के समय जेल का वार्डर हमारे बीच मे बैठा रहता था। लेकिन जब वह क्लेअरवौक्स मे आकर बस गई और निश्चय कर लिया कि वही रहेगी, तो शीघ्र ही उसे मुझसे रोज मिलने की अनुमति मिल गई और

मेरे लिए खाना उसके होटल से आने लगा। बाद को तो हम लोगो को जेल-अधिकारी के बगीचे मे, सिपाहियो की निगरानी मे, साथ-साथ टहलने की भी आज्ञा मिल गई।

मुझे देखकर आश्चर्य हुआ कि क्लेअरवौक्स का केन्द्रीय कारागाह बाहरी दीवारो से घिरा हुआ एक छोटा औद्योगिक नगर है, जहा बगीचे और खेत भी है। वास्तव मे फ्रास मे इग्लैण्ड की अपेक्षा कैदियो के प्रति व्यवहार अधिक मानवीय है, क्योकि यहा सबकुछ जेल-अधिकारियो पर ही आश्रित है। इग्लैण्ड मे तो आज भी कैदियो के प्रति मध्ययुगीन प्रति-हिसा की भावना से व्यवहार किया जाता है। फ्रास का कैदी तख्ते पर नही सोता, जेल मे प्रवेश करते ही उसे उचित भोजन मिलता है। उससे हीन और कष्टप्रद काम नही लिया जाता, वरन् उसे उपयोगी कार्य पर लगाया जाता है। यही कारण है कि क्लेअरवौक्स की जेल ने एक औद्योगिक नगर का रूप ले लिया है। यद्यपि आज्ञाभग के लिए यहा सजा अत्यन्त क्रूर है, लेकिन फिर भी कोडा लगने जैसी सजा नही दी जाती, जो कि अभी तक इग्लैण्ड मे कायम है। इस तरह की सजा फ्रास मे असम्भव है। कुल मिलाकर क्लेअरवौक्स की जेल यूरोप मे सर्वश्रेष्ठ कही जा सकती है और इस सबके बावजूद क्लेअरवौक्स जेल के परिणाम वही हे, जो पुरानी ढग की सबसे निकृष्ट जेल के हो सकते है। एक जेल के अधिकारी ने मुझसे कहा था—"आजकल सर्वप्रचलित सिद्धान्त है कि हमारी जेलो मे अपरा-धियो का सुधार होता है। मैं कभी झूठ नही बोल सकता। यह सब बकवास है।"

हमारे कमरो के नीचे क्लेअरवौक्स का दवाखाना था और उसमे काम करनेवाले कैदियो से कभी-कभी हमारा सम्पर्क हो जाता था। उनमे से एक व्यक्ति, जो पचास वर्ष से ऊपर का था, हमारे सामने ही अपनी सजा पूरी करके जा रहा था। वह दृश्य बडा ही हृदयद्रावक था, जब उसने जेल से विदा ली। वह जानता था कि कुछ सप्ताहो मे उसे फिर यही लौटकर आना है। उसने डाक्टर से प्रार्थना की कि उसे फिर दवाखाने मे ही काम पर ले लिया जाय। क्लेअरवौक्स जेल मे यह उसकी पहली कैद

नही थी और वह जानता था कि उसे फिर यही आना है। जब उसे छोडा गया, इस संसार मे उसका कोई आत्मीय अथवा स्नेही नही था, जिसके पास जाकर वह बुढापा बिता सके। उसने कहा—"इस उम्र मे कौन मुझे नौकर रखेगा? मेरे पास कोई रोजगार भी नही है। जब मुझे यहा से छुटकारा मिलेगा, तो मुझे अपने पुराने साथियो के पास ही शरण मिलेगी। वे निश्चय ही मेरा स्वागत करेगे।" फिर उनके साथ शराब का दौर चलेगा, किसी नये कारनामे (चोरी आदि की) की चर्चा होगी और यह व्यक्ति कुछ उनका साथ देने के लिए और कुछ इच्छाशक्ति की कमजोरी के कारण, उसमे शरीक हो जायगा। परिणाम होगा फिर जेल। उसके जीवन मे कई बार ऐसा हो चुका था। उसको मुक्त हुए दो मास बीत गये, लेकिन वह क्लेअरवौक्स जेल मे नही आया था। अब यहा के कैदी और वार्डर भी उसके विषय मे चिन्तित होने लगे कि क्या वह किसी दूसरी जेल मे चला गया? वे कहते, "अभी तक आया क्यो नही?" "कही ऐसा न हो कि बेचारा किसी गम्भीर अपराध मे फस गया हो। तब तो बडा बुरा होगा—बडा भला शान्त आदमी था।" लेकिन शीघ्र ही भेद मालूम हो गया। खबर मिली कि बुड्ढा दूसरी जेल मे कैद था और क्लेअरवौक्स आने की कोशिश कर रहा था।

सबसे बुरी स्थिति वृद्धो की थी। उनमे से अधिकाश बाल्यावस्था अथवा यौवन मे पहली बार जेल आये थे। लेकिन जैसी कहावत है—"एक बार जेल हुई, फिर शेष जीवन वही बीतता है," अब जब वे साठ वर्ष से ऊपर के हो गये थे, वे जानते थे कि उन्हे अपने अन्तिम दिन यही बिताने है। उनकी मृत्यु नजदीक लाने के लिए जेल के अधिकारी भी उन्हे ऊनी गूदड मे से मोजे बनाने का काम देते थे। इस काम मे वे तपेदिक के शिकार हो जाते और उन्हे शीघ्र ही जेल और जीवन से मुक्ति मिल जाती। चार साथी कैदी उस लाश को कब्रिस्तान ले जाते। कब्रिस्तान का पहरेदार और काला कुत्ता ये दो जीव और पीछे चलते। जेल का पादरी मशीन की तरह प्रार्थना करता हुआ आगे-आगे चलता। लाश को ले जाने वाले चारो साथी कैदी इस बहाने जेल से कुछ समय के लिए छुट्टी मिलने

मे क्षणिक प्रसन्नता ही अनुभव करते थे। केवल एक कुत्ता ही इस अन्तिम सस्कार की गम्भीरता से प्रभावित होता।

जव इन केन्द्रीय जेलो की फ्रास मे स्थापना हुई थी, तो विश्वास था कि उनमे पूर्ण शान्ति रहेगी, लेकिन मानव-प्रकृति के यह इतना विरुद्ध है कि यह विचार शीघ्र ही छोड दिया गया।

वाहर से देखने पर जेल विलकुल शान्त और मौन दीख पडती है, लेकिन वास्तव मे वहा का जीवन उतना ही विविधतापूर्ण होता है, जितना किसी छोटे कस्बे का। धीमी आवाज मे अथवा छोटे पुर्जो के द्वारा काम की सव खवरे एक कोने से दूसरे कोने तक पहुच जाती है। चाहे खवर जेल के सम्वन्ध मे हो अथवा क्लेअरवौक्स कस्बे की अथवा पेरिस की राजनैतिक हलचल हो, वह तुरन्त ही सम्पूर्ण जेल मे फैल जाती। स्वभावत फ्रासीसी मन मे वात नही रख सकता। साधारण कैदियो से हमारी वातचीत नही होती थी, लेकिन फिर भी हमे दिन की सव खवरे मिल जाती थी। "माली जोन फिर आ गया—दो वर्ष की सजा हुई है।" "अमुक इस्पेक्टर की वीवी का अमुक की पत्नी से वडा झगडा हो गया।" "कोठरी का वन्दी जेम्स कारखाने की जोन्स को पर्चा देते हुए पकड लिया गया।" "अमुक वुड्ढा अव न्यायमत्री नही रहा—मिनिस्ट्री भग हो गई।" आदि-आदि। और जव कोई ऐसी खवर होती है कि जैक ने दो फ्लैनल जाकटो के वदले मे तमाखू के दो वडे पैकट प्राप्त किये, तो सारी जेल मे वह तुरन्त फैल जाती है। एक वकील जेल मे वन्दी थे। एक वार उन्हे मुझे एक सूचना देनी थी कि मेरी पत्नी उनकी पत्नी से कभी-कभी मिल लिया करे। इस सन्देश को मेरे पास तक पहुचाने मे, पता नही, कितने कैदियो ने सहयोग दिया। जव किसी अखवार मे हमारी रुचि की कोई खवर होती, तो पता नही कैसे, वह हमारे पास पहुचा दिया जाता।

कोठरी मे वन्द होने पर भी विचार-परिवर्तन चलता रहता है। जव हम लोग क्लेअरवौक्स आये, तो कोठरियो मे वेहद ठड थी। ठड इतनी थी कि अगुलियो से लिखा भी नही जाता था। जव मेरी पत्नी को पेरिस मे मेरा पत्र मिला, तो मेरी लिखावट को वह पहचान भी नही पाई। हुक्म

हुआ कि कोठरियो को खूब गरम किया जाय। लेकिन अधिकारी कितना भी गरम करते, कोठरिया ठडी ही रहती। बाद को मालूम पडा कि गरमी पहुचाने की नली कागज के टुकडो, होल्डरो आदि से ठसी हुई थी। वर्षो से कैदी नलियो मे ये चीजे भरते रहे थे।

मेरे मित्र मार्टिन ने कोठरी मे रहने की अनुमति ले ली। उसे दस-बारह व्यक्तियो के साथ रहने की अपेक्षा एक कमरे मे एकान्तवास अधिक रुचिकर था। वहा पहुचते ही उसे आश्चर्य हुआ कि वह अकेला नही है। दीवारो से आवाज आती थी। थोडी ही देर मे कोठरियो के सब कैदियो को मालूम हो गया कि वह कौन है और सब उससे परिचित हो गये। शहद की मक्खियो के छत्ते की भाति यह एकाकी कोठरिया पूर्णत सजीव है।

क्लेअरवौक्स से छूटने के बाद मैने "रूसी और फ्रासीसी जेलो मे' नामक पुस्तक १८८६ मे इग्लैण्ड से प्रकाशित की थी। उसमे मैने जेल और उनके नैतिक प्रभाव पर विस्तार मे लिखा था। उसको यहा दुहराने की आवश्यकता नही, लेकिन एक बात है, जिसका उल्लेख यहा आवश्यक है। कैदी समाज के विभिन्न वर्गो के होते है। मै उन लोगो को लेता हू, जिन्हे साधारणत 'दुराचारी' कहा जाता है। असामाजिक कार्यो के निवारण के लिए जेलो की उपयोगिता मानी जाती है। लेकिन मुझे प्रतीत हुआ कि वास्तव मे जेलो मे इन्ही असामाजिक तत्वो का पोषण होता है। यह बतलाने की जरूरत नही कि शिक्षा की कमी, कार्य के लिए अरुचि, शारीरिक शक्ति का अभाव, जुए की लत, दुस्साहस के प्रति आकर्षण, इच्छा-शक्ति की कमजोरी, दूसरो की सुख-सुविधा के प्रति लापरवाही—यही तो कारण है जो मनुष्यो को अपराधी बनाते है। मैने अपने जेल-जीवन मे अनुभव किया कि जेलो मे इन्ही सब दोषो का पोषण और विकास होता है और जबतक ये जेले रहेगी तबतक इन दुर्गुणो को विकसित करती रहेगी। जेल मे अनिवार्यत कैदियो की प्रेरणा-शक्ति और जीवन-शक्ति पूर्णत नष्ट हो जाती है। जेल-जीवन मे स्वय कैदी की इच्छा का कोई सवाल ही नही उठता, वह तो समूल नष्ट होनी चाहिए। वहा कैदी की सहानुभूति के लिए भी कोई स्थान नही। जिनके प्रति वह इस भावना को प्रदर्शित कर सकता है, उनके साथ वह

कोई सम्पर्क नही रख सकता। कार्य करने के लिए उसकी शारीरिक और मानसिक शक्तियो को दिन प्रतिदिन क्षीण किया जाता है और यदि पहले से उसे कार्य के प्रति अरुचि है, तो जेल मे वह अरुचि और भी बढ जाती है। अगर पहले उसे काम करना इसलिए पसन्द नही था, क्योकि उससे उसका पेट नही भरता था तो अब वह काम मात्र से घृणा करने लगता है। अगर पहले वह नैतिक मापदण्डो को सन्देह की दृष्टि से देखता था, तो अब नैतिकता के ठेकेदारो (जेल के अधिकारियो) के जीवन क्रम को देखकर और उनके विषय मे अपने साथी कैदियो से सुनकर वह इन नैतिक नियमो को धता बताने को उद्यत हो जाता है। अगर वह अपनी कामुक प्रवृत्तियो के कारण जेल आया है, तो जेल मे अनेक वर्ष रहकर उसकी यह कामुकता भयकर रूप धारण कर लेती है। इस अन्तिम क्षेत्र मे तो जेल-जीवन का प्रभाव निश्चित रूप से अत्यधिक भयकर होता है।

साइबेरिया मे मैने गन्दी, पुरानी ढर्रे की मध्ययुगीन जेलो को देखा था। उस समय मेरी अवस्था १९ वर्ष की थी। तब मैने कल्पना की थी कि यदि जेल के कमरो मे भीड न हो, कैदियो का वर्गीकरण कर दिया जाय और अगर उन्हे कुछ स्वस्थ कार्य करने को दिया जाय, तो जेले उपयोगी हो जायगी। बाद को जब मुझे जेलो का अनुभव हुआ, तो मैने इन विचारो को तिल.जलि दे दी। अब मै समझा कि जहातक जेलो का कैदियो पर और अन्तत समाज पर प्रभाव का प्रश्न है, श्रेष्ठतम सुधरी हुई जेले भी उतनी ही निकृष्ट है जितनी पुरानी ढर्रे की गन्दी जेले। जेले कैदियो का सुधार नही करती, इसके विपरीत अधिक.श कैदियो पर उसका प्रभाव अत्यन्त पतनकारी होता है। चोर, उठाईगीर अथवा लफगा, जेल मे रहने के बाद जब लौटता है तो वह इन कार्यो के करने के लिए और भी अधिक उद्यत होता है। अब वह इन कार्यो के लिए और भी अधिक कुशल होता है। समाज से वह अब और भी अधिक घृणा करने लगता है तथा सामाजिक नियमो और परम्पराओ के खिलाफ अब वह सकारण विद्रोह करता है। अब तो अनिवार्यत वह समाज-विरोधी कार्यो की ओर प्रवृत्त होता है। उसके पास और कोई चारा ही नही है। यह निश्चित है कि जेल से

निकलने पर उसके अपराध पहले से अधिक भयकर होगे और उसका शेष जीवन जेल मे ही वीतेगा। अपनी उपरोक्त पुस्तक मे मैने लिखा था "जेले राज्य द्वारा सचालित अपरावो के विश्वविद्यालय है।" और आज पन्द्रह वर्प पश्चात अपने अनुभव के आधार पर मै अपने उस कथन को दुहराता हू।

व्यक्तिगत रूप से फ्रासीसी जेल के खिलाफ मुझे कोई शिकायत नही। एक स्वाधीनचेता और क्रियाशील व्यक्ति के लिए स्वतत्रता का अपहरण और वेकारी स्वय मे इतने कष्टप्रद होते है कि जेल की अन्य असुविधाए कोई मानी नही रखती। जब कभी हम लोग फ्रास मे चल रहे आन्दोलनो की चर्चा सुनते थे, तव हमे इस तरह हाथ-पर-हाथ रक्खे बैठना खलता था। जब जेल में पहली साल वसन्त ऋतु का आगमन होता है, तो कैदी को सचमुच बडा वुरा लगता है। जब मैं अपनी खिड़की से हरे-हरे मैदान देखता, पहाडियो को वासन्ती रूप धारण करते देखता अथवा पहाड़ो के वीच मे से रेल निकलती देखता, तो सचमुच मन करता कि मैं उसका पीछा करू और जगल की हवा के झकोरो का मजा लू। लेकिन जो व्यक्ति अपनेको उग्र आन्दोलन से सम्वद्ध करे, उसे वर्पो तक जेल मे रहने के लिए तैयार रहना चाहिए। फिर वह उसके लिए दुखित क्यो हो? उसे सोचना चाहिए कि अपने जेल-जीवन मे भी वह निष्क्रिय नही! शायद वन्दी होकर ही वह अपने आदर्शो की अधिक सेवा कर रहा है।

लायन्स मे निश्चय ही जेल के वार्डरो से हम लोग कुछ उद्विग्न हुए, लेकिन दो-एक झड़पो से स्थिति ठीक हो गई। फिर जेल-अधिकारी जानते थे कि पेरिस के अखवार हमारे साथ है। क्लेअरवौक्स मे इस तरह की कोई समस्या ही नही थी। हमारे यहा पहुचने के कुछ समय पहले ही जेल का पूरा शासन वदल गया था। जेल के वार्डरो ने एक कैदी की हत्या कर दी थी और उसे आत्महत्या का रूप देने के लिए उसकी लाश को टाग दिया गया था। लेकिन डाक्टर ने भेद खोल दिया। परिणाम-स्वरूप जेल का उच्च अधिकारी निकाल दिया गया और जेल का वातावरण कुछ सुधर गया। मै तो क्लेअरवौक्स के सुपरिटेन्डेन्ट की अच्छी स्मृतिया ही लेकर

आया। मैं अक्सर सोचता कि कभी-कभी व्यक्ति अपने पेशे से अधिक अच्छा हो सकता है। लेकिन चूकि मुझे कोई व्यक्तिगत शिकायत नही, इसलिए मैं और भी जोर सेइस जेल-व्यवस्था की आलोचना कर सकता हू। वह सिद्धान्तत तो गलत है ही, समाज के लिए इसके परिणाम और भी भयकर हैं।

मै यहा एक बात का उल्लेख करूगा, जेल और न्यायालय आसपास के वातावरण को किस हदतक दूषित करते है। लौम्ब्रोसो ने कैदियो की अपराधी प्रवृत्तियो पर बडे विस्तार से लिखा है। यदि उन्होने कुछ प्रयत्न करके न्यायालयो के इर्द-गिर्द चक्कर लगानेवाले व्यक्तियो—गुप्तचर, खुफिया मामूली वकील, भेदिया, पैरोकार आदि का अध्ययन किया होता, तो शायद वे इस निष्कर्ष पर पहुचते कि अपराधी जेल की दीवारो के भीतर ही नही है। मैने अपने जीवन मे इतने निकृष्ट कोटि के व्यक्ति कभी नही देखे जैसे लायन्स के न्यायालय मे और इसके इर्दगिर्द देखे।

मैने यह सब देखा। जेल जाने से पहले मै सोचता था कि समाज की वर्तमान दण्ड-व्यवस्था दोषपूर्ण है, लेकिन क्लेअरवौक्स से लौटने पर तो मेरा विश्वास हो गया कि यह व्यवस्था अन्यायपूर्ण और गलत तो है ही, साथ ही मूर्खतापूर्ण भी है। कुछ अज्ञानतावश और कुछ वास्तविकता की ओर आख मीचकर समाज अपने खर्चे से ही अपराधो के इन विश्वविद्यालयों का सचालन करता है और इस भ्रम मे रहता है कि मनुष्य की अपराधी वृत्तियो पर ये जेले अकुश लगाती है।

: १४ :

गुप्तचर

प्रत्येक क्रान्तिकारी का अपने जीवन मे कुछ गुप्तचरो से वास्ता पडता है। मुझे भी उनके सम्बन्ध मे यथेष्ट अनुभव हुए है। हर सरकार इन विषैले जन्तुओ का पालन-पोषण करती है। लेकिन ये गुप्तचर सिर्फ

अनुभवहीन युवको के लिए खतरनाक होते है। जिस व्यक्ति को जीवन और मनुष्यो का कुछ अनुभव हो, वह शीघ्र ही उन्हे पहचान लेता है और उनसे सावधान हो जाता है। ये गुप्तचर समाज के निम्नतर भाग से आते है और यदि मनुष्य अपने मिलनेवालो के नैतिक आचरण को ध्यान से देखता हो, तो समाज के इन स्तम्भो के आचरण को देखकर उसके हृदय को धक्का लगता है। वह स्वय से प्रश्न करता है—"यह व्यक्ति मेरे पास क्यो आया है? और इसे मुझसे क्या वास्ता हो सकता है?" अधिकाश मे यही सादा-सा सवाल उसे सावधान कर देगा।

जब मै पहली बार जिनेवा पहुचा, वहा रूसी सरकार का एक गुप्तचर था और हम सब उससे परिचित थे। वह अपनेको 'काउण्ट' (सामन्त) कहता था। लेकिन उसके पास कोई चौकीदार नही था और न गाडी ही थी, इसलिए उसने अपने कुत्ते के पट्टे पर अपनी उपाधिया खुदवा दी थी। अक्सर उससे होटलो मे मुलाकात हो जाती, यद्यपि हम लोग उससे बात नही करते थे।

जब जिनेवा मे अनेक निर्वासित युवक आकर बस गये, तो वहा नये-नये आदमी आने लगे। लेकिन किसी-न-किसी तरह हम उन्हे पहचान गये।

जब किसी अजनबी से हमारी भेट होती, तो हम साफ और सीधे, यह निहिलिस्टो के लिए स्वाभाविक था, उससे उसके वर्तमान कार्यो के बारे मे प्रश्न करते और शीघ्र ही मालूम हो जाता कि वह किस तरह का आदमी है। वास्तव मे मनुष्यो के पारस्परिक सम्बन्धो को उचित स्तर पर लाने के लिए सर्वश्रेष्ठ तरीका स्पष्टता ही है। यहा तो वह अमूल्य सिद्ध होती थी। अनेक व्यक्ति, जिन्हे रूस मे हमने देखा भी नही, न उनके बारे मे कुछ सुना था, सक्षेप मे जिनका हमारे सगठन से कभी कोई सम्बन्ध नही था, जिनेवा मे आने लगे। आते ही, कभी पहुचने के कुछ घटो बाद ही, ये निर्वासितो के घनिष्ठ मित्र होने का प्रयत्न करते। लेकिन ये गुप्तचर कभी भी अपने प्रयत्नो मे सफल नही हुए। एक गुप्तचर कुछ सामान्य परिचितो के नाम ले सकता था, अपने रूसी जीवन के विवरण भी दे सकता था, वह निहि-

लिस्टो के हाव-भाव और भाषा का सफलतापूर्वक प्रदर्शन कर सकता था, लेकिन निहिलिस्टो के नैतिक आचरण का पालन करना उसके लिए असम्भव था और इसी कारण उसकी हमसे घनिष्ठता नही हो सकती थी। वास्तव मे गुप्तचर सब चीजो की नकल कर सकते है, लेकिन नैतिक आचरण की नकल ही नही होती।

जब मै रैक्लूस के साथ काम कर रहा था, क्लेरेस मे एक व्यक्ति था। उससे हम सदैव दूर ही रहे। मुझे उसके विषय मे कोई आपत्तिजनक बात नही मालूम थी, लेकिन हम लोगो को समझते देर नही लगी कि वह हममे से नही है। जितना ही वह हमारे बीच घुसने के प्रयत्न करता, उतना ही हम उसे सन्देह की दृष्टि से देखते। मैने कभी उससे बात नही की थी, इसलिए वह विशेषत मेरे पीछे रहता। जब उसने देखा कि साधारणत वह मुझसे सम्पर्क स्थापित नही कर सकता, तो उसने मुझे पत्र लिखना प्रारम्भ किया। उनमे वह मुझे विशेष कार्यो के लिए विशेष स्थानो पर मिलने के लिए लिखता। मजाक के लिए एक बार मैने उसका निमत्रण स्वीकार कर लिया और मै बताये हुए स्थान पर पहुचा—मेरा एक विश्वसनीय मित्र मेरे पीछे था। शायद उक्त व्यक्ति को मालूम हो गया कि मै अकेला नही हू और वह वहा नही पहुचा। अच्छा ही हुआ, उस व्यक्ति से बातचीत करने का मौका नही आया। उस समय मेरा सम्पूर्ण समय भूगोल-विषयक लेखो के लिखने अथवा 'ला रिवोल्टी' के सम्पादन करने मे व्यतीत होता था और मै किसी षड्यत्र मे भाग नहीं ले रहा था। बाद को हम लोगो को मालूम हुआ कि यह व्यक्ति रूसी पुलिस को मेरे साथ काल्पनिक वार्तालापो के विवरण भेजता रहा था और सेण्ट पीटर्सबर्ग मे जार की हत्या के लिए मेरे भयकर षड्यत्रो के विषय मे लिखता रहता था। रूसी सरकार इसके लिए उसे नकद रुपया देती थी। इटली मे भी इन रिपोर्टो को बडा महत्व दिया जाता था। जब कैफीरो स्विटजरलैण्ड मे गिरफ्तार किये गए, तो उन्हे इटली के गुप्तचरो की रिपोर्टे दिखलाई गई। रिपोर्टो मे इटली की सरकार को चेतावनी दी गई थी कि कैफीरो और मै बम के गोले लेकर इटली मे प्रवेश करनेवाले है। सचाई यह है कि मै इटली कभी नही गया, और न कभी वहा जाने का इरादा ही किया।

वास्तव मे गुप्तचर हमेशा गप्पे नही लगाते। अकसर वे सत्य लिखते है, लेकिन महत्व की बात यह है कि वे उसे क्या-क्या रूप देते है। एक फ्रासीसी गुप्तचर ने अपनी सरकार को एक रिपोर्ट भेजी थी। वह रिपोर्ट हमारे लिए विशेष परिहास का विषय वन गई थी। जब मेरी पत्नी और मै १८८१ मे पेरिस से लन्दन जा रहे थे, तो उसने हमारे साथ ही यात्रा की थी। गुप्तचर ने उस रिपोर्ट से दुहरा फायदा उठाया—उसने उसे पत्र मे प्रकाशित होने के लिए रौचफोर्ट को पत्र बेच दिया। गुप्तचर ने जो कुछ लिखा था, वह सत्य था, लेकिन देखिए उसने घटना को किस रूप मे उपस्थित किया था।

उदाहरण के लिए उसने लिखा था—"मै क्रोपाटकिन दम्पति के पासवाले डिब्बे मे बैठा।" यह ठीक था। हम लोगो ने भी उसे देखा था, क्योकि उसके खिन्न चेहरे ने हमारा ध्यान आकर्पित किया था। "वे हमेशा आपस मे रूसी भापा मे वातचीत करते थे, जिससे अन्य यात्री कुछ समझ न सके," यह भी विलकुल सत्य है। "हम लोग सदैव ही आपस मे रूसी मे बातचीत करते है।" "जव वे कैले पहुचे, तो उन्होने गाडी ली", यह भी ठीक था। लेकिन यहा से यात्रा ने दूसरा रूप ले लिया, "इसके बाद वे लोग यकायक गायब हो गये। थोड़ी देर बाद जब वे दीखे, तो उसने अपना भेष बदल लिया था। उसके पीछे एक रूसी पादरी था, जो लन्दन पहुचने तक निरन्तर उनके साथ रहा। लन्दन पहुचने पर वह रूसी मुझे नही दीखा।" यह सव सत्य था। मेरी पत्नी के एक दात मे दर्द हो रहा था। इसलिए मैने रेस्टोरा के कर्मचारी से प्रार्थना की कि हम लोग उसके कमरे मे चले जाय, जहा मेरी पत्नी दात को ठीक कर ले। और इस तरह हम लोग सचमुच ही 'गायब' हो गये। और चूकि हम लोग अब नहर पार कर रहे थे, इसलिए मैने फैल्ट हैट के बजाय टोपी पहन ली। इस तरह मैने अपना 'भेष वदला'। जहातक उस रूसी पादरी का सम्बन्ध है, वह भी हमारे साथ था। वह रूसी नही था, वह यूनानी पादरियो की पोशाक पहने था। मैने उसे टिकटघर पर खडे देखा। वह कुछ कह रहा था, लेकिन कोई व्यक्ति उसकी वात को समझ नही रहा था। मैने वैरे से कहा—"इस

व्यक्ति को एक गिलास पानी दो।" इसपर वह पादरी मेरे भाषाज्ञान पर मुग्ध होकर मुझे हार्दिक धन्यवाद देने लगा। मेरी पत्नी को उसपर दया आई और उससे विभिन्न भाषाओ मे वार्तालाप करने की कोशिश की, लेकिन वह उनमे से कोई भी भाषा नही जानता था। वाद को मालूम पडा कि वह दक्षिणी स्लाव भाषा के कुछ शब्द जानता था और हम लोग उसकी बात को समझ गये। "मैं यूनानी हू—तुर्की दूतावास, लन्दन"। हम लोगो ने उसे बतलाया कि हम लोग भी लन्दन जा रहे है और वह हमारे साथ यात्रा कर सकता है।

कहानी का सबसे मनोरजक भाग यह था कि मैंने चारिंग क्रॉस पहुचने के पहले ही उसके लिए तुर्की दूतावास का पता लगा लिया। बात यो हुई कि गाडी रास्ते मे किसी स्टेशन पर रुकी और दो महिलाए हमारे तीसरे दर्जे मे चढी। दोनो के हाथो मे समाचारपत्र थे। उनमे से एक अग्रेज थी और दूसरी, जो अच्छी फ्रासीसी बोलती थी, अग्रेज होने का दावा करती थी। इस दूसरी महिला ने अभिवादन के पश्चात् मुझसे यकायक पूछा, "काउण्ट इग्नातीयेफ के विषय मे आपकी क्या राय है?" और इसके तुरन्त वाद "क्या आप शीघ्र ही जार की हत्या करेगे?" इन दो प्रश्नो से मै उसका उद्देश्य समझ गया था, लेकिन अपने पादरी मित्र का ख्याल करके मैंने उससे पूछा—"क्या आप तुर्की दूतावास का पता जानती है?" उसने तुरन्त उत्तर दिया, "अमुक सडक पर अमुक नम्बर।" मैंने उससे पूछा, "क्या आप रूसी दूतावास का भी पता वतला सकेगी?" और उसने तुरन्त ही यह पता भी वता दिया। मैने दोनो पते अपने साथी पादरी को वतला दिये। जब हम लोग चारिंग क्रॉस पहुचे, यह महिला हमारे सामान की देखभाल के लिए अत्यधिक चिन्तित थी, भारी सामान स्वयं उठाने के लिए उत्सुक थी। लेकिन अन्त मे मैने कह ही दिया, "वस, काफी हो गया, महिलाए पुरुषो का सामान नही उठाती। कृपया चली जाइये।"

अपने फ्रासीसी गुप्तचर की कहानी को पूरा कर दू। उसने इस रिपोर्ट मे आगे लिखा था—"वे चारिंग क्रॉस पर उतरे। लेकिन गाडी पहुचने के आधे घटे बाद भी वे स्टेशन से नही गये, जबतक कि उन्होने देख नही

लिया कि स्टेशन से सब यात्री चले गये है। इस बीच मै एक खम्भे के पीछे अलग खडा रहा। जब वे आश्वस्त हो गये कि सब चले गये है, वे एक गाडी मे तपाक से चढ गये। मै भी उनके साथ पीछे दौडा और कोचवान ने जो नम्बर बोला उसे सुन लिया—नम्बर १२ अमुक सडक। वहा कोई अन्य गाडी नही थी, इसलिए मै ट्रैफालगर स्क्वायर पहुचा और वहा से गाडी की ओर उसके पीछे दौड़ा—यह उक्त पते पर उतरे।"

बाते उसकी सच थी, लेकिन सबकुछ रहस्यपूर्ण प्रतीत होता है। मैने एक रूसी मित्र को अपने पहुचने की सूचना दे दी थी, लेकिन उस दिन गहरा कुहरा छाया हुआ था और वह सोते रह गये। हम लोग उनका आधा घटा तक इन्तजार करते रहे और फिर अपने सामान को स्टेशन पर ही रख-कर, उनके घर चले गये।

"वहा वे दो बजे तक पर्दे के भीतर बैठे रहे। उसके बाद एक लम्बा व्यक्ति बाहर निकला और एक घटे मे सामान के साथ लौटा।" पर्दो की बात भी ठीक थी। कुहरे के कारण हमे गैस जलानी पडी और उसी कारण हमने पर्दे डाल दिये थे।

जब रैक्लूस के साथ मै क्लेरेंस मे कार्य करता था, मै हर पन्द्रहवें दिन "ला रिवोल्टी" के प्रकाशन के लिए जिनेवा जाया करता था। एक दिन जब मै प्रेस मे पहुचा, मुझे सूचना मिली कि एक रूसी सज्जन मुझसे मिलना चाहते है। वह मेरे मित्रो से मिल चुके थे और उनसे कहा था कि वह महाशय 'ला रिवोल्टी' की भाति का रूसी भाषा मे एक पत्र निकालने का मुझसे अनुरोध करने आये थे। इस पत्र के लिए रुपये की व्यवस्था करने को वह तैयार थे। मै उनसे एक होटल मे मिला। वहा उन्होने अपना जर्मन नाम बताया और अपनेको बाल्टिक प्रान्तो का निवासी बतलाया। उसने कहा कि उसके पास अपार सम्पत्ति है और वह रूसीकरण की नीति के कारण रूसी सरकार से अत्यन्त क्रुद्ध है। कुल मिलाकर मै इस विषय मे कुछ निश्चित नही कर सका, इसलिए मेरे मित्रो ने अनुरोध किया कि मै उसकी बात मान लू। लेकिन पता नही क्यो प्रथम भेट से ही मेरे मन मे उसके प्रति कुछ सन्देह हो गया।

रेस्टोरां से ... मुझे अपने कमरे पर ले गया। वहा उसने सकोच छोड दिया और अपना सच्चा रूप प्रकट करने लगा। उसने कहा—"मेरे ऊपर अविश्वास मत कीजिये। मैने एक बडा आविष्कार किया है। मै उसे पेटेण्ट करा लूगा, उससे मुझे अच्छी सम्पत्ति मिल जायगी। यह सब सम्पत्ति रूस मे क्रान्ति के लिए अर्पित कर दूगा।" उसने मुझे अपना यह आविष्कार भी दिखाया। एक भद्दी-सी मोमबत्ती थी। उसकी विशेषता थी तो यही कि वह अत्यन्त भद्दी थी और मोमबत्ती को खडा करने के लिए तीन तार थे। कोई गरीब गृहस्थ औरत भी ऐसी मोमबत्ती लेने के लिए उत्सुक नही होगी, और अगर उसको पेटेण्ट भी कराया जाता तो पचास रुपये से ज्यादा कोई नही देता। मैने अपने मन मे सोचा, "अमीर आदमी, ओर इस मोमबत्ती पर अपनी आशाए लगाए हुए है।" और उसके विषय मे मैने अपनी धारणा बना ली। मैने उससे स्पष्ट कहा, "ठीक है, यदि आप रूसी भाषा मे क्रान्तिकारी पत्र के लिए इतने उत्सुक है और मेरे विषय मे यदि आपकी यही सम्मति है, जो आपने कही है, तो मेरे नाम से बैंक मे रुपया जमा करा दीजिये। लेकिन एक बात मै स्पष्ट कह दू, आपसे पत्र का कोई सम्बन्ध नही रहेगा।" उसने कहा, "हा, यह तो ठीक है, लेकिन कभी-कभी आपको राय देना अथवा रूस मे पत्र को छिपाकर भेजने मे कुछ सहायता करना ।" मैने साफ कह दिया, "बिलकुल नही, आप मुझसे मिलेगे ही नही।" मेरे मित्रो ने कहा कि मै उस व्यक्ति के साथ रुखाई से पेश आया। लेकिन इसके कुछ समय बाद ही सेण्ट पीटर्सबर्ग से हमारे पास एक पत्र आया कि पुलिस के तीसरे दस्ते का टौनलेहम नामक एक गुप्तचर हमसे भेट करेगा। इस तरह उस मोमबत्ती ने हमारी बडी सहायता की।

चाहे मोमबत्ती के द्वारा ही अथवा अन्य किसी साधन से, इन लोगो का भेद खुल जाता है। १८८१ मे जब हम लोग लन्दन मे थे, एक दिन दो रूसी स जन हमारे यहा पधारे। मै उनमे से एक को नाम से जानता था। उन्होने अपने साथी का अपने मित्र के रूप मे परिचय दिया और कहा कि यह उनके साथ कुछ दिनो के लिए लन्दन घूमने आये थे। चूंकि वह मेरे

मित्र के साथ आये थे, इसलिए उनके विषय मे मुझे कोई सन्देह नही हो सकता था। मेरी पत्नी ने भी तबतक इग्लैण्ड नही देखा था, इसलिए वह उनके साथ लन्दन देखने चली गई। तीसरे पहर मेरी पत्नी ने लौटकर मुझसे कहा, "मुझे वह व्यक्ति बिलकुल पसन्द नही, उससे सावधान रहना।" मैने पूछा, "क्यो ? क्या बात हुई ?" उसने कहा, "कोई खास बात नही हुई, लेकिन वह हमारे मे से नही है।" रेस्टोरा मे बैरे से उसने जो व्यवहार किया और जिस तरह वह रुपया खर्च करता है, उसे देखकर मै समझ गई कि वह "हमारे मे" से नही है और यदि वह हमारे समुदाय का नही है, तो वह हमारे यहा क्यो आया ?" पत्नी को अपने सन्देह पर इतना विश्वास था कि यद्यपि वह उसका स्वागत-सत्कार करती रही, लेकिन उसने उस युवक को एक क्षण के लिए भी मेरे कमरे मे अकेला नही छोडा। हम लोगो की कुछ बातचीत हुई और वार्तालाप मे इन नवागन्तुक महोदय ने जो नैतिक धरातल प्रकट किया, उससे उनके मित्र भी लज्जित हो गये। जब मैने उनसे इस व्यक्ति के बारे मे कुछ और विस्तार से पूछा तो उनके उत्तरो से हमारा अविश्वास और बढा। दो-एक दिन मे वे लन्दन छोडकर चले गये। कुछ समय बाद मेरे पास रूसी मित्र का पत्र आया, जिसमे उसने इस व्यक्ति को साथ लाने के लिए बार-बार क्षमायाचना की थी। पेरिस लौटने पर उन्हे मालूम हुआ कि वह रूसी दूतावास मे गुप्तचर था। मैने अब फ्रास और स्विटजरलैण्ड मे स्थित रूसी गुप्तचरो की सूची देखी और मैने देखा कि उस व्यक्ति का नाम उस सूची मे था, उसने केवल एक अक्षर 'अ' बदल लिया था।

मै इस विषय पर बहुत लिख सकता हू, लेकिन क्लेअरवौक्स की अब केवल एक घटना का वर्णन करके इस अध्याय को समाप्त करूगा।

मेरी पत्नी उस गाव की एक मात्र सराय मे रहती थी। एक दिन मकान की मालकिन ने सूचना दी कि दो सज्जन उससे मिलना चाहते है। उस वृद्धा ने कहा, "मैने दुनिया देखी है। श्रीमतीजी, मै आपको विश्वास दिलाती हू, वे अत्यन्त सज्जन है। उनमे से एक जर्मन अधिकारी है—वह साधन-सम्पन्न है और दूसरा उसका दुभाषिया है। अधिकारी

अफ्रीका जानेवाले है, शायद वहा से लौट न सके और जाने के पहले आपसे मिलने के इच्छुक है।"

मेरी पत्नी ने उनके विजिटिंग कार्ड को पढा, "श्रीमती क्रोपाटकिन ?" उसके बाद उन सज्जन के अधिक परिचय की आवश्यकता नही रही। जो कुछ उन्होने पत्र मे लिखा था, वह इस पते से भी वदतर था। साधारण शिष्टाचार को भी तिलाजलि देकर उन्होने लिखा था—"मुझे कुछ गुप्त बात कहनी है।" मेरी पत्नी ने उन और उनके दुभाषिये के साथ मिलने से इकार कर दिया। इसके बाद जर्मन महोदय ने मेरी पत्नी को अनेक पत्र लिखे, जिन्हे वह बिना खोले ही वापस करती रही। इन अफसर को लेकर गाव दो दलो मे विभक्त हो गया—एक जर्मन अधिकारी के पक्ष मे जिसकी नेता मकान-मालकिन थी, दूसरे दल का नेता मकान-मालकिन का पति था। एक प्रेम-कहानी प्रचलित हो गई कि अफसर महोदय मेरी पत्नी को शादी से पहले से जानते थे, वियना मे रूसी दूतावास मे वह उनके साथ कई बार नाची थी, अब भी वह उससे प्रेम करता है। लेकिन यह स्त्री इतनी बेरहम है कि उस भयकर यात्रा के पहले भी उसे दर्शन देना स्वीकार नही करती।"

उसके पश्चात एक लडके की रहस्यपूर्ण कहानी प्रारम्भ हुई। उक्त अधिकारी महोदय जानना चाहते थे, "इनका लडका कहा है? इनके एक लडका है। अब वह ६ वर्ष का होगा।" एक दल कहता—"अगर उसके लडका होता, तो उसे वह कभी छोडती नही।" दूसरा दल कहता—"हा, इनके लडका है, लेकिन वे उसे छिपाकर रखते है।"

हम लोगो को इस बहस से एक नई चीज मालूम पडी। इस घटना से हमे स्पष्ट हो गया कि मेरे पत्रो को जेल के अधिकारी तो पढते ही थे, इसके साथ-साथ रूसी दूतावास को भी उन पत्रो का साराश दे दिया जाता था। जब मैं लायन्स मे था, मेरी पत्नी रैक्लूस से मिलने स्विटजरलैण्ड गई थी। वहा से उसने लिखा था कि 'हमारा लडका' अच्छी प्रगति कर रहा है, वह स्वस्थ है और उसकी ५वी वर्षगाठ पर हर्षोल्लास मे सब शरीक हुए। मै जानता था कि उसका तात्पर्य "ला रिवोल्टी" से था, जिसे हम बातचीत मे "शैतान लडका" कहते थे।

अब जब ये लोग हमारे 'शैतान लडके' की पूछताछ कर रहे थे और उसकी अवस्था भी ठीक बतला रहे थे, तो स्पष्ट था कि उनका पत्र जेल-अधिकारियो के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियो तक अवश्य पहुचा होगा। अच्छा ही हुआ, यह भेद भी खुल गया।

गाव मे कुछ छिपाकर रखना सम्भव नही और शीघ्र ही अधिकारी महोदय के प्रति वहा के निवासियो का सन्देह जाग्रत हो गया। सारा गाव जान गया कि अधिकारी महोदय मेरी पत्नी से कभी परिचित नही रहे। जो कहानी बडे यत्नपूर्वक निर्मित हुई थी, एक साथ ढह गई। पत्र मे लिखा था कि वह हमारा शुभचिन्तक है। उसे अत्यन्त आवश्यक बाते कहनी है, मेरा जीवन खतरे मे है और वह मेरी पत्नी को चेतावनी देना चाहता है।"

मैने यहा केवल कुछ गुप्तचरो की कहानिया लिखी है। विभिन्न सरकारे इन गुप्तचरो को कितना रुपया व्यय करके रखती है, समाज पर उनका क्या प्रभाव पडता है, भोले व्यक्तियो को वे कैसे फंसाते है और ये गुप्त-चर समाज के निम्नतर वर्ग के व्यक्ति होते है। समाज मे, कुटुम्बो मे, वे कितना भ्रष्टाचार फैलाते है, जितना ही इसपर सोचा जाय उतना ही इस दुष्कृत्य पर आश्चर्य होता है!

: १५ :

भाई की मृत्यु

फ्रांस के समाचार-पत्रो मे और वहा की प्रतिनिधि-सभा मे हमारी मुक्ति के लिए निरतर आवाजे उठ रही थी। आन्दोलन इसलिए और भी ज्यादा हो रहा था, क्योकि उस समय जब हम लोगो को जेल हुई थी, लुई माइकेल को भी चोरी के अपराध पर जेल कर दी गई थी। लुई माइकेल, जो शब्दश. अपना अन्तिम वस्त्र किसी निर्धन स्त्री को देने को सदैव उद्यत रहती और जिसने जेल मे अपने साथियो से अच्छा भोजन लेना बिलकुल अस्वीकार कर दिया, उसे एक अन्य सहयोगी पोगेट के साथ

डकैती के अभियोग मे जेल कर दी गई थी। मध्य वर्ग के अवसरवादियों को भी यह दुष्कृत्य प्रतीत हुआ। एक दिन लुई माइकेल बेकार मजदूरो के जुलूस का नेतृत्व करते हुए एक दूकान मे घुस गई और वहा से रोटिया उठाकर उसने भूखो मे बाट दी। यही थी उसकी डकैती! अराजकवादियो की मुक्ति के लिए सरकार के विरुद्ध आन्दोलन प्रारम्भ हो गया और १८८५ मे राष्ट्रपति ग्रेवी ने तीन कार्यकर्त्ताओ को छोडकर हमारे शेष सहयोगियो को मुक्त कर दिया। अब लुई माइकेल और मेरी मुक्ति के लिए आन्दोलन और भी तीव्र हो गया। लेकिन अलैक्जैण्डर तृतीय इसके विरोध मे थे। एक दिन प्रधान मत्री फ्रेसीनेट ने प्रतिनिधि-सभा मे उत्तर देते हुए कहा—"क्रोपाटकिन की मुक्ति मे कुछ कूटनीतिक बाधाए है।" एक स्वाधीन देश के प्रधान मत्री के लिए ये शब्द वास्तव मे आश्चर्यजनक प्रतीत होते है। लेकिन साम्राज्यवादी रूस और गणतत्री फ्रास की दुर्भाग्यपूर्ण सधि के बाद उससे भी अधिक आश्चर्यजनक बाते हुई है।

१८८६ के मध्य मे लुई माइकेल, पोगेट और हम लोग छोड दिये गए।

मेरी मुक्ति के मानी थे—मेरी पत्नी को भी जेल के फाटक के बाहर उस ग्राम से मुक्ति मिल गई। वहा रहते-रहते उसका स्वास्थ्य गिर गया था और हम लोग मानवशास्त्र के महान विद्वान, अपने मित्र ऐली रैक्लूस, के पास पेरिस गये। उनके भाई ऐलिसी है, जो एक यशस्वी भूगोलशास्त्री है। फ्रास के बाहर अक्सर, लोग इन दोनो भाइयो के बीच भेद नही करते। दोनो भाइयो के बीच बचपन से ही प्रगाढ स्नेह है। विश्वविद्यालय मे प्रवेश करने के लिए दोनो भाई जिरोड की घाटी से स्ट्रासबर्ग तक पैदल आये थे।

जब पेरिस मे कम्यून की स्थापना हुई, तो दोनो भाइयो ने उसमे हार्दिक सहयोग दिया। ऐली ने राष्ट्रीय पुस्तकालय ओर लूव्रे सग्रहालय की जिम्मेदारी सभाल ली। उसीके घोर परिश्रम और दूरदर्शिता के कारण इन सस्थाओ मे सग्रहीत बहुमूल्य सामग्री उस विध्वसकारी युद्ध मे बची रही। यूनानी कला के वह प्रेमी है और उसका उन्हे अच्छा ज्ञान है। उन्होने युद्ध के दौरान मे यूनानी कला की श्रेष्ठ कृतियो को भली-भाति पैक

क्रोपाटकिन के अग्रज एलेग्जैण्डर

कराके तहखानो मे बन्द करा दिया तथा बहुमूल्य पुस्तको को सुरक्षित स्थान मे पहुचा दिया। उनकी पत्नी अपने महान पति के योग्य है। वह अपने दोनो लडको को साथ लिये गरीब जनता के लिए भोजन-व्यवस्था मे जुट गई। कम्यून के अधिकारियो ने अन्तिम दिनो मे समझा कि गरीबो के लिए भोजन की व्यवस्था तो उन्हे सबसे पहले करनी थी, फिर तो अनेक स्वय-सेवक इस कार्य मे लग गये थे। सौभाग्य से ही वार्साई की फौजो की बन्दूको से रैक्लूस वच गये। वार्साई की फौजो ने उन्हे निर्वासन का दण्ड दिया, क्योकि उन्होने सग्रहालय के सुरक्षित रखने का महत्वपूर्ण कार्य किया था! अव पेरिस लौटने पर वह अपने प्रिय विपय मानवशास्त्र के अध्ययन मे लग गये थे। उनके कार्य की महत्ता का अदाज उनकी पुस्तके "आखिरी मनुष्य" तथा "आस्ट्रेलियन" और ब्रसेल्स मे दिये गए धर्म की उत्पत्ति पर उनके व्याख्यानो से लगाया जा सकता है। आदिम मनुष्य की प्रवृत्ति का ऐसा सहानुभूतिपूर्ण विवरण मानवशास्त्र-सम्वन्धी सपूर्ण साहित्य मे अन्यत्र दुर्लभ है।

उस समय पेरिस मे उग्र साम्यवादी और अराजकवादी आन्दोलन चल रहा था। हर रोज शाम को लुई माइकेल के व्याख्यान होते। उनकी लोकप्रियता वढ रही थी। विश्वविद्यालय के छात्र, जो उग्र विचारधारा से चाहे घृणा करते हो, लेकिन उनके व्यक्तित्व से प्रभावित थे, और एक आदर्श महिला के रूप मे उनका सम्मान करते थे। एक रेस्टोरा मे कुछ व्यक्तियो ने लुई माइकेल के लिये अपमानजनक शव्दो का प्रयोग कर दिया परिणाम यह हुआ कि विद्यार्थियो ने उत्तेजित होकर दगा कर दिया, मेजे और काच आदि सव तोड-फोड डाले। मैने भी एक वार हजारो की भीड मे अराजकवाद पर व्याख्यान दिया। रूढिवादी ओर रूसी पक्ष के अखवारो ने सरकार पर दवाव डाला कि मुझे फौरन फ्रास से निर्वासित किया जाय, लेकिन सरकार के कुछ करने के पहले ही मैने तुरन्त पेरिस छोड दिया।

पेरिस से हम लोग लन्दन गये। वहा हमारे पुराने मित्र स्टेपनियाक और चकोवस्की से मुलाकात हुई। लन्दन का जीवन अव पहले से कहीं

अधिक सक्रिय था। हैरो मे एक छोटे मकान मे हम लोग रहने लगे। मकान के लिए फर्नीचर हमने चकोवस्की की सहायता से स्वय वना लिया। अमरीका मे वह वढईगीरी सीख आये थे। लेकिन हमे सवसे अधिक खुशी इस वात की थी कि हमारे पास थोडी-सी जमीन थी। मेरी पत्नी और मै उसमे वागवानी करने लगे। मेरी पत्नी को हैरो पहुचते ही टाइफाइड हो गया था। वागवानी से उसे आशातीत लाभ हुआ।

कुछ समय पश्चात मेरे ऊपर भयकर वज्रपात हुआ। मेरे भाई अलैक्जैण्डर की मृत्यु हो गई।

फ्रास मे जेल जाने के पहले से ही मेरा उनसे कोई सम्पर्क नही रहा था। रूसी सरकार की दृष्टि मे एक ऐसे भाई से प्रेम करना, जो राजनैतिक अपराधी हो, एक भयकर पाप है। और जब वह भाई देश से निर्वासित है, तव उससे पत्र-व्यवहार करना एक महान अपराध हो जाता है। जार की प्रजा को एक विद्रोही से घृणा करनी चाहिए और अलैक्जैण्डर तो रूसी पुलिस के शिकजे मे थे। इसलिए मैने अलैक्जैण्डर को अथवा अपने किसी सम्वन्धी को कोई पत्र नही लिखा था। हमारी वहन हेलेन ने अलैक्जैण्डर की मुक्ति के लिए एक प्रार्थना-पत्र दिया था। जार ने उसपर लिख दिया—"वही रहने दिया जाय"—इसके वाद उनके शीघ्र छूटने की कोई आशा नही थी। साइवेरिया मे जो व्यक्ति विना मुकदमे के निर्वासित कर दिये गए थे, उनके निर्वासन की अवधि निश्चित करने के लिए एक कमेटी वनाई गई। इस कमेटी ने मेरे भाई को पाच वर्ष का दण्ड दिया—वह दो वर्ष पहले ही रह चुके थे—इस तरह उनके सात वर्ष हो गये। इसके पश्चात एक दूसरी कमेटी वनी और उसने उनका निर्वासन-काल पाच वर्ष और वढा दिया। इस तरह अलैक्जैण्डर की मुक्ति १८८६ मे होनी थी। १२ वर्ष का निर्वासन हो गया, पहले पूर्वी साइवेरिया के एक छोटे-से कस्वे मे और फिर पश्चिमी साइवेरिया की तराई टौम्स्क मे।

जव मै क्लेअरवौक्स मे था, उन्होने मुझे एक पत्र लिखा था। हम लोगो के वीच कुछ पत्र-व्यवहार हुआ। उन्होने लिखा था कि यद्यपि हमारे पत्रो को साइवेरिया की रूसी पुलिस और फ्रासीसी जेलो के अधिकारी दोनो ही

पढेंगे, फिर भी हम पत्र-व्यवहार करते रहे। उन्होने अपने कुटुम्ब, अपने तीन बच्चो और अपने कार्य के सम्बन्ध मे लिखा था। मुझे लिखा था कि मै विशेषत. इटली मे हो रही महान वैज्ञानिक प्रगति का अध्ययन करू। रूस मे राजनैतिक आन्दोलन की सम्भावनाओ पर भी अपनी सम्मति लिखी थी और उसने अपने वैज्ञानिक कार्य की प्रगति पर लिखा था। उनकी रुचि खगोल-शास्त्र मे थी। जब हम सेण्ट पीटर्सबर्ग मे थे, तभी उन्होने तारागणो के विषय मे एक विस्तृत लेख रूसी भाषा मे लिखा था। विभिन्न अनुमानो के दोषो को वह अपनी तीव्र बुद्धि से शीघ्र ही समझ गये। यद्यपि वह गणित नही जानते थे, लेकिन कल्पनाशील होने के कारण वह गणित की जटिलतम खोजो को समझ सकते थे। अपने कल्पनालोक मे तारागणो के साथ विचरते हुए वह कुछ ऐसे तत्वो को समझ सकने मे समर्थ हो गये, जो शुद्ध गणितज्ञो के लिए, विशेषत बीजगणित के आचार्यो के लिए, सम्भव नही। सेण्ट पीटर्सबर्ग के खगोलशास्त्रियो ने अलैक्जैण्डर के कार्य की मुझसे मुक्त कण्ठ से प्रशसा की थी। उसके पश्चात् उन्होने विश्व के निर्माण का अध्ययन किया। अनन्त आकाश मे सूर्य, तारागणो की स्थिति पर विभिन्न अनुमानो का परीक्षण किया और फिर उनके विकास और नाश के नियम निर्धारित किये। सुप्रसिद्ध खगोलशास्त्र। गिल्डन, अलैक्जैण्डर के इस कार्य से अत्यन्त प्रभावित हुए और अमरीका के मि० होल्डन से उनका पत्र-व्यवहार द्वारा परिचय करा दिया। कुछ समय पहले वाशिंगटन मे मि० होल्डन से मुझे मिलने का अवसर मिला। मैंने उनसे अलैक्जैण्डर की खोजो की प्रशसा सुनी। वास्तव मे कल्पनाशील और विवेकपूर्ण मस्तिष्को से उद्भूत इस प्रकार की सम्भावनाओ से विज्ञान के विकास मे सहायता मिलती है।

लेकिन वह साइबेरिया के एक छोटे ग्राम मे रहते थे। वहा न पुस्तकालय की और न विज्ञान की नवीनतम खोजो से कोई परिचय की सुविधा थी। खगोलविज्ञान मे जो खोजे उनके निर्वासन के समय तक हो चुकी थी, उन्हीको आधार मानकर उन्होने कार्य किया था। उसके बाद कुछ महत्वपूर्ण कार्य और खोजे हुई थी। मेरे भाई को उसका

कुछ आभास था, लेकिन साइबेरिया मे रहते हुए तत्सबन्धी साहित्य उनकी पहुँच के बाहर था। उनकी मुक्ति के दिन समीप आ रहे थे, लेकिन उससे भी उनमे आशा का सचार नही हो रहा था। वह जानते थे कि उन्हे रूस मे अथवा पश्चिमी यूरोप मे किसी विश्वविद्यालय केन्द्र मे रहने की सुविधा मिलना असम्भव है और इसके पश्चात् उन्हे फिर निर्वासित कर दिया जायगा। उन्होने मुझे लिखा था, "कभी-कभी फाउस्ट की भाति मैं निराशा मे डूब जाता हू।" जब उनकी मुक्ति का समय नजदीक आया, तो उन्होने बरफ जमने के पहले अन्तिम स्टीमर से अपनी पत्नी और बच्चो को रूस भेज दिया और एक निराशापूर्ण रात्रि को आत्महत्या कर ली।

महीनो तक मेरी झोपडी पर दुख, निराशा और अन्धकार के बादल छाये रहे। अगली वसन्त ऋतु मे प्रकाश की किरण फूटी। एक नन्ही बच्ची ने हमारे घर मे जन्म लिया। उसका नामकरण हमने भाई के नाम पर किया।

: १६ :

इंग्लैण्ड में मजदूर-आन्दोलन

१८८६ मे इग्लैण्ड मे साम्यवादी आन्दोलन अपनी चरम सीमा पर था। प्रमुख शहरो मे अनेक मजदूर उसमे शामिल हो गये थे। मध्यवर्ग के अनेक नवयुवक उसमे सहयोग दे रहे थे। उस वर्ष अनेक उद्योगो पर बडा सकट छाया हुआ था। अक्सर दिन-भर मजदूरो के समूह सडको पर घूमते और आवाजे लगाते—"हम बेकार है" और रोटी की माग करते थे। रात को लोग ट्रफालगर स्क्वायर मे बरसात और हवा मे सोने के लिए इकट्ठे हो जाते। एक दिन फरवरी मे बर्न्स हिडमैन और चैम्पियन के भाषण सुनकर कुछ मजदूर पिकाडिली की दूकानो पर दौड पडे और उनके शीशे आदि तोड डाले। स्थिति ऐसी थी कि अगर आन्दोलन के नेताओ को, जिनपर दगो के लिए मुकदमा चला, कठोर सजाए दी जाती तो मजदूर

आन्दोलन काफी समय तक घृणा और प्रतिहिंसा की भावना से ओतप्रोत हो जाता। लेकिन मध्यमवर्ग स्थिति को समझ गया। वेस्ट एण्ड मे तुरन्त ही ईस्ट एण्ड के मजदूरो की सहायता के लिए काफी चन्दा हुआ। चन्दा सचमुच इतने अधिक मजदूरो के कष्ट-निवारण के लिए नाकाफी था—लेकिन मध्यवर्ग की सहानुभूति प्रदर्शित करने के लिए वह काफी था। आन्दोलन के नेताओ को कुल दो-तीन मास की सजाए हुई।

सभी वर्ग समाजवाद और समाज के सुधार तथा पुनर्संगठन मे रुचि ले रहे थे। शरद् के प्रारम्भ से अन्त तक देश-भर से मुझे अराजकवादी साम्यवाद के ऊपर व्याख्यान देने के लिए निमत्रण मिले। इस तरह इग्लैण्ड और स्काटलैण्ड के लगभग सभी भाग मैने देख लिये। मैने यह नियम बना लिया था कि जो निमत्रण मुझे पहले मिलता, वह मै स्वीकार कर लेता। पहली रात तो मै अपने मेजबान—किसी सम्पन्न व्यक्ति की कोठी मे ठहरता और दूसरी रात मजदूरो की बस्ती मे बिताता। मुझे समाज के सभी वर्गों से मिलने का अवसर मिला। चाहे मजदूरो की छोटी कोठरी हो, अथवा सम्पन्न व्यक्ति का आलीशान कमरा हो, समाजवाद और अराजकवाद पर आधी रात तक उत्साहपूर्ण वार्तालाप चलता रहता। यदि मजदूरो मे उससे आशा का सचार होता, तो अमीरो मे भविष्य के विषय मे कुछ सन्देह उत्पन्न होता, लेकिन वास्तव मे दोनो ही इस विषय मे रुचि ले रहे थे।

सम्पन्न व्यक्तियो के खास सवाल ये होते, "साम्यवादी चाहते क्या है? वे क्या करेगे? किस अवसर पर क्या सहूलियते देने से स्थिति गम्भीर होने से बच जायगी?" बातचीत के दौरान शायद ही किसीने साम्यवाद का सैद्धान्तिक विरोध अथवा उसकी निन्दा की हो।

पार्लमेंट के एक अनुभवी वृद्ध सदस्य ने मुझसे कहा था—"हमारा देश क्रान्तिकारी नही। समझौता हमारी नस-नस मे व्याप्त है।"

मजदूरो के मुहल्लो मे भी जो सवाल मुझसे पूछे गये, वे यूरोपीय महाद्वीप के मजदूरो के प्रश्नो से भिन्न कोटि के थे। लेटिन जाति की रुचि सैद्धान्तिक विवेचन मे है। अगर हडताल के दौरान मजदूरो की सहायता के लिए फ्रास मे नगर निगम कुछ रुपये पास करती है अथवा स्कूलो मे वच्चो के लिए भोजन की व्यवस्था करती है, तो उसे कोई महत्व नही दिया जाता। एक फ्रासीसी मजदूर की प्रतिक्रिया होगी—"यह ठीक ही तो है—भूखा वच्चा क्या पढेगा? पहले उसको भोजन मिलना ही चाहिए।" "वास्तव मे गलती पूजीपति की थी कि उसने मजदूरो को हडताल करने के लिए वाध्य किया।" व्यक्तिवादी समाज द्वारा इन छोटी-मोटी वातो मे साम्य-वादी सिद्धान्तो के समर्थन को वे कोई महत्व नही देते। फ्रास मे मजदूर इन छोटी-छोटी सहूलियतो से आगे के युग की सोचते है। वे गहनतम समस्याओ पर प्रश्न करते है, जैसे उत्पादन के साधनो पर अधिकार किसका होगा? कम्यून का? अथवा सगठित मजदूरो का? या राज्य का? क्या स्वेच्छापूर्वक किये हुए समझौतो से ही समाज का काम चल सकेगा? यदि वर्तमान दमनकारी शक्तियो को तिलाजलि दे दी जाय, तो समाज का नैतिक स्तर कैसे वना रह सकेगा? क्या जनतत्री सरकार साम्यवादी दिशा मे क्रान्तिकारी परिवर्तन कर सकेगी? आदि-आदि। इसके विपरीत इग्लैण्ड मे कुछ सुविधाओ को ही महत्व दिया जाता है। एक वात तो मजदूर निश्चित कर चुके थे कि उद्योगो का राज्य द्वारा सचालन असम्भव है। उनकी रुचि प्रधानत इस वात मे थी कि वास्तविक स्थिति मे सुधार कैसे किया जाय? उदाहरण के लिए वे पूछते, "मि० क्रोपाटकिन, मान लीजिये हम अपने कस्वे के वन्दरगाह पर कल अधिकार कर ले। उसका प्रवन्ध कैसे करेगे?" अथवा "रेलो की राजकीय व्यवस्था हमे पसन्द नही और वर्तमान पूजीवादी व्यवस्था 'सगठित डकैती' है। लेकिन मान लीजिये कल मजदूर रेलो के स्वामी हो जाय। रेलो की व्यवस्था कैसे होगी?" शास्त्रीय सिद्धान्तो मे उनकी रुचि नही। उसकी पूर्ति वे वास्तविकता के विस्तृत और गहन अध्ययन से करते थे।

इग्लैण्ड के मजदूर-आन्दोलन की एक अन्य विशेषता यह थी मध्य वर्ग के अनेक व्यक्ति उसमे योग दे रहे थे। कुछ खुले आम उसमे सम्मिलित हो गये थे और कुछ बाहर से सहायता देते थे। फ्रास और स्विटजरलैण्ड मे मजदूर और मध्यवर्ग अलग-अलग थे, एक-दूसरे के विरोध मे थे। कम-से-कम १८७६-८५ मे तो ऐसा ही था। स्विटजरलैण्ड मे अपने तीन-चार वर्ष के प्रवास मे मुझे केवल मजदूर कार्यकर्ताओ से ही मिलने का अवसर मिला। मध्य वर्ग के शायद दो-एक कार्यकर्ता ही मैने वहा देखे थे। इग्लैण्ड मे ऐसा असम्भव था। मध्यवर्ग के अनेक पुरुष और स्त्रिया यहा खुले आम मजदूर आन्दोलन मे सक्रिय योग दे रहे थे। लन्दन और अन्य भागो मे वे साम्यवादी मीटिगो की व्यवस्था करते और हडताल के दिनो मे बक्से लेकर पार्को मे चन्दा करते। इसके अतिरिक्त उस समय इग्लैण्ड मे एक आन्दोलन और चल रहा था, जो रूसी आन्दोलन "जनता के बीच चलो" के समान था, यद्यपि यह आन्दोलन उतना तीव्र, विस्तृत, तथा त्यागपूर्ण नही था। इग्लैण्ड मे भी अनेक व्यक्ति मजदूरो के वीच गन्दी ‹ स्तियो मे रहने लगे थे। इतना निश्चित है कि उस समय का सारा वातावरण उत्साहपूर्ण था। वहुतो का तो विश्वास था कि सामाजिक क्रान्ति प्रारम्भ हो गई है। लेकिन ऐसे व्यक्तियो से आशा करना व्यर्थ है, जो केवल आवेश मे आगे बढ जाते है। जब उन्होने देखा कि अभी लम्बे अर्से तक लगन से और परिश्रम करना है तब कही क्रान्ति होगी, तो उनमे से अधिकाग आन्दोलन से अलग हो गये और अब केवल दूर से दर्शक मात्र रह गये है।

: १७ :

इंग्लैण्ड में कार्य

मैंने इगलैण्ड के इस मजदूर-आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया। उस समय देश मे तीन साम्यवादी पत्र चल रहे थे। मैंने अपने कुछ अग्रेज मित्रों के सहयोग से एक चौथा पत्र 'फ्रीडम' अराजकवादी साम्यवाद के विचारो

के प्रचार के लिए प्रकाशित किया। वह पत्र आजतक चल रहा है। इसके साथ-साथ मैने अराजकवाद पर अपनी लेखमाला को पूरा किया। फ्रास मे जेल जाने से वह कार्य अधूरा रह गया था। उसके आलोचनात्मक भाग को रैक्लूस ने छपा दिया था। अब मैने अराजकवादी समाज का विस्तृत विवेचन किया। यह लेखमाला 'ला रिवोल्टी' मे छपी। बाद को यह सब लेख एक पुस्तक मे छपे।

इन लेखो के लिए मसाला इकट्ठा करते हुए मैने वर्तमान समाज के आर्थिक जीवन के कुछ विशेष पहलुओ का अध्ययन किया। अबतक अनेक साम्यवादियो ने प्रतिपादित किया था कि आज के सभ्य समाज मे हम लोग सम्पूर्ण समाज की आवश्यकताओ से अधिक उत्पादन करते है और केवल सम्पत्ति का विभाजन ही दोपपूर्ण है, अर्थात् यदि सामाजिक क्रान्ति हुई तो समाज सम्पूर्ण लाभ पर, जो आज तक पूजीपतियो के अधिकार मे है, अधिकार कर लेगा और मजदूरो को तो सिर्फ यथापूर्व अपने काम पर जाना होगा। इसके विपरीत मैने सोचा कि वर्तमान पूजीवादी व्यवस्था मे उत्पादन ही गलत दिशा मे चला गया है और सम्पूर्ण समाज की आवश्यकताओ के लिए वह नितान्त अल्प है। सभ्य देशो मे औद्योगिक और कृषि-उत्पादन खूब बढाना चाहिए, जिससे सभीका जीवन भरा-पूरा हो सके। मैने वर्तमान कृपि की सम्भावनाओ की ओर ध्यान दिया। शिक्षा-व्यवस्था के भविष्य पर भी मनन किया कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो मनुष्य को "शारीरिक और बौद्धिक" दोनो प्रकार के श्रम के योग्य बनावे। इन्ही विचारो को मैने '१९वी शताब्दी' मे एक लेखमाला मे पल्लवित किया। बाद को ये लेख 'भावी क्रान्ति का सगठन' नामक पुस्तक के रूप मे छपे।

एक अन्य प्रमुख समस्या की ओर मेरा ध्यान गया। यह सर्वविदित है कि डार्विन के सिद्धान्त 'जीवन के लिए सघर्ष' को उनके अनुयाइयो ने—हक्सले जैसे विद्वान लेखक ने भी किस रूप मे विकसित किया है। सभ्य समाज का शायद ही कोई दुर्गुण हो, वर्ण-विद्वेप हो अथवा बलवानो का कमजोरो के प्रति व्यवहार, इस सिद्धान्त मे उसे समर्थन प्राप्त होता है।

क्लेअरवौक्स जेल मे भी मैने इस सिद्धान्त को नये रूप मे उपस्थित

करने का विचार किया था। कुछ साम्यवादियो ने इस दिशा मे जो प्रयत्न किये थे, उनसे मुझे सन्तोष नही हुआ था। लेकिन सुप्रसिद्ध रूसी जीव-शास्त्री प्रो० कैसलर के एक व्याख्यान मे मुझे 'जीवन के लिए सघर्ष' सिद्धान्त की उचित व्याख्या मिली। उन्होने कहा था—"पारस्परिक सहयोग भी प्रकृति मे उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पारस्परिक सघर्ष। और जन्तुओ के प्रगतिशील विकास के लिए तो प्रथम सिद्धान्त दूसरे से कही अधिक महत्वपूर्ण है।" ये थोडे-से शब्द, जिनके प्रतिपादन मे उन्होने केवल दो उदाहरण दिये थे, मेरे लिए सम्पूर्ण समस्या का समाधान थे। जब हक्सले ने १८८८ मे अपना भयकर लेख 'जीवन के लिए सघर्ष—एक प्रोग्राम' प्रकाशित किया, तो मैंने मनुष्यो और जानवरो के विकास के सम्बन्ध मे उनके दृष्टिकोण का खण्डन करने का निश्चय किया। मै उसके लिए पिछले दो वर्षो से मसाला इकट्ठा कर रहा था। मैने इस सम्बन्ध मे अपने मित्रो से बातचीत की। लेकिन मैने देखा कि "कमजोरो को नष्ट कर दो" की वैज्ञानिकता पर लोगो का विश्वास इतना दृढ है कि उसने लगभग धार्मिक आस्था का रूप ले लिया है। केवल दो व्यक्तियो ने प्राकृतिक नियमो के इस मिथ्यावोध के विरुद्ध मेरे विद्रोह का समर्थन किया। '१९वी शताब्दी' के सम्पादक मि० जेम्स नौल्स तुरन्त ही समस्या के मर्म को समझ गए और मुझसे उसपर लिखने का अनुरोध किया। दूसरे समर्थक एच० डब्ल्यू बटस् थे, जिनकी अगाध विद्वत्ता के विषय मे स्वय डार्विन ने अपने आत्मचरित मे लिखा है। वह भूगोल-परिषद के मत्री थे और उनसे मै परिचित था। उनसे मैंने इस सम्बन्ध मे बातचीत की। उन्होने कहा, "अवश्य लिखिये। यही डार्विन के सिद्धान्तो की सच्ची व्याख्या है। यह देखकर शर्म आती है कि डार्विन के विचारो को इन लोगो ने क्या रूप दे दिया है! इसपर अवश्य लिखिये। और जब आप उसे प्रकाशित करे, तो मै आपके समर्थन मे आपको एक पत्र लिखूगा। उसे भी प्रकाशित कर दीजिये।" इससे अधिक उत्साहवर्धन की मुझे आशा नही थी। मैने लिखना प्रारम्भ कर दिया। यह लेखमाला 'जानवरो मे पारस्परिक सहयोग' आदिवासियो मे' 'असभ्य जातियो मे' 'मध्ययुग मे' और

'वर्तमान काल मे' शीर्षक से '१९ वी शताब्दी' मे क्रमश प्रकाशित हुई। दुर्भाग्यवश प्रथम दो लेख, जो बेटस् के जीवनकाल मे प्रकाशित हो गये थे, मैं उन्हे नही भेज सका। मैं सोचता रहा कि लेख-माला के दूसरे भाग 'मनुष्यो के बीच' को तैयार करके सबको एक साथ उनके सामने उपस्थित करूगा। लेकिन उसे लिखने मे मुझे कुछ समय लग गया और इसी बीच बेटस् स्वर्गीय हो गये।

इन लेखो के लिखने के लिए अध्ययन करते हुए मेरा ध्यान एक अन्य महत्वपूर्ण विषय की ओर गया—पिछली तीन शताब्दियो के इतिहास पर 'राज्य' का कितना अनिष्टकारी प्रभाव पडा है। इसके विपरीत मैंने देखा कि सभ्यता के विकास मे पारस्परिक सहयोग की सस्थाओ का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। इसी आधार पर मैंने मनुष्य-जाति मे नैतिकता के विकास का अध्ययन किया।

पिछले दस वर्षो मे इग्लैण्ड मे समाजवाद के विकास ने एक नया मोड लिया है। जो केवल साम्यवादी और अराजकवादी मीटिगो तथा उनमे एकत्र जन-समूह के आधार पर ही निर्णय करते है, वे समझते है कि अब साम्यवादी आन्दोलन की गति धीमी पड गई है। और जो लोग पार्लामेंट के तथाकथित साम्यवादी उम्मीदवारो के दिये गए वोटो से ही साम्यवाद की प्रगति पर निर्णय देते है—वे कहते है कि अब इस देश मे साम्यवादी आन्दोलन बिलकुल समाप्त हो गया है। लेकिन इन आधारो पर ही किसी देश मे साम्यवादी विचारो के प्रचार पर हम कोई निष्कर्ष नही निकाल सकते, कम-से-कम जहातक इग्लैण्ड का सम्बन्ध है, यही बात है। वास्तव मे साम्यवाद की तीन विचारधाराए है, जो फोरियर, सेट साइमन और रोबर्ट ओविन ने विकसित की। इग्लैण्ड और स्काटलैण्ड में इनमे से अन्तिम विचारधारा का व्यापक प्रचार हुआ। किसी देश मे साम्यवादी आन्दोलन की गहराई मापने के लिए हमे देखना चाहिए कि मजदूर-सगठन, सहयोग समितियो तथा जनसाधारण मे कहातक साम्यवादी विचारो का प्रवेश हुआ है। इस दृष्टि से देखने पर तो प्रतीत होगा कि पिछले वर्षो मे इस देश मे साम्यवादी आन्दोलन ने आशातीत सफलता प्राप्त की है।

मैं यहा यह भी उल्लेख कर दू कि इस आन्दोलन की प्रगति मे अराजकवादी समूहो ने महत्वपूर्ण योग दिया है। मै यह कह सकता हू कि हम लोगो के प्रयत्न व्यर्थ नही गये। हम लोगो ने उस समय प्रचलित राज्यसत्ता, केन्द्रीकरण, अनुशासन के विचारो के विरुद्ध शासनहीन समाज, व्यक्ति के अधिकार, स्वतत्र समझौते के विचारो का व्यापक प्रचार किया।

वर्तमान काल मे सम्पूर्ण यूरोप मे फौजी भावना का विकास हो रहा है। यह जर्मनी के फौजी राज्य की १८७१ मे फ्रास के ऊपर विजय का अवश्यम्भावी परिणाम है। उसी समय यह स्पष्ट हो गया था और अनेक व्यक्तियो ने विशेषत बाकूनिन ने प्रभावपूर्ण शब्दो मे यह भविष्यवाणी कर दी थी।

पिछले सत्ताईस वर्षो मे साम्यवादी विचारो का यूरोप और अमरीका मे व्यापक प्रचार हुआ है। मैने स्वय इस साम्यवादी आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया है और उसके विकास को देखा है। जब मै अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-सघ के उस समय के अधिवेशनो मे व्यक्त अस्पष्ट और अस्त-व्यस्त विचारो अथवा पेरिस मे कम्यून के समय के नेताओ के विचारो की आज के साधारण मजदूरो के विचारो से तुलना करता हू, तो प्रतीत होता है कि वे दो बिलकुल भिन्न युगो के है।

यदि बारहवी और तेरहवी शताब्दी के विद्रोहो के युग को, जिसके परिणामस्वरूप मध्ययुगीन कम्यूनो की स्थापना हुई थी, छोड दिया जाय, तो सम्पूर्ण इतिहास मे ऐसा कोई दूसरा युग नही दीखता जिसमे समाज के विचारो मे इतना गहरा परिवर्तन हुआ हो। आज, जब मै सत्तावनवेवर्ष मे हू, मुझे निश्चित प्रतीत होता है कि कुछ आकस्मिक घटनाओ के परिणामस्वरूप यूरोप मे १८४८ की क्रान्ति जैसी व्यापक क्रान्ति होगी—वह पिछली क्रान्ति से अधिक महत्वपूर्ण होगी, वह क्रान्ति इसलिए महत्वपूर्ण नही कि उसमे विभिन्न दलो मे घोर युद्ध होगा, वरन् इसलिए कि इसके परिणामस्वरूप महान सामाजिक पुर्निर्माण होगा। मुझे दृढ विश्वास है कि विभिन्न देशो मे इस क्रान्तिकारी आन्दोलन का कुछ भी रूप हो, लेकिन परिवर्तन की रूपरेखा के सम्बन्ध मे सब जगह विचारो मे स्पप्टता और गह-

नेतृत्व होगा और इस आन्दोलन के विरोध मे पूजीपतिवर्ग की प्रतिक्रिया मूढतापूर्ण और जिद्दी नही होगी, जिसके फल-स्वरूप पहले की क्रान्तिया हिंसात्मक हो गईं।

पिछले तीस वर्षों मे विभिन्न राष्ट्रो और वर्गो के हजारो पुरुषो और स्त्रियो ने जो त्याग, तपस्या तथा बलिदान किये है, उसीके अनुरूप यह महान परिणाम होगा।